सूचीपत्र।

विषय	पृष्ठ
नोट्स (टिप्पणी)	१
प्रार्थना (श्रीमती रामप्यारी, इलाहाबाद)	१३
रानी दुर्गावती (श्रीयुत केशव दयालसिंह, बनारस)... ...	१७
दम्पति प्रेम (श्रीमती श्री वासन्ती, बांदा)...	२२
गुमनामचिठ्ठी (गिरिजा कुमार घोष, इलाहाबाद)	२४
अवला विलाप (श्रीयुत मन्नन द्विवेदी बी. ए.)	३५
मद्रास और वहां के रहने वाले (श्रीमती उमानेहरू, जलारपेट)	३७
सच्चा परोपकार (श्रीमती भागभरी हन्डु, मद्रास) ...	३५
शिल्प शिक्षा (श्रीमती सावित्री देवी, लखनऊ)	४१
विधवा विवाह (श्रीमती गंगा देवी, इलाहाबाद)	४५
चिठ्ठी पत्री	४६
स्त्री धर्म (श्रीयुत माधव शुक्ल, लखनऊ)	४६
समालोचना	५
चौपाई	१२

लाल शरबत, [illegible] वा प्रसूति का पुष्टइ

क्षीणता होने से बच्चे पनपते नहीं । इनमें अनपच बना रहता है; पेट निकल आता है; हाथ पैर पतले पड़ जाते हैं । कितनों का सिर बड़ा होता है; दांत समय पर नहीं उगते; शरीर शिथिल रहता है; दांत निकलते हुए बच्चे बड़े दुःखी व रोगी हो जाते हैं; थोड़े ही ठंडे से ज्वर, कफ़, खांसी, सर्दी हो जाती है । लड़के क्षीणता से दुबले रहते हैं । भूख कम, रङ्गत फीकी और सुस्ती बनी रहती है । क्षीणता अधिक होने से स्वप्न में धातु भी जाती है । जवान लड़कों की क्षीणता से छाती वा कलेजा कमजोर हो जाता है । कफ, खांसी, बुखार जब तब हो जाता है । प्रसूति की क्षीणता से उसको दूध कम उतरता है, और पतला होता है । शरीर दुर्बल रहता है । खाना कम चलता है । ऐसी हालत के लिये डाक्टर बर्म्मन का— "लाल शरबत"

एक ही दवा है । इससे खाना हजम होकर अंग में लगता है । खून गाढ़ा शरीर पुष्ट होता है । कफ, खांसी, अजीर्ण, छाती की कमज़ोरी, दुबलापन, मिट जाता है । बच्चों की हड्डी सख्त होती है लड़कों का धातु पुष्ट होता है । और प्रसूतियों का खून व बल बढ़ता है । मोल १ शीशी ॥) डा० म० व पेकिंग ।) एक साथ तीन शीशी २) डा० म० व पेकिंग ॥=) आने ।

विशेष हाल तो प्रशंसापत्र की पूरी पुस्तक बिना मूल्य हज़ारों प्रशंसापत्रों में से केवल एक मंगा देखिये ।

पं० शौल्यानन्द झा थर्ड पंडित, मि० इ० स्कूल मु० खड़हुरा पो० बाराहाट जिला भागलपुर से—मेरा दूध का बच्चा आज दो वर्ष से सर्दी खांसी तथा ज्वरादि नाना प्रकार के रोगों से पीड़ित था और मैं भी चिकित्सकों के सिवाय एवं बच्चों के दुःख से उद्विग्नता में पड़ा हुआ था पर सिवाय बच्चे के हाथ धो बैठने के और कुछ हाथ आने की आशा न थी । इस दुःख के समय में आपके विज्ञापन को पढ़कर आपके बनाये लाल शरबत को मंगाने का साहस किया । दो शीशी मंगाकर सेवन करते ही बच्चे का शरीर नैरोग्य हो गया । इस अमृत के तुल्य औषध के गुण को देख, मेरे ग्रामवासियों ने बड़ी प्रशंसा की और उसी के अनुरोध से पुनः आपसे निवेदन है कि तीन शीशी और भेजकर कृतार्थ कीजिये ।

डा० एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता ।

स्त्री-दर्पण

भाग २] प्रयाग, १ जनवरी, सन् १९१० [अङ्क १

नोट्स (टिप्पणी)

कांग्रेस।

बड़े हर्ष की बात है कि इस वर्ष की कांग्रेस भी भली भांति समाप्त हुई। कांग्रेस के होने से पहले जो झगड़े हो रहे थे उन से बड़ा डर था कि कौन जाने समय पर क्या हो। समय के समय सर फ़ीरोज़ शाह मेहता के सभापति होने से इनकार करने ने तो बहुत ही निराश कर दिया था। हमें अपने शहर के माननीय पंण्डित मदनमोहन मालवीय को बहुत २ धन्यवाद देना चाहिये कि उन्होंने ऐसे समय पर सभापति होना स्वीकार करके देश सेवा की। केवल ८, १० दिन पहले आपको इस बात की ख़बर दी गई कि आपको सभापति बनाया गया है। इतना कम समय मिलने के कारण आप अपना व्याख्यान लिख कर पूरा तइयार न कर सके और लगभग आधा व्याख्यान बे लिखे बोलना पड़ा। कहते हैं कि इस बार कांग्रेस में वह रौनक़ न थी जो पहले हर वर्ष हुआ करती थी। मदरास, बंगाल से बहुत ही कम डेलिगेट आए॥

हमें बहुत हर्ष है कि सभा में ये स्थिर हुआ है कि अगले वर्ष कांग्रेस इलाहाबाद में होगी॥

लेडीज़ कानफ़्रेन्स भी इन्हीं दिनों में अच्छी तरह हो गई हमें आशा है कि उसका पूर्ण समाचार हम अगले अंक में दे सकेंगी॥

लाहौर की प्रदर्शनी ।

आज कल लाहौर में जो धूम धाम हो रही है उस में वहां की प्रदर्शनी का हिस्सा बड़ा भारी है, कहते हैं कि ऐसी प्रदर्शनी भारतवर्ष में अब तक कभी न हुई थी । सर्व वस्तुओं को एक दिन में देख लेना केवल असम्भव है । स्त्रियों के हाथ की बनी उत्तम वस्तुओं से भी बहुत जगह भरी है जिस से विदित होता है कि भारत में भी बहुतेरी ललनाएं ऐसी हैं जो भांति २ के काम बनाने जानती हैं । हमें आशा है कि अगले साल हमारे प्रांत की प्रदर्शनी में भी इसी प्रकार वस्तुएं जमा होंगी ॥

हफ़ते में एक दिन स्त्रियों के देखने के लिये विशेश कर के रखा गया है इस दिन मनुष्यों को भीतर आने की आज्ञा नहीं है परन्तु परदे का प्रवन्ध ठीक नहीं है जिस से बहुतेरी परदेवाली रमणियां न देख सकेंगी । पुलीस के सिपाही चारों ओर रहते हैं और हर स्त्री को आज्ञा है कि वो अपने साथ जिस मनुष्य को चाहे भीतर ले जावे ।

ट्रांसवाल के भारत निवासी ।

जब से मिस्टर पोलक हमारे देश में आए हैं ट्रांसवाल के भारत-वासियों से हमारा अनुराग बहुत बढ़ गया है । सब लोगों की यही इच्छा है कि जितना समाचार इन दुःखियारों का सर्व साधारण पर प्रगट किया जावे उतना ही अच्छा है । इस इच्छा को पूर्ण करने के निमित्त हमारे सर्व समाचार पत्र इस कथा से भरे रहते हैं । ज्यों २ उनका हाल ज़्यादा मालूम होता जाता है उनकी वीरता और गर्व में कुछ संदेह नहीं रहता जिसको देख ये ध्यान आता है कि भारत से निकल स्वतंत्र देशों में रह ये भारतवासी भी उन गुलामी की आदतों को कुछ भूल सकते हैं जो उन्हें वर्षों से पड़ी हुई हैं । जो २ कष्ट ये लोग केवल अपनी जाति के मान को रखने के निमित्त उठा रहे हैं उनको देख विना तारीफ़ किये कोई नहीं रह सकता । उनके दुःख की कहानी इतनी लम्बी है कि उस पर जितना लिखा जावे कम ही है ॥

हमारे पत्र में पहिले तीन चार वार उनका हाल लिखा जा चुका है लेकिन ये विषय ऐसा नहीं कि एक वार इस पर लिखा हुआ काफ़ी

हो सके। जिस परम दुःख के भागी हमारे देश भाइ ट्रांसवाल में हो रहे हैं उसका अंदाज़ इस बात से हो सकता है कि वहां के १३००० निवासियों में से आज केवल ५००० बाक़ी रह गए हैं। बाक़ी सब जो आधे से ज़्यादा हैं अपने में जेल की सख़्तियां झेलने की शक्ति न देख भाग गये हैं। २५०० से उपरांत कारागार भोग कर चुके हैं सैंकड़ों घराने इस झगड़े में नाश हो गए। मिस्टर गोखले कहते हैं कि लगभग एक करोड़ रुपये की जायदाद का नुक़सान हो चुका है और वो बड़ाभारी ख़र्च जो आंदोलन में हो रहा है अलग है। दुःखी पर दया करना और दूसरे के कष्ट से आप दुःखी होना स्त्री का विशेष स्वभाव है इस लिये हमें आशा है कि सारे भारत की स्त्रियां इन लोगों की सहायता का यत्न करेंगी। बड़े हर्ष की बात है कि इन की सहायता के लिये कलकत्ते में एक सभा स्त्रियों की बन गई है जो बड़े परिश्रम से चन्दा जमा करके अपनी सहानभूति का सबूत दे रही हैं। मिस्टर टाटा २५०००) दे कर बड़े पुण्य के भागी हुए हैं। वो छोटे २ बच्चे जो अपने पिता भ्राता के जेल में चले जाने के कारण वे मददगार हो गए हैं इन के इस रुपये से सहायता पा इन को असीस देंगे॥

इस लड़ाई को आरम्भ हुए तीन वर्ष हो गए जिसमें कितने ही बार सरकार के सामने प्रार्थनापत्र लाए गए, जिसमें बड़ी २ दिक़्क़तें व कष्ट उठाने पड़े। आख़री बार जब ऐसी प्रार्थना सरकार से करने का विचार किया तो ७ प्रतिनिधि बाहर भेजने के लिये चुने गए। इन सात में से ५ उसी समय गिरिफ़्तार कर लिये गए। मिस्टर गंधी जो क़ैद से बच रहे इङ्गलैंड गए और सरकार से सहायता मांगी पर शोक की बात है कि सरकार ने किसी प्रार्थना पर भी ध्यान न दिया। और मिस्टर गन्धी आदि का परिश्रम सब व्यर्थ गया। अब हम सब लोग बारम्बार अपनी सरकार से यह प्रार्थना कर रहे हैं कि वह इन लोगों की सहायता में हमें मदद दें पर शोक का विषय है कि यह भी इस ओर कुछ ध्यान नहीं देते॥

हमें बहुत हर्ष है कि हमारी इस प्रांत की बहिनें बराबर हमें रुपया भेजती जाती हैं और ट्रांसवाल फ़ंड का रुपया प्रति दिन बढ़ता जाता है॥

निम्न लिखित बहिनों व भाइयों ने इस मास में रुपये भेजे हैं ॥

पिछले महीने का टोटल		...	...	२८६)
मिसेज़ प्रमोदा चरन बैनरजी	इलाहाबाद	...	...	३०)
रानी साहिबा रामप्रया	,, ,,	...	...	२५)
मिसेज़ ललित मोहन बैनरजी	,, ,,	...	...	२०)
श्रीमती सुखरानी	,, ,,	...	...	१५)
रानी साहिबा जगेश्वर कुंवर	,, ,,	...	...	१०)
मिसेज़ प्रागदास	,, ,,	...	...	१०)
मिसेज़ गुलज़ारी लाल	,, ,,	...	...	१०)
कुमारी चन्द्रपती	,, ,,	...	...	५)
मिसेज़ राधा चरन	,, ,,	...	...	५)
मिसेज़ सत्याचन्द्र मुकरजी	,, ,,	...	...	५)
,, ,, गोविन्द प्रसाद	,, ,,	...	...	५)
,, ,, कौल	,, ,,	...	...	५)
एक बहिन	,, ,,	...	...	५)
पण्डित लाडली प्रसाद गंजू	,, ,,	...	...	५)
मिसेज़ विश्वनाथ	अलवर	...	...	४)
श्रीमती कैलास रानी वातल	इलाहाबाद	...	...	२)
,, ,, कृपा देवी	,, ,,	...	...	२)
,, ,, इन्द्र कुंअर	ज्वालापूर	...	...	१)
मिसेज़ किचलू	इलाहाबाद	...	...	४)
कुलजमा		...	...	४५४)

वोट मांगनेवाली स्त्रियां।

भारतवासियों का अधिकतर ये विचार है कि योरप के देशों में स्त्री जाति को इतनी स्वतंत्रता देदी गई है कि जिसके कारण बहुत बिगाड़ उतपन्न हो रहे हैं। ये सुन कर कि उन देशों में स्त्रियां क्रिकेट, गॉल्फ़ खेलती, घोड़े, बाइसिकलों आदि पर चढ़ती, बेपर्दे घूमती फिरती हैं जो हम लोग ये विचार करते हैं कि बातें उन्हें प्राप्त हैं उनसे बढ़ कर उन्हें और कुछ नहीं मिल सक्ता। इस हाल पर भी जब हम ये सुनते हैं कि वो इन सब बातों के मिल जाने पर भी खुश नहीं और अभी तक मनुष्य जाति से अन्याय की शिकायत करती हैं तो हमें बड़ा आश्चर्य मालूम होता है, और हम सोचते हैं कि वो बहुत ही कृतघ्न हैं कि इतना प्राप्त करके भी मनुष्य जाति को धन्यवाद नहीं देतीं। हमारा ऐसा विचार करना बिलकुल ठीक है क्योंकि हमने तो जन्म दिन से वो बातें देखी हैं कि जिनके आगे पश्चिमी स्त्रियों के दुःख ऐसे हैं जैसे पहाड़ के आगे तिनका। यदि हमने अपनी आंखों से नहीं देखा तो कानों से सुना अवश्य है कि बहुत थोड़े काल पहले हमारी जाति के साथ इतना अन्याय किया जाता था कि हमारी जान जानवरों के समान मानी जाती थी। लड़की को होते ही मार डालने अथवा छोटी २ कन्याओं को जिन्होंने आंख खोल दुनियां की ओर देखा भी न था न केवल ब्याह ही देने बल्कि उनको जीते जी पती की चिता पर भस्म कर देने के दिन अभी बहुत दूर नहीं गए हैं। पस जब हमको बड़े बड़े दुःख सहने की बान पड़ गई है तो उनके आगे तो वो छोटे २ अन्याय जिनको दूर करने के लिये स्त्रियां इतना यत्न कर रही हैं हमको बिलकुल तुच्छ दिखाई देते हैं। पर यदि विचार कर देखा जावे तो उन देशों की स्त्री जाति की दशा ऐसी सर्व सम्पन्न नहीं है जैसी साधारणतः से मालूम देती है। बहुत से दुःख व दोष ऐसे हैं कि जो मनुष्यों की उदासनिता से सुधरने में नहीं आते। अकसर यह कहा जाता है कि स्त्री मनुष्य अलग २ नहीं एक ही गाड़ी के दो पहिये हैं जिस बात में एक को लाभ है उसी

में दूसरे को है और एक की हानि से दूसरे की हानि है। एक ही शरीर के दो अंग हैं जिसमें से एक को चोट लगने से दूसरे को कष्ट पहुंचता है। ये बोल सुनने में कैसे भले लगते हैं। और हृदय पर कैसा मधुर भाव पैदा करते हैं परन्तु समाज की ओर दृष्टि डालने से इन वचनों के अनुसार काम करने वाले पुरुष देखने में नहीं आते । सृष्टिक्रम इन वाक्यों के बिलकुल विरुद्ध दिखाई पड़ता है। इस समय जो २ दुःख व बाधायें भारत की अबलाओं को दीख पड़ती हैं उनको देख कर कोई यह नहीं कह सक्ता है कि पुरुष व स्त्री दोनों का बुरा भला एक ही बात पर निर्भर है या कि स्त्री सचमुच ही पुरुष की अर्द्धांगनी है। यह हाल भारतवर्ष का ही नहीं है बरन अन्य देशों में भी अभी तक स्त्री जाति के लिये कई दुःख हैं और उनको उनके पूरे हक़ नहीं मिले हैं। उदाहरण के लिये इंगलैंड को ले लीजे तो मालूम होता है कि वर्तमान समय में वहां ६०००००० स्त्रियां ऐसी हैं कि जिन्हे स्वयं काम करके अपना पेट पालना पड़ता है। उनको इस संसार में अपने पालन पोशन के निमित्त उतने ही कष्ट व दुःख झेलने पड़ते हैं जितने मनुष्य को बल्कि मनुष्य से अधिक क्योंकि जो सुविधायें सुगमता मनुष्य के रास्ते में हैं वो स्त्रियों के लिये नहीं। ऐसी स्त्रियां जो आप कमाकर जीवन व्यतीत करती हैं किसकी अर्धाङ्गी हैं कि उन के कष्ट से किसी को कष्ट होगा। इङ्गलैड में उन ग़रीब लोगों की सहायता के लिये जिनके साथ किसी प्रकार का अन्याय किया जाता है फ़ौरन क़ानून बन जाता है परन्तु स्त्रियों के भले के लिये जो कोई क़ानून बनाने की आवश्यकता होती है तो वो वर्षों पड़ा रहता है। विलायत में पुरुषों से कानों में बहुत काम लिया जाता था सो उस की रोक के लिये तो क़ानून बन गया परन्तु स्त्रियों से कठिन काम लेकर दाम कम देने का धब्बा पुरुष समाज के माथे से अभी तक नहीं मिटा॥

तलाक़ के नियमों में जो अन्याय है वो अभी तक दूर नहीं किया गया। स्त्री को बुरी चाल का होने के कारण तलाक़ मिल जाता है और मनुष्य के लिये यह प्रमाणित करना आवश्यक होता है कि सिवा बुरी चाल के वह स्त्री से

मार पीट भी करता है। शादी के नियमों में बच्चों पर पिता का अधिकार माता से अधिक समझा जाता है। इस प्रकार की बातें हैं कि जिनके दूर करने के निमित्त स्त्री आज मनुष्य से लड़ रही हैं। हमारे सहयोगी जिनके लेखक व सम्पादक मनुष्य हैं उन सब बुरी बातों को तो बढ़ाकर लिख देते हैं कि जो थोड़ी उत्साही युवतियों से हो जाती हैं और उन कार्यों का नाम भी नहीं लिखते कि जो सैंकड़ों ललनाएं राजनीति के नियमों के अनुसार अपनी भगनियों की उन्नती के वास्ते कर रही हैं। हर समाचार पत्र में यह देख कर कि आज एक युवती ने मिस्टर चर्चहिल को चाबुक से मारने का यत्न किया और आज एक रमणी ने मिस्टर ऐसाक्विथ के मुंह पर तमाचा मारा ऐसा जान पड़ता है कि वहां की सब स्त्रियां इतनी बिगड़ गई हैं कि ऐसी अनुचित बातें करती हैं। यद्यपि वास्तव में वहां बहुत थोड़ी स्त्रियां ऐसी हैं कि जो इन बातों को अच्छा समझती हैं और जो स्त्रियां ऐसा करती भी हैं वो भी इतने धिक्कारें जाने के योग्य नहीं। उनके साथ इतना अन्याय किया गया है कि उनका क्रोध में पागल हो जाना कुछ आश्चर्य की बात नहीं। सोचने की बात है कि ६२ वर्ष से उपरांत स्त्रियों का वोट * मांगते २ हो गए जिसमें उन्होंने हज़ारों निवेदन पत्र सरकार के आगे पेश किये। २४ बार ये बिल पार्लिमेंट में पेश भी हो चुका पर अब तक किसी बात का कुछ परिणाम न निकला। तीन वर्ष हुए इन बातों को देख ३३ सभाओं में से केवल २ सभाएं गर्म दल की भी हो गई हैं। और उन्ही २ सभाओं की स्त्रियां वो बातें करती हैं कि जो आए दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित की जाती हैं। बाक़ी सब सभाएं विधि पूर्वक अपना काम किये जाती हैं। इन सब में conservative sufferage association सबसे बड़ी सभा है जिसको क़ायम हुए अभी थोड़े ही दिन हुए हैं। शुरू शुरू में इस सभा के सभासदों की संख्या १०० प्रति

---

* वोट उस हक़ (सत्व Right) को कहते हैं जिसके अनुसार सर्वसाधारण (प्रजा) राजकीय कामों के लिये अपने प्रतिनिधि चुन सकते हैं यह हक़ विलायत में सबको प्राप्त है।

दिन के हिसाब से बढ़ी थी। इससे विदित होता है कि ये आंदोलन वहां के लोगों में किस ज़ोर में फैल रही है। रुपया भी इस कार्य में दिल खोल कर ख़र्च कर रहे हैं। हमें आशा है कि कोई दिन इंगलैंड में भी ऐसा आवेगा कि स्त्रियां अपने हक़ को प्राप्त कर लेंगी। साथ ही इसके हम अपने सहयोगी पत्रों से ये प्रार्थना करती हैं कि जहां वो वोट चाहने वाली रमणियों की बुरी बातें लिखते हैं वहां कृपा कर उनकी अच्छी बातों का भी कुछ समाचार लिख दिया करें॥

माननीय श्रीयुत रोमेश चन्द्रदत्त।

हमें इस मास में बड़े शोक से श्रीयुत रोमेशचन्द्रदत्त के स्वर्गवास होने का समाचार प्रकाशित करना पड़ता है। हमारे देश में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं कि जिसने आपका नाम न सुना हो। शासन करता, राजनीतिज्ञ ग्रन्थकर्ता इत्यादि का कौन काम था जो आपने न किया। यदि एक विषय के कर्तव्य से किसी ने इनका नाम न सुना तो दूसरे से अवश्य ही सुना। प्राचीन भारत के इतिहास के शौक़िनों के निमित्त इतिहास लिखे। संस्कृत की उत्तम पुस्तकों का शुद्ध अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में किया। अपनी भाषा में उत्तम २ क़िस्से कहानियों की पुस्तकें लिखीं और सिवा इनके बहुतेरे विषयों पर छोटी बड़ी पुस्तकें लिखीं। आपने केवल लिखने पढ़ने ही का काम नहीं किया वरन और भी बहुतेरे उत्तम काम करने में समय व्यतीत किया। सब से प्रथम हिन्दोस्तानी कमिशनर बनाए जाने का गौरव आपही को प्राप्त हुआ और जिस उत्तमतासे आपने इस काम को किया वह किसी से छिपा नहीं। अब कई वर्षों से बरोंदा के दीवान बन कर सर्व साधारण के लिये बहुतेरे भले कार्य किये। जो काम देश के भले के लिये किया जाता चाहे वहसरकार की ओर से हो चाहे प्रजा की ओर से उस में आप से सहायता आवश्य ही मिलती। डीसेन्ट्रलाइज़ेशन कमिशन के मेम्बर बनकर अथवा कांग्रेस के सभापति बनकर आपने देश सेवा की! ऐसे मनुष्य के देहांत से देश में वह जगह ख़ाली हुई है कि जिसका शीघ्र भरना सम्भव नहीं॥

ऑनेब्ल मिस्टर अमीरअली ।

वर्षों से सर्कार से हमें ये शिकायत चली जाती थी कि वो हिन्दोस्तानियों को उच्च व उत्तम ओहदे देना पसंद नहीं करते। पर हम देखते हैं कि अब ये नीति बदलती जाती है और सरकार इन पदों पर भारतवासियों को रखती जाती है । गत मास में मिस्टर अमीरअली के प्रिवी कौंसल (प्रिवीकौंसिल विलायत में सबसे बड़ी क़ानूनी वह सभा है जहां बड़े मुक़दमें हिन्दुस्तान से भी आख़िरी अपील के लिये जाते हैं) में जज बनाए जाने के समाचार से सब लोग हर्षित हो रहे हैं। मिस्टर अमीरअली की जो कलकत्ते में पहले जज रह चुके हैं अथवा क़ानून के विषय पर कुछ पुस्तकें भी लिख चुके हैं योग्यता में किसी को संदेह नहीं हो सकता। इस साल के आरम्भ में माननीय मिस्टर सार्येन्द्रप्रसाद सिन्हा को गवरनर जेन्रल की एक्स क्यूटिव कौनसिल का मेम्बर बनाकर व अन्त में मिस्टर अमीर अली को प्रिवी कौंन्सल का जज बना कर सरकार ने एक बड़ी आवश्यकता को पूरा किया है और हमें आशा है कि आगे को इसी प्रकार भारतवासियों को और भी बड़े बड़े पद मिलते रहेंगे और भारत वासी जैसा कि उन्हों ने अब तक किया है अपने आप को इन ऊच्च पदवियों के योग्य दिखाते रहेंगे॥

विद्या का प्रचार।

“ विद्या बिना किसी देश की उन्नति नहीं हो सकती” ये एक ऐसा सर्व सम्मत वाक्य हो गया है कि हर मनुष्य इसे कहता व सुनता है। किन्तु देखना ये है कि कितने लोग इस को विचार कर इस पर करतव्य करने का यत्न करते हैं। कहने को तो सब ही कह देते हैं कि विद्या एक ऐसी वस्तु है कि जिस की बड़ी आवश्यक्ता है पर कितने सज्जन ऐसे हैं कि जो इस को प्राप्त करने अथवा इस के प्रचार करने में जो जो बातें उचित हैं वो सब करते हैं । न सर्व साधारण की ओर से इधर कुछ ध्यान दिया जाता है और न हमारी सरकार ही इस त्रुटि को दूर करने के लिये कुछ उद्योग करती है। हमारे देश में जहां कि तरक्की इतनी धीमी चाल से हो रही है और अज्ञान के अंधकार में डूबे हुए लोग अच्छी बातों को स्वीकार करने में इतना विलंभ करते हैं यह बहुत आवश्यक है कि पढ़ना लिखना

सिखाना बलात्कार अर्थात् कानून द्वारा ज़ोर डालकर कम्पलसरी कर दिया जावे। यदि ऐसा न किया जावे तो कम से कम इतनाही हो जावे कि लड़के लड़कियों व उन के माता पिता के उत्साह के लिये प्रारम्भिक शिक्षा विना फीस कर दी जावे। हमनेये समाचार बहुत हर्ष के साथ सुना है कि रियासत ट्रैवनकोर में ऐसा किया गया है। कैसा उत्तम होता यदि और सब रियासतें भी ऐसा ही करतीं और अंग्रेज़ी अमलदारी में भी इस बात की आज्ञा देदी जाती। हर विषय में उन्नति केवल विद्या ही से प्राप्त की जा सकती है और विद्या जाति को बनाए रखने के लिये इतनी ही आवश्यक है जितना खाना देह को बनाए रखने के लिये॥

शिल्प शिक्षा।

हमारे पाठक इस अंक में श्रीमती सावित्री देवी का एक लेख शिल्प शिक्षा पर देखेंगे। श्रीमती जी ने ऐसे विषय पर लिखना आरम्भ किया है कि जिस की हम स्त्रियों को बड़ी आवश्यकता है। हमारी भाषा में इस विषय पर एक भी पुस्तक नहीं है जिस का परिणाम यह है कि जो थोड़ी बहुत शिल्पकारी हमें सिखा दी जाती है उस से अधिक हम किसी प्रकार नहीं सीख सकते। यदि कोई नई चीज़ सीखने की इच्छा होती भी है तो उसको सीखने के लिये दूसरों का मुख ताकना होता है। अंगरेज़ी भाषा में जहां और सब कुछ है वहां यह भी है कि शिल्प विद्या के हर विषय पर सैकड़ों पुस्तकें हैं। न केवल पुस्तकें ही लिखी गई हैं वरन बहुतेरे मासिक पत्र केवल इसी विद्या के प्रचार के लिये निकाले जाते हैं और हज़ारों स्त्रियां उन को पढ़ २ नित्त नई वस्तुएं सीतीं व बनाती हैं। यह सच है कि कोई विद्या वे गुरू के सिखाए नहीं आ सकती, आरम्भ करते समय गुरू की आवश्यकता अवश्य होती है किन्तु जब थोड़ा बहुत आजाए तो पुस्तकों द्वारा (यदि उत्तम पुस्तकें मिलना सम्भव हो) मनुष्य बहुत कुछ सीख सकता है। इस कमी को पूरा करने के लिये यह लेखमाला आरम्भ किया है। सब से प्रथम उन्होंने कुरता सीने की विधि लिखी है यद्यपि कुरता सीना लगभग सब स्त्रियां जानती होंगी तथापि आरम्भ करते हुए सब से पहिले इस के सीने की विधि लिखना बहुत ही ठीक है। अब से हमारी पत्रिका में हर

महिने एक लेख इस विषय पर निकला करेगा । हमे आशा है कि वहिनें इस से लाभ उठावेंगी और जिन जिन भगनियों को जो जो उत्तम काम सिलाई बुनाई के आते हैं वे उन की विधि लिखकर हमें अनुगृहित करेंगी । हमारा विचार है कि जब ऐसे वहुत से लेख जमा हो जावें तो हम उन्हें पुस्तक की शकल में प्रकाशित करवा दें ॥

नवम्बर के अंक में हमने लिखा था कि श्रीमती जानकी बाई ने एक पुस्तक स्त्री शिक्षा पर लिखी है और उसके प्रकाशित करने का प्रवन्ध कर रही हैं । पुस्तक का मूल्य उन्होंने ।=) रखा है । परन्तु उनका विचार है कि जो भगनियां उनको मूल्य प्रथम भेजदेंगी उनको वो पुस्तक केवल ।) ही में देंगी । अभी तक उनके पास किसी ने मूल्य नहीं भेजा जिसका कारण यह मालूम होता है कि उस अंक में हमने उनका पता नहीं लिखा था । जो भगनियां पुस्तक की ग्राहिका बनना चाहें वह मूल्य निम्न लिखित पते पर भेजें ॥

श्रीमती जानकी बाई, अध्यापिका कन्या पाठशाला,
डूंगरपुर राजपूताना ।

चौपाई ।

जो तुम सुता सिखावन मानो , प्रथम कार गुजी कर जानो ।
पहिले सियो फटा पुराना , नये सिये कर करो वखाना ॥
बूढ़ापे लक शिक्षा काढ़ो , जहां तक बनै शक्ति को वाढ़ो ।

दोहा—दर्जी बहुधा कम मिलत दीने दूने दाम ॥
जोहै सोतो करत नहि मनमाने कर काम ॥ १ ॥
काम परे सिलेहुगे जो जानोगे आप ॥
मिथ्या वादी मूढ़ ज्यो गुण सीख नहि पाप ॥ २ ॥

पुनि सीखो विद्या मनलाई , जाते होइ बुद्धि अधिकाई ।
यहां तुम्हारे सकल सहायक , मात पिता भाई भौजायक ॥
तुम कह होहि ससुरपुर जाना , तह सव मिलकर देहैं ताना ।
कहि हैं यह पसु रही चरावत , नारि धर्म कछु एक न आवत ॥

जो तू पढ़ी लिखी गुनवन्ती, तो निश्चय होइही धनवन्ती।
किंचित स्वामि रहै परदेसा, लिख सकही तुम संदेसा॥
स्याम घटा लिखि एक पाती, मिलन मोर चितरन गोरुखाती।

छोटी लड़कियों की शिक्षा।

कवित्त।

सेवा में पीतम के निस दिन रहत सदां सौरभ सनेह माल सुंदर सोहायो है। सासु औ जेठानी सब सखियां सहेली कहैं जेते गुन गौरी के सो गौर ही पढ़ायो है॥ रामहर्षजी भने स्वकिया सोहाई ऐसी सौतें मन मार मार महादुख पायो है। कलधौत सरमायो याको अंग अंग भायो देख के मुखारविन्द चन्द्रमा लजायो है॥ १॥

मूर्ख स्त्रियों का नेक लक्षण।

कवित घनाक्षरी

॥ मूर्ख के लक्षण॥

पढ़े लिखे न जाने धरम कौन विधि बखाने कपट काग जाने देखो भरे भितर दरार हैं।

बात मीठी बोले दिल कि गिरह न खोलें सगर गजला गिडोलें मानो पाप के पहार हैं॥

भेख हंसा के सिधारे काम काग मारे दृष्टि व कुल में निहारे ऐसे कुल को धिकार है।

पुकारि कहै रामहर्ष वृथा जगाये मनुष्य बार २ ये नसे दुराहि सेन मसकार हैं॥

॥ दोहा॥

मूरख लक्षण तीनि हैं हठ मिजाज कुवाच॥
राम हर्ष जह देखिहौ बन्यो चतुर जह साज॥१॥

प्रार्थना।

(श्रीमती रामप्यारी इलाहाबाद)

प्रिय बहिनो, आइये पहिले हम दीनानाथ के शरण में हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें ताकि आज हम पर जो विपत्ति पड़ रही है भगवान् शीघ्र अन्त करें॥

अहो नाथ हम अति दुख पाये, शरण में तुम्हरे आये।
नैन निहारि कृपा प्रभु करियो, भारत विपति नशाये॥

उन्नति के ऊंचे चोटी पर, पहुंच पताल समाना।
वर्ष सैकड़न प्रायश्चित कर, फन्दन दुख समझाना॥

नींद अविद्या चहुं दिश छाई, हाहाकार मचायो।
प्लेग महामारी हैजा हूं, मुख बाये हा धायो॥

कुष्ट दरिद्रता तन व्यापी, भारत कम्पित कीन्हो।
स्वार्थ फूट निज दांव देखिके, चला कटारी दीन्हो॥

जा भारत कर टेर सुनत प्रभु, अगर नर तनु धारयो।
सांत्वना सब विधि प्रभु देके, भक्तन विपति संहारयो॥

वहि भारत के विपति में प्यारे, मौन कहां हो धारे।
कब बनि पुत्र आर्य माता के, खोले हो गोद मझारे॥

जेहि भारत कहँ स्वर्ग से बढ़ि के, जन्म भूमि निज मान्यो।
काहे नाथ विलम्ब लगायो; लाज न हिय में आन्यो॥

निज जन्म भूमि कर हीन दशा प्रभु, देख सकतु हो कैसे।
दीन मलीन हीन आर्यावर्त्त, दुख नाशहु हो जैसे॥

कर जोरि के दासी टेर करतु हैं, मातृभूमि गर फांसी।
आइ छोड़ावहु हे दीना निधि, नाहित तुम्हरी हाँसी॥

प्रभाती।

स्वदेश प्रेम गंग, वहे क्यों न नहाओ।

मातृभूमि तीर्थ जान पुण्य भई तपो खान,
धन्य आपि सन्तान हम, जिन जन्म हिन्द पाओ।

यशस्विनी मम अम्ब है, पुण्य शीला धन्य है,
धन्य वह नर नारि हैं जिन मातृभूमि ध्याओ ॥
उद्योग सुन्दर पुष्प है, अरु स्वार्थ त्याग दुग्ध है,
विद्या सुबुद्धि साजिके, तुम गंग कहं चढ़ाओ।
निर्मल पवित्र नीर है, सुगन्धि यश समीर है,
नित्य नित्य स्नान का, आनन्द अतुल पाओ ॥
जान्हवी सुहावनी जन्मभूमि पावनी,
आनन्द दादनि स्वर्ग तुल्य याको न प्रियभुलाओ।

जागिये प्रभात भयो सुरत अब सम्भालो।

सोवत बड़ि वेर भयो, पन्छी गन टेरि गयो,
आर्यदेवि तुम उठहु, भारत की नाव चालो।
देखहु अब तिमिर अन्त, घोर घन घटा अनन्त,
छिटक छिटक उड़ि गयो, त्यों मूर्खता भय हालो ॥
चन्द्र कान्ति मलिन हीन, नखत अब प्रभा विहीन,
उठहु बहिन शीघ्र उठ, कर्त्तव्य निज प्रति पालो।
झांकैं रवि स्वर्ण नैन, पवन करैं मन्द वैन,
महान ऋषि सन्तान तुम, उन्नति परग अब डालो ॥
अमेरिका यूरोप चीन, मार्ग उन्नति कवे लीन्ह,
पग बढ़ाके तुमहु प्रिय, भारत विपति हटालो ॥

मातृभूमि का ईश्वर से दुख कहना।

अश्रु पूर्ण नैन से, अस शोक विह्वल वैन से।
प्रशान्त मुख गम्भीरहा, सद्गुण प्रकाश मय अहा ॥
कर जोरि मा विनती करैं, प्रभु तुम बिना दुख को हरैं।
दुखड़ा प्रगट प्रभु कोहि करूं, दुःखाग्नि में निशि दिन जरूं॥
सन्तति कुपूत मम भये, अब ये बने बाबू नये।
फ़ैशन में डूबा यह रहैं, मदिरा गटकत यह रहैं ॥
फ़ूट ईर्षा आदि हा, जो लौं अधर्म है महा।
अवगुण गुलाम बनि रहे, जातीयता कहं खानि रहे ॥
पुत्री है मूर्खा गढ़े पड़ी, बेपढ़ लाज तनिकौ नहीं।
मलेरिया प्लेग दिन दिन बढ़े, चेचक व हैज़ा हैं पीछे खड़े॥

दोहा—कहं लग वर्णन मैं करूं, अन्तर भामिन् नाथ।
स्वयं नाथ तुम देखलो, दीनहिं करहु सनाथ॥

टुक देखो लीला गगन, जाज्वल्य प्रकाशित तेज़।
अग्नि लपट सम चमकि के, भयो उजेर सवेर॥

मानहु भगवन् कहि रहे, दुख तुव भारत शीघ्र।
जलद पटल वादर सरिस, नशि हैं समय नगीच्च॥

सुयश पताका गगन तक, फहरै जनि तू रोय।
अग्नि लपट वह्नि ज्योति हुव, भारत एक दिन होय॥

उन्नति के ऊंचे शिखर, भारत हो आरूढ़।
भाग्यवान् सव विधि हवै, कहैं अभागे मूढ़॥

उत्तम उपदेश।

यश अनन्त अरु पुण्य जो, चहो स्वदेशी लेहु।
नाशहु देश दरिद्रता, स्वार्थ अलग रखि देहु॥

अमृत फल यदि तुम चहहु, चाखन स्वाद महान।
स्वार्थ अलग तजि दीजियो, कूद परो मैदान॥

परोपकार मैदान में, होउ तुरन्त तैयार।
देशोन्नति कर लच्च तकि, कदमन पीछे डार॥

एक मिनट नहिं व्यर्थ हो, विनु चर्चा निज देश।
मातृभूमि उद्धार में, कमी न हो तनिलेश॥

आर्य आपिन के नाम में, वट्टा लगन न देहु।
आर्यवर्त्त गौरव सुयश, फिर से निज करलेहु॥

जिय में निज तुम सोंचलो, हम हैं आपि सन्तान।
सर्व शक्ति सम्पन्न हम, आर्यन् जाति महान॥

शक्ति विकास है निज करें, केवल जागन देर।
लाला गगन में छा गयो, चाहतु होन सवेर॥

प्रिय बहिनो अब नींद से, उठहु भयो बड़ि बेर।
तिमिर शून्य अब दिवस हो, देखौ भयो सबेर॥

देशोन्नति के कार्य में, बहिनो बनहु सुयोग।
पढ़हु लिखहु शुभ गुण सिखहु, देहु कार्य में योग॥

परोपकार महिमा।

मूरख वह जो लेवे बहिनो, अमृत छोड़ शराब।
कल्प वृक्ष खनि फेंक बहावे, कर बबूर अनुराग।

वैसे मूरख उन कहं समझो, प्रिय जिन भोग विलास।
परोपकार अमृत या फेकें, विष पर सुख कर आश।

परोपकार फल जो नर चाखें, सदा अमर हो जाय।
याहि अमृत कर महिमा बहिनो, वर्णन कियो न जाय।

जीवन अर्थ सुयश से समझो, मरेउन धीमा होय।
डूबे सूर्य किरन हूं डूबे, पन यश कबहुं न खोय।

परोपकार बढ़ि पुण्य नाहिं, स्वार्थ से बढ़ि के पाप।
देश सेवा बढ़ि धर्म नहि, समझ लो बहिनो आप।

सेवा देश के यज्ञ में, स्वार्थ आहुति देहु।
आलस मीज मिरोर के, यश अनन्त तुम लेहु।

अब भगवत करुणा करें, कि बढ़ती दिन २ होउ।
देश प्रेम कर भाव अरु, विद्या बुद्धि दोउ।

रानी दुर्गावती ।

(श्रीयुत केशवदयाल सिंह, बनारस)

मध्य भारत में गढ़मंडल नामक एक छोटा सा राज्य था। जिस समय हिमालय से ले समुद्र तक प्रत्येक राज्य दिल्ली के सब से बड़े बादशाह अकबर के आधीन थे, केवल गढ़मंडल ही उजड़े नगर में दृढ़ खम्भ की समान स्वाधीनता पूर्वक खड़ा रहा। इससे भी आश्चर्य्य जनक बात यह थी कि इस निर्भय और अटल राज्य की शासक दुर्गावती नाम की एक स्त्री थी॥

दुर्गावती कन्नोज के राजा चन्दन की पुत्री थी। यह अत्यन्त रूपवती और गुण सम्पन्ना कन्या थी, जिसकी अलौकिक शोभा का चर्चा देश देशान्तर में फैल गया था। उसका पिता उसको राजपूताने के एक वीर राजपूत को विवाह में देना चाहता था किन्तु दुर्गावती अपना मन गढ़मंडल के राजा दलपत साह को संकल्प कर चुकी थी। चन्दन ने अपनी पुत्री का पाणि दलपत को ग्रहण कराना स्वीकार न किया। इसपर दलपत ने रुष्ट हो राजा चन्दन को रणभूमि में पराजित कर अपनी प्रेम पुलकिता सहित गढ़मंडल की राह ली॥

वह कुछ काल तक प्रसन्नता पूर्वक राज करते रहे। इसी बीच में उन के एक सुन्दर बालक पैदा हुआ जिसका नाम वीरनारायण रक्खा। अभी कुमार की अवस्था तीन ही वर्ष की थी कि राजा दलपत साह ने इस असार संसार को त्याग अनन्त सुख धाम की ओर प्रस्थान किया; जिससे सम्पूर्ण प्रजा को अत्यन्त शोक हुआ। रानी दुर्गावती के अथाह शोक समुद्र की सीमा का विवेचन मनुष्य की शक्ति से परे था॥

परन्तु पतिव्रता दुर्गावती को इस दुख के अतिरिक्त अपनी प्रजा का भी ध्यान था। उसने राज्य का प्रबन्ध अपने पति ही के समान चतुरता, योग्यता और कृपालुता पूर्वक किया। यद्यपि चारों ओर अकबर की सेना से घिरी थी, तथापि उसने अहंकार और गर्व से अपने राज्य की स्वाधीनता को अचल रक्खा॥

मध्य भारत में दिल्ली के जो राज प्रतिनिधि थे वह बारम्बार गढ़मंडल पर आक्रमण करने की आज्ञा के निमित्त अकबर से प्रार्थना करते थे। परन्तु अकबर एक ऐसा पुरुष था जो सदा पराक्रम की प्रशंसा करता था। इस छोटे से राज्य के शासक की प्रशंसा उसके कान तक पहुंच चुकी थी। उस पर भली भांति विदित था कि वह सम्पूर्ण प्रजा से माता की समान पूजी जाती है। स्थान २ पर उसने सरोवर खुदवाये थे, धर्मशाला और मनोहर मन्दिर बनवा दिये थे। और अपनी प्रजा के सुख प्रसन्नता और सन्तुष्टता के निमित उसने सहस्रों उपाय किये थे। गढ़मंडल भारत के सम्पूर्ण राज्यों में सब से भली प्रकार शासन किया जाता था, प्रजा धनवान, प्रसन्न और सुखी थी और देश अपने परिश्रम और व्योपार के कारण यशवन्त और शोभायमान था॥

यद्यपि अकबर ने बारम्बार गढ़मंडल पर आक्रमण करने की प्रार्थना को अस्वीकार किया परन्तु अन्त में आसफ़खां के जो उस समय मध्य भारत के शासन पर नियत था, दृढ़ हठ पर उसे मानना ही पड़ा। एक बलवान सेना जिस का आसफ़खां स्वयं सेनापति था, गढ़मंडल की ओर राज्य को निर्दोष विधवा रानी के हाथ से छीन लेने को चली। दुर्गावती की सेना अकबर की बलवान और प्रसिद्ध फ़ौज के सामने तिनके के समान थी। यदि वह चाहता तो पहले ही गढ़मंडल उससे ले लेता। दुर्गावती को अपने छोटे राज्य की रक्षा करने का किञ्चित मात्र भी अवसर न था। दिल्ली की अगणित और बलवान सेना के सन्मुख आ लड़ाई के निमित्त प्रस्तुत होना मानो उन्मत्त विचार था और उन पर जय प्राप्त करने की इच्छा आशा के विरुद्ध आकांक्षा करने की सदृश था। दुर्गावती ने प्रतिज्ञा की और दृढ़ निश्चय किया कि "जब तक तन में एक बून्द लोहू का रहेगा अपनी स्वाधीनता के निमित्त रण क्षेत्र में लड़ूंगी, यदि अन्त में निष्फल हुई तो अपने प्राणों को भी अपनी स्वतंत्रता के साथ ही खो दूंगी। परन्तु प्राणों के तन में रहते हुए अपनी प्यारी प्रजा की पराधीनता को किसी प्रकार न देख सकूंगी"॥

उसने बहुत शीघ्र जितने मनुष्य हो सके युद्ध करने के निमित्त एकत्रित कर लिये। उसकी सेना में आठ सौ अश्वारोही और दो सौ गजारोही थे। राज्य की सम्पूर्ण प्रजा ने उसकी सहायता की। गढ़

मंडल का प्रत्येक मनुष्य जो युद्ध करने के योग्य था उसकी सेना में अपना नाम लिखाने की जल्दी करता था और अपने देश की रक्षा करने के दृढ़ निश्चय ने सब के हृदय में स्थान बना लिया था। वे अपने देश के निमित्त मृत्यु से सामना करने और मातृभूमि के हेतु प्राण प्रदान करने को प्रस्तुत थे॥

आसफ़खां को स्वप्न में भी कभी यह विचार न था कि गढ़-मंडल के समान छोटा सा राज्य ऐसी बलवान सेना एकत्रित करने की सामर्थ्य होगा। उसने रानी की सेना पर जय प्राप्त करना कुछ कठिन काम न समझा और केवल पांच सहस्र सवारों को लेकर गढ़मंडल की ओर बढ़ा। उसने विचार किया कि एक स्त्री के सेनापति होने के कारण घोर युद्ध करने की आवश्यकता न होगी। इस प्रकार अनेक भांति की कल्पना करता हुआ जब वह गढ़मंडल के निकट आया तब उसको अपनी भूल मालूम हुई। परन्तु उस समय वह क्या कर सकता था। वह किसी छल से सकुशल पीछे नहीं लौट सकता था, इस कारण उसने अपनी सेना को धावा करने का आदेश किया॥

गढ़मंडल के कोट के निकट एक घोर संग्राम हुआ जिसमें वीर राजपूत बड़ी शूरता से शाही फ़ौज पर टूट पड़े और उनको पराजित कर रणभूमि से भगा दिया और आसफ़खां स्वयम् जान बचा एक ओर को भाग गया। गढ़मंडल उत्साह जनक जय ध्वनि से परि-पूरित हो गया जो मेघों से टकराती हुई सम्पूर्ण देश में फैल गई। परन्तु दुर्गावती के हृदय में किञ्चित मात्र भी हर्ष का चिन्ह न था, क्योंकि वह जानती थी कि आसफ़खां फिर असीम सेना लेकर उसके छोटे से राज्य पर आक्रमण करेगा। उसको पूरा विश्वास था कि जब एक बार बादशाह ने गढ़मंडल को अपने राज्य में अनुबद्ध करने का निश्चय कर लिया है तो उसकी रक्षा मेरी शक्ति से परे है॥

डेढ़ ही वर्ष के बीच में एक बड़ी पृतना दिल्ली से आसफ़खां की सहायता के निमित्त भेजी गई और उसको देश पर विजय पाने रानी को राजच्युत करने और गढ़मंडल को दिल्ली राज्य का भाग बनाने की कठिन आज्ञा दी गई॥

दुर्गावती ने अपने देश की स्वतंत्रता की रक्षा में प्राण तक खो देने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। उसने फिर अपनी सेना को जमा

किया और अपने गढ़ से युद्ध करने के निमित्त आगे बढ़ी । भाग्य ने एक बार और उसकी सहायता की, आसफ़ख़ां परास्त हुआ, उसकी सेना का विध्वंस हो गया और जो कुछ बची उसको लेकर अपने प्राण बचा रणभूमि से भाग गया ॥

जब आसफ़ख़ां ने गढ़मंडल पर शक्ति से जय प्राप्त करना असम्भव जाना तब उसने अपने हृदय में छल और कपट को जगह दी । अपने गुप्त दूतों को उसके राज्य में भेजा, लोभी मनुष्यों को घूंस देकर संतुष्ट किया, अन्तरस्थ कलह को देश में फैला दिया, और नाना प्रकार के धर्म्म विरुद्ध और अन्यायी उपायों से उसकी सेना में फूट डालदी ॥

इस प्रकार जब तीसरी बार आसफ़ख़ां गढ़मंडल की ओर बढ़ा दुर्गावती ने फिर रण क्षेत्र में चलने की तय्यारी की परन्तु उस पर तुरन्त ही विदित हो गया कि उसके राज्य में आभ्यन्तर कलह फैल गई है । उसका मन टूट गया, उत्साह भंग हो गया, और आशा निराशा से बदल गई परन्तु उसने आसफ़ख़ां की आधीनता स्वीकार न की । उसको सफलता प्राप्त होने की कोई आशा न रही, किन्तु उसने पहिले ही से अपने देश की रक्षा में प्राण न्योछावर कर देने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली थी । वह थोड़ीसी सेना लेकर जो उसकी सहायता के निमित्त उद्यत थी आगे बढ़ी, अपने पुत्र कुमार वीर नारायण को भी जिसकी अवस्था उस समय केवल १४ ही वर्ष की थी अपने साथ युद्ध करने को ले लिया और उन्हीं मनुष्यों को अपने संग रक्खा जो उस के साथ प्यारी मातृभूमि की सेवा में प्राण तक अर्पण करने को प्रस्तुत थे ॥

प्रातःकाल से सूर्य्यास्त तक घोर संग्राम हुआ । वीर नारायण के प्राणघातक घाव लगा जिससे वह अचेत हो अश्व से पृथिवी पर गिर पड़ा और उसके मनुष्य उसको वहां से ले आए । जब किसी ने राज महिषी से चलने और कुमार को अन्त समय एक बार देख लेने को कहा तो उसने धैर्य्य से उत्तर दिया "नहीं मैं वहां नहीं जा सकती मेरी सेना मुझको संग्राम भूमि में न देखकर निराश हो जाएगी । यदि मेरा पुत्र काल कवर होना चाहता है तो उसे रण शय्या पर ही अपनी मातृ भूमि की सेवा में प्राण अर्पण करने दो, वीर क्षत्री की समान

अपना कर्तव्य और धर्म पालन करते हुए जीवन सफल करने दो अब उस से यहां नहीं वरन स्वर्ग में भेंट होगी ॥

घण्टों तक घोर युद्ध होता रहा दुर्गावती का एक नेत्र बाण से वेधित हुआ, उसने उसको बाहर खेंचने का उद्योग किया परंतु व्यर्थ हुआ, तथापि वह पीछे न हटी वीर सिंहनी के समान गर्व और अभिमान सहित समर करती ही रही यहां तक कि उसकी देह घावों से भर गई। जब प्रायः उसकी सम्पूर्ण सेना की नाश हो गया, केवल थोड़े से स्वामिभक्त सेवक उसके चारों ओर युद्ध करते रहे कि कहीं वैरी उसको बंदी बनाके बंधन में न डाल लें। जब उसको मालूम हो गया कि मृत्यु निकट आ गई, वैरियों ने उसे चारों ओर से घेर लिया, और उसके प्राण की रक्षा किसी प्रकार नहीं हो सकती, तब वह बिजली की समान कड़क कर वीरता से उच्च स्वर से बोली, "रे निर्लज्ज, अधम और दुराचारी आसफ़खां! तुझे पराजित, और अपमानित होकर फिर तीसरी बार रण क्षेत्र में आ मुंह दिखाते हुए लज्जा नहीं आई। अरे वीरकलंक अधर्मचारी, कुलांगार, पापात्मा! तू धर्म युद्ध में परास्त हुआ, परन्तु अब दुरात्मावीर वीरता को भंग कर, वीर धर्म को पावों से कुचल और कपट छल से मुझे सेना रहित कर अन्याय युद्ध में प्रवृत हुआ हैं। रे अन्याई! याद रखना कि वीर क्षत्री की सन्तान अपने प्राणों का भय नहीं करती, अपने देश की स्वतंत्रता की रक्षा के निमित्त प्राण न्योछावर करने को हर समय उद्यत रहती हैं"। ऐसा कह एक बार उसने रण क्षेत्र के चारों ओर दृष्टपान किया, एक बार और पीछे फिर कर गढ़मंडल की ओर देखा और पूर्व इसके कि कोई उसके निर्णय का अनुभव कर सके उसने अपने कटार मार कर आत्मघात करली।

यह कहा जाता है कि उसका एक स्वामिभक्त सेवक उसके मृतक शरीर को संग्राम भूमि से बाहर ले आया कि वह यवनों के स्पर्श से अमेध्यतिन हो। रणभूमि से वह गढ़मंडल में लाई गई और वहां सन्मान पूर्वक उसका अन्तिम दाह क्रिया की गई॥

दम्पति प्रेम।

(श्रीमती श्री वासन्ती, बांदा)

यदि ध्यान पूर्वक विचार किया जावे तो मन मिलना ही दम्पति प्रेम की अद्वतीय सामग्री है। मन न मिलने से स्वर्ग समान पति पत्नी का सुख नरक की परम पीड़ा से भी अधिक क्लेश दायक हो जाता है। हमारे देश में जिस रीति से विवाह होता है उसमें अधिक तर पुरुष ही पढ़े लिखे और शिक्षित होते हैं, ऐसी दशा में पति की आज्ञानुसार कार्य करना स्त्री का मुख्य कर्म है, परन्तु आज कल प्रायः स्त्रियां इसके प्रतिकूल देखी जाती हैं। जहां तक अनुमान किया जाता है इसका सबब स्त्री समाज में शिक्षा की कमी ही मालूम होती है। जिस स्त्री का पति ऐसा खोटा काम करे कि जिसकी सब निन्दा करते हों तो वह स्त्री अपनी शक्ति भर विनय पूर्वक समझाकर पति को सत्मार्ग में लाने का उद्योग करे ऐसे समय में तेज़ी की अपेक्षा नरमी अधिक सफलता देती है। अभिमान की अपेक्षा सरलता अधिक काम को साधती है। तीखी तलवार की अपेक्षा आंसुओं की बूंदें मर्म स्थान पर अधिक असर करती हैं। स्वामी दुश्चरित्र कुकर्मी वा कठोर भाषी हो तौभी उनको अपनी युक्ति से सच्चरित्र सदाचारि मधुरभाषी बनाने की कोशिश करनी चाहिये। खोटे प्रारब्ध से यदि किसी स्त्री का पति नासमझ हो तो उसको सुमार्ग पर लाने के लिये सब प्रकार उद्योग करना स्त्री का मुख्य कर्म है, और लोग बहुत समय तक यत्न करने पर भी जिस दुश्चरित्र पुरुष को सत्मार्ग पर नहीं ला सकते चतुर स्त्री थोड़े ही दिनों में भीतरी यत्न के साथ चेष्टा करके सहज में ही पति को सुमार्ग पर ला सकती है। कितनी ही नासमझ स्त्रियां अपने कठोर वर्ताव से पतिं को वस में करना चाहती हैं, यह कर्कशा स्त्री का एक प्रत्यक्ष लक्षण है। इसका विषैला फल जल्द आगे आ जाता है। ऐसी स्त्रियों के घर से नित्य का कलह कभी दूर नहीं होता और उनसे सब कुटुम्बी अनमिल रहते हैं और भीतर से घृणा करने लगते हैं। ऐसी स्त्री का कभी शिक्षित समाज में आदर नहीं होता तथा कुटुम्ब की और छोटी स्त्रियां भी देखा देखी

कर्कशा हो जाती हैं। इस सबब से वह गृहस्थ परम कष्ट में पड़ जाता है। यदि किसी विषय में स्वामी से मन का विचार न मिले तो पहिले ध्यान देकर पति के विचार को नम्रता के साथ सुने अगर वह ठीक हो तो स्त्री अपना भी वैसा ही विचार रक्खे, तब मनोर्थ सहज ही में पूरा हो जायगा। ऐसे वर्ताव से प्रेम की जड़ मज़बूत होती है और दोनों का प्रेम परस्पर बढ़ता चला जाता है। यदि पति स्त्री की बात पर ध्यान न दें तब भी एक साथ आशा न छोड़ना चाहिये, अवसर पाकर उनकी प्रसन्नता के समय कोमल और मीठी बातों में उनको हर एक प्रकार से ऊंच नीच विचारने की प्रार्थना करनी उचित है। अवश्य ही वह ध्यान देकर विचार करेंगे। ऐसा पत्थर की छाती-वाला कोई नहीं हो सकता कि जो प्राण प्यारी का दुखित मुख मंडल व डबडबाते हुए विशाल नेत्रों को देख और कोमल मीठे वचनों को सुनकर अपने आंसुओं को रोक सके और सरलचित्त को दुखा-कर अपने कर्कशपन को दिखा सके। स्त्री का और एक नाम सह-धर्मिणी है। पति और स्त्री मिलकर संसार के धर्मों का निर्वाह करें, दोनों मिलकर भले बुरे कामों का फल भोगें आपस में पाप पुण्य को बांट लें, इसलिये ही स्त्री का नाम सहधार्मिणी है। यहां धर्म शब्द का अर्थ केवल याग, यज्ञ, व्रत, नियम, गङ्गास्नान आदि का अनुष्ठान ही नहीं है, किन्तु संसार में जितने भर कर्त्तव्य कार्य्य हैं, उन सब को ही स्त्री पुरुष मिलकर करें। दोनों आपस में सम्पति और शारीरिक मानसिक सब प्रकार की सहायता करें। जैसे वृक्ष की छाया वृक्ष को छोड़कर दूर नहीं जाती है वैसे ही पतिव्रता स्त्री को स्वामी का आश्रय लेना चाहिये। पतिव्रता स्त्री को स्वतन्त्र किसी अवस्था में रहना न चाहिये क्योंकि हमारे शास्त्रकारों ने कहा है कि बाल अवस्था में पिता की आज्ञा पालनी चाहिये, तरुण अवस्था में पति की आज्ञा पालनी चाहिये और वृद्ध अवस्था में पुत्र की आज्ञा के विपरीत न चलना चाहिये। सत्कार्य में पति को बन्धु की समान सम्मति दे और दासी के समान उसका आज्ञा पालन करे। पति को सत्कार्य का उत्साह दिलाने की जैसी शक्ति स्त्री में है वैसी और किसी में नहीं है,

इसालिये हमें उचित है कि कपट रूपी अङ्कुर कभी हृदय में न जमने दें सदा प्रसन्न चित्त रहें और स्वामी की प्रसन्नता जिसमें हो सदा उसी कार्य में तत्पर रहें। इसी में स्त्री का एहिक और पारलौकिक सुख है किसी कवि ने कहा है-

दोहा—पय परि वारि विकाय देखहु प्रीति की रीति भल।
विलग होत रस जाय कपट लटाई परत ही॥

गुम नाम चिट्ठी।

(गिरिजा कुमार घोष, इलाहावाद)

राम सुन्दर के व्याह हुए आज लगभग दो वर्ष हो गए हैं, पर हाय करम ! अभी तक एकवार भी उसके भाग में ससुराल जाने की वारी नहीं आई। जव वह बी. ए. क्लास में पढ़ता था तव उसकी शादी हुई थी और इमातिहान के दिन पास आ पहुंचे थे इसलिये झट-पट विवाह के झगड़ों से निवटकर वह भाग आया था। फिर विवाह हो जाने के वाद ही उसके ससुर वाल वच्चों के साथ नौकरी पर इलाहावाद को लौट गये। होली के दिनों में दामाद को ससुराल से न्योता आया पर उस साल प्लेग महाराज ने पश्चिमोत्तर देश में अपना डेरा जमाया था। समाचार पत्रों में सव हाल पढ़ पढ़कर राम सुन्दर के पिता ने लड़के को ससुराल न जाने दिया। फिर और भी एक मौके पर रामसुन्दर को वुलाया पर खोटे भाग्यों के फेर से रामसुन्दर को वुख़ार आ गया और इस वार भी वेचारे को मन मसोसकर रह जाना पड़ा। होली के दिन फिर आ पहुंचे और इस साल कहीं किसी वीमारी का डर नहीं था। इस वार रामसुन्दर की आशा रूपी लताओं में फ़ूल ज़रूर खिलेंगे। वह स्टेशन जाकर एक टाइम टेवल मोल ले आया, और यह उसके लिये वेद, गीता, कुरान, पुरान, सव का सार हो गया। वह दिन रात उसे पढ़ने लगा। और मन में सोचने लगा कि रात को दस वजे हुगली से गाड़ी पर चढ़ूंगा। वक्त से पहिले स्टेशन पर इतने वजे पहुंच जाऊंगा इलाहावाद एक

तार भेजना होगा। फिर गाड़ी में चढ़कर ऊपर के बड्क पर बिस्तर बिछाकर पड़ रहूंगा। भला नींद आवेगी गरमियों के दिन रेल की सवारी में रात को बड़ा मज़ा मिलता है। कैसी सुन्दर ठंडी ठंडी हवा चलती है तिस पर रात चांदनी हो तो फिर क्या कहना। मोग़ल सराय पहुंचकर सवेरा होगा। तब एक प्याला गरम २ चाय! अहा! कैसा आराम मिलेगा फिर ग्यारह बजते २ इलाहाबाद"—इसी तरह मसालों को इकट्ठाकर करके रामसुन्दर बावर्ची ख़याली पुलाव पकाने लगा। पर हरे हरे! इस बार भी सब मामला फिस हो गया। जाने से कई दिन पहिले रामसुन्दर की मा को बड़ी ज़ोर से बुख़ार आने लगा। भला वह ससुराल कैसे जाता। हम रामसुन्दर के साथ बेइनसाफ़ी नहीं करेंगे उसने कभी यह नहीं सोचा था कि मेरे चले जाने के बाद माता को बुख़ार क्यों न चढ़ा या मेरे जाने की तारीख़ कुछ और पहिले क्यों न ठहराई गई। वह जी जान से मातृ देवी की सेवा करने लगा। ससुराल न जा सकने का दारुण दुःख एक पल भर के लिये भी उसके मन में नहीं ठहरने पाया। माता अच्छी हो गई, रामसुन्दर क़ानून पढ़ रहा था कालेज खुलते ही तान तो बड़ा बांधकर वह फिर कलकत्ते चला गया॥

साथ के पढ़नेवाले मित्रों ने छुट्टियों के बीतने पर ससुराल से लौटकर वहां की कहानियां छेड़ दीं। रामसुन्दर उनकी बातों में अपनी राय कुछ भी नहीं दे सका। बीच बीच मे हंसी की तीरें उसके सिर पर आ आकर गिरने लगीं। वह बेचारा मुंह सुखाकर बड़े ध्यान से चोखी नोक से पेन्सिल पर अपने नाम का पहिला अक्षर खोदखोद कर समय बिताने लगा॥

इसी साल रामसुन्दर का क़ानून का इमतिहान था, दुर्गापूजा की छुट्टियों में पहिले उसने घर लिख भेजा था कि परीक्षा के दिन पास आ पहुंचे पढ़ाई बहुत है इस बार मैं घर नहीं आऊंगा। उसकी माता ने पहिले इस को नहीं माना पर उनकी बात न चली। छुट्टियों में रामसुन्दर के "मेस" (जहां बहुत से लोग एक साथ रहा करते हैं, कुछ कुछ बोर्डिङ्ग हौस की तरह) के सब लोग अपने अपने घरों को चले गए। वह अकेला वहां रहकर इमतिहान के लिये पढ़ने लगा॥

दो चार दिन इसी भांति वीत गए। एक दिन वड़े तड़के जागने पर विछौने पर लेटे ही लेटे अचानक उसको ये ख़याल आया कि क्या इसी वीच में एक वार इलाहावाद की सैर न कर आवें! कुछ हर्ज थोड़ा ही है! वस, उस दिन सवेरे पढ़ना लिखना सव वंद हो गया। सिर्फ़ 'जाऊं या न जाऊं' इसी सोंच में वह डूवा रहा। अन्त में जाने ही की राय वहाल रही। भोजन के पीछे वाज़ार जाकर अपनी स्त्री के लिये भांति भांति के सावुन, कंघी, खुशवूदार तेल, वेल वूटे छपे हुए चिट्ठी लिखने के काग़ज़ और लिफ़ाफ़े, दो एक कहानी और कविताओं की पुस्तकें, और भी वहुत सी चीज़ें जिनके नाम इस वक्त मुझे याद नहीं पड़ते—उसने मोल लीं, फिर सन्ध्या के समय हावड़ा के स्टेशन पर पहुंच कर इलाहावाद जाने वाली डाक गाड़ी पर जा वैठा जाने से पहले तार भेज दिया। राम सुन्दर इलाहावाद पहुंच गया। उसके ससुर प्राणों से भी प्यारे अपने दामाद को लेने के लिये आप स्टेशन पर गए थे। राम सुन्दर के ससुर का नाम निमाई वावू था। पहिले के लोग अपने नामों को वड़ी अद्भुत रीति से अंगरेज़ी में लिखा करते थे। यह भी अपना नाम Nemye Loll लिखा करते थे। आपने लड़कपन में मिशन स्कूल में पढ़ा था। मिज़ाज आपका अभी तक साहवी ढ़ंग का था। स्टेशन पर गाड़ी से उतर कर रामसुन्दर हैट कोट पहरे हुए अपने ससुर को पहले एकाएक नहीं पहचान सका। व्याह की रात को उसने उनको रामनामा ओढ़ कर कन्या दान करते देखा था! फिर पहचान लेने पर जव वह उनको प्रणाम करने लगा तो उन्होंने उसे रोक कर उससे हात मिलाया। निमाई वावू अङ्गरेज़ी खाने के वड़े तरफ़-दार थे। मोग़लखाने की ओर भी उनकी चाह कुछ कम नहीं थी। पर उनकी अंगरेज़ियत उन्हीं के मित्र दोस्तों तक थी। ज़नाने में स्त्रियों के वीच में नहीं घुसने पाती। वहां आप जव तक रहते थे भकुआ से वने रहते थे॥

नए ससुराल में आकर रामसुन्दर के दिन वड़े मज़े में वीतने लगे उसकी स्त्री का कोई अपना भाई या वहिन नहीं था। पर चचेरी फुफेरी दो तीन सालियों ने दिन भर उसको अपना खिलाना वना

लिया। इन तीनों में से बड़ी का अभी हाल ही में व्याह हुआ था और छोटी दोनों सालियों में से एक के दूध के दांत अभी टूटने शुरू हुए थे। दूसरी के सिर पर एक भी वाल नहीं था। सख्त बीमारी से उसकी ये दुर्दशा हो गई थी। इस लिये बहनोई की ख़ातिरदारी उसके साथ हंसी ठट्ठा करने का पूरा बोझ तीनों में से सब से बड़ी जिसका अभी ब्याह हो चुका था उसी पर आ पड़ा। उसने अपनी दोनों छोटी बहनों के साथ मिल कर एक पलटन खड़ी कर ली और रात दिन रामसुन्दर रूपी क़िले पर धावा मारने की ताक में लगी रहती। पान के भीतर सुपारी के बदले कोयले डाल कर, पानी के गिलास में नमक मिला कर, लाल रंग घोल कर पीने के लिये चाय बनाकर, रूमाल के कोने में बंधी हुई बक्स की चाबी चुराकर यहां तक कि कभी कभी जूतों में से एक को छिपा कर उसने रामसुन्दर के नाक में दम कर दिया॥

निदान इस तरह तंग होकर बदला लेने के लिये रामसुन्दर के सिर में चक्कर आने लगा। इस लड़की को घर के लोग पहले "डेमी" के नाम से पुकारा करते थे। परन्तु व्याह के पीछे वह अचानक श्यामकुमारी हो गई थी। और घर वाले इसे श्यामकुमारी कह कर पुकार ने लगे थे। रामसुन्दर को इस बात का पता लग गया। बस, उसने उसे "डेमी" के नाम से पुकारा और ऐसा ओछा नाम बहनोई के मुख से सुनते ही उस के ओठ फूल उठे। अब कौन छोड़ता है। रामसुन्दर जब उसे देखता डेमी कहा करता। इस से उस दांत टूटी छोटी लड़की को बिसुरी हुई पुरानी बात याद आ गई। वह दोनो हाथ उठा कर " डेमी डेम डेमी " कह कह कर बड़े ज़ोर से उछलने लगी। शास्त्र में लिखा है " कण्टके नैव कण्टकम् " पैर में कांटा गड़ जाय तो उसे दूसरे कांटे से निकाल लो। इस नीति को सफल होते देख कर रामसुन्दर मन ही मन में खूब हंसने लगा। श्यामकुमारी नें पहले स्त्रियों की इजलास में इस बात पर नालिश की परन्तु वहां के जजों ने हंसकर मुक़द्दमा डिसमिस कर दिया। इससे बेचारी का अभिमान बहुत बढ़ गया और वो रोदी तब रामसुन्दर शरमा गया॥

उस दिन तो यहीं तक रहा। पर फिर इसी नाटक की लीला छिड़ी। डेमी ने ज़नानी अदालत में नालिश करनी छोड़ दी। उसने कुछ दिन पहले एक किताब में पढ़ा था कि कोई आदमी ससुराल जाने के बहाने विलायत को भाग गया था। उसके मा बाप को जब मालूम हुआ तब उसे गिरफ़तार करा कर घर लौटाया। बस, डेमी ने भी बहनोई को तंग करने की युगत मन में सोंचली और चट एक कागज़ पर लिखा—

"तुम्हारा लड़का विलायत जाने के लिये तैय्यार है। होशियार !"

इस कागज़ को लिफ़ाफ़े में बन्द करके, रामसुन्दर के पिता का पता उस पर लिख कर, उसने उसे टहलनी के हाथ डाकख़ाने को भिजवा दिया। चिट्ठी तीसरे दिन दस बजे रामसुन्दर के बाप के हाथों में जा पहुंची।

रामसुन्दर के पिता का नाम बाबू हरिवल्लभ था बाबू साहब न तो निरा पुरानी चाल के थे न निरा नई फ़ैशन के, थोड़ी सी अंगरेज़ी जानते थे। उम्र साठ पैंसठ बरस की थी। वह पहिले किसी नील की कोठी में नौकर थे सुनने में आता है कि वहां उनको "चार पैसे" की अच्छी आमदनी थी। इन "चार पैसों" के मामले में नौकरी में कुछ गड़बड़ हो जाने पर नौकरी छोड़ कर अब घर ही पर रहा करते थे। बाप दादा की और अपनी कमाई हुई ज़मींदारी से जो कुछ आमदनी होती थी उससे गृहस्थी का ख़र्च अच्छी तरह चल जाता था और "प्रामिसरी नोटों" की गिनती हर साल बढ़ती ही जाती थी॥

बाबू हरिवल्लभ बैठक में बैठे हुए अपने किसी दोस्त की लड़की के व्याह के लिये चीज़ों की फ़ेहरिस्त बना रहे थे। इतने में वह चिट्ठी आ पहुंची। खोल कर पढ़ते ही उनके सिर पर बिजली सी टूट पड़ी जाकर अपनी घर वाली से यह बात कही, वह सुनते ही रोने लगी देखते देखते मुहल्ले भर में इसकी चर्चा फैल गई। पड़ौसी दोस्त अपने पराये बहुत से लोग आ पहुंचे। सब लोग बुढ़ऊ को सलाह देने लगे अब आप देर न कीजिये तुरन्त कलकत्ते जाकर जिससे लड़का हाथ से निकल न जावे इसका बन्दोबस्त कीजिये। बस तुरन्त पालकी

बुलाने के लिये नौकर दौड़ा आधे घंटे में सब सामान ठीक ठाक हो गया रामसुन्दर के पिता वेनहाए घोष बिना खाये पिये जैसे थे वैसे ही घर से निकलने पर तैय्यार हो गये। पर सब लोगों ने उनको ऐसी दशा में न जाने दिया ज्यों त्यों कर कुछ थोड़ा सा अन्न जल करके हरिवल्लभ बाबू आंखों में आंसू भर कर बड़े भक्ति भाव से ईश्वर के चरणों में विनती करते हुए कलकत्ते को चले। घरवाली ने कहा कालीमाई की कृपा से लड़का अभी विलायत न चला गया हो तो जैसे बने उसी तरह उसे घर लिवा लाना। मुई अंगरेज़ी पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं है ब्राह्मन का लड़का है ठाकुर जी की पूजा ही करके पेट भर लेगा॥

हरिवल्लभ बाबू कलकत्ता पहुंचकर रामसुन्दर के मकान पर आये। देखा दरवाज़े पर ताला लगा है, पास एक मुसलमान दूकानदार रहता था उसने कहा छुट्टी के सबब से सब बाबू लोग घर चले गये हैं। एक बाबू साहब पिछड़ गये थे, सो वो भी आज कई दिनों से नहीं दिखाई पड़ते। बूढ़े हरिवल्लभ की दोनों आंखें आंसू से भर आई लड़का विलायत चला गया है इस बात का अब कुछ भी शक नहीं रहा। इस बात को उन्होंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। इतने दिन कलेजे का लोहू टपका टपकाकर उसे पाला पोपा अब बुढ़ापे के वक्त कलेजे में चोट मारकर वह विलायत चला गया जो कभी लौट भी आवेगा तो ज़ात से निकाला जावेगा, समाज से अलग हो जावेगा, उसे घर में रखही नहीं सकेंगे। पिंडा पड़ाने तक का अधिकार उसको न रहेगा, धोबी के कुत्ते की तरह न घर का होगा न घाट का। कौन जाने, कहीं किसी मेम ही को न व्याह लावे। कई लोगों ने ऐसा किया है। यह सब अंगरेज़ी पढ़ने ही का फल है वह सोचने लगे कि जब रामसुन्दर ने एन्ट्रेन्स पास कर लिया था तब एक देहाती स्कूल की मास्टरी उसको मिल रही थी, जो तब उसे नौकरी ही में लगा देते तो कलकत्ते आकर कुसंग में पड़कर लड़का इतना बिगड़ न जाता। मकान के दरवाज़े पर जो दोनों ओर दो पक्की बैठकें बनी रहती हैं, उन्हीं में से एक पर बैठे बैठे बड़े दुख से बुढ़ऊ राम आंसू

वहा रहे थे। देखते २ सांझ हो आई। तब उठकर धीरे २ पैर उठाकर रात को कहीं पड़ रहने की जगह ढूंडने लगे। उनके लड़कपन के मित्र बाबू जीवनकृष्ण हाईकोर्ट में वकालत करते थे। उन्हीं के यहां चले बहुत दिनों पीछे दोनों मित्रों से भेंट हुई। कुशलक्षेम पूंछने पांछने के पीछे बाबू हरिवल्लभ ने अपने भारी दुखड़े की सारी रामकहानी कह सुनाइ। सब सुनकर जीवनकृष्ण बाबू थोड़ी देर तक चुपचाप सोंचने लगे। फिर पूंछा—"अच्छा विलायत को तो गया, पर रुपये कहां से मिले?" हरिवल्लभ ने कहा, "रुपये कहां से मिले यह मेरी समझ में भी नहीं आता"। जीवन बाबू ने कहा, "विलायत का जाना कुछ सहज बात नहीं है। बहुत रुपयों की ज़रूरत होती है। फिर गया है तो पढ़ने के लिये गया है। उसका ख़र्च कौन देगा"? इस बात को सुनकर बाबू हरिवल्लभ को कुछ थोड़ा सा ढाढ़स मिला। तब वह सोंचने लगे, इस मामले में ज़रूर कुछ न कुछ गड़बड़ है। जेब में से गुमनाम चिट्ठी को निकाल कर जीवन बाबू के हाथ में दिया। जीवन बाबू ने चिट्ठी को मेज़ पर रखकर दराज़ में से चश्मा निकाला। बत्ती को कुछ ऊंचा करके चश्मे को साबर के चमड़े से अच्छी तरह रगड़ लिया। फिर वकीली ढंग पर चेहरे को भारी बना कर बड़ी सावधानी से चिट्ठी को पढ़ने लगे। पूंछा—"यह किसका लिखा हुआ है? तुम इसका कुछ अन्दाज़ कर सकते हो? यह ज़रूर बांएं हाथ से लिखा गया है"। हरिवल्लभ ने नहीं कहने के बदले अपना सिर हिला दिया। थोड़ी देर और भी बीत गई। तब जीवन बाबू ने पूंछा "लड़के की शादी इलाहाबाद में की थी न" हरिवल्लभ ने कहा "हां क्यों क्या हुआ है"। जीवनबाबू ने कहा, "चिट्ठी इलाहाबाद से चली है। यह देखो इलाहाबाद की मोहर लगी है,,॥

हरिवल्लभ बाबू बड़े आग्रह से बोल उठे, "तब वह ज़रूर इलाहाबाद गया है"॥

जीवन बाबू ने भवों को सकोडकर कहा, "सुनो। हो न हो यह चिट्ठी बिलकुल झूठी है। किसी ने नटखटी की है। पर तब भी

रामसुन्दर अचानक घर छोड़कर कहां चला गया यह बात समझ में नहीं आती यह भी हो सकता है कि वो विलायत जाने के लिये सचमुच तैय्यार है। चिट्ठी लिखकर अपनी वहू को खबर भेज दी होगी या इस वक्त वह इलाहाबाद ही में डटा हुआ है॥"

हरिवल्लभ बाबू ने कहा "तब इलाहाबाद को एक तार न दे दें जिससे वह जाने न पावे"। जीवन बाबू ने कहा "पहिले मालूम होना चाहिये कि वह वहां है या नहीं।" हरिवल्लभ बाबू ने भी इसी बात को मान लिया। कहा "वहां होगा तो फिर तार ही से उसका विलायत को जाना रोक दिया जायगा। और कल की डाक गाड़ी से मैं आप ही इलाहाबाद जाकर लड़के को लिवा लाऊंगा॥"

तुरन्त निमाई बाबू के नाम अर्जेंट तार गया, "रामसुन्दर वह है या नहीं और कैसा है ?"

जीवन बाबू ने कहा, "जो वह सचमुच विलायत जाना चाहता है तो रास्ते के बीचों बीच में इलाहाबाद है, वहां बिना ठहरे नहीं जावेगा। जो तार जाने के पहिले ही चल दिया हो तो उसके पढ़ने का खर्च तुमको देना पड़ेगा। किसमत में हुआ तो लौंडा आदमी बनके लौटेगा॥"

इस वक्त रात के नौ बज चुके थे। जीवन बाबू के बारबार कहने पर हरिवल्लभ बाबू मुंह हाथ धोकर सन्ध्या वन्दन आदि में लगे॥

भोजन समाप्ति होते होते ग्यारह बजगए। तब एक तार आया— "रामसुन्दर यहां है, अच्छा है॥"

इस समाचार को सुनकर बूढ़े हरिवल्लभ की आंखों से मारे आनन्द के आंसुओं की धारा बहने लगी जीवनबाबू के दोनों हाथों को थामकर कहने लगे "भाई तुमने आज फिर मुझको जिला दिया। आज तुमने मेरा जो उपकार किया है उसे मैं जन्म भर नहीं भूलूंगा ईश्वर की कृपा से तुम सदा फलते फूलते रहो॥"

जीवनबाबू ने हंसकर कहा "मैंने तुम्हारा क्या उपकार किया है!" हरिवल्लभबाबू ने कहा, "खूब! तुम सलाह न देते तो मुझ देहाती के सिर में इतनी अक्ल भला कभी आती॥"

तुरन्त दूसरा तार रवाना हुआ "रामसुन्दर विलायत जाने को तैय्यार है। उसे रोक रखना, मैं आता हूं" इस के पीछे दोनों मित्र एक दूसरे से विदा होकर अपने अपने विछौनों पर गए परन्तु कर कुरा के मारे हरिवल्लभ को रात भर निद्रा नहीं आई॥

दूसरे दिन के सवेरे वड़ा ही अच्छा मौसम इलाहावाद शहर में था। पिछले दिन का वादल पानी विलकुल हट गया। रामसुन्दर वड़े तड़के उठकर घूमने गया था। अब घर लौट आया है। कोई सात बजे होंगे। वैठक में घुसते ही देखा ससुरजी महाराज चाय पी कर आराम कुरसी पर वैठे हुए चुरट सेवा कर रहे हैं; हाथ में एक अख़वार है।

रामसुन्दर उन के पास की एक कुरसी पर जा वैठा। दामाद को देखकर निमाई वावू ने अख़वार को मेज़ पर रख दिया। आंखों से लगे हुए चशमे को ठीक करके, चुरट को दांतों में दवाकर अंगरेज़ी भाषा में वोले,—"तुम विलायत जाना चाहते हो? वहुत ही अच्छी वात है"॥

रामसुन्दर को यह वात कुछ भी न समझ पड़ी। वह वेवकूफ़ों की तरह ताकने लगा॥

निमाई वावू अपने दामाद की भावी पदवी और मानमर्यादा की चिन्ता करते हुए आनन्द से खिलने लगे और मन का वाग डोर हाथ से छुट जाने से उन के मुख से लगातार अंगरेज़ी भाषा की वौछार निकलने लगी। जहां तक हो सके उस का सारांश हम आप के पास देशी भाषा ही में कहते हैं॥

दामाद को चुपचाप देखकर निमाई वावू कहने लगे "मुझ से क्यों छुपाते हो? मुझे सव वातें मालूम हो गई हैं। तुम विलायत जाना चाहते हो, इस से मैं तुम से वहुत खुश हूं। ख़र्चे का क्या वन्दोवस्त किया है मैं नहीं जानता। हो न हो तुम ने सोचा है कि विलायत जाकर पिता को तार भेजोगे और रुपया विना भेजे उन से नहीं रहा जायगा। और वहुतों ने भी ऐसा किया है तुम्हारे वाप

आफ़त में फंसकर तुम्हें रुपये भेजेंगे यह ठीक है , पर तुम्हारे वर्ताव से उन को बड़ा भारी दुःख पहुंचेगा । उनको नाराज़ करने से क्या होगा । चलो, मैं ही तुम्हारे सारे खर्च का बोझा अपने ऊपर लेता हूं । "

इन सब बातों को सुनकर रामसुन्दर तो हक्का बक्का हो गया । ज़मीन आसमान उस की समझ में कुछ भी न आया । पहले सोचा , ससुर हंसी कर रहे हैं । पर ध्यान देकर देखा तो उन के चेहरे या उनके बोलचाल के ढंग में हंसी का भाव रत्ती भर भी नहीं देख पड़ा । उस के समझ में न आया कि जवाब क्या दे पर निमाई बाबू ने उत्तर के लिये न ठहर कर कहा ॥

"मैं जानता हूं कि तुम लोग नई फ़ेशन के लड़के ससुर का रुपया लेना अच्छा नहीं समझते, पर हम लोगों के दिनों में ऐसा न था । मेरे ससुर ही ने मुझ को खिला पिला कर, लिखना पढ़ना सिखला कर , नौकरी भी लगवा दी थी । वे न होते तो भला मेरा कहीं पता भी लगता ? मेरी इकलौती बेटी है । मेरे पास जो कुछ है सो तुम्हारा ही है । तुम अपना ही रुपया विलायत में खर्च करोगे । आज कल बहुत बुरे दिन आए हैं हिन्दुस्तान में रहकर कोई कुछ नहीं कर सकता । सो मन में तुम किसी बात का सोच मत करो" ॥

तब रामसुन्दर ने सोचा —" वाह यह तो बड़ी मज़े की बात देख पड़ती है । ससुर की सहायता से ज कोई बैठे बिठाए धन्ना सेठ बन सके और ऐसा अवसर हाथ से जाने दे ऐसा बेवकूफ़ कौन है ।" फिर साहस कर के मुंह खोलकर बड़ी गम्भीरता से कहने लगा ॥

"मैं विलायत जाना चाहता हूं यह बात आप को कैसे मालूम हुई" निमाई बाबू ने जेब से दोनों तारों को निकालकर हंसते हंसते रामसुन्दर के हाथ में दे दिया । रामसुन्दर ने उन को पढ़कर मन में सोचा हो न हो किसी काम से कलकत्ते आये थे । वहां मुझे न देख कर पूछ पांछ की होगी , किसी ने दिल्लगी से यही बात सुझा दी है । बचपन ही से मेरी चाह विलायत जाने की है; यह उन को भी

मालूम है, और इसी से इस बात को भी उन्होंने सच समझ लिया है। जो कुछ हो वह मुझे पकड़ने के लिये आते हैं। अब देर करनी ठीक नहीं है!" ससुर से पूछा॥

"पिता जी ख़फ़ा हो जायंगे, माता रोवेंगी, ऐसी दशा में मुझे क्या करना चाहिये॥

निमाई बाबू ने कुछ तेज़ी से कहा, "कौन से पिता किस लड़के पर ख़फ़ा नहीं होते? और रोना तो स्त्रियों का स्वभाव ही है। तुम्हारे पिता जब यहां आवेंगे तब मैं उनको अच्छी तरह समझा लूंगा। मैं कहूंगा कि मैंने ही तुमको भेजा है तुम्हारा इसमें कुछ भी दोष नहीं है। वरु, तुम पहले राज़ी नहीं होते थे। और उनके साथ में बिटिया को बिदा कर दूंगा। तुम्हारी मा वहू को पाकर तुम्हारा बिछोह बहुत कुछ भूल जावेंगी। जब तुम समझते हो कि यह काम बुरा नहीं है और इसका होनेवाला फल सब तरह से अच्छा ही होगा तब एक आध छोटी मोटी बात के लिये काम में चूकना निरा बेवकूफ़ी है।" यों कह कर, थोड़ी सी मुसक्यान की भूमिका डालकर बोले,—"और तुम्हारे ऊपर तुम्हारे उन पिता से मेरा अधिकार बहुत ज़्यादा है, क्योंकि मैं हूं तुम्हारा फ़ादर इनला—क़ानून की राय से मैं ही तुम्हारा पिता हूं"। यों कह कर "ओह—हो—हो"—करते हुए बड़े ज़ोर से हंसने लगे और बुझे हुए चुरट को फिर सुलगा कर धूआ पीने लगे॥

उस दिन तीसरे पहर दो तीन घंटे तक ससुर के साथ दुकानों दुकानों में घूम कर राम सुन्दर ने विलायती पोशाक और और ज़रूरत की चीज़ें मोल ले लीं। सन्ध्या के बाद एक मुलाक़ाती साहब बारिस्टर के पास निमाई बाबू उसे ले गए। उनके पास से विलायत में रहने के बारे में तरह तरह के उपदेश और वहां के कई लोगों के नाम चिट्ठियां मिलीं। जहाज़ में जगह तैय्यार रखने के लिये बम्बई को तार से ख़बर भेजी गई। और उसी दिन रात के तीन बजे मेलट्रेन में साहब बन कर रामसुन्दर चलते हुए॥

किसी तरह के रोक टोक की डर से यह समाचार स्त्रियों में न पहुंचा या गया। निमाई बाबू अपनी घर वाली से बहुत डरा करते थे। स्त्रियों ने जाना रामसुन्दर कलकत्ते गए। पर दूसरे ही दिन बाबू हरिवल्लभ आ पहुंचे। तब सब बातें खुल गईं। थोड़ी देर के लिये ज़नाने महल में बड़ा गुल गपाड़ा मचा। पर हम को बहुत अच्छी तरह मालूम है कि श्यामकुमारी ने इस मामले में एक दिन भी चूं तक नहीं किया॥

आनन्द की बात है हरिवल्लभ बाबू को ठंडा करने के लिये बहुत तकलीफ़ नहीं उठानी पड़ी। समधी उनके लड़के के लिये हज़ारों रुपय ख़र्च करने को तैय्यार हो गए हैं भला ऐसी दशा में कोई समधी पर कैसे ख़फ़ा हो सकता है और निमाई बाबू और उनके मित्रों ने बुढ़ऊ को अच्छी तरह समझा दिया कि विलायत में रहने के समय या राह में किसी बात का डर नहीं है, कुछ चिन्ता की बात नहीं है हज़ारों आदमी नित्य वहां जाया आया ही करते हैं॥

बुढ़ऊ अपनी पतोहू को साथ लेकर घर लौट गए॥

अबला विलाप।

(श्रीमती मन्नन द्विवेदी, बी. ए)

हे सुहृद! वीर वर सुत भारत के प्यारे!।
हे सुभग सहोदर! मो नैनन के तारे!॥ १॥

तुव चरनन पै बहुवार शीस धरती हूं।
कर जोरि २ हे तात! विनय करती हूं॥ २॥

सब भ्रात बहिन गन एक मातु से जाये।
कर एक भांति पय पान प्रान तन पाये॥ ३॥

फिर यह विभिन्नता कैसी परै लखाई ?।
तुम हौ आनन्दित हम नित जायं सताई ॥ ४ ॥

तुम जाव जहां जहं चाहैं चित्त तुम्हारा।
पाओ मन माना मोद जगत में सारा ॥ ५ ॥

हम परदे ही में हाय ! सदा रहती हैं।
तुमको अशीपि दिन रैन विपति सहती हैं ॥ ६ ॥

शिक्षा से वंचित आप हमें करते हो।
ईश्वर से भी नहिं नेकु हाय ! डरते हो ॥ ७ ॥

मन माने करो विवाह लाज नहिं लाते।
पै अवलाओं को ब्रह्मचर्य्य सिखलाते ॥ ८ ॥

जो चिता तलक मरि जाय आपकी बाला।
तुम करके नयो विवाह करो मुंह काला ॥ ९ ॥

हम तो वैधव्य विपत्ति सदा सहती हैं।
लज्जा वश अपनी पीर नहीं कहती हैं ॥१०॥

अवलन को या विधि आप करो संहारा।
ताहू पै चाहो आरय जाति सुधारा ॥११॥

यदि चाहो सुख, प्रिय करो सुधार हमारा।
हम करैं एक छन में भारत उद्धारा ॥१२॥

हम अर्जुन से बलवरि फेरि प्रगटैं हैं।
जिन भारत के दुख छिन में दूर हटैं हैं ॥१३॥

मैं जन माऊं शिवराज प्रतापू नरेशू।
जिन हरि हैं छिन में भारत केर कलेशू ॥१४॥

तव भारत पूरव तेज [illegible]ज फिर पैं हैं।
जग में निज कीरति विभव फेरि दरशै हैं ॥१५॥

मदरास और वहां के रहनेवाले ।

(श्रीमती उमा नैहरू, जलारपैट)

मदरास भारतवर्ष का एक बड़ा भारी शहर है । बम्बई से ज़्यादा बड़ा है, लेकिन बम्बई की सी बहार यहां नहीं है ॥

यहां की आबादी क़रीब आठ लाख की है ॥

यहां के जो रहनेवाले हैं, उनकी ज़बान टैमिल व टैलुगू होती है । टैमिल व टैलुगू ज़बान बहुत कठिन नहीं मालूम देती, अगर मनुष्य साल भर यहां रहे, तो उसे बोल चाल इन ज़बानों में व आसानी आ सकती है ॥

मदरास में दो ज़ातें ऊंच समझी जाती हैं, एक तो पैयर और दूसरी पैयांगर । इन से उतरकर मुड़लीयर व नैडू जाति होती हैं ॥

पैयर, व पैयांगर जाति में बहुत से परहेज़ होते हैं, और न वह शराब छूते हैं, न गोश्त, नैडू व मुड़लीयर गोश्त व शराब से परहेज़ नहीं करते । इन चारों जाति में लड़कियों की छोटी उमर में ही शादी होती है । विधवा की शादी इनमें नहीं होती ॥

यहां के रहनेवालों की ख़ूराक में ज़्यादातर सुबह शाम चावल ही होते हं, और इमली मिर्चें व कौफ़ी बहुत कसरत से यहां खाई जाती हैं । कौफ़ी बग़ैर तो यहां का कोई ग़रीब से ग़रीब नहीं रह सकता । दिन में कई दफ़ा कौफी पी जाती है ॥

अब तो यहां बहुत से मनुष्य हैं जोकि, अपनी लड़कियों को शिक्षा भी दे रहे हैं । सिर्फ़ स्कूल की शिक्षा ही नहीं, बल्कि उमदा से उमदा सूई का काम करा करती हैं, तरह तरह के बिनाई व कारचोब के काम करती हैं, अलावा, इसके, यहां की औरतें सारंगी भी बहुत अच्छी तरह बजाना जानती हैं स्कूल भी यहां खुले हैं, जहां कि सिर्फ़ गाना व तरह तरह का बाजा बजाना सिखाया जाता है ॥

रंगतें यहां के रहनेवालों की ज़्यादातर काली ही होती हैं, ऊंच जाति के मनुष्यों की पीली पीली दिखाई देती हैं॥

पहनावा औरतों का आठ गज़ या दस गज़ की साढ़ी होती है, और जाकट। मरदों का पहनावा धोती तीन चार गज़ की या तेहबन्द और कोट या क़मीज़॥

औरतें वहां की बड़ी खूबसूरती के साथ अपने बाल एक तरफ़ बना कर रखा करती हैं, और मरदों के बाल भी कुछ औरतों से कम नहीं होते॥

माथे पर मरद यहां के तीन तिलक लगाया करते हैं तिलक माथे से लेकर नाक तक होते हैं, इधर उधर के तो सफ़ेद रंग के और बीच का लाल रंग का होता है। औरतें जोकि सुहागनें होती खूबसूरती के साथ दोनों गालों पर हल्दी लगाया करती हैं॥

मदरास में समुद्र की बहुत ही बहार है। समुद्र के किनारे चौड़ी सी सड़क है, जिस पर गाड़ियां व मोटरकार शाम को जाया करती हैं। जैसे कि मदरास में समुद्र की कुदरती बहार दिखाई देती है, वह बहार न बम्बई में है न कलकत्ते में॥

मदरास का शहर भी बड़ा भारी है, लेकिन बम्बई का सा नहीं, न तो दुकानें बम्बई की सी नज़र आती हैं, और न हर एक चीज़ यहां मिलती है जैसे कि बम्बई में मिलती हैं॥

तिजारत यहां बम्बईवाले ही बहुत करते हैं और अकसर ऐसे मनुष्य यहां मिलते हैं जोकि अपनी बोली बोलना बिलकुल भूल ही गये हैं और सिवा टैमिल व टैलूगू के और कुछ नहीं समझते॥

कुल मदरास के सूबे में अड़तीस लाख मनुष्य रहते हैं जिन में ज़्यादातर तो हिन्दू ही हैं मुसलमान थोड़े से। ईसाई बम्बई व कलकत्ते से ज़्यादा यहां दिखाई देते हैं॥

सच्चा परोपकार ।

(श्रीमती भागभरी हन्ड्डू, मद्रास)

स्त्री दर्पण में विधवा दुख जो श्रीमती गंगादेवी ने लिखा है पढ़कर बहुत दिल भर आया । इन ही दुखों को देख देख कर मैं भारतवासियें को खुदग़र्ज़ कहती हूं । कौन सा ख़ान्दान है जहां एक दो बेचारी विधवापन हों । कैसे उन के प्यारे भाई बहनें ये बेइनसाफ़ियां जो उन दुखियारियों के साथ होती हैं रवा रखते हैं । दक्खिन में तो बड़े बड़े राव साहब लेकचर देते फिरते हैं पर घर में अगर मा बेवा हो गई तो नाई आता है हर आठवें दिन सब विधवाओं की हजामत कर देता है । अगर सिर न मुंडे तो रिश्तेदार बिरादरीवाले बातें सुनानें को तइयार रहते हैं । ये औरतें दुनियां में बेकार फिरती हैं कोई पीपल पूजती हैं कोई ज़रासी घंटी हाथ में दबाए हुए हनुमान पूजने जाती हैं । अगर कोई खिलानेवाले नहीं हैं तो देवर जेट या भाई भतीजों के घर में ख़िदमतगारी करती हैं, रोटियां पकाती हैं, ताने सुनती हैं ग़रज़ कि परमात्मा के सिवा इनका पूंछनेवाला कोई नहीं है । इसी सबब से लड़की को अच्छी तालीम ज़रूरी है क्योंकि तालीम बुरे वक्त काम आती है । तालीमयाफ़ता औरतों की कितनी ज़रूरत है । जितने अस्पतालों में जाओ नर्स डाक्टर औरतें काम करती हैं । कैसी उन की इज़्ज़त है । परोपकार है । हर वक्त बीमारों की दवा वख़िदमत करती हैं । लड़कियों के स्कूलों में जाओ तो जी खुश हो जाता है । एक एक मेम है जो एम. ऐ. बी. ऐ. पास है दोदो तीन तीन सौ तनख़ाह मिलती है । कोई बेवा है कोई कुंवारी है । आगे पीछे दो चार नौकर आयां हैं । गाड़ी घोड़े हैं रहने को अच्छे बंगले हैं । मिलने को वैसीही परोपकारिणी औरतें हैं । हमेशा अपने काम में जी लगा है । घर में आई नौकरों ने सब काम तइयार रखा हुकम हकूमत करने लायक़ हैं । एक यह जन्म है । एक हमारी हिन्दू विधवा का । यह सब काम जो अब मेमें करती हैं हमारे थे जब हम नाक़ाबिल थीं तो सब काम उन्हों ने लेलिये । ऐसे तो भारतवर्ष के लोग सब अमीर नहीं हैं जो औरतों से काम नही कराते हैं । हां नीच काम ज़रूर कराते हैं । यूनीवर्सिटी का इमतिहान नहीं दिलवाते

क्योंकि उस में पैसा खरच होता है। पीसने वाली मज़दूरनियें. सीनें काढ़ने वालियें तो बादशाही खानदानी मौजूद हैं। हां अगर किसी पढ़ानेवाली की ज़रूरत पड़े तो मेम साहिबा आ जावेंगी। आया का काम अगर हो तो कोई भारतवर्ष की बहन करेगी। अफ़सोस हमारी अक़ल पर। तालीम इनसान का ज़ेवर है। उसी से बुरी रस्में तोड़ने की हिम्मत होती है इसी से परोपकार सूझता है। मेरा मतलब परोपकार से यह नहीं है कि रुपया बांट दो या नाज बांट दो। हरगिज़ नहीं। परोपकार यह है कि आप दूसरों के फ़ायदे के लिये मुसीबतें उठाना। विधवाओं के दुःख देख देखकर कर्वे ने पूना में विधवालय खोल दिया है और उन के वास्ते चंदे जमा करता है, उन्हें तालीम देता है। जब लड़के लड़की अच्छी तरह तालीम पावेंगे तो हिम्मत होगी कि रामलीला के तमाशे में और दुर्गा पूजा में हज़ारों रुपया न खर्चें इस के बदले उस चंदे से भारतवर्ष में विधवाश्रम खोलें लड़कियों के स्कूल खोलें। जो लायक़ लड़के बिला मा बाप के हैं उन को मदद करने की सोसाइटियां क़ायम करें। हमारे महाराजा लाखों रुपया ख़ैरात में दे देते हैं उन का भी हमें बहुत शुक्रिया अदा करना चाहिये मगर वे सोचते नहीं कि किसी ऐसे तरीक़े से रुपया ख़र्च करें कि जिस से मुल्क में कोई काम निकले और मुल्क की तरक्की हो यह सब सोंच तालीम से पैदा होंगे। अगर राजाओं की तरह सरकार भी रोज़ सुबह सदावर्त बांट दे तो आज हज़ारों आदमी रेल में, वर्क शॉप में, कारखानों में, कानों, जहाज़ों में कभी काम न करते, यह सब काम ज़रूरतें सिखाती हैं, और फ़िक्र से आते हैं। जैसी फ़िक्र महाराजा बरोदा को है वैसी सब को होनी चाहिये वह हर एक बात को सोंचते हैं। और उन्होंने अपने मुल्क में हुक्म दे दिया है कि जो छोटी लड़की की शादी उनके मुल्क में रहनेवाला करेगा वह उसे मुल्क के बाहर निकाल देंगे। यह बड़ी बात है। परोपकार है। क्यों-कि इसने हज़ारों लड़कियों को इस बचपन की शादी की आफ़त से बचाया। पढ़ना लिखाना भी राजा का हुक्म है। ऐसे भारतवासी हों तो क्या दुःख है। सब को सोंचना चाहिये कि दुनियां के लोगों पर क्या क्या दुःख हैं और वह दुःख कैसे कट सकते हैं। अगर दुःखी अपने दुःख में पड़े पड़े सुख भूल गया है तौभी हमें उस की हालत पर अफ़सोस होकर उसे दुःख से छुड़ाना चाहिये॥

शिल्प शिक्षा ।

(सावित्री देवी, लखनऊ)

जिस प्रकार हम लोगों के लिये विद्याअध्ययन की आवश्यकता है उसी प्रकार शिल्पकला कौशल जानने की भी है, हमारि जिन वहिनों को दुर्भाग्यवश और कोई जीविका का अवलम्बन नहीं है उन के लिये शिल्पविद्या को जानना एक अपूर्व सहारा है। अपने मन माना वस्त्रइत्यादि बनाकर पहिनने के लिये तथा अपने बच्चों को अपने रुचि के अनुसार तरह २ के कपड़े बनाने के लिये दूसरों के मोहताज न रहने के लिये यह परमावश्यक है॥

अतएव मेरा विचार है कि इस दर्पण द्वारा जो कुछ सेवा मुझ से मेरे देश भगनियें की बन पड़े सो करूं और यदि यह लेख हमारी पाठिकाओं को रुचा और श्रीमती सम्पादिका को ऐसी ही अनुग्रह रही तो सिलाई कढ़ाई व बुनाई इत्यादि जो कुछ कि थोड़ा बहुत मुझे मालूम है क्रमशः इस दर्पण द्वारा प्रकाशित करती रहूंगी । प्रथम मैं सिलाइ सम्बन्धी लेख प्रकाशित करती हूं॥

सिलाई का सामान— १ कैंची, १ गज़, महीन मोटी दो प्रकार की सूईयां महीन मोटी दो प्रकार की पेंचकें, होलकश, (छेद करने का औज़ार) अंगुश्ताना, निशान लगाने के लिये चाक, (खरिया मट्टी) या रंगीन पेंसिल थोडा वेसन या १ रुमाल, हाथ साफ़ करने को—सीते समय हाथ साफ़ रहना चाहिये बहुधा सिलाइ करते समय हाथ में पसीना आ जाता है। तो सिलाई मैली होने लगती है उस वक्त चाहिये कि थोड़ा वेसन पास रख लेवें जब २ पसीना आवे तब २ वेसन हाथ में रगड़ लेना चाहिये या रुमाल से हाथ साफ़ कर लेवे॥

अब मैं भिन्न २ तरह की सिलाई की विधि बतलाती हूं॥

पसूजना या गूलना—सीना सीखने के लिये प्रथम पसूजने का अभ्यास करना चाहिये क्योंकि यह सब प्रकार की सिलाइयों से सरल है। सूई को अपने बायें हाथ के अंगूठे और अंगुली से थाम लेना चाहिये दाहिने हाथ के अंगूठे और, अंगुली से डोरा पकड़कर

सूई में डालना चाहिये। डोरे में सलवट तथा फूंचड़ा न हो डोरे को सूई में डालने के समय अंगुली से बट लेना चाहिये—कपड़े के दो टुकड़ों को बराबर २ बायें हाथ में सूई लेकर पसूजना चाहिये। मखमल, बनात, फ़लालैन, इत्यादि तुरपा नहीं जा सकता इसलिये ऐसे कपड़ों को बखियाकर सीने की आवश्यकता होती है पसूजने के वक्त कपड़े में तुरप का भाग छोड़कर पसूजना चाहिये अर्थात कपड़े में जहां पसूज का डोरा चलाया जाय उस के ऊपर बहुत थोड़ा सा कपड़ा छोड़ देना चाहिये जो कि तुरपते वक्त मोड़ २ कर सिया जायगा ॥

तुरपना—जब पसूजने का अभ्यास हो जाय तब तुरपना सीखना चाहिये। दोनों पैर के घुटने या अंगूठे से कपड़े को दबा ले और पसूजने के वक्त जो तुरप का भाग ऊपर कपड़े में छोड़ा गया है उसी कपड़े को सूई से भीतर मोड़ २ कर दहिने हाथ से सीना चाहिये। तुरपने के वास्ते बहुत बारीक पेचक होना आवश्यक है॥

बख़ियाना—जब पसूजने और तुरपने में हाथ साफ़ हो जाय अर्थात् अच्छी तरह अभ्यास हो जाय तब बखिया करना सीखे दोनों पैर के घुटने या अंगूठे से कपड़े को दबाकर बायें हाथ से कपड़े को पकड़कर दहिने हाथ से बख़ियाना चाहिये जहां तक हो बखिया का टांका पास २ हो, सीधा व दानेदार हो, टांके की दूरी बराबर रहे, ज़्यादा कम न होना चाहिये। इस तरह से जब बखिया किया जायगा तो बहुत साफ़ रहेगा, बख़ियाने के लिये मझोली पेचक काम में लाना चाहिये॥

जिसको उपरोक्त तीनों विधि की सिलाई अर्थात् पसूजना, तुरपना, बख़ियाना आ जाय वह हर प्रकार का कपड़ा सी सकती है क्योंकि सब कपड़ों के सीने में यही तीन प्रकार की सिलाई काम में आती है॥

अब मैं कुर्ती सीने की विधि लिखती हूं—किस वस्त्र में कितना कपड़ा लगेगा इसका निश्चय जितना लम्बा चौड़ा कपड़ा सिया जाय और जितने अर्ज़ के कपड़े से सिया जाय उससे किया जाता है। (अर्थात् जितना ही अर्ज़ में कपड़ा ज़्यादा होगा उतनाही कम कपड़ा लगेगा) यदि किसी वस्त्र के सीने में एक गज़ अर्ज़ का कपड़ा ४ गज़ लगता है तो उसी कपड़े के सीने में २ गज़ अर्ज़ का कपड़ा २ गज़ लगेगा जिस रंग का कपड़ा हो उसी रंग के डोरे से उसे सीना चाहिये॥

कुरते की ब्योंत—प्रथम आगा पीछा जितना लम्बा कुरता रखना हो उसी नाप का करें—फिर जितनी लम्बी चौड़ी अस्तीन रखना हो काटें इसके बाद चार कली और दो चौवग़ला जितना घेर कुरते में रखना हो उसी अन्दाज़ की चौड़ी कली काटना चाहिये। चौवग़ला चौखूंटा होना चाहिये जैसा कि पहिले चित्र में दिखलाया गया है। कली को काटने के समय कपड़े को तिरछा दो तह कर के बीच से चुनकर क़ैंची से काट लेवे। जितना लम्बा कुरता उतनी लम्बी कली होनी चाहिये। बड़ा कुरता १ गज़ नीचा होता है और छोटा १० गिरह। बड़े कुरते की अस्तीन बारह गिरह नीची और छोटे की ६ गिरह नीची होती है। बड़े कुरते का चौवग़ला २ गिरह होता है॥

चित्र पहिला
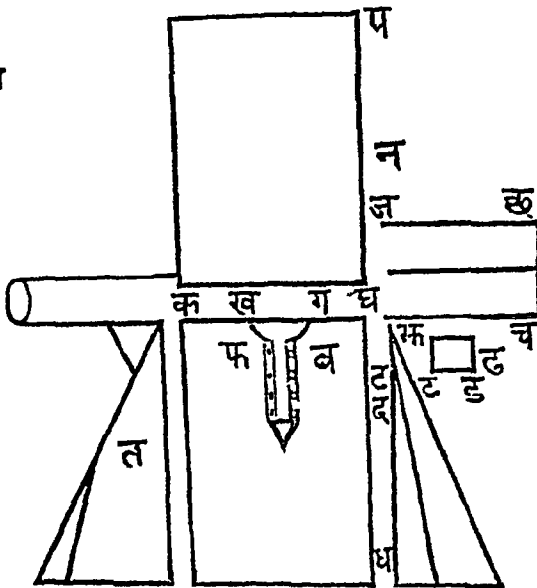
कुरता सीना—प्रथम आगा पीछा दोनों पल्लों को बराबर कर (क) (ख) और (ग) (घ) दोनों पुट्ठों को सिये जैसा प्रथम चित्र में दिखलाया गया है फिर अस्तीन के (च) (छ) दोनों पल्लों को बराबर कर सिये। अस्तीन के उस भाग की तरफ जिधर से वह आगे पीछे में जोड़ी जायगी बग़ल और कली जोड़ने की जगह (जहां चित्र में (ज) (झ) लिखा है) छोड़कर तब अस्तीन को सीवे। फिर (ट) (ठ) कली और (ड) (ढ) बग़ल को एक साथ जोड़कर अस्तीन की छोड़ी हुई (ज) (झ) जगह से जोड़े जैसी (त) चित्र में है और कली को आगे की (द) (ध) पीछे की (न) (प) जगह से जोड़े। इसी प्रकार दूसरी तरफ़ की

अस्तीन भी जोड़ना चाहिये। इन सब को जोड़ने के बाद तुरपना होगा उपरोक्त लिखी विधि से तुरपना चाहिये॥

गोट—सफ़ेद कुरते कुरती इत्यादि में लंकिलाट व मलमल इत्यादि का कालर व गोट लगाना उचित होगा और रंगीन कपड़े के कुरते इत्यादि में उसी रंग का कालर व गोट लगाना चाहिये॥

कुरते का गला—गले की (फ) (ब) जगह को गले के नाप के मुताबिक़ तिरछा छांट तराशकर लंकिलाट का कालर या गोट लगावें। गला क़रीब ७ गिरह लम्बा आध गिरह चौड़ा बड़े आदमी का होता है॥

कुरते का बटन—कुरते के आगे को गले से क़रीब नौ इंच के नीचे तक बीचों बीच कैंची से बटन लगाने के लिये काट लेवें—दहिने तरफ़ सादी गोट लगाकर तीन या चार बटन बराबर २ फ़ासले पर लगावें, बायें तरफ़ सिंघाड़ेदार गोट जैसी चित्र पहिले में दिखलाई गई है लगावें। बटन के ठीक सामने बायें तरफ़ पेंसिल से निशान लगाकर होलकरा से छेद बनाकर बटन के लिये काज बनावे। काज को रुई डोरे से फंदा डाल २ कर तुरप देवे। कालर और सामने बटन के लिये जो गोट लगाई जायगी उस में कच्ची सिलाई करके अर्थात् सुर्रेदार लंगर डालकर तब बख़ियावे। कुरते में यदि जेब लगाना हो तो कली के नीचे एक तरफ़ या दोनों तरफ़ जैसी इच्छा हो लगा देवें॥

मुझे आशा है कि मेरी बहिने यदि उपरोक्त लिखी विधि को ध्यान से पढ़ लेवेंगी तो जो कुरता सीना नहीं जानती हैं उनको कुरते के सीने में कुछ भी कठिनाई न पड़ेगी। यदि मुझ अल्प बुद्धि का यह तुच्छ लेख हमारी बहिनों में से किसी को भी उपयोगी हुआ तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगी॥

तय्यार कुरते का चित्र।
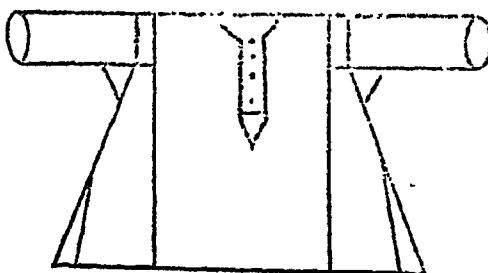
विधवा विवाह।

(श्रीमती गंगा देवी, इलाहाबाद)

नवम्बरवाले अंक में लिखा जा चुका है कि थोड़ी अवस्था में विधवा होने से कितना दुःख उसको और उसके घरवालों को होता है, सब लोगों को सोचना उचित है कि बचपन के ब्याह से कौन कौन बुराई उत्पन्न हो जायेंगी जबकि उसका चाल चलन बिगड़ जायेगा। इसी कारण से विधवाओं का सब जगह जाना रोका जाता है, एक तो वह बेचारी दुःख की मारा दूसरे सब तरह से जान दुःखी हो जाती है॥

सन् १६०६ ई० में शहर मथुरा में एक ऊंच कुल की लड़की थी जिसका पिता बहुत धनी था। जब वह विधवा हो गई तो उसके घरवालों ने उसका कहीं जाना आना तो क्या सब से मिलना भी बन्द कर दिया यहां तक कि उसको अपने भाई से भी बोलना दुर्लभ हो गया और कोठे पर एक कमरे में जो कि सब से अलग था रक्खी गई। वहीं उसके लिये सब प्रबन्ध कर दिया था और उसकी मा भावज आदि उसके पास जाती थीं. सब के साथ वह घर में इस कारण नहीं रक्खी जाती कि घर में सब तरह का आदमी आता जाता था। सदा उसको रामायण महाभारत आदि पढ़ने को कहा जाता था॥

अब उसके दुःख को सोचना चाहिये बेचारी बेगुनाह क़ैदियों की तरह रक्खी जाती थी। इस तरह से रहते जब कुछ समय बीत गया. तब एक रोज़ उसकी मा ने क्या देखा कि मेहतर उसके पास खड़ा बात करता है तब तो घरवालों ने बहुत दुःख माना और उसको भी निकाला और मेहतर की जगह उसकी औरत को आने को कह दिया। पर थोड़े ही से समय बाद मालूम हुआ कि इस लड़की को गर्भ है और फिर घरवालों ने ऐसी बात जानकर उसके खाने में ज़हर मिलाकर मार डाला॥

आप लोग क्या नहीं सोंच सकती हैं कि उसकी जान मुफ्त गई मेरी राय में उसका कोई दोष नहीं यह सब उसके माता पिता का था ॥

जो उसकी दूसरी शादी की जाती तो उसका समय तो आनन्द में कटता और माता पिता उसके प्राण घातक न होते, विवाह तो ज़रूर करना चाहिये पर उसका जिसको औलाद न हो और थोड़ी अवस्था हो। मर्द तो चार चार विवाह करते हैं यहां तक कि बाल सफेद हो जाते दांत टूट जाते हैं और विवाह करने चले आते हैं। बुढ़ापे में शादी कर आप तो मर गए और १५ वर्ष की विवाह कर विठी गए जो जन्म भर बैठी रोया करे, और स्त्रियों ने ऐसा पाप क्या किया जो बाल अवस्था में विधवा हो जाए और विवाह का नाम न ले। हम सबको इस बात का इरादा कर लेना चाहिये कि ज़रूर ज़रूर विधवा विवाह हो ऐसा करने से यह ख़राब रिवाज दूर हो जाएगा। और फिर बराबर विधवा विवाह होने लगेगा ॥

कई जगह विधवा विवाह मर्दों की कोशिश से हुए भी हैं बहू मर जाने पर जैसे बेटे का विवाह किया जाता है इसी तरह बेटी का विवाह विधवा होने पर करना बहुत ज़रूरी है। अगर हम लोग चाहें तो एक क्षण में यह पुराना दस्तूर जाता रहे ॥

चिट्ठी पत्री।

श्रीमती सम्पादिका जी—

मैं बहुत दिनों से स्त्री दर्पण पढ़ती हूं और अपनी विद्वान बहिनों के लेख पढ़ कर हर्षित होती व शिक्षा पाती हूं। नवम्बर के स्त्री दर्पण में १२ वें पृष्ठ पर श्रीमती गङ्गा देवी का लेख देख कर मेरा जी चाहा इस विषय पर मैं भी कुछ लिखूं यद्यपि मैं इतनी विद्वान नहीं हूं कि किसी का

मुक़ाविला कर सकूं तथापि अपनी शङ्का को दूर करने के लिये लिखती हूं, आशा है कि आप इसे स्त्री दर्पण में प्रकाशित कर देंगी। श्रीमती गंगा देवी ने लिखा है कि विधवा स्त्रियों को आम तौर से और वाल विधवाओं को विशेष कर के जीवन के दिन व्यतीत करने कठिन हो जाते हैं यह कष्ट और विपत्ति विचारी लड़कियों को मा वाप की वदौलत उठानी पड़ती है, अर्थात् मा वाप ही इस दुःख के कारण होते हैं। यह कष्ट हम लोगों के दूर करने से हो सकता है, जो अज्ञान लड़कियां विधवा हो जाती हैं उनका फिर विवाह होना उचित है, पुनर्विवाह को आजकल के वड़े वड़े विद्वानों ने विधवा स्त्रियों के संकट को दूर करनेवाला इलाज माना है, मैं किस गिनती में हूं जो उनके विपरीत कह सकूं तथापि मैं यह अवश्य कहूंगी कि जो रीति हमारे देश में कभी आज तक नहीं हुई और जिसके नाम से अच्छी लड़कियां या वूढ़ी औरतें और यहां तक कि हमारे वाप भाई कानों पर हाथ धरते हैं, उस रीति को किस भांति स्वीकार करा जावे। यह अवश्य ठीक है कि वहुत सी ऐसी वातें जो नहीं होनी चाहियें नहीं होंगी मगर यह तो वतलाइये कि हमारे मज़हव में लड़की का विवाह केवल खेल तमाशा ही नहीं वरन एक वड़ी पवित्र मज़हवी रस्म मानी गई है। अर्थात् लड़की का वाप दामाद को लड़की दान करता है एक वार दान की हुई वस्तु दूसरी वार दान कैसे की जा सकती है। वाप को दान कर देने के वाद फिर क्या अधिकार रहा जो दूसरी वार उसे अपने वश में लाकर दूसरे को दे। और इस तरह दूसरा मनुष्य अर्थात् लेनेवाला क्यों दान की हुई वस्तु को लेने लगा। यदि श्रीमती गंगा देवी वा और कोई वहिन भाई ऐसा कहें कि विना दान किये हुए ही दूसरे मनुष्य के हाथ में हाथ दे दिया जावे तो कौन सी लज्जावती लड़की इस तरह विवाहा जाना स्वीकार करेगी। दूसरे मा वाप इस अपमानता को कैसे गवारा करने लगें गे। तीसरे इस तरह व्याह ले जाने पर घरवाले के दिल में स्त्री की क्या इज़्ज़त होगी, इसलिये सव से पहले मज़हवी रीतों को ठीक

करना उचित है। या यह कि इस रस्म विवाह को मज़हब से विलग कर देना चाहिये जैसा क़रीब क़रीब दूसरी जाति में जिनके यहां यह रस्म जारी है किया जाता है। पहले बहुत सी बातों में हमारे बहिन भाइयों को मज़हबी क़ैद से जिनसे मज़हब का कोई प्रयोजन नहीं है आज़ादी देना चाहिये फिर विधवा विवाह भी किया जावे वरना हमारी वह मसल होगी कि नहर खोदी नहीं और नदी का पानी छोड़ दिया ॥

स्त्री धर्म ।

(श्रीयुत माधव शुक्ल, लखनऊ)

हे अवला गन ! धर्म गहो, नहिं घोर नर्क में जाओगी।
कब तक रह इस नीच दशा में अपना समय गंवाओगी ॥
घर, दुआर, धन, भाई, बन्धु नहिं अन्त काम कोइ आता है।
केवल एक धर्म मरने पर साथ जीव के जाता है ॥ १ ॥

कुल मरजादा, देश बड़ाई, बनी तभी तक रहती है।
जब तक धर्म सत्य की धारा लोगों के हिय बहती है ॥
पति चरणों पर ध्यान सदा, यहि केवल धर्म तुम्हारा है।
इसको छोड़ अधर्म महा नहिं जिसका पारावारा है ॥ २ ॥

जिस नारी का देव, पितृ, गुरु, जप तप, सबही स्वामी है।
है पतिव्रता वही, अन्त में स्वर्ग लोक की गामी है ॥
जो विवाह के पति वचनों को सदा ध्यान में धरती हैं।
नहीं यथोचित धर्म ग्रन्थ का अपने आदर करती हैं ॥ ३ ॥

वे नारी गन जो अभाग्य वश हो जाती हैं पति से हीन।
तिनको धर्म ग्रन्थ अवलोकन सदा उचित शृंगार विहीन ॥

जो गृहस्थ निज कर धर्म का करती हैं श्रम कर प्रतिपाल।
शिक्षा दे पुत्री पुत्रों को सदा सिखाती उत्तम चाल ॥ ४ ॥

सुख में कभी नहीं आपे से जो बाहर हो जाती हैं।
महा दुःख पड़ने पर भी जो नहीं कभी अकुलाती हैं ॥
बड़े धैर्य के साथ सदा जो घर का काज चलाती हैं।
पति का सुयश बढ़ाने के हित जो कर्म सरसाती हैं ॥ ५ ॥

ऐसे कामों का करना ही है गृहस्थ नारी का धर्म।
अहो देवियो! तिस्से छोड़ो जेते निंदित नीच कुकर्म ॥
सुनो तुम्हारे बिना गृहस्थी बन सकी है कभी नहीं।
केवल पुरुष बना लेता है ऐसा भी है सुना कहीं? ॥ ६ ॥

मानों एक शरीर गृहस्थी हाथ पांव जिसके हैं नर।
भीतर की अवयव नारी हैं रहता तन जिसके बलपर ॥
हाथ उठाकर मुख देता है भीतर अग्नि पचाती है।
और बनाकर रक्त देह की दिन दिन शक्ति बढ़ाती है ॥ ७ ॥

तो फिर सोचो यदि हो जावे भीतर रोग ही का वास।
यह शरीर तब धीरे धीरे हो जावेगा सत्यानास ॥
जिससे इसकी सब प्रकार से रक्षा करना है तब धर्म।
सुयश बढ़ानेवाला बढ़कर नहीं कोई सत्कर्म ॥ ८ ॥

समालोचना ।

हिन्दी प्रदीप का आज फिर पुनरोद्धार हुआ है । श्रीयुत बाल कृष्ण भट्ट की प्रभावशाली लेखनी द्वारा इस मासिक पत्र ने ३० वर्ष तक हिन्दी व हिन्दुस्तान की सेवा की, और ३० वर्ष ही की अवस्था में हिन्दी प्रदीप का दीपक बुझ गया था । आज फिर नवीन ज्योति हमारे सन्मुख है । कार्तिक की संख्या नवीन जीवन का पहला अंक है । इस में '१ प्रदीप की जगमाती ज्योति' '२ दिवालियों की दिवाली' '३ आगे क्या होनेवाला है' '४ भारत क्यों आरत' '५ हमारे सुशिक्षितों में परिवर्तन' ये पांच बड़े अच्छे लेख हैं । २ कविता है । 'आगे क्या होनेवाला है' इस लेख में भारत की राजकीय दशा पर कुछ विचार है । "चारों ओर अशान्ति फैली हुई है व नेता गरम जिनके ऊपर राष्ट्र भर का पूर्ण विश्वास था अपनी माता का साथ छोड़ अलग हो गये । कितने लोग नित्य अपना सिद्धान्त बदला करते हैं, कितनों ने अपने अमूल्य जीवन को भी खो दिया, कितने पड़े २ बहुत तरह का कष्ट सह रहे हैं और पुकार २ कर कह रहे हैं कि दुःख ही से सुख पैदा होगा" । अन्त में यह है—

"हिन्दुस्तान इस समय तैय्यारी की अवस्था में है और ऐसे समय इस के वास्ते यह भलाई की बात है कि सैंकड़ों शक्तियों से आज इसको मुक़ाबिला करना पड़ता है । ऐसी दशा में हार होना किसी तरह से नैराश्य का कारण न होना चाहिये । ऐसी दशा में नैराश्य पर नैराश्य आना और उसमें अपने उच्च उद्देश्य को न छोड़ना सच्ची तैय्यारी का लक्षण और राष्ट्र की भावी उन्नति का कारण है । जिस तरह विद्यार्थी को सैंकड़ों तरह के प्रश्नों को परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये पहिले ही से मेहनत के साथ हल कर लेना पड़ता है, उसी प्रकार राष्ट्र की भी अपनी बुराई दूर करने और अपने सच्चे गौरव पर पहुंचने के पहिले सैंकड़ों बाधा डालनेवाली शक्तियों के साथ लड़कर और उनका नाश कर अन्तिम परीक्षा के लिये तैय्यार होना बहुत ज़रूरी है, बिना इस moral preparation मानसिक दृढ़ता की मुस्तैदी के आगे आनेवाले दिनों में किसी भलाई की बात की आशा करना निरी मूर्खता है । राष्ट्र की इस पहिली अवस्था में Brain मस्तिष्क से बहुत काम नहीं लिया जाता इस समय Heart चित्त की दृढ़ता की ज़रूरत

है। बहुत ध्यान करने और छान बीन करने से डर रहता है कि हमारे विरुद्ध बाधा डालनेवाली शक्तियां कहीं सदा के लिये हमें नैराश्य में न डाल दें और हम अपने कर्तव्य को जो सच्चा और धर्मयुक्त है छोड़ न दें तब अपनी उन्नति और भलाई से सदा के लिये वञ्चित हो जांय। राष्ट्रीय आन्दोलन में अपना उद्देश्य पा जाने पर मस्तिष्क की आवश्यकता होती है प्रारम्भ में Heart चित्त की दृढ़ता ही की ज़रूरत है। टर्की और फ़ारस में अब बुद्धि की ज़रूरत है क्योंकि उनका कर्तव्य अब Constructive बनानेवाला होना चाहिये परन्तु अपने मनोर्थ को पूरा करनेवाली जातियों का कर्तव्य बहुत कुछ Destructive बिगाड़नेवाली होता है और ऐसे समय में राजसिक भावों को चित्त में रहना उन्नति का कारण होता है। राष्ट्रीय Struggle में धर्म पर लड़नेवाला पक्ष हमेशा निर्बल रहता है और उसकी निर्बलता को दूर करने के लिये दृढ़ता, धैर्य्य, आशा और अपने धर्म पर अटल विश्वास की ज़रूरत रहती है, ऐसे समय इन्हीं गुणों का राष्ट्र के हर एक व्यक्ति को उदाहरण बनकर अपनी तरफ़ अपने स्वजातियों को खींचना पड़ता है उनकी बुद्धि का नहीं वरन उनके विचार Sentiment को अपील करना पड़ता है। आज हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय पक्ष भी अपने विरुद्ध शक्तियों के सामने बहुत निर्बल है परन्तु इसमें वे शक्तियां भरी हुई हैं जिनके आगे विरोधी की प्रत्यक्ष शक्तियों का अधिक होना इस-को नाश नहीं कर सकता, यह अपने सत गुणों के उदाहरण से अपने स्वजातियों को दिन २ अपनी ओर खींच रही है। भविष्य में बहुत कठिन दुःख सहना होगा और बहुत दिन तक सहना होगा क्योंकि हमारा heart चित्त बहुत ही बहुत अधः demoralised and de-nationalised अधः पतित भ्रष्ट और जातीयता के भाव से च्युत हो गया है परन्तु वर्तमान के चिन्हों से यही मालूम होता है कि हमारी तैय्यारी ठीक हो रही है और हमारा उद्देश्य निश्चय सफल होगा॥

नारीप्रशंसा—३२ पृष्ठ की एक छोटी पुस्तक है । आरंभ में मनुस्मृति से अनुवाद सहित कुछ श्लोक स्त्रियों की प्रशंसा में उद्धत किये गये हैं । बाक़ी कविघनाश्चरी में कुछ 'अगड़बगड़' लिखा है ॥

सुख पाने का मार्ग—यह ३२ पृष्ठ की पुस्तिका बड़ी उपयोगी है। इसमें धर्मनीति कूट कर भरी हुई है। बड़े २ अच्छे धार्मिक उपदेश इसमें हैं। मूल्य -) आना है राज राजेश्वरी यंत्रालय लखनऊ में छपी है ॥

अजविलाप नाटक—मूल्य =) 'सरस्वती विलास प्रेस नरसिंहपुर' से । राजा अजब उनकी रानी इन्दू का छोटा सा रोचक नाटक है ॥

महाराष्ट्री हिन्दी—की पहली पुस्तक राजराजेश्वरी प्रेस लखनऊ से =) में मिलती है। ऐसी पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है हमारा विचार है कि एक प्रांतवासी को दूसरे प्रांत की भाषा सीखने से भारतीय एकता में बड़ी सुगमता होगी ॥

भूतनाथ तेल का विशेष गुण यह है कि बालों की जड़ों को पुष्ट करता है। हर एक बालों की जड़ों को विशेष करके जो जड़ें ढीली हो जाती हैं उन में खून का चलाव ठीक करके उन जड़ों को पुष्ट कर देता है। पर तारीफ़ यह है कि जैसे और तेलों में जड़ों को उसकाने के लिये ऐसी तेज़ चीज़ें मिला देते हैं कि जिससे चमड़ा ख़राब हो जाता है और बालों की मुलायमियत चमक इत्यादि जाती रहती है और रूखा पड़ जाता है॥

अगर बाल उमर पाकर गिरते हों तो जिस जगह के बाल उठ गये हों वहां पर वैसो दिन तक लगाने से बाल जम आवेंगे और जो कम उमर में बाल गिरने शुरू हों थोड़े दिन वह तेल लगाने से बाल जो गिर गये हों फिर जम जाते हैं॥

Printed by Janki Parsad Savant and published by Pandit Kedar Nath, at the Leader Press, Allahabad.

Registered No. A. 475.

१ फरवरी १९१०

वार्षिक मूल्य २)

एक प्रति मूल्य ।)

बेगम बहार ।

(स्त्रियों के आदर योग्य पदार्थ)

इसके बराबर कोई और तेल नहीं बना है। गुण में सब तेलों से श्रेष्ठ है इससे बेगम और बादशाह आनन्दित रहते हैं, बहुत खर्च से यह बनाया गया है, और सर्वगुणदायक है। जो इसको एक दफह लगाते हैं वह कदापि इसको नहीं छोड़ सके। सिर दर्द जाता रहता है। एक दफह लगाने से कई दिन तक सुगंध देता है आंख को भी लाभदायक है॥

मूल्य १) शी० डाक ।-) ३ शी० का मूल्य २॥=) १२ शी० का १०॥)

बादशाही आमोद ।

स्त्रियों के योग्य आश्चर्य की चीज़ बादशाह और नवाब इसको खाकर प्रसन्न हो जाते हैं। यह सब ताक़त को बढ़ाती है और इसको खाने से इसका गुण खुल जाता है॥

मूल्य ५॥) डाक महसूल ॥-)
पहिला नम्बर

मूल्य २॥) डाक महसूल ।-)
दूसरा नम्बर

माजून चोबचीनी ।

(खून साफ़करने की दवा)

इसको खाने से बादी, दाद, और सब प्रकार के चर्म रोग जाते रहते हैं और ताक़त आती है और शरीर बलवान हो जाता है भूक बहुत बढ़ाता है और कब्ज नहीं रहता है॥

मूल्य एक डिबिया १) डाकव्यय ।-)

पता—हकीम मशीहुर रहमान
२६, ११४ मछुआ बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता।

सूचीपत्र।

विषय	पृष्ठ
नोट्स टिप्पणी	५३
माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय (श्रीमती कैलाश रानी वातल)	६५
पतिव्रता धर्म क्या है (पुत्री बाबू विक्रमा जीत सिंह कानपुर)	७३
रानी चन्दा (कुमारी जगदेश्वरी सपरू, इलाहाबाद) ...	८१
भारत ललनाओं की स्वधीनता (बाबू मुकुन्दी लाल इलाहाबाद)	८४
लाहौर की प्रदर्शनी (श्रीयुत मुन्शीलाल गुप्त, बी ए. लाहौर)	९३
श्रीमती महादेवी जी (श्रीयुत युगुल किशोर औखरी बी. ए.)	९७
चिट्ठी पत्री	१००
समालोचना	१०२

नोटिस

संयुक्त प्रदेश की प्रदर्शनी।

जिन लोगों को संयुक्त प्रदेश की नुमाइश के स्त्री विभाग से दिलचस्पी हो उन्हें चाहिये कि उसके बारे में जो कुछ पूछना हो उसके लिये अप्रेल तक स्त्री विभाग की सब कमेटी की प्रेसीडेन्ट मिसेज़ लेसली पोर्टर साहिबा लखनऊ से पत्र व्यवहार करें॥

जिसके नीचे दस्तखत हैं उसको हुक्म है कि वह स्त्री विभाग में नुमाइश के लिये चीज़ों को पहिली अक्टूबर सन १९१० तक लेवे। नुमाइश के बाद नुमाइश की चीज़ें बड़ी होशयारी के साथ भेजने वाले को लौटा दी जायंगी॥

रायबहादुर सांवलदास
आनरेरी सेक्रेटरी
बैंकरोड इलाहाबाद।

माधव पुस्तकालय।

इस पुस्तकालय में

वदिक, वेदांत, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय,
व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, काव्य,
अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष,
वैद्यक, सांप्रदायिक, स्तोत्रादि, ग्रंथ

—:*:—

हिन्दी भाषा के विक्रयार्थ प्रस्तुत हैं और सब प्रकार की संस्कृत, अंग्रेज़ी पुस्तकें मिलती हैं।

१९१० साल का कालेंडर मुफ़्त मिलता है।

उनका बड़ा सूचीपत्र बिना मूल्य भेजा जाता है।

मिलने का पता:—

गंगाराम खत्री की बाड़ी

बम्बई नम्बर २

❀ आनन्द का समाचार ❀

———:o:———

लीजिये जिसके लिये स्त्री शिक्षा के प्रेमीजन बहुत दिनों से चिल्ला रहे थे कि कोई पुस्तकों की ऐसी दुकान नहीं जिसमें स्त्रियों के लिये सब प्रकार की लाभदायक पुस्तकें मिल सकें सो इस त्रुटि को पूरा करने के लिये "जानसेनगंज प्रयाग" में एक "ओंकार पुस्तकालय" खोला गया जिसमें स्त्रियों के लिये नाना प्रकार की उत्तम २ पुस्तकें बम्बई बरोदा और लाहौर आदि नगरों तक से मंगाकर विक्रयार्थ रक्खी गई हैं आशा है कि अब हमारी बहिनें अपने बहुमूल्य समय को वृथा न खोकर हिन्दी भाषा की उत्तम २ पुस्तकें "ओंकार पुस्तकालय" से मंगाकर विद्या रूपी अमृत का स्वाद लेंगी॥

पुस्तक मगाने का पता:—
मैनेजर—ओंकार पुस्तकालय
जानसेन गंज—प्रयाग।

———

ऊन।

और ऊन का काम बनाने की चीजें

रामा जी कम्पनी सब से पुरानी और सस्ती दुकान है

जहां से हर क़िस्म का ऊन, ऊन के काम बनाने का कपड़ा कार्पेट की सुई, मोज़ा बिनने की सुई बेलबूटा बनाने के रेशम क्रूशा की सुई और हर क़िस्म की चीज़ें जो ऊन के काम बनाने में इस्तेमाल होती हैं बहुत किफायत के साथ बिकती हैं ऊन के सिवा और सब क़िस्म की चीज़ें जैसे कागज़ लिफाफे पेनसिल वग़ैरह भी सब मेलकी मिलती है॥

मिलने का पता:—
रामा जी कम्पनी,
चौक—इलाहाबाद—

स्त्री-दर्पण

भाग २] प्रयाग, १ फरवरी, सन् १९१० [अङ्क २

टिप्पणियां

नीच जातियों की दुर्दशा।

हमारे सामाजिक जीवन में हज़ारों दोष ऐसे हैं कि जिन को दूर किये बिना हमारे देश की उन्नति नहीं हो सकती पर सब से बड़ा दोष जिस के दूर करने में तानिक भी विलम्ब न होना चाहिये हमारे देश की नीच जातियों की दुर्दशा है। उन मनुष्यों की संख्या जिन को नीच जातियों का नाम दे रक्खा है लगभग ६ करोड़ के है अर्थात भारत की कुल देश प्रजा का पांचवां भाग है। यद्यपि हम रात दिन अपने सामने इस जाति के मनुष्यों को देखते हैं तथापि हमें कभी यह ध्यान नहीं आता कि हम इन पर कितना अत्याचार कर रहे हैं। ईश्वर ने सब मनुष्यों को एकसी शक्ति दी है। जैसे हाथ, पांव, आंख, कान, एक को मिले हैं वैसे ही दूसरे को। भगवान की ओर से सृष्टि में सब को एक पद मिला है। परन्तु दुष्ट स्वार्थी मनुष्यों की सदा से यह भावना चली आई है कि एक से दूसरा बड़ा होना चाहता है। हर व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि मैं सब से बढ़कर रहूं। जो कोई गुण हम किसी एक व्यक्ति में देखते हैं वही जातियों में दिखाई पड़ता है क्योंकि जातियां केवल बहुत से मनुष्यों के समूह को कहते हैं। जो जो स्वाभाविक गुण किसी एक व्यक्ति में होते हैं वे जातियों में भी अवश्य होंगे सारांश यह कि इसी स्वाभाविक प्रकृति के अनुसार हर जाति अवसर पाने पर दूसरी जाति को दबाना चाहती है। बहुतेरे देशों में ऐसा

हुआ है परन्तु जिस दृढ़ता से भारत के आर्य्यों ने इन नीच जातियों को दबाया है उस का दृष्टान्त पृथ्वी पर ढूंढ़ने से भी न मिलेगा। किसी जाति को जिस में इतनी बड़ी संख्या मनुष्यों की हो दो तीन हज़ार वर्ष तक केवल दासों की अवस्था में रखना कुछ सहज काम नहीं है। पर भारत के आर्य्यों ने इस कठिन काम को किया है और अब तक कर रहे हैं॥

उत्तरीय भारत में तो इन जातियों की उतनी दुर्दशा नहीं जितनी कि दक्खिन क ओर है। हमने देखा तो नहीं पर पढ़ा सुना अवश्य है कि भारत के उस भाग में इन जातियों को इतना नीच व दरिद्री माना गया है कि जिस रास्ते पर से इन में से कोई मनुष्य जाए वह रास्ता, जिस घर में वह घुसे वह घर, जिस मनुष्य पर इस का छाया पड़े वह मनुष्य अपवित्र माना जाता है। हम को ये बातें विचित्र प्रतीत नहीं होतीं इसलिये कि हम जन्म दिन से यह देखते आये हैं परन्तु अन्य देशों के मनुष्यों को जिन को सदा से यह सिखाया गया है कि वह अपने आप में व दूसरे मनुष्य में कुछ भेद न जानें ये बातें देखकर केवल विस्मय ही नहीं होता वरन् वह इस को निन्दनीय व अधर्म व्यवहार समझते हैं। उन मनुष्यों का ऐसा समझना व कहना सत्य है क्योंकि कोई पाप दुनियां में किसी जाति को बलातकार दबाये रखने से बढ़कर नहीं। यदि हम किसी आदमी को किसी प्रकार का दुःख पहुंचावें अर्थात् उसे मारें, पीटें या उस की वृत्ति बन्दकर दें तो केवल उस एक व्यक्ति को या उस के और दो चार सम्बन्धियों को कष्ट होगा परन्तु जब हम ऐसा ही बर्ताव किसी जाति से करते हैं तो हज़ारों सैंकड़ों मनुष्यों को हानि व दुःख पहुंचता है और एक ही उत्पत्ति में नहीं वरन कई उत्पत्तियों तक इस का फल दूर नहीं होता॥

इन दुःखी, दरिद्री, कष्ट सहनेवाली, जातियों की अब यह दशा हो गई है कि वे स्वयं अपने आपको अपवित्र जानने लग गये हैं। हमने सुना है कि दक्षिण में जब इस जाति का कोई मनुष्य सड़क पर जाते हुए दूर से किसी ब्राह्मण या ऊच्च जाति के मनुष्यों को आते देखता है तो वह वहीं से

चिल्लाता है कि "मैं अपवित्र हूं" "मैं अपवित्र हूं" और सुकड़ कर सङ्ग से अलग हो जाता है । विचार करने की बात है कि वर्णों के अत्याचार से हमने उनको इतना दीन बना दिया है कि आत्मगौरव का अब उन में नाम निशान तक नहीं रहा। वे समझते हैं कि सृष्टि ने उनको इसी नीच दशा के लिये बनाया हैं और उनके भाग्य में यही है ॥

उनका अपना विचार चाहे जो हो हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि उनको इस दुर्दशा पर पहुंचानेवाले हम ही हैं, उनके दुःखों का बोझ हमारे ही कंधों पर है, उनकी विचार शक्ति को घात करनेवाले हम ही हैं, उनको विद्या से वंचित रखनेवाले हम ही हैं, उनको मनुष्य से पशु बनानेवाले महान् पापी हमही हैं !! हमारे पूर्व पुरुषों ने सोचा होगा कि उनको विद्या से रहित कर वो सदा के लिये उन्हें दास बना आप उनके स्वामी बने रहेंगे । उनका यह विचार ठीक था। क्योंकि यदि वह उनको विद्याध्ययन व विद्यादान करके अपने तुल्य करते तो वह कदाचित उनके दास न बने रहते । उन्होंने वास्तव में इन जातियों की नीव में दासपन की खाद देकर उनको सदा के वास्ते दास बना दिया। परन्तु बुराई का बदला बुराई अवश्य मिलता है बुराई करके कोई चाहे उसका फल मीठा मिले तो असम्भव है। ईश्वर भगवान तो अपने रचे हुए सब मनुष्यों को समदृष्टि से देखते हैं । बुराई करनेवालों को दण्ड अवश्य देते हैं। हमारे अपने ही कर्मों का फल हमें आज यह मिला है कि हम स्वयं दास बनगये। यों तो इस असार संसार का यह स्वभाव ही है कि जातियां बिगड़ती बनती रहें। कल यदि चीन, यूनान, मिसर भारत उन्नति के शिखर की सब से ऊंची चोटी पर थे तो आज इङ्गलैंड, जरमनी, अमेरिका उस स्थान पर विराजमान हैं । परन्तु जातियों के बिगड़ने संवरने का कारण सदा उनके व्यक्तिगण के कर्तव्य पर निर्भर है । जिस जाति का एक २ व्यक्ति अस्वार्थी, परोपकारी, उद्योगी, फुरतीला, काम करनेवाला होगा उस जाति का पृथ्वी पर उच्च पदवी पाना प्राकृतिक है। परन्तु यह देखने में आया है कि जाति के बनते समय जो गुण उसके व्यक्तिगण में दीख पड़ते हैं वह उसके उन्नति

प्राप्त कर लेने के बाद नहीं रहते। प्राचीन काल के इतिहास पढ़ने से विदित होता है कि जातियों के बिगड़ने का अधिकतर कारण उसके धर्म के रास्ते से भटक जाना है। अन्याय करना, दूसरी जातियों पर अत्याचार करना ज्योंहीं किसी जाति ने आरम्भ किया उसी समय से जानों उसके बिगाड़ की नीव पड़ी। परन्तु उन्नति प्राप्त करके जब कोई जाति धन सुःख की मदरा के नशे में मतवाली हो जाती है तो कभी स्मरण नहीं रहता कि हमारे पहिले भी जातियां उन्नति के शिखर की इसी ऊंची चोटी पर पहुंच चुकी हैं और अपने कर्तव्य के बिगड़ जाने से फिर नीचे आन गिरी हैं। भारतवासियों के साथ भी ऐसा ही हुआ है और आजकल वह अपने पूर्वकाल के पापों का दण्ड भोग रहे हैं॥

पर अब भी हमें निराश न होना चाहिये। बहुत काल हमें दण्ड मिल चुका है अब शायद हमारे सौभाग्य के दिन आ रहे हैं। अपने पूर्व पापों को हम समझते जाते हैं और उन के त्याग करने का यत्न आरम्भ कर दिया है। सुशिक्षित लोगों का ध्यान इन नीच जातियों के सुधार की ओर जाना आरम्भ हुआ है। ब्रह्मसमाज, आर्य्या समाज, आदि इस जाति के लोगों को उभारने में बहुत कुछ अच्छा काम कर रही हैं। ईसाई मिशनरियों का ध्यान इस ओर सब से अधिक है और इसमें सन्देह नहीं कि जो काम उन्होंने इन के भले के लिये भारत में आकर किया है वह अभी तक किसी भारतवासी से नहीं हुआ। नीच मैली कुचैली दशा से उठाकर विद्या के भूषण से विभूषित करके उन्हों ही ने उनका पद समाज में बढ़ाया है। एक पादरी साहब कहते हैं कि जिन नीच अपवित्र स्त्रियों को देख ब्राह्मण लोग घृणा करते थे आज उन्हीं को पढ़ा लिखा अनगिनित स्कूलों कालेजों में हमने ब्राह्मणों के पढ़ाने लिखाने के लिये स्थापित किया है। उनका ऐसा कहना ब्राह्मणों को चाहे कितना ही बुरा क्यों न लगे, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उनका यह कहना ठीक है। हमें अच्छी प्रकार मालूम नहीं कि इस ओर हमारी उदासीनता हमें कितनी हानि पहुंचा रही है। पिछले ४० वर्ष में केवल मदरास ट्रैवेनकोर ही में ३५०,००० मनुष्य ईसाई हो गये हैं॥

उत्तरीय भारत में आर्य्यसमाज व ब्रह्मसमाज ने हज़ारों को कृष्टान होने से रोका । इन समाजों से पहिले प्रति दिन सैंकड़ों कृष्टान हुआ करते थे ॥

हमें शोक है कि स्त्रियों का ध्यान अभी तक इस ओर बिलकुल नहीं गया । हमें उचित है कि हमें अपनी इस घृणा को त्यागें आत्मां आत्मा में भेद न जानें । दिन सदा एक से नहीं रहते । बहुत दिन हमने दूसरों का अपमान कर लिया है अब वह दिन आ गये हैं कि यदि हम उन का मान आदर करना न सीखेंगे तो सम्भव है कि वेंहैं ब्राह्मण और हम शूद्र की दशा में हो जावें ॥

प्रयाग महिला समिति ।

हम यह समाचार अत्यन्त हर्ष से लिखती हैं कि जिस सभा के बनाने का विचार हम प्रयाग की स्त्रियां बहुत दिनों से कर रही थीं वह सभा कुछ बहिनों ने मिलकर गत मास की २२ तारीख़ को "प्रयाग महिला समिति" के नाम से स्थापित की। श्रीमती धनराजरानी सपरू के निमंत्रणपत्र पर लगभग ५० स्त्रियों के उनके स्थान पर आईं । श्रीमती कैलासरानी वातल के निवेदन करने व सब बहिनों की यही सम्मति होने पर श्रीमती नन्दरानी नेहरू सभापती बनाई गईं । इन्होंने सब स्त्रियों को बताया कि श्रीमती धनराजरानी का अभिप्राय सब स्त्रियों को बुलाने का यह था कि हम सब मिलकर एक ऐसी सभा बनायें कि जिसमें अक्सर एक दूसरे से मिलने का अवसर मिले । तदनन्तर सम्पादिका स्त्रीदर्पण ने बताया कि इस सभा के बनाने की क्या आवश्यकता है और कहा कि स्त्रियों की सभाएं हर बड़े २ शहरों में बन गई हैं । लाहौर, देहली, देहरा, बम्बई, पूना, कलकत्ता हर स्थान पर स्त्रियों ने मिलकर सभाएं बना रक्खी हैं । परन्तु प्रयाग में अभी तक कोई ऐसी सभा नहीं बनी । इससे दिखाई पड़ता है कि हम प्रयाग की स्त्रियां सबसे पीछे रही जाती हैं । ऐसी सभा की आवश्यकता प्रयाग में बहुत दिन से थी आज बड़े सौभाग्य का दिन है कि इस त्रुटि को पूराकरने को हम सब एकात्र हुई हैं ॥

उसी समय २० स्त्रियों ने समिति की सभासद बनना स्वीकार किया जिनमें माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय, माननीय पंडित सुन्दरलाल, माननीय पंडित मोतीलाल नेहरू, डाक्टर सतीशचन्द्र बैनरजी आदि की स्त्रियां थीं ॥

सभा के समाप्त होने पर पंडित किशोरीलाल की स्त्री ने हारमोनियम पर श्रीयुत माधव शुक्ल की ग़ज़ल "उठो ऐ हिन्द की नारी वृथा क्यों दिन गंवाती हो" बजा कर सभा की शोभा को बढ़ाया ॥

इस समिति का अधिवेशन हर अंगरेज़ी मास की पहिली तारीख़ को सभासदों में से एक के घर पर हुआ करेगा । जिस में कोई एक स्त्री किसी विषय पर व्याख्यान पढ़ेंगी, और शेष सब रमणियां उसी विषय पर अपनी २ सम्मति प्रगट करेंगी । इसका पहला अधिवेशन श्रीयुत प्रयागदास की स्त्री के स्थान शांती आश्रम में होगा और श्रीमती कैलासरानी वातिल "मातृ भाषा" पर व्याख्यान देंगी । हमारा विचार है कि इस सभा से स्त्री समाज को बहुत लाभ होगा और घर के धंदों के सिवा और बातों पर सोंचने व उनके भले बुरे पर विचार करने की बान पड़ेगी । आशा है कि बहिनें इस सभा के सफल होने का यत्न करेंगी और इसके सभासदों की संख्या प्रति दिन बढ़ेगी ॥

प्रयाग की प्रदर्शनी ।

प्रयाग की प्रदर्शनी आज कल खुली हुई है । इन प्रांतों की गुणवती स्त्रियों के हाथ की हर प्रकार की वस्तुएं देख कर चित्त प्रसन्न हो जाता है । करोशा, कैनवेस, जाली सूई, सलाई हर प्रकार की अच्छी अच्छी वस्तुयें दिखाई देती हैं । सबसे बढ़कर दो बंगाली स्त्रियों के हाथ के बनाए हुए मछली के छिलके के बेल बूटे हैं जिनको देखकर कोई यह नहीं बता सकता कि यह मछली के छिलके के बने हैं । किसी और रमणी ने मोमबत्ती को काट काटकर बड़े रमणीय छोटे छोटे खिलौने बनाकर रखे हैं । हमें आशा है कि अगले वर्ष स्त्रियां इससे भी ज़्यादा काम भेजकर प्रदर्शनी की शोभा बढ़ावेंगी । सबसे बढ़कर देखने योग्य वस्तु जोशी जी का बनाया हुआ

चूल्हा है जिस पर बेआग के खाना पकता हुआ दिखाया जाता है। एक तख़्ता शीशे के टुकड़ों का लगा है इन शीशे के टुकड़ों पर जो सूरज की रोशनी पड़ती है उनके प्रतिबिम्ब की गर्मी से खाना बनाया जाता है। जिस फ़ोकस पर यह सब गर्मी जमा होती है वहां इतनी तेज़ हरारत होती है कि कोई धात या शीशे का टुकड़ा डालो तो डालते ही पिघल जाता है। सामने एक घड़ी रखी है इसके पेन्डलम से एक रस्सी बंधी है घड़ी जैसे समय के बीतने से सूई को चलाती है वैसे ही इस रस्सी को भी खेंचती जाती है और रस्सी इन शीशे के टुकड़ों के तख़्ते से बंधी है जिसका परिणाम यह होता है कि ज्यों ज्यों सूरज का रुख़ बदलता जाता है इस घड़ी द्वारा शीशे के टुकड़ों का तख़्ता भी घूमता जाता है। सूर्य की किरनों से लेन्स (एक प्रकार का शीशे का टुकड़ा) द्वारा सुना था बहुतेरे काम लिये जाते हैं पर अभी तक खाना पकते न सुना न देखा था। विशेष करके खुशी की बात यह है कि यह रचना हमारे देश के व हमारे ही शहर के रहने-वाले पण्डित श्रीकृष्ण जोशी का है। भारतवर्ष में जहां आज कल ईंधन के महंगा होने की शिकायत बढ़ती जाती है इस प्रकार के चूल्हों से आशा है कि बहुत लाभ हो। एक बार तो इस चूल्हे के मंगाने में ख़र्च अवश्य होता है पर ईंधन का रोज़ का ख़र्च बच जाता है। यह त्रुटि इस चूल्हे में बड़ी है, कि बादल के दिन अथवा रात्रि के समय काम में नहीं आ सकता॥

ट्रांसवाल के भारतनिवासी।

१६ जनवरी को इलाहाबाद में ट्रांसवाल के भारतवासियों से सहानुभूति प्रगट करने वा उन के लिये चन्दा इकट्ठा करने के लिये एक सभा की गई जिस के सभापति माननीय पण्डित मोतीलाल नेहरू थे। मिस्टर पोलक व मिस्टर गंधी ने जो उसी दिन सुबह यहां पहुंचे थे उन सब अत्याचारों का समाचार कह सुनाया जिस को हमारे देश भाई अफ्रीका में वर्षों से सह रहे हैं। सिवा उन के प्रयाग के और कई प्रतिष्ठित सज्जनों ने व्याख्यान दिये और सर्व साधारण को ट्रांसवाल भारतनिवासियों का समाचार सुना उन से सहानुभूति की प्रार्थना की। सुनने वाले सज्जनों के हृदय दुःख से पिगल रहे थे जिसका क्रिया सम्बन्धी परिणाम यह हुआ कि उसी समय ४०००) से ज़्यादा चन्दा जमा होगया। स्त्रीदर्पण के पाठकों की ओर से भी जो रुपया जमा किया गया था भेंट कर दिया गया। जिस का हिसाब नीचे लिखा जाता है।

पहिले छापा जा चुका	४५४)
मिसेज़ नेहरू	५०)
मिसेज़ सतीश चंद्र बनेरजी	१५)
मिसेज़ चौधरी	१०)
मिसेज़ रैना अमृतसर	१०)
मिसेज़ सिंह इलाहाबाद	१०)
मिसेज़ रमाकांत	१०)
मिसेज़ आर-एम-शङ्कर भक्कर	१०)
मिसेज़ मनोहरलाल जुतशी	५)
मिसेज़ गज़दर	५)
मिसेज़ निरंजननाथ जयपूर	५)
श्रीमती गोमती जी इलाहाबाद	२)
मिसेज़ मुशरान	२)
कुलजमा	५८८)

संयुक्त प्रान्त की प्रदर्शनी।

हमारी सब पाठिकाओं को यह तो मालूम ही है कि अगले वर्ष एक बड़ी प्रदर्शनी जिस में इन प्रान्तों की वस्तुयें दिखाई जावेंगी होनेवाली है। इसका प्रबंध अभी से आरम्भ कर दिया गया है, यह प्रदर्शनी प्रयाग की प्रदर्शनी से बहुत बढ़कर होगी। कई लाख रुपया तो इस के लिये जमा हो चुका है और अभी हो रहा है। स्त्रियों के हस्तकृत कार्य को एकात्र करने के लिये और उसका प्रबंध करने के लिये स्त्रियों की एक सभा बनाई गई है जिस की सभापति मिसेज़ पोर्टर व प्रतिपालिका लेडी ह्युएट हुई हैं। इस सभा के दो अधिवेशन गत मास में हुए जिनमें यह निर्णय हुआ कि हिन्दोस्तानी उच्च श्रेणी की स्त्रियों के प्रदर्शनी देखने का प्रबंध यह किया जावे कि प्रदर्शनी का एक कमरा विशेष करके इन के लिये रक्खा जावे, जिस में परदे का बन्दोबस्त अच्छी प्रकार किया जावे। इन स्त्रियों के देखने के लिये परदेदार रिकशॉ गाड़ियां वहां रक्खी जावेंगी जिन पर बैठकर स्त्रियां भली भांति प्रदर्शनी की एक २ वस्तु विस्तार से देख सकेंगी। क्लब की मेम्बर लेडी ह्युएट व मिसेज़ पोर्टर के निमंत्रणपत्र से स्त्रियां बन सकेंगा॥

हमें आशा है कि इस तजवीज़ को सब स्त्रियां बहुत पसंद करेंगी, और इस प्रबन्ध से लाभ उठावेंगी। इस से एक और लाभ यह भी होगा कि स्त्रियों को भी जो एक दूसरी से बहुत ही कम मिलती जुलती हैं आपस में मिलने का अवसर मिलेगा। हम एक बार फिर बहिनों का ध्यान इस ओर दिलाती हैं कि जहां तक उनसे बन पड़े वह स्वयं वस्तुएं बनाकर वह दूसरों से बनवाकर इस प्रदर्शनी को भली भांति कर्तव्य करने का यत्न करें॥

लाहौर की सोशल कान्फरेन्स।

दिसम्बर के अंत में इन्डियन नैशनल कांग्रेस के साथ साथ जो अनगिनित सभाएं हुईं उन में से एक सोशल कान्फ्रेन्स भी थी कि जो २३ वर्ष से कांग्रेस के साथ हर वर्ष हुआ करती है। २३ वर्ष पहिले जिन जिन सुधारों की आवश्यकता प्रगट की

जाती थी शोक है कि आज तक उन पर व्याख्यान देने और लोगों को इस बात का विश्वास दिलाने की ज़रूरत है कि देश की उन्नति के लिये उनका होना अति आवश्यक है। इतना अन्तर तो ज़रूर हुआ है कि जिन बातों को सुनकर पहिले लोग कानों पर हाथ रखते थे उन को सुनने की अब बहुत लोगों को बान पड़ गई है। यद्यपि अभी तक बहुतेरे बरन अधिकतर लोग ऐसे हैं कि जिन का ध्यान सामाजिक सुधार की ओर कदापि नहीं जाता, तथापि शिक्षित लोगों का एक भाग ऐसा भी है कि जो न केवल इन सुधारों को आवश्यक ही जानते हैं बल्कि समाज में उनको प्रचालित करने का भी यत्न करते हैं। परन्तु ऐसे मनुष्यों की संख्या इतनी कम है कि उनको देख बजाय हर्ष के खेद होता है। सच्चा यत्न करनेवाले, दिल से देशोद्धार चाहनेवाले, मातृभूमि व देश भाइयों से हृदय से प्रेम करनेवाले कितने लोग इस भारत में हैं? इस प्रश्न का उत्तर पाकर उत्साह जनक आशाएं शोकाग्नि में ऐसी भस्म हो जाती हैं कि निराश हो मनुष्य हिम्मतहार बैठता है। परन्तु हमारा जन्म ऐसे समय पर हुआ है कि जिधर हम जावें हमें रास्ता रुकावटों व कांटों से भरा मिलेगा। काम करना, इन काटों को निकालने का यत्न करना, अपने देश को उन्नतिशाली देशों के बराबर बनाने में जो जो कष्ट दुःख सहने होते हैं उन सब को सहना हमारा कर्तव्य है। चाहे कितनी ही मनोभाग हमें मिले हमारा कर्तव्य है कि सब कष्टों को पराजित करके हम अपने धर्म की पालना में लगे रहें और जिन जिन सुधारों को हम अपनी समाज के लिये आवश्यक जानते हैं उन के प्रचार में एक क्षण भी विलम्ब न करें। होने को तो सामाजिक सुधार के लिये सभा हर वर्ष होती है पर इस सभा के सभासदों से हमें यह बड़ी शिकायत है कि इन सुधारों को प्रचल्लित करने का यत्न वे इतना नहीं करते कि जितना उचित है॥

गत मास को सभा के सभापति नाभा के मान्यवर टिक्का साहब हुए थे। आपका सभापति होना विशेष करके इसलिये ठीक था कि आप सिख जाति के एक प्रतिष्ठित सभासद हैं।

आपने अपने व्याख्यान में सिख गुरुओं की पुस्तकों में से उद्धित कर यह अच्छी प्रकार दिखाया है कि जिन सुधारों की आवश्यकता का प्रचार अब अंग्रेज़ी पढ़े हुए लोगों ने आरम्भ किया है उनके प्रचलित करने का यत्न आज से कई सौ वर्ष पहिले सिख गुरू कर चुके हैं। इन्हीं गुरुओं की शिक्षा का परिणाम यह हुआ है कि व्यतिरेक इसके कि पंजाब में मुसलमानों का राज्य बहुत दिन रहा वहां परदा इन प्रांतों की अपेक्षा बहुत कम है। परदे की कमी का एक अच्छा फल यह है कि स्त्रियों को आरम्भिकशिक्षा वहां बहुत है और प्रतिदिन बढ़ती जाती है। कन्या पाठशालाओं की संख्या भी यहां से वहां अधिक है और वहां के लोगों का ध्यान स्त्री जाति की दशा के सुधार की ओर बहुत ज़्यादा है। अगले दिसंबर में यह सभा हमारे शहर में होगी। देखिये इतने दिनों में हम अपनी सामाजिक दशा में कुछ उन्नति पाते हैं या नहीं॥

पतिव्रत धर्म।

इस अंक में हमारे पाठक एक लेख पतिव्रत धर्म पर देखेंगे। हमारे पास बहुतेरे लेख इस विषय पर आते हैं, जिनमें से कई प्रकाशित भी किये जा चुके हैं। वास्तव में यह धर्म व्याहता स्त्रियों का मुख्य धर्म है जिसके पालन करने से दम्पति प्रेम बढ़ता है और स्त्री पुरुष सुख से जीवन व्यतीत कर सकते हैं। पति की आज्ञा पालनकरना और उनकी खुशी का ध्यान रखना बहुत अच्छा है, परन्तु किसी भी बात को चाहे वह कितनी ही अच्छी क्यों न हो यदि हद से ज़्यादा बढ़ा दिया जावे तो उसका परिणाम कदापि सुखदायक नहीं होता॥

समय बदलता जाता है, दुनियां में मान के साथ रहना प्रति दिन कठिन होता जाता है। इस हाल में हर व्यक्ति के लिये यह अति आवश्यक है कि अपनी शक्तियों का प्रयोग भी करे। यदि हम हर दम थोड़ी २ बात में भी दूसरे के आधीन रहना सीखेंगी तो हमारी शक्तियां बिलकुल बेकार हो जावेंगी। और हम दुनियां में किसी कार्य के करने योग्य न रहेंगी। देवकला की बहिन के सोते हुए पति के पास पानी लेकर खड़े रहने ने उसे चाहे स्वर्गलोक को भेजा हो, पर

इतना हम अवश्य कह सकती हैं कि इस जन्म में उसने अपने जीवन के ये दो, चार घनटे व्यर्थ खोए। यदि हम अपनी विचार शक्ति का प्रयोग इतना भी न करें कि पति को सोते देखें, पानी रख इतनी देर में किसी दूसरे काम को संवार लें तो हमारा मनुष्य होना ही मिथ्या है। हमें यत्न करना चाहिये कि अपने पतियों को हर बात में सम्मति दे सकने के योग्य हों और जहां तक हो सके अपने कामों का बोझ अपने सर लेकर उन्हें इससे हलका करें॥

हमारे हर बात में पति के आधीन रहने का परिणाम यह हुआ है कि बाहर का काम तो मरदों के सिर था ही, घर के सब झगड़े भी उन्हीं के सिर जा लगे हैं। छोटी २ बातों में पति की आज्ञा लेने के लिये उन्हें तंग करना हमें उचित नहीं पति की सेवा करना, उनसे मन से प्रेम करना, उनके आराम का ध्यान रखना हमारा धर्म है, परन्तु गाय, बैल घोड़े की समान ऐसी हो जाना कि स्वामी ने जिधर बाग मोड़ी मुड़ गई हमें उचित नहीं॥

हमें शोक है कि गत मास में गलती से श्रीयुत मन्नन द्विवेदी बी. ए. के स्थान श्रीमती मन्नन द्विवेदी छप गया है। हम इस गलती के लिये क्षमा चाहती हैं और प्रार्थना करती हैं कि सब पाठकवृन्द अपनी २ प्रति में श्रीमती की बजाए श्रीयुत लिख लें॥

श्रीयुत श्यामसुन्दर वैद्य कपूरिया, चौक, बाघवाली गली लखनऊ से लिखते हैं कि निम्न लिखित पुस्तकें स्त्री-दर्पण के ग्रहकों को आधे मूल्य पर देंगे॥

(१) अबबिलायनाटक =) (२) वनिता बोधनी उभाग ।=)
(३) नारी प्रशंसा =) (४) महाराष्ट्री हिन्दी की पुस्तक =)
(५) सुख पाने का मार्ग -) (६) यदसब १।।-)
(७) नीति की तरक्की १)

ये सब पुस्तकें वैद्य जी से उपरोक्त लिखित पते से मंगाई जा सकती हैं॥
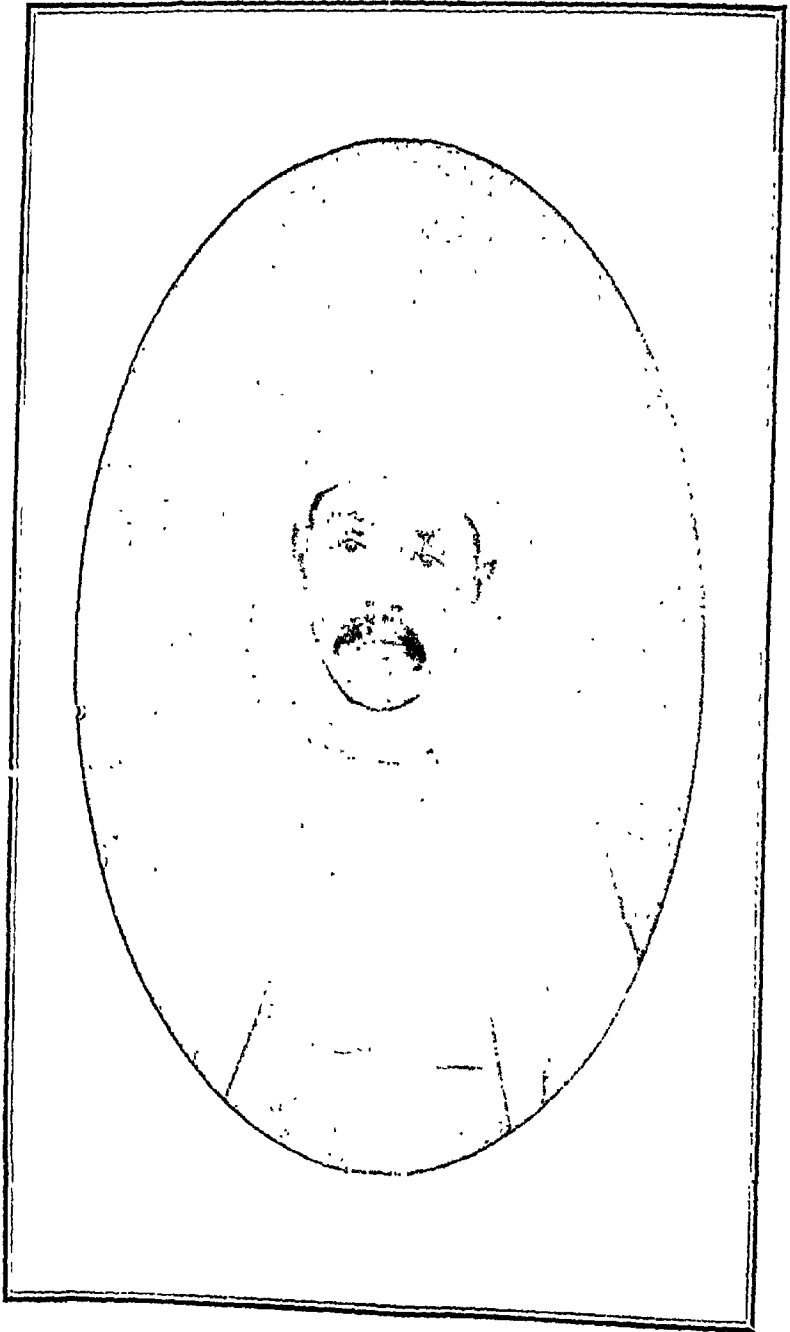
माननीय पण्डित मदनमोहन मालवीय ।

माननीय पं० मदनमोहन मालवीय

सभापति इंडियन नैशनल कांग्रेस।

(श्रीमती कैलासरानी वातल)

कौन सा मनुष्य ऐसा होगा जो यू० पी० (संयुक्त प्रान्त) के माननीय पं० मदनमोहन मालवीय को न जानता हो? और कौन ऐसा होगा जो इस महान पुरुष के चरित्र सुनने का अभिलाषी न हो? प्रत्येक की इच्छा होगी कि इस बुद्धिमान सर्व गुण निधान का जितना शीघ्र हो सके चरित सुनें क्योंकि ऐसे देश हितैषियों के जीवन चरित बहुधा विचित्र हुआ करते हैं और लोग ऐसे चरित सुनने के बहुत उत्सुक होते हैं॥

जन्म व कुल।

आज हम जिस महान पुरुष का चरित अपने देशवासी हिन्दी भक्तों के सन्मुख उपस्थित करते हैं उनको गत दिसम्बर मास में लाहौर में जो चौबीसवीं इन्डियन नैशनल कांग्रेस हुई उसके सभापति होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पंडित मदनमोहन मालवीय "मालवा" के एक प्रधान कट्टर ब्राह्मण कुल में से हैं। लगभग चारसौ वर्ष के हुये आपके पूर्व पुरुषों में से कोई इलाहाबाद में आये। इस कुल में बहुत से संस्कृत विद्याभ्यासी व पंडित पुरुष उत्पन्न हुए। पंडित बृजनाथ इन महान पुरुष के पिता बहुत वृद्ध अवस्था में केवल वर्ष भर हुआ स्वर्गवास प्राप्त हुए। पूर्व (Late) महाराजा दरभंगा व बनारस पं० बृजनाथ जी का बहुत आदर व सन्मान किया करते थे यहां तक कि आपको गुरु समान समझा करते थे। यह पदवी कि उनको गुरु समान समझना केवल उनकी शुद्धताई व पण्डताई का फल था। पण्डित जी ने कई एक संस्कृत की पुस्तकें लिखीं जिनमें से एक आपके पुत्र ने अर्थात पं० मदनमोहन मालवीय ने आपके स्वर्ग पधारने से थोड़े दिन पहिले छपवाई। पं० बृजनाथ ने बहुत से पुत्री व पुत्र अपने पीछे छोड़े। आपने बड़े बलिदान का कार्य्य यह किया कि धन की कमी होने पर भी अपने बालकों को विद्या अच्छे प्रकार की दी। हमारे माननीय अपने पिता के तृतीय पुत्र हैं इन्होंने पच्चीस

दिसम्बर सन १८६१ में अपने पिता के जन्म स्थान इलाहाबाद में जन्म पाया। आपको अपने पिता के पैतृक गृह से इतनी प्रीति व अनुराग है कि उसको एक क्षण के लिये भी छोड़ना नहीं चाहते। ऐसी अवस्था में जब २ इलाहाबाद में प्लेग हुआ यह कठिनता से थोड़े दिन के लिये बाहर चले गए और फिर गृह में आ गए॥

प्रथम अवस्था।

प्रथम ही प्रथम पं० मदनमोहन मालवीय को दो संस्कृत पाठशालाओं में शिक्षा मिली, इसके उपरान्त अंग्रेज़ी स्कूल में भेजे गए। इन्होंने एन्ट्रेंस की परीक्षा इलाहाबाद ज़िला स्कूल से पास की। तदनन्तर म्योर सेन्ट्रल कालिज में भरती हो गए। विद्यार्थी की अवस्था ही से आपने प्रजा सम्बन्धी विषयों में भाग लेना आरम्भ किया और धार्म्मिक प्रचार तथा शिक्षा प्रचार में विशेष भाग लेने लगे। आप आरम्भ से ही इस प्रकार के सोचवान व विचारवान थे कि "दिन दुगनी रात चौगनी" उन्नति कर गए, "इलाहाबाद लिटरेरी इन्सटीट्यूट" व "हिन्दू समाज" के जन्मदाताओं में आप भी हैं। लिट-रेरी इन्सटीट्यूट में जो वादानुवाद हुआ करते थे उसमें आप बड़ी सरगरमी से भाग लिया करते थे। आज तक जिस समय उनको वह प्रारम्भिक वर्ष अर्थात लिट्रेरी इन्स-टीट्यूट में व्याख्यान शक्ति बढ़ाना और वादानुवाद करना जो कि आजकल उनकी उन्नति व मान का कारण हो रहा है स्मरण आता है तो उनके शरीर में उत्साह सा उत्पन्न हो जाता है। मिस्टर हरीसन और डाक्टर थीबो के आप स्नेह पात्र शिष्य थे परन्तु मालवीय जी के हृदय में अपने अध्यापक महामहोपाध्या पं० आदित्याराम जी का बड़ा स्नेह व सन्मान है। यहां तक कि अब तक यदि कोई आवश्यक विचारणीय कार्य्य होता है तो उनकी मति लेते हैं। पं० मदनमोहन का वेग कुछ विशेष उत्तम न था। उन्होंने सन् १८७९ में कलकत्ता यूनिवरसिटी की एन्ट्रेंस की परीक्षा पास कर सन् ८१ में एफ़, ए, पास किया और ८४ में गरैजुएट हो गए, इसके सात वर्ष उपरांत एल, एल, बी, पास किया॥

अध्यापक ।

धन कुछ यथेष्ट न होने के कारण पं० मदनमोहन मालवीय ने सन १८८४ में गवर्नमेंट हाईस्कूल में असिसटेंट मास्टरी करली और सन ८७ तक पचास से पच्चत्तर रुपये तक मासिक पर काम करते रहे। बड़े हर्ष का विषय है कि हमारे प्रांत के प्रसिद्ध पुरुष डाक्टर सतीशचन्द्र बैनरजी आपके शिष्यों में से थे। मालवी जी सरकारी नौकर होने पर भी राजनैतिक सम्बन्धी में बराबर भाग लेते थे और सन् ८६ की कांग्रेस के समय में यद्यपि वह सरकारी कर्मचारी थे तौभी वे कांग्रेस में गये और वहां व्याख्यान भी दिया था॥

समाचार पत्र लेखक।

"हिन्दुस्तान" पत्र (जो कि प्रथम प्रकाशित हुआ करता था) के स्वामी (Proprietor) कालाकांकड के राजा रामपाल सिंह ने प० मदनमोहन मालवीय को उस पत्र का सम्पादक बनाना चाहा। श्रीयुत मालवीय जी ने यह सोंचकर कि समाचार पत्र लिखना भी शिक्षा आदि से सम्बन्ध रखता है और उत्तम काम है सम्पादक होना स्वीकार कर ढाई वर्ष तक दो सौ रुपये मासिक पर काम किया। आपने इस बुद्धिमता व चातुरता से इस पत्र को उन्नति दी कि आपकी प्रशंसा गवरन्मेंट एडमिनिसट्रेशन रिपोर्ट में छपी "हिन्दुस्तान" का सम्पादक पद छोड़ने उपरान्त आप इन्डियन यूनियन नामी पत्र के सम्पादक हो गए जो कि हमारे माननीय प० अयोध्यानाथ जी के प्रबन्ध से निकलता था। प० मदनमोहन मालवीय को पूरा भरोसा है कि समाचार पत्र के द्वारा ही सर्व सम्बन्धी विचार होने में पूरी सहायता मिलती है और इन्हीं के द्वारा हमारी सरकार हमारी इच्छायें सुन सकती है और हम प्रगट कर सकते हैं। यह सोंचकर मालवीय जी ने तीन वर्ष हुये हिन्दी भाषा में एक पत्र (आप को अपनी मात्र भाषा से बहुत स्नेह है) "अभ्युदय" जारी कर दिया जो कि इस समय बड़ी उन्नति से चल रहा है। यहां तक कि अब अर्ध सप्ताहिक हो गया है और एक दैनिक अंग्रेज़ी पत्र "लीडर" भी आप के यत्न से निकल रहा है। जिस समय पं० मदनमोहन "हिन्दुस्तान" का काम करते थे उस समय आप के बहुत

से मित्रों ने मति दी कि आप वकालत पास्न करें । पं० मदन-मोहन वकील होना यथोचित नहीं समझते थे क्योंकि आपको धन उत्पन्न करने की कोई विषेश इच्छा न थी किन्तु धार्म्मिक शिक्षा वा शिक्षा इत्यादि को आप अपने जीवन का बड़ा भारी भाग समझते थे। सर्व मित्रों के कहने पर आप ने वकालत पास की और सन ६१ में एल एल बी० परीक्षा में उत्तीर्ण होकर ६३ में हाईकोर्ट में वकालत आरम्भ की ॥

सर्व सम्बन्धी जीवन (Public life)

ऊपर के समाचार से विदित हुआ होगा कि पं० मदनमोहन मालवी विद्यार्थी के समय में ही सर्व सम्बन्धी विषयों में भाग लिया करते थे । उन्हों ने "हिन्दूसमाज" स्थापित की । इसी प्रकार मालवीय जी ने अन्य विषयों में व धार्म्मिक काम में भाग लिया और बहुत से परोपकारी काम स्थापित किये ॥

कांग्रेस ।

पं० मदनमोहन मालवीय नें द्वितीय कांग्रेस जो कि कलकत्ता में देश भक्त मिस्टर दादा भाई नौरोजी के सभापतित्व में हुई थी प्रवेश किया । वहां आपने जो और मनुष्यों को व्याख्यान देते हुए सुना तो आप के हृदय में भी भावना उत्पन्न हुई कि मैं भी इस योग्य बनूं । अतएव इन्हों ने अपने अध्यापक पं० आदित्याराम के ढाड़स देने से यह प्रथम ही बार था कि व्याख्यान दे डाला । इस व्याख्यान का असर लोगों पर बहुत उत्तम पड़ा, यहां तक कि मिस्टर हयूम ने आप के व्याख्यान की प्रशंसा अपनी कांग्रेस की रिपोर्ट में की । मालवीय जी का उन के उत्तम २ व्याख्यान देने व वादानुवाद करने से बहुत मान बढ़ गया, यहां तक कि सर चारलस शिवनलेट, मिस्टर केन, सर फ़ीरोज़ शाह मेहता इत्यादि बड़े बड़े पुरुष इन का बहुत आदर करने लगे । सन ८७ की मद्रास कांग्रेस पर मिस्टर हयूम को आशा थी कि नार्थ वेस्ट प्रान्त (संयुक्त प्रान्त) के सब से कम डेलीगेट आवेंगे । इस बात ने मालवी जी के हृदय को विदीर्ण किया और कहने लगे क्या "हमारा प्रान्त" ही सब से पीछे रह जावेगा । यह सोच-

कर उन्होंने दौरा लगाना आरम्भ किया और (संयुक्त प्रांत) के ४५ डेलीगेट मद्रास कांग्रेस में गए मालवीय जी सदा कांग्रेस की कमेटी में विराजमान हुआ करते हैं ॥

कौंसिल के सभासद ।

पं० मदनमोहन मालवीय इलाहाबाद म्युनिसिपल बोर्ड के सभासद बहुत दिन हुए चुने गये थे और एक दो बार वाइस चेयरमैन भी रहे । ग्यारह वर्ष हुए जब आप प्रयाग विश्व विद्यालय (इलाहाबाद यूनिवरसिटी) के सभासद चुने गए और पं० विशंभरनाथ जी के छोड़ देने पर लेजिसलेटिव कौंसल के मेंबर हो गए । बड़े हर्ष की बात है कि अब नये सुधारों के अनुसार जो इस प्रान्त की लेजिसलेटिव कौन्सल बनाई गई हैं उसके आप सभासद चुने गये हैं तथा इस प्रान्त के वे सर्कारी मेंबरों द्वारा आप वाइसराय के कौंसल के भी मेम्बर चुने गये हैं । आशा है कि आप यहां भी अपने देश के हित में बहुत कुछ जैसा कि सदा से करते आये हैं करेंगे ॥

शिक्षा ।

पं० मदनमोहन मालवीय विद्यार्थियों को लाभ पहुंचाने में हर समय तत्पर रहते हैं । इलाहाबाद में जो और प्रान्तों के विद्यार्थी पढ़ने आया करते थे उन को निवासस्थान अच्छा न मिलता था और और प्रकार का कष्ट हुआ करता था भला मालवीय जी इस कष्ट को कब सहन कर सकते थे । उन्हों ने माननीय पं० सुन्दरलाल से मिलकर इलाहाबाद में हिन्दू बोर्डिंगहाउस सर अनटूनी मैकडोनेल के नाम से बनवाया और विद्यार्थियों के वास्ते वहां पर ठीक इन्तज़ाम करवाया । पं० मदनमोहन अपने वृते Profession की हानि करके यहां तक कि अपने पास से व्यय करके बड़ी बड़ी दूर से जाकर बोर्डिंगहाउस के लिये चन्दा इकट्ठाकर लाये और उनको सन्तोष होगा कि उनके परिश्रम का फल उनको इस समय मिल रहा है अर्थात विद्यार्थी बिना किसी कष्ट के सुख पूर्वक बोर्डिंगहाउस में रहते हैं और मालवीय जी को इस कार्य्य के लिये धन्यवाद देते हैं । आप स्कूल कमेटी के सभासद

भी रह चुके हैं। जिसके चेयरमेन जेट मिस्टर रौबर्ट थे। जो कुछ आपने कमेटी में काम किया वह सब पर प्रगट है॥

धार्म्मिक।

ऊपर लिख चुके हैं कि पं० मदनमोहन मालवीय को धार्म्मिक विषयों में बड़ा अनुराग है और धार्म्मिक उत्साह उनमें इस प्रकार विराजमान है गोया धर्म्म की ही मूर्ति हैं। उनको पूरा विश्वास है कि धार्म्मिक शिक्षा न होने से मनुष्य महत्व को प्राप्त नहीं हो सकता और इसके न होने से मनुष्य ऐसा ही अनशोभित मालूम होता है जैसे विना अस्त्र शस्त्र चत्री और विना पंगडताई ब्राह्मण। मालवीय जी स्वधर्म को इस उत्तम रीति से निबाहते हैं और स्वकर्तव्य को इस प्रकार अपना धर्म्म समझते हैं कि उसके अनुरक्त बात करना वह पाप समझते हैं। पं० मदनमोहन मालवीय की इच्छा है कि स्कूलों तथा पाठशालाओं में धार्म्मिक शिक्षा दी जावे और उन्होंने स्कूलों के वास्ते पुस्तकें भी लिखी हैं। १८७६ में सनातन धर्म्म सभा जो इलाहाबाद में हुई थी उसके मूलोत्पादक अथवा जान प्राण मालवीय जी थे॥

हिन्दू यूनीवर्सिटी का अनुसन्धान।

पं० मदनमोहन मालवीय की बहुत दिनों से यह इच्छा हो रही है कि बनारस में हिन्दू यूनीवर्सिटी स्थापित करें और उन्हें आशा है कि वह इस में प्राप्तार्थ होंगे। मालवीय जी की यह इच्छा सब पर प्रगट होगी कि वह साईन्टफ़िक, साईन्स, और हस्तकृत कार्य्य के साथ २ धार्म्मिक शिक्षा देना चाहते हैं और इसी को अपने देश की उन्नति की राह समझते हैं॥

हस्तकृत कार्य्य या स्वदेशी गमन।

लगभग तीस वर्ष के हुए जब से पं० मदनमोहन मालवीय हस्तकृत कार्य्यों में सहायता दे रहे हैं। सन् ८१ में एक देशी तिजारत कम्पनी इलाहाबाद में खुली थी उसके चलाने में आपने बड़ी सहायता दी। मालवीय जी अपने देशी वस्तुएं सेवन करने को धार्म्मिक कर्तव्य समझते हैं क्योंकि इसी के द्वारा वह अपने निर्धन भाइयों को लाभ पहुंचा सकते हैं। मालवीय जी उन मनुष्यों

में से हैं जिनके उद्योग से इण्डियन इन्डसट्रियल एसो-सियेशन १९०७ में इलाहाबाद में स्थापित हुई। पं० मदनमोहन मालवीय की यह इच्छा है कि बनारस में जो हिन्दु यूनीवार्सिटी स्थापित की जावे उसमें उच्च प्रकार की शिक्षा दी जावे और साथ २ धार्म्मिक शिक्षा भी दी जावे। १९०७ में जो सरजान ह्यूट ने नैनीताल इन्डसट्रियल कॉन्फ्रेन्स इकट्ठी की थी उसके सभासद आप ही थे और प्रयाग शुगर कम्पनी लिमीटेड के नेव डालनेवाले भी आपही हैं॥

सर्व जन प्रिया।

पं० मदन मोहन मालवीय इस प्रकार के दयावान व दान-वान पुरुष हैं कि कंगालों और निर्धनों को देखकर दया आना तो उन का स्वाभाविक धर्म है। जिस समय इलाहाबाद में प्लेग का दौरा था तो मिस्टर फेरर्ड सी० आई० ई० कलक्टर ने प० मदन मोहन से सहायता मांगी। मालवीय जी ने हर्ष से इस बात को स्वीकार किया और जहां तक बस चला अपने निर्धन देशी भाइयों की सहायता की। जिस जिस स्थानों में प्लेग होता मालवीय जी स्वयं जाकर वह स्थान शुद्ध पवित्र करवाया करते थे और कलक्टर को मति दी कि लोगों के वास्ते सोहबतिया बाग़ में झोपड़ियां डलवा दें। आप सुबहः सांझ झोपड़ियों में स्वयं जाकर लोगों को देखा करते थे कि कहीं उन को कष्ट न हो॥

गुण।

पं० मदनमोहन मालवीय को यदि ग़ौर से देखा जावे तो इस पुरुष में सिर से पैर तक दया ही दया है। इस पुरुष के हृदय में प्रीति व परोपकार का समुद्र ऐसा बह रहा है कि इन को अपने लाभ का कदाचित चिंतवन भी नहीं करने देता। आप अपनी मति पर इस प्रकार दृढ़ रहते हैं कि कोई आप के हृदय से किसी प्रकार का विचार उठा नहीं सकता है। पर उपकार, बड़ों का सन्मान करना, कगांलों निर्धनों को देख दया आना, अपने देश वासियों की उन्नति सोचना तो आप का स्वाभाविक धर्म्म है। आप को अपने भारतवर्ष और धार्म्मिक मत पर इस प्रकार गर्व है कि इसके

तुल्य और किसी को नहीं समझते हैं। आप मित्रों से सदा मित्रता रखते हैं और शत्रुओं को सदा क्षमा करते हैं। आप राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेना भी अपने धार्म्मिक प्रथा का भाग समझते हैं क्योंकि उनके विचार में इससे धार्म्मिक व देश की दशा सुधरती है और आशावान रहना तो आपका स्वभाव हैं॥

यदि ऐसे महान पुरुष को स्त्री जाति के दुर्दशा पर दया न आवे तो आश्चर्य्य हो, मालवीय जी जब कालिज में थे, जब स्त्रियों को शिक्षा देना आक्षेपन समझा जाता था तभी, से वह स्त्री शिक्षा के प्रबल सहायक हैं और उसका प्रत्यक्ष फल यह हैं कि प्रयाग में एक गौरी पाठशाला आज चार पांच वर्ष से स्थापित है। जिस में ऊंचे घराने की सैंकड़ों ऐसी कन्याओं को शिक्षा मिलती है जिनके माता पिता उन्हें घर से बाहर भेजना अपनी मर्य्यादा के विपरीत समझते हैं। अन्त में हमारी उन से यह प्रार्थना है कि अपना थोड़ासा समय हम अबलाओं के दशा सुधारने में देवें कारण कि समाज के जिन सुधारों को साधारण मनुष्य बरसों में कर पाते हैं उसे आप ऐसे मनुष्य बात की बात में कर सक्ते हैं। क्या मालवीय जी हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार न करेंगे? क्या जिस मदन मोहन ने द्रोपदी की पुकार सुनकर आतुर होकर दौड़ते हुए हस्तिनापुर आये थे उसी दृढ़ भक्त मदन मोहन हम अबलाओं की पुकार पर ध्यान न देगा?

जिस महान पुरुष के जीवन चरित का वृत्तान्त ऊपर दिया है उनके लिये हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा उनको सब कष्टों से बचा रक्खे और भविष्यत आयु आपकी अच्छी स्वास्थ्य व निर्विघ्नता से कटे। ऐसा महान पुरुष हमको मिलना दुर्लभ है। हमें भारत के भाग्य से निराश न होना चाहिये क्योंकि भारत माता में अभी इतनी शक्ति शेष है कि वह ऐसे २ पुत्रों को उत्पन्न करें, जो गिरे पड़े भारतवासियों को इस योग्य बनावें कि वे अपने जननी के कलंक के टीके को मिटाकर उसे उन्नति के उस शिखर पर पहुंचावें जहां इस समय पृथ्वी के अन्य २ देश विराजमान हैं॥

पतिव्रता धर्म क्या है।

(पुत्री बाबू विक्रमाजीत सिंह, कानपूर)

अयोध्यापुरी में सारस्वत जाति में एक पवित्र और सुपात्र अयाचित वृत्तिवाला ब्राह्मण रहता था, उस के देवकला और अलोपा नाम की दो कन्यां थीं, उन में देवकला बड़ी और अलोपा छोटी थी, देवकला दस वर्ष की और अलोपा सात वर्ष की थी। यह दोनों बहिनें बाल्यावस्था में जिस समय पाठशाला में विद्याभ्यास करती थीं, उसी समय इन के माता पिता देवलोक को पधारे, इस से इन की पालना करनेवाला कोई न रहा। न तो इन की जातिवालों का वहां कोई अन्य घर था, न इन के पास कुछ पूर्वोपार्जित द्रव्य था, कि जिस से ये अपना भरण पोषण कर सकें; ऐसी विपत्ति की दशा में विद्या के संस्कार से देवकला ने अपने मन में ऐसा विचार किया 'कि मुझे पहिले अपना विवाह कर लेना ठीक नहीं किंतु छोटी बहिन का कर देना ठीक है, तदनुसार प्रागराज निवासी पवित्र जातिवाले ब्रह्मप्रकाश नामक ब्राह्मण के साथ अपनी छोटी बहिन का विवाह कर दिया। जो कुछ पिता का द्रव्य था उसे खर्च कर शास्त्र की रीति से उसे कन्यादान दी, और अपनी छोटी बहिन को उस के पति के साथ उस के घर भेज दिया; तदनन्तर विषय वासना से चित्त को हटा नैष्ठिक ब्रह्मचर्य धारणकर विद्याभ्यास करने लगी। क्रमशः उसने षटशास्त्रक विद्याभ्यास किया और पीछे वैद्यका काम अभ्यास करने लगी; पुनः योगशास्त्र का अनुभव करने के लिये गुरु की आज्ञा ले, सरजू नदी के किनारे एक निर्जन वन में एकांत स्थान में जा रही। वह प्यारी देवकला १२ वर्ष तक योग के प्रभाव से फल फूल खा, अष्टाङ्ग योग धारणकर अष्ट सिद्धियों को वशकर राज योग में निपुण हो गई, उस को ऐसी शक्ति हो गई कि मैं करूं वही होगा। यह विचार अपना पराक्रम प्रगट करने और अपनी छोटी बहिन का दुःख मिटाने को उस के घर की तरफ़ चली। चलते २ बारह बज गये जब कि गर्मी बहुत होने लगी और वह सह न सकी, तब एक वृक्ष की ठंडी पवन देख, वहीं पर बैठ शीतल वायु का सेवन करने लगी। इतने में उस वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ एक कौवा कांव कांव

करने लगा, और मल मूत्र भी त्याग किया। देव कला ने दोचार वार उड़ाया परन्तु वह वहीं फिर आकर बैठ जाता था। यह देख देवकला ने क्रोधित हो अपनी योग शक्ति से उस को और वृक्ष को भस्म कर डाला, और वहां से उठकर चलती हुई दूसरे दिवस अपनी छोटी वहिन के यहां पहुंची और वहिन के घर से थोड़ी दूर पर बैठ गई, एक कन्या से उस के पास यह कहला भेजा कि तेरी वहिन देवकला तुझ से मिलने को आई है। कन्या ने जा वैसाही अलोपा से कहा जैसा देवकला ने कहा था॥

अलोपा यह सुनकर तो वहुत खुश हुई लेकिन वह पतिव्रता धर्म इस प्रकार पालती थी कि उस को अपना प्रधान कर्तव्य छोड़ देवकला से मिलने का मन न हुआ, क्योंकि उसके पति ब्रह्मप्रकाश ने भोजन कर के शयन भवन में जा अलोपा को जल लाने को भेजा, वह पानी लेने गई इतने में वह निद्रा वश हो गया, जब अलोपा पानी लेके आई, तो पति को निद्रा वश देख पानी का लोटा हाथ में लिये खड़ी रही, और स्वामी की आज्ञा विना न लोटे को ज़मीन पर रक्खा और न बैठी न सोते हुए पति को जगा सकी। ऐसे खड़े खड़े उसे दो घन्टे बीत गये, इतने ही समय में देवकला ने कन्या के हाथ दो चार वार कहला भेजा किन्तु अलोपा ने यही उत्तर दिया कि स्वामी की आज्ञा लेके आती हूं। निदान जब ब्रह्मप्रकाश जाग्रत हुए, तब उन को पानी दे, सावधानी से हाथ पग धुला, बहुत नम्रता पूर्वक बोली कि "हे स्वामिन! मेरी वहिन देवकला मुझ से मिलने के लिये दो घंटे से बाहर खड़ी है, उस ने दो चार वार मुझे बुलवाया भी है; जो आप की आज्ञा हो तो मिल आऊं" ब्रह्मप्रकाश ने उत्तर दिया "हे प्रिये! तुम्हारी वहिन दो घंटे से खड़ी है तो अब तक तुम क्यों नहीं मिल आई" ॥

अलोपा नम्रता पूर्वक कहने लगी कि "हे महाराज! मेरी वहिन मुझे पार नहीं उतार देगी; किन्तु मुझे तो आपकी सेवा ही अधार है और वही मेरा परम धर्म भी है, उसे छोड़ वहिन से मिलने जाना कदापि उचित न समझा इसलिये अब तक न गई। अब आपकी आज्ञा पाऊंगी तो जाऊंगी"। ब्रह्मप्रकाश बहुत

आनन्द से बोले कि "हे प्रिये ! तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो मैं इस समय तुम्हारी पति परायणता का नियम देख बहुत आनन्दित हुआ हूं, इससे तुमको जो चाहिये सो मांगलो"। अलोपा बहुत आधीनता के साथ कहने लगी कि "हे महाराज ! आपकी सेवा में मेरा अधिक प्रेम रहे, यही वर मुझे अपेक्षित है"। ब्रह्मप्रकाश अपनी धर्म पत्नी का शुद्ध धर्म गरभिता सुन मनही मन में अपने को बहुत धन्यवाद दे "तथास्तु" कह उसे बहिन के पास जाने की आज्ञा दी। अलोपा आज्ञा पाके बहिन से मिलने गई, और उस के निकट जा उसे आदर सहित दण्डवत प्रणाम किया। देवकला बहुत काल से क्रोधित हो रही थी कि देखो मैं कहां से चलकर आई हूं, और यह मुझ से मिलने भी नहीं आई, देखते ही उसने क्रोध किया, परन्तु अलोपा के पतिव्रता होने से उसका क्रोध उसपर नहीं चला। अलोपा बोली कि "बहिन मैंने तेरे मनकी जान ली है" हंसके मधुरता से कहने लगी कि "हे बहिन मैं कौवा व वृत्त नहीं हूं कि मैं जलकर भस्म हो जाऊंगी" देवकला यह बात सुन मन में बहुत अचम्भित हुई और अपनी छोटी बहिन से पूछने लगी कि तूने कौन सी विद्याभ्यास की है या कौन सी उपासना की है, क्योंकि मैंने योगशास्त्र सीखा किन्तु अपने घर में तू क्या करती थी यह मुझे खबर नहीं हुई। मैंने कौवे और वृक्ष को यहां से आठ कोस पर भस्म किया उसकी तुझ को खबर हो गई यह शक्ति तुझ में किस देवता के पूजा व व्रत से प्राप्त हुई" अलोपा हंसके कहने लगी कि "बहिन ! यह शक्ति स्त्री में देवपूजा, व्रत या विद्याभ्यास से नहीं आती। क्योंकि मैंने न तो योगशास्त्र का अभ्यास किया न विद्याभ्यास ही किया किन्तु पतिव्रत धर्म धारण किया; जिसको मैं सब व्रतों से उत्तम मानती हूं उसी से यह शक्ति मैंने प्राप्त की है"॥

देवकला कहने लगी "अरी बहिन ! मैं तो विद्याभ्यास जप, तप, मौन व्रत, चारों धाम की यात्रा, सब देवताओं की पूजा करके तेरा दुःख काटने को आई थी। परंतु यह तेरा पतिव्रत देखके वह सब तुम पर निछावर करती हूं; अब हे बहिन ! तू मेरी गुरु होके मुझे पतिव्रत धर्म का उपदेश दे।"

अलोपा बोली "हे बहिन! तुम मुझ से बड़ी हो इसलिये मेरी माता के समान हो, इससे मैं आपकी गुरु होने के योग्य नहीं हूं, परंतु जो मेरी दृष्टि आया है वह तुमसे कहती हूं, उसे तुम सावधानी से सुनलो। हे बहिन! स्त्रियों को अपने पति के सिवाय अन्य पुरुषों की न सेवा न दर्शन करना चाहिये। और अपने पति की आज्ञा का कदापि उल्लंघन न करना चाहिये किन्तु आपसे जहां तक हो सके अपने पति की सेवा और उनकी मदद करनी चाहिये। अपना जीव जाय तो ठीक परन्तु अपने पति को दुःख न देना चाहिये। स्त्री को सबसे पहिले प्रातःकाल अपने पति का दर्शन करना चाहिये। अपने पति के दायें या बायें पग के अंगूठे को धोकर पी लेना चाहिये। अपने पति को कड़वी बात नहीं कहनी चाहिये। जो तुम्हारी की हुई बात बिना देखे मैं ने कही वह इसी व्रत का प्रभाव है"। देवकला बोली "धन्य है बहिन तेरा व्रत। मैं क्या करूं? मेरा विवाह कौन करे"? अलोपा ने उत्तर दिया "बहिन शास्त्र में आठ प्रकार से विवाह लिखा है। उनमें से एक के अनुसार तुम अपनी जन्मभूमि को जाकर स्वयंवर करके अपनी मरज़ी अनुसार पति करलो और पीछे पातिव्रत को पालो तो फिर तुमारा जन्म सफल हो जावेगा"। देवकला यह सुनके अपनी विद्या का अंहकार भूल गई, और अपनी छोटी बहिन को आशीर्वाद देके, आज्ञा ले, अपनी जन्मभूमि अयोध्या को चली गई वहां पहुंच एकादशी को ऐसा नियम किया कि आज प्रातःकाल सरजू जी के लक्ष्मण घाट से नहाके लौटते समय यदि मुझे ऐसा कोई भी पुरुष मिले कि जिसके स्त्री न हो उसको अपना पति समझ उसकी सेवा करूंगी॥

यह विचार करके ब्रह्म मुहूर्त में उठ सरजू जी के लक्ष्मण घाट पर स्नान करके ईश्वर की प्रार्थना करती हुई अपना नियम पूरा करने को चली। थोड़ी दूर जाने पर एक ब्राह्मण के घर का जन्मा हुआ, कुरूप, अपंग, महा रोगी पुरुष मिला। वह सरजू जी के किनारे पर खड़ा हुआ भजन करता था। उसे देख "परमेश्वर की मरज़ी ऐसे

कहकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये उसका विधि पूर्वक पूजन करने लगी, और उस पर अपनी इच्छा प्रगट की कि मैं आपकी पत्नी हूं और आप मेरे स्वामी हो। यह सुन वह अपंग कहने लगा कि "मैं इस योग्य नहीं हूं। आप विद्यावती और चतुर देख पड़ती हो, मेरे साथ विवाह करके अपना जन्म क्यों निष्फल करती हो"? उसने यह कुछ भी नहीं सुना और अपने नियम के अनुसार उसको स्वामी ठहरा लिया। जब वह अपंग पति होने को अस्वीकार करने लगा तब देवकला बोली कि "हे स्वामीनाथ! मैंने अपने मन से आप को स्वामी मान लिया है अब मैं न करूं तो मेरा पतिव्रत धर्म नष्ट हो जाय और मै अपने मन से आपकी दासी हो चुकी हूं, इसलिये आप मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण करो मुझको रूप व धन की कुछ भी आवश्यकता नहीं है मुझे तो आपकी सेवा करके पतिव्रत धर्म पालना है यही मेरी विनती है। आपके व मेरे इस विवाह के सरजू, प्रातःकाल का चन्द्रमा और पार-ब्रह्म परमात्मा साक्षी हैं"। यह सुन वह अपंग देवकला को अपने घर ले आया जब वह उसके मकान में जा पहुंची तब धर्म की रीति से उसको पति करके आप पत्नी के धर्म से प्रीति से बरतने लगी॥

चार वर्ष हो चुके श्रावण भद्र के महीने में रात्रि के समय वर्षा ऋतु का अनोखा दिखाव हो रहा था। पवन का झकझोर, मोर, पपीहा, दादुर आदि का घन घोर शब्द हो रहा था, और आकाश में बिजली की छटा अंधेरी रात में ऐसी सुशोभित देख पड़ती थी कि क्या कहने की बात है। अयोध्यापुरी की राजसभा में अप्सराओं का नाचना और मलार राग की अलोप और मधुर २ सारंगी सितार का स्वर और मृदंग आदि की मधुर २ थाप और झुरझोरों की मधुर मधुर झनकार आ रही थी॥

यह आनंद का समय देख देवकला का पति मन में कहने लगा कि "हे देव! तुमने मुझको हाथ पांव क्यों न दिये! कि मैं भी इस मनोहर दृश्य को देखने जाता। देवकला पति का अभिप्राय जान विनीत भाव से बोली "हे

महाराज ! आप इतना शोक क्यों करते हो ? आपके हाथ पग तो मैं हू और मेरा शरीर आपकी सेवा ही के लिये है चलो मैं आपको यह कौतुक दिखा लाऊं" । ऐसा कह उसने एक पिटारा लिया और उस पर तीनों तरफ़ तीन लकड़ियां बांधी और उन पर कपड़ा इस प्रकार बांधा कि जिसमें पानी न आ सके, फिर उसके भीतर अपने पति को बिठाया और उसको अपने सिर पर रखकर सभा के समीप एक बाजू पर खड़ी होकर अपने पति को सभा का सारा तमाशा दिखलाया। इस प्रकार शाम के सात बजे से लेकर रात को दो बजे तक खड़ी रही परंतु सभा की धूम धाम से वह अपंग भूल गया कि वह किस स्थान पर बैठा है । इधर वह भी पतिव्रता स्वधर्म के अवेश में अपने कठिन परिश्रम को भूल गई ज्यों २ विलम्ब होता था त्योंही त्यों प्रतिक्षण आनंदित होती हुई अपने मन में यह कहती कि "वाह ! क्या अच्छा दिन आज उपस्थित हुआ है कि मेरे मस्तक पर मेरे परम पूज्य प्राणाधार परमात्मा मुकुट के समान विराज रहे हैं" । इन्द्र ऐसा विचार कर रहे थे कि आगे की प्रसिद्ध पतिव्रता सावित्री आदि ने भी ऐसा व्रत नयम नहीं किया इसलिये ऐसा न हो कि यह स्त्री हमारे आसन पर दृष्टि करके परमात्मा के पास से अपने तपोवल से हमारा राज्य मांग ले । ऐसा विचार कर मेघ मंडल को आज्ञा दी कि तुम जाके अखंड जल धारा बरसाकर उस स्त्री के नियम को भंग कर डालो । इन्द्र की आज्ञा पाय मेघ मुशलधार वर्षा करने लगे पवन भी ज़ोर से चलने लगी, परंतु वह स्त्री वहां से एक पग भी न हटी; जैसे २ पवन व पानी ज़्यादा आने लगा वैसे वैसे इसको भी ज़्यादा सुख मिलने लगा। जैसे हाथी पर फूलों की प्रहार कुछ असर नहीं करती वैसे ही उस स्त्री पर मेघ कुछ प्रहार न कर सके, यह समाचार विदित होते ही इन्द्र ब्रह्मा जी के पास स्तुति कर कहने लगे कि हे महाराजा अयोध्यापुरी में देवकला नाम की स्त्री उतकिष्ट पतिव्रत धरम पालती है, उसको बर देकर उसकी मनोकामना पूरी करो, क्योंकि

मैंने उसका नियम छुटाने के लिये उसे बहुत सताया, वह यदि मेरे अपराध के लिये मुझ पर क्रोध करेगी तो मेरा बड़ा अनिष्ट होगा और पृथ्वी पर बहुत हलचल होगी। यह सुनते ही ब्रह्मा जी बड़े विचार में पड़े॥

ब्रह्माजी ने एक दूत को कहा कि "तुम पतिव्रता स्त्री को ब्रह्मलोक में ले आओ। आज्ञा के अनुसार वह दूत देवकला के पास आया और प्रार्थना कर कहने लगा कि "हे मातुश्री! आपको ब्रह्माजी ने बुलाया है और आपका पतिव्रता धर्म देखके बड़ी खुशी से कहते हैं कि जो आप मांगोगी वही मिलेगा आप जल्दी पधारो"। देवकला बोली कि "मुझे ब्रह्मा की कुछ आवश्यकता नहीं मेरे पति ही उनके तुल्य हैं, मुझे वहां का कुछ भी सुख न चाहिये। स्त्रियों की पति सेवा के आगे क्या बिसात है, यदि कोई मूर्ख कहे कि स्वर्गलोक में बहुत सुख मिलता है तो मैं उस पर ध्यान भी न दूंगी, इसलिये तुम जाओ मेरे पतिव्रत में क्यों भंग डालते हो"? यह सुनके दूत लौट गया और ब्रह्मा जी को देवकला की कही हुई बातें सब कह सुनाईं। यह सुनते ही बड़े आश्चर्य में पड़ गए और विचार करके पीछे उसी दूत को उस के पति के पास भेजा और उससे यह कहने को कहा, कि "तुम तो बड़े दुष्ट हो और इस स्थान में आने योग्य नहीं हो परंतु तुम्हारी स्त्री पतिव्रत धर्म पालती है इस से तुम भी आने योग्य हुए हो" यह सुन दूत देवकला के पति के समीप आकर कहने लगा "आपका कर्तव्य देखके तो आप स्वर्गलोक में जाने योग्य नहीं हो परन्तु इस साध्वी के प्रताप से आप दोनों को ब्रह्मा जी ने बुलाया है आप जल्दी पधारिये" पतिव्रता के पति ने कहा कि "यहां की राज्यसभा का सुख छोड़के हमको स्वर्गलोक में जाना उचित नहीं है"। यह सुन दूत लौट गया और जाकर कहा कि "हे महाराज! वे स्वर्ग के सुख को स्वीकार नहीं करते, इससे आपका प्रयत्न करना वृथा है"। यह सुन ब्रह्माजी तथा इंद्रजी विष्णु भगवान के पास गये और इस स्त्री की बात कह सुनाई और बोले कि "हे महाराज! अब हम क्या करें? वे तो यहां नहीं आते इसलिये आपके ध्यान में जो आवे, सो करो" यह सुन विष्णु भगवान महादेवजी और सब देवताओं को लेकर उस पतिव्रता के पास आये व उन दोनों को नम

स्कार किया परन्तु देवकला ने उनकी तरफ़ भी न देखा । वे सब मिलकर उससे कहने लगे कि हमारे लोक को चलो परन्तु देवकला ने कुछ जवाब न दिया ॥

एक महाराज बोले कि यह सब देवता तुमको दर्शन देने आये हैं तुम इनका दर्शन करो और कृतार्थ हो । यह सुन देवकला को बड़ा क्रोध हुआ और कहने लगी "मुझे कृतार्थ करनेवाला कौन है ? उन्हें मैं जानती नहीं वे मेरा भला क्या करेंगे ? मुझे कृतार्थ करनेवाले तो यह देखो मेरे मस्तक पर विराजमान हैं उनके दर्शन से ही मैं नित्य कृतार्थ होती हूं तुम लोग क्या मुझे दुष्ट दृष्टि से भ्रष्ट करने आये हो ? या मेरी परीक्षा लेने आए हो"? यह सुन सब चुप हो गये । देवकला का पति यह कोलाहल सुनकर बोला "तुम क्या कहते हो हमसे कहो हम तुम्हारे धाम में आने को राज़ी हैं लेकिन इस राजसभा से आपका लाभ हुआ है, इसको छोड़के वहां पर आना मुझे कैसे उचित है" ? यह सुनके सब देवता राज्यसभा में गये और राजा से कहने लगे कि एक विदुषी, गुणवती, सत्यावती व पतिव्रता स्त्री है वह हमारे धाम में आने योग्य है, परन्तु वह अपने पति को छोड़के जाना नहीं चाहती और उसका पति आपके विना आना स्वीकार नहीं करता इस से आप उनको साथ ले चलें"। यह सुन राजा बड़े आदर से कहने लगा कि "हे महाराज ! राजा प्रजा को छोड़ शास्त्र में नहीं लिखा कि सुख भोगें अतएव जो उस पतिव्रता में सत है कि हमें हमारी नगरी सहित ले चले तो हम आपके धाम में जाने को तैयार हैं । ब्रह्माजी ने राजा की ऐसी अच्छी राजनीति देख उन दोनों को उत्तम विमान में बैठाया और सारी अयोध्यापुरी स्वर्गलोक को चली गई ॥

धन्य है ऐसी स्त्री को जिसके पीछे सारी नगरी स्वर्गलोक को चली गई ॥

रानीचन्दा।

(कुमारी जगदम्बेश्वरी सपरू, इलाहाबाद)

महाराजा दलीपसिंह के शिक्षादायक और शोकमय वृत्तान्त को सब जानते हैं, यह महाराजा रणजीत सिंह के लड़के थे, महारानी चन्दा इन की माता थीं। रणजीत सिंह इस महारानी को बहुत चाहते थे इस का वास्तविक नाम चन्द्रावती था और यह सर्व गुण निधान थी, तथा सब प्रकार से महाराजा-रणजीत सिंह की रानी होने के योग्य थी, रणजीत सिंह सिक्ख जाति के मुखिया और सिक्ख राज्य की नीव डालने वाले हुये थे। इन का राज्य दिल्ली से लेकर काबुल तक था और उन की खालसा सेना युद्ध विद्या में निपुण थी। महाराजा रणजीत सिंह तीन लड़के छोड़ मरे थे। महाराजा के पीछे बहुत से उपद्रवी सर्दार उत्पन्न हुए जिन्होंने देश में बहुत सी हलचल मचा दी, परिणाम यह हुआ कि थोड़ी २ सेना लेकर बहुत से सर्दार स्वतन्त्र बन बैठे अन्त में महाराजा दलीपसिंह पांच वर्ष की आयु में राजसिंहासन पर बैठाया गया और महारानी चन्दा ने राज का प्रबन्ध अपने हाथ में रक्खा। वह बड़ी बुद्धिमती और उत्साहवाली थी रणजीत सिंह के सारे गुण इस में विद्यमान थे कौन्सल और युद्ध में भी उस की कई बार परीक्षा हो चुकी थी। उस ने खालसा सेना को अति वीर बना दिया था, और शेरसिंह को जो बड़ा वीर पुरुष था सेना नायक नियत किया था। उस के राज्य की सीमा अङ्गरेज़ों के राज्य के साथ मिली हुई थी। अङ्गरेज़ उस की योग्यता को और सेना के प्रबन्ध को देखकर भयभीत हुए। और सतलज नदी के किनारे बड़ी सेना इकट्ठी की, सिक्ख इस बात से अप्रसन्न थे कि अङ्गरेज़ हमारे राज्य में प्रविष्ट हो गए और अङ्गरेज़ों की यह शिकायत थी कि सिक्खों ने उन के राज्य की पृथ्वी अपने राज्य में मिलाली। परिणाम यह हुआ कि अङ्गरेज़ और सिक्खों में युद्ध होने लगा और एक वर्ष तक होता रहा। इस महान युद्ध में महारानी चन्दा ने राजा और सेनापति दोनों के काम स्वयं किये। बहुत से कृतघ्न सर्दार छिपे २ अंगरेज़ों को सहायता देने लगे।

पर रानी अपने देश के बचाने के हेतु पर्वत के समान स्थिर थी, सिक्खों की लड़ाई पतिहासिक है, फ़िरोज़पुर, अलीवाल, सुबराऊं, और दूसरे स्थानों पर भी लड़ाइयां हुईं। अंगरेज़ों को ऐसी योधा और बलवान सेना से प्रथम कभी काम नहीं पड़ा था परन्तु महारानी अकेली अपने मन्त्री और सर्दारों की दुष्टता से असक्त हो गई इसलिये उसकी बार २ पराजय हुई अतएव उस को सन्धि करनी पड़ी। जब उस के एक सेनापति ने आकर कहा कि सुबराऊं में पराजय प्राप्त हुई तो उसने बड़ी सावधानी से उत्तर दिया कि "मेरा खालसा फिर लड़ेगा कुछ भय नहीं" एक मन्त्री ने सम्मति दी कि आप युद्ध समाप्त कर दीजिये। रानी ने उत्तर दिया कि "मैं वही काम करती हूं जो मेरा पति करता था जब तक मेरे शरीर में प्राण है फिरङ्गी पञ्जाब को नहीं ले सकते"। युद्ध उसी प्रकार होता रहा किन्तु अन्त को सन्धि करनी पड़ी। सन्धिपत्र लिखा गया जिस के अनुसार अंगरेज़ों का रेज़िडेण्ट लाहौर में रहने लगा। अब वास्तव में राज्य का काम रेज़िडेण्ट के हाथ में आ गया। वह छिपे २ रानी के निकालने का यत्न करने लगा और अंगरेज़ी प्रतिष्ठा को बढ़ाने लगा। परन्तु यह बात प्रत्यक्ष में नहीं की जा सकती थी दलीप सिंह के बालकपन से लाभ उठाकर उस ने प्रगट कर दिया कि रानी राज्य के विरूद्ध कार्य कर रही है। बालक राजा से पत्र पर हस्ताक्षर करवा कर रानी को देश निकाले की आज्ञा देदी, महारानी पहिले तो शेखपुर तत्पश्चात् बनारस भेजी गई। जब लोग देश निकालने का आज्ञापत्र लिये हुए आये तो रानी ने कहा "यह आज्ञापत्र किस ने लिखा है। सर्दार ने कहा "राजा ने लिखा" रानी चन्दा ने कहा "बहुत अच्छा मेरा धर्म्म है कि मैं अपने राजा की आज्ञा पालन करूं। मैं पञ्जाब की स्वामिनी नहीं हूं। मैं अवश्य चली जाऊंगी तुम मुझ से भय मत करो। मैं अपने पुत्र के विरूध द्रोह का झगड़ा खड़ा करना नहीं चाहती, मैं समझ गई पञ्जाब के बुरे दिन आगए"। निदान वह शेखपुर से बनारस को भेजी गई। यह काम खालसा सेना के प्रसन्न करने के लिये किया गया था, जो उसको देवी मात्र पूजते थे। जब उस को बनारस भेजने का कारण बतलाया गया तो वह बोली कुछ भय नहीं कारागार सब एक समान है चाहे पवित्र

स्थान में होया अपवित्र में" । वह काशी में अति शान्ति के साथ रही परन्तु उस को इतनी अपने पुत्र की चिन्ता न थी और न राज्य छिनने का ध्यान था जितना वह सदैव यह विचार कर रोया करती थी कि पंजाब की स्वतन्त्रता और गौरव जाता रहा । उसी शोक में वह बीमार पड़ गई और मृत्यु को प्राप्त हुई । जब इस के रोग का समाचार खालसा सेना को पहुंचा तो क्रोध में आकर अंगरेज़ों से युद्ध आरम्भ कर दिया क्योंकि इस सारे उपद्रव का कारण रेज़ीडेण्ट ही था । वह दूसरी लड़ाई भी एक ऐतिहासिक घटना है । लार्डगफ़ अंगरेज़ी जनरल को परास्त किया और सिक्खों ने फिर अपना राज्य हाथ में ले लिया परन्तु शोक कि गुजरात की लड़ाई में सिक्खों को बड़ी भारी पराजय हुई और उन की सेना बिखर गई । अंगरेज़ी गवर्नमेंन्ट ने दलीप-सिंह को इङ्गलेण्ड भेजदिया और पंजाब को अपने राज्य में मिलालिया । दलीपसिंह ईसाई बना दिया गया उस के वहां कई बच्चे उत्पन्न हुए । महारानी चन्दा बनारस में रोगग्रस्त पड़ी थी उस की कोई औषधि करनेवाला नहीं था कई वर्षों तक उस को क्लेश रहा और जब कभी चिल्लाया करती तो यह कहती थी "मेरे खालसा मेरे वीर खालसा आगे पग बढ़ाओ तुम्हारे राज की आत्मा तुम्हारी सहायता करती रही है सिक्ख जाति की स्वतन्त्रता और महत्व को बचाओ" अन्त में अंगरेज़ों को उस पर दया आई और मृत्यु के समय पूछा कि आप को किस बात से शान्ति हो सकती है उस ने झट कहा कि "मेरे पुत्र दलीप के पास मुझे ले चलो उस को बम्बई में जहाज़ पर बैठाया परन्तु मार्ग में ही उस की मृत्यु हो गई और समुद्र ने उस को अपनी गोद में ले लिया । इंगलेन्ड जाते हुए भी वह यही कहती थी कि "खालसा तुम्हारी जाति का मान तुम्हारे हाथ में ही है ॥

———

भारत ललनाओं की स्वाधीनता।

(मुकुन्दीलाल, इलाहाबाद)

जब कि भारत-लाल स्वयं स्वाधीन नहीं सब भारतवासी पराधीन हैं ऐसे समय पर भारत ललनाओं की स्वाधीनता के विषय में कुछ लिखना हास्यजनक विषय है। परन्तु इस बार मेरा राजकीय स्वाधीनता से आशय नहीं है। मैं यहां पर सामाजिक स्वाधीनता और व्यक्तिवाचक स्वाधीनता के विषय में कुछ लिखूंगा। परन्तु इसके साथ ही मैं यह भी दर्शा देना उचित समझता हूं कि जब तक किसी जाति को राजकीय स्वाधीनता प्राप्त नहीं हो जाती तब तक सामाजिक और व्यक्तिवाचक स्वाधीनता न तो पूर्ण रूप से प्राप्त ही हो सकती है और न स्वतन्त्रता के फल ही समाज या कोई व्यक्ति भोग सकता है। और यह भी बड़ी भूल है कि कोई जाति राजकीय स्वतन्त्रता की बाट देखती रहे और सामाजिक विषयों में समाज को स्वतन्त्रता प्रदान न करे सामाजिक व व्यक्तिवाचक स्वतन्त्रता भी अन्तिम राजकीय स्वतन्त्रता की प्राप्ति में बड़ी सहायता देती हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि योग्यता और अवकाश के अनुसार अपनी शक्तियों का पूरा २ उपयोग करने देना समाज का मुख्य धर्म है। कोई भी व्यक्ति चाहे ब्राह्मण हो वा शूद्र हो स्त्री हो या पुरुष हो उसका यह नैसर्गिक (परमेश्वर का दिया हुआ) हक़ (सत्व) है कि वह अपनी योग्यता व बुद्धि के अनुसार अपनी शक्तियों का प्रयोग करे। जो समाज प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी व्यक्तिवाचक स्वतन्त्रता नहीं देता उसको अन्तिम राजकीय स्वतन्त्रता की आकांक्षा कदापि नहीं करनी चाहिये। जो समाज अपने सभासदों की प्रति न्याय नहीं करता है उसको यह आशा नहीं करनी चाहिये कि उसके साथ भी न्याय होगा। कांटे का बीज बोने से फूल नहीं मिल सकता परन्तु फूल बोने से ही फूल मिलेगा, स्वतंत्रता की कामना किस के चित्त में नहीं उठती है पशु भी स्वतंत्रता चाहते हैं और स्वतंत्रता चीज़ भी ऐसी ही है। वन के एक स्वतन्त्र मृग को देखिये वह क्या हृष्ट पुष्ट है। और एक चिड़िया घर के हिरन को भी देखिये। बछिया का

दृष्टान्त लीजे, जब तक वह खूंटे पर बँधी रहती है देखिये वह छूटने (स्वतंत्रता प्राप्त करने) निमित्त कितना शोर करती है। और भाग्यवशात कहीं खुल गई तो कितने प्रसन्न चित्त से कूदती, फांदती, दौड़ती, फिरती है और फिर कभी बँधना नहीं चाहती। क्या हमारे मनुष्य जानवरों से भी गये गुज़रे हैं। क्या हमारी ललनाओं में कभी भी बन्दीगृह से बाहर निकलने की इच्छा उत्पन्न नहीं होती होगी। क्या भारत ललना पवित्र वायु का सेवन करना नहीं चाहती होंगी! क्या हमारी ललनायें प्रकृति देवी के दर्शन नहीं किया चाहती हैं क्या भारत महिला मंडल अन्धकार में रहना पसन्द करता है! क्या मृगनयन ईश्वर की सृष्टि का अवलोकन करना अपना कर्तव्य नहीं समझते होंगे? क्या भारत महिलाओं की कल्पना शक्ति इतनी मन्द हो गई है कि उनको परदे की दिवालों के बाहर ईश्वर की सृष्टि नहीं दिखाई देती! क्या उनके कानों तक ईश्वर की विलक्षण सृष्टि व भारत के वैभवशाली नगरों की कीर्ति नहीं पहुंचती? अगर पहुंची तो क्या उनके कोमल सूक्ष्म हृदयों में भारत वैभव अथवा भारत कीर्ति स्थम्भों को देखने की आकांक्षा नहीं होती होगी, क्या भारत रमणी अपने नेत्रों की शक्ति का प्रयोग करने से भविष्य में वंचित रहेंगी? क्या हमारी स्त्रियों को कभी अपनी बुद्धि और विचार शक्ति से काम लेने का अवकाश नहीं मिलेगा? क्या भारत ललनाओं को जीवित-जीवन-शिक्षा living-life-education जो कि देखने और अनुभव experience से प्राप्त होती है उसे प्राप्त करने का अवकाश नहीं मिलेगा? क्या सदा के लिये हमारी ललनायें चिड़िया घर की हिरनियां ही बनी रहेंगी? इन प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक पाठक अपने चित्त में सोच लेवें, और थोड़ी समय के लिये परदे की दिवालों के भीतर लहंगा पहनकर अपने हृदय के उद्वेग और तरंग व विचारों का मनन करें। तब शायद पाठकवृन्द को कुछ पता लगेगा कि हमारी महिलाओं के चित्तों में बन्दीगृह में क्या २ विचार उठते होंगे। अब यह देखना है कि —

क्या चिरकाल से ही हमारी ललनायें परदे में रहती आई हैं। क्या कभी भी वे स्वतन्त्रता पूर्वक अपने पति के साथ

धंचरण नहीं करती थीं। क्या प्राचीन समय में यज्ञ इत्यादि सब धार्मिक व सामाजिक कार्य्यों में पत्नी अपने पति के साथ कार्य्य नहीं करती थी। बिना स्त्री के तो कोई भी कार्य्य हमारे पुर्षा करते ही नहीं थे, उदाहरण के लिये वाल्मीक रामायण में से दो दृष्टांत देता हूं॥

दशरथ महाराज ने जब अश्वमेध यज्ञ किया था उस में उनकी रानियां केवल साथ ही थीं ब्रह्म यज्ञ के घोड़े का बलिदान खड्ग से पटरानी यशोदाजी ने किया था। रावण को परास्त करके जब रामचन्द्र घर आकर यज्ञ करने लगे थे तो पत्नी का साथ होना अत्यावश्यक समझा गया, और सीता जी के न होने के कारण स्वर्ण की सीता बनाई गई थी। स्त्रियों को पवित्र वायु सेवन करने की पूरी २ स्वतन्त्रता थी, आजकल के से परदे का नामोनिशान नहीं था। हां यह बात तो सही है कि प्राचीन काल में स्त्री जाति को इतनी अधिक अथवा हद दर्जे की स्वतन्त्रता शायद नहीं थी जितनी कि अमेरीका या इङ्गलैण्ड में है। परन्तु जितनी स्वाधीनता स्त्रियों को फ्रांस व स्पेन में इस समय है उतना तो प्रत्यक्ष रूप में हमारी ललनाओं को भी थी। इसके दृष्टान्त देने की आवश्यकता नहीं समझी जाती। रामायण व महाभारत के पढ़नेवालों को यह सब भली भांति विदित है। वैदिक काल में स्त्रियां को इससे भी अधिक स्वतन्त्रता थी या इतना कहा जा सक्ता है कि जितनी स्वाधीनता इंगलैण्ड ने महिला मण्डल को अभी तक नहीं दी है उससे भी अधिक स्वतन्त्रता वैदिक काल की स्त्रियों को थी। औरतों को अपनी सम्मति देने अथवा अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार (वोट) देने में उदारदिली अंग्रेज़ भी घबड़ा रहे हैं परन्तु वैदिक काल की स्त्रियों को यह सब सत्य प्राप्त थे। महाभारत में भी ऐसे कई दृष्टान्त मिलते हैं। इसके अतिरिक्त अपनी योग्यता अनुसार हमारी रमणियां को पूरी २ स्वतन्त्रता थी कि वे पुरुषों की नाईं राष्ट्रीय कार्य में हाथ डालें, अपनी सम्मति दें और गार्गी, मैत्रेयी द्रौपदी इत्यादि के दृष्टान्तों से तो स्पष्ट रूप से सिद्ध है कि प्राचीन समय की योग्य स्त्रियों को धर्मशास्त्र नीति शास्त्र और साहित्य में अपनी सम्मति प्रकट करने की व

तर्क करने की और नवीन रचना करने की पूरी पूरी स्वतंत्रता थी। कई ललनाओं ने धर्म विषयक तर्कों व शास्त्रार्थों में पुरुषों को परास्त किया। द्रौपदी के युधिष्टर महाराज व भीमसेन प्रभृत्ति के साथ आग्रह पूर्ण संवाद तर्कों को देखिये। अन्त में द्रौपदी की ही सम्मति उसके पतियों को स्वीकार करनी पड़ी। कौरवों से युद्ध आरंभ करने के विषय में द्रौपदी ने कृष्ण से क्या क्या कहा था सो भी पाठकों को याद ही होगा॥

पाठक पाठिकाओं को स्मरण होगा कि कुन्ती ने अपने पुत्रों के पास क्या संदेशा भेजा था। उसने विदुला के वचनों को दोहराते हुए कहा था कि 'बेटी संधि करना ठीक नहीं। डरपोक (कायर) मत बनो। बहादुरों की नाईं कमर कसके धैर्य्य के साथ लड़ने को उद्यत हो, भीरु मनुष्यों के लिये संसार में जगह नहीं है। यह संसार दिलेर बहादुरों के लिये ही है। हिम्मत मत हारो। थोड़े ही से सन्तुष्ट न हो जाओ उठो अपने हक्क के लिये लड़ो। कुत्ते की मौत मरने से सांप के मुंह में हाथ डालना अच्छा है उठो धर्म युद्ध करके कौरवों को परास्त करो ऐश्वर्य्य भोग पांडवों को माता की सम्मति माननी पड़ी॥

विलायत में अपने हक्क मांगनेवाली व अपनी सम्मति देनेवाली स्त्रियां, आज दिन स्त्री जाति का आदर करने की डींग मारनेवाले अंग्रेज़ों से घृणा की दृष्टि से देखी जा रही हैं और पकड़ २ कर कैद की जा रही हैं। हमारे प्राचीन इतिहासों में यह घटना कभी नहीं रही। हमारी महिलाओं को अपनी सम्मति देने अपना हक्क लेने अथवा मनमाना बोलने की पूरी २ स्वतंत्रता रही है। सामाजिक व गृह प्रबन्ध क कामों में सदैव स्त्रियों की सम्मति की ही प्रबलता रही है सब बातें स्त्रियों की इच्छानुसार ही होती थीं। बुद्ध भगवान ने जो स्वतन्त्रता व पद स्त्री जाति को दिया था वह सबको मालूम है। सन्यास धारण कर स्त्रियों ने बौद्ध धर्म का कितना प्रचार किया था अशोक महाराज की कन्या ने युवाकाल से ही सन्यस्थ धारण कर लंका में बौद्ध धर्म

का प्रचार किया। यदि राजपूतों के वैभव के समय की ओर दृष्टि डालें तो पता लगेगा कि राजपूत वीरांगणा अपने पति पुत्रों के साथ कई बार युद्धक्षेत्र में अपने बाहुबल का पराक्रम दिखा चुकी हैं॥

आजकल का जो परदा है वह बहुत पुरानी प्रथा नहीं है। यह प्रथा मुसलमानों के समय से चली है। इसका कारण यह है कि मुसलमानों में पहिले से ही बड़ा परदा चला आया है। और जहां २ वे गये उनके साथ यह 'परदापोशी' का रिवाज चलया गया। इसके अतिरिक्त आरंभ में उन्होंने अपनी उद्दंडता व अत्याचार का खूब प्रयोग किया। अतएव अपनी ललनाओं के सतित्व की रक्षा के निमित्त हिन्दुओं ने भी 'परदा' आरंभ किया जो अब अपनी अन्तिम सीमा तक पहुंच चुका है। यह परदा वहीं ज़्यादातर पड़ा जहां जहां मुसलमानों का अधिक प्रभुत्व व संसर्ग रहा। दक्षिण में (बम्बई व मद्रास हातों में) अभी तक उत्तरीय भारत की तरह परदा नहीं है। वहां की स्त्रियों को उत्तरीय भारत की स्त्रियों से कई गुना अधिक स्वतंत्रता है॥

उत्तरीय भारत में भी परदे की अधिक भरमार शहरों के रहनेवाले लोग और बड़े २ घरानों में हैं। ग्रामीण लोग व नगर निवासी ग़रीब लोगों में अभी भी यह अस्वाभाविक बन्धन नहीं है। सारे संसार में बुरी प्रथाओं को प्रचलित करनवाले धर्म का अपयोग करनेवाले अस्वाभाविक बन्धनों को लानेवाले धनी व बड़े घरानों के लोग ही होते हैं समाज को बांधनेवाले अपनी जाति को पराधीन करनेवाले व्यभिचार को फैलानेवाले ये ही 'बड़े घरों' के लोग होते हैं। इसमें उनका कोई दोष नहीं यह प्रकृति का नियम ही है। जैसे हैज़ा महामारी इत्यादि शारीरिक रोग पहिले मैले कुचैले लोगों में फैलते हैं, ऐसे ही बुरी प्रथा पहिले इन्हीं साफ़ रहनवाले लोगों से आरम्भ होती है। इसीलिये भगवान ने कहा है कि मैं अपने प्रेमियों को और अपने भक्तजनों को सदैव दरिद्र रखता हूं॥

हैं। और ६ भौंड़े यह बतलाते हैं कि किस प्रकार नहरी पृथ्वी से १८६४ में १०२ लाख मन अनाज से १९०२ में १८०२ लाख मन पैदावार हो गई है। फिर कमरे में घुसकर क्या देखते हैं। कहीं मट्टी में भांति २ की नहरें खोदी हैं और उनकी शाखाएं निकाली हैं। कहीं तोफ़ान का चित्र खींचा है। कहीं पुल वा सुरंगें बनाई हैं॥

इस प्रदर्शनी को देखकर हमको हर्ष होता है कि हमारे देश में ऐसी २ विचित्र वस्तुएं उत्पन्न होतीं और बनाई जाती हैं और हमें उत्साह होता है कि हम भी अपनी देशोन्नति के लिये प्रयत्न करें।

यदि पंजाब के किसानों वा दस्तकारों को उन पर ॥) प्रति वार का बोझा न डालकर किसी प्रकार से यह प्रदर्शनी दिखाई जाती तो यह और भी अधिक सफल वा लाभकारी होती। परन्तु जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, इतने से भी यदि हम प्रयत्न करें तो देश की बहुत उन्नति हो सक्ती है॥

श्रीमती महादेवी जी।

(श्रीयुत युगलकिशोर अखौरी बी० ए०)

श्रीमतीजी राय सोहनलाल साहब की मंझली लड़की हैं। राय साहब बिहार प्रान्त में रहकर शिक्षा विभाग में अच्छी कीर्ति छोड़ गये हैं पीछे आप बंगाल सरकार के अनुवादक हुए। आज कल पेन्शन पाते हैं। आप हिन्दी के अच्छे लेखक हैं एक समय में आप की कितनी ही पुस्तकें बिहार के स्कूलों की पाठ विधि में नियत थीं॥

हमारी चरित्र नायिका का जन्म सन् १८७८ में हुआ। आप की सारी तालीम घर ही पर हुई एक मेम ने थोड़े दिनों तक पढ़ाया था, इसी मेम से आपने अंग्रेज़ी की पहिली पुस्तक पढ़ी और सिलाई का कुछ काम सीखा। घर ही आपने अपने दोनों भाइयों के साथ कभी कभी अपने पिताजी की भी सहायता लेकर, एन्ट्रेन्स तक अंग्रेज़ी पढ़ी। सन् १८८९ में आपने कलकत्ता

विश्व विद्यालय की प्रवेशिका—परीक्षा (एन्ट्रेन्स) दी, पर अभाग्य वश आप परीक्षोत्तीर्ण न हो सकीं ॥

बाल्यकाल ही में आप का विवाह हुआ। बाल्यावस्था ही में ससुराल जाना पड़ा। आपके पति बाबू ज्योतिस्वरूप की वकालत उस समय चल निकली थी। आज कल तो बाबू साहब एक बड़े ज़मींदार हो गये हैं। देवीजी अपने ससुराल में आकर घर का काम काज भी सम्हालने लगीं। साथ ही शिक्षा दीक्षा से मुख नहीं फेरा, अंग्रेज़ी और संस्कृत का क्रम जारी रखा। दोनों ही भाषाओं में आपने अच्छी दक्षता प्राप्त की है, विशेष कर, संस्कृत की विद्वत्ता तो अपूर्व ही है ॥

ससुराल में आकर फिर आपकी इच्छा एन्ट्रेन्स परीक्षा देने की हुई। पर विश्व विद्यालय आपके लिये कोई प्रबन्ध न कर सकी अतएव यह इच्छा पूरी न हुई। एन्ट्रेन्स का सर्टि-फ़िकेट पाने का सौभाग्य न हुआ। जब से आप गृहिणी हुईं आपकी चाह साहित्य की ओर फिरी। पहले पहल आपको अपनी मातृभाषा हिन्दी की लेखिका बनने की लालसा हुई। सुयोग्य पिता की सुयोग्य पुत्री देवीजी को इसमें पूरी सफलता हुई। आपने बारहमासा नामक कविता रची। इसकी बहुत प्रशंसा हुई ॥

बाल्यकाल ही से अपने भाइयों और पिताजी के विचारों का आप पर प्रभाव पड़ा। यह प्रभाव ससुराल आने पर भी नहीं घटा। जब आप पति के साथ देहरादून रहने लगीं, तभी राय साहब पेन्शन लेकर साथ ही आये और देहरादून रहने लगे। आपस में हिन्दू नारियों और माताओं में शिक्षा के अभाव पर सदा सर्वदा बात छिड़ा करती थी ॥

स्त्री शिक्षा की चर्चा छिड़ने का फल शीघ्र ही देख पड़ा। देवीजी ने १५ वीं सितम्बर १६०२ को देहरादून में कन्या पाठशाला खोल दी। खोलने के वक्त इस कन्या पाठशाला में ६ लड़कियां थीं वे भी कहीं दूसरी जगह की नहीं अधिक परिवार ही की छोटी छोटी लड़कियां थीं। इस पाठशाला में दो विशेषता हैं, एक तो यह कि केवल स्त्रियां ही अध्यापन कार्य्य

करती हैं, दूसरे भारतवासियों ही के हाथ में सारा प्रबन्ध है। आज कल स्त्री शिक्षा की उपयोगिता सभी कोई समझते हैं, इस कार्य्य में परिणत करने के लिये अनेक स्थानों में चेष्टा भी हो रही है। परन्तु कहीं तो अध्यापन कार्य्य स्त्री और पुरुष दोनों ही करते हैं। कहीं विद्यालय की बागडोर विदेशियों के हाथ में है। मेरी अल्प बुद्धि में दोनों ही हानिकारक हैं॥

देवी जी की पाठशाला में छात्राओं के रहने का भी प्रबन्ध है। छात्रावास भी बना हुआ है। कन्या पाठशाला की देख भाल आपही के हाथ है आपही इसकी प्रधानाध्यक्षा हैं। मद्रास और बङ्गाल की कितनी ही सुशिक्षिता महिलाओं ने इस कार्य्य में योग दिया है। सन् १९०७ में इस पाठशाला में ८० कन्यायें थीं। इनमें २१ छात्रावास में रहती थीं॥

आप वैदिक धर्म मानती हैं। जाति पांति का विचार न रख परोपकार करना ही आपका मुख्य सिद्धान्त है। वेदान्त में आपकी निष्ठा है। आपने अपनी कविता में अपना वेदान्त विचार दर्शाया है॥

आप आर्य दर्शनों में पारंगत हैं, पाश्चात्य विद्या बुद्धि भी आपको कम नहीं है इतने पर भी आपको पर्दे का बहुत विचार है। परमात्मा ने आपको सभी प्रकार के सुख की सामग्री दी है;—

प्रणयी पति, स्नेहवान् पिता, धन दौलत। आपके पति को ऐसी पत्नी पाने का अभिमान है। आपके पिता सदा ही अपनी अमूल्य सम्मति देने को तय्यार रहते हैं। जिस व्रत को आपने ग्रहण किया है उसकी पूर्ति के लिये पति का धन भी आपके हाथ है। कन्या पाठशाला समीप में है। क्या घर क्या पाठशाला दोनों जगह आप नियमित रूप से रहती हैं॥

सरकार ने आपको भारत महिलाओं में अग्रणी विचार कर "कैसरे हिन्द रजत पदक" से भूषित किया। सन् १९०६ में युवराज सपत्नीक भारत में पधारे थे। उसी दौरे में युवराजपत्नी ने आपकी पाठशाला मे पदार्पण कर आपको

कृतार्थ किया। तब भवती युवराज पत्नी ने निज कर कमलों से आपको तमगा पहराया। देवीजी ने इस अवसर पर युवराज पत्नी को संस्कृत में अभिनन्दन पत्र दिया था। युवराज पत्नी ने भी आपकी सराहना की। उस समय के पत्रों में इस अभिनन्दन पत्र की बड़ी प्रशंसा हुई थी॥

ईश्वर करे देवीजी चिरायु हों। आपही की सी स्वार्थ त्यागिनी विदुषी आर्य ललनाओं से भारत उन्नति हो सकती है॥

चिट्ठी पत्री।

(विधवा दुःख)

श्रीमती सम्पादिका जी!

मुझे नवम्बर के अंक में श्रीमती गंगादेवी का लेख पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि विधवाओं के संकट को दूर करने की ओर अब ध्यान दिया जाने लगा है। आज जनवरी के भाग में चिट्ठी पृष्ठ पढ़कर मेरा जी चाहा कि इस विषय पर मैं भी कुछ लिखूं बहिनों ने पुनरविवाह को अनुचित समझा है, यह उनकी भूल है। पहिले समय में लड़की अपने आप पति पसन्द करती थी और भरे स्वयम्वर में जयमाला डालती थी और बड़ी उमर पाकर विवाह करती थी। आज कल के समय में बारह वर्ष की लड़की ५० वर्ष के पुरुष के साथ व्याह देते हैं, या १० वर्ष की लड़की ८ वर्ष के लड़के को दे देते हैं। इस अवस्था में उसके गुण अवगुण कुछ भी मालूम नहीं होते और न लड़की या लड़के को मालूम होता है कि यह क्या होता है। बहिन जी का यह कहना कि मां बाप को दानकरी चीज़ पर क्या अधिकार है ठीक नहीं। यदि ऐसा नहीं तो उनको यह भी अधिकार नहीं कि अपनी कन्याओं को तीन तीन हज़ार रुपया में बेचें। क्योंकि वह तो दान करनेवाले हैं पाप करनेवाले नहीं। यह तो एक बड़ा भारी पाप है कि बेटी का धन लेकर अपने ख़र्च में लावें। जो कोई यह कहे कि सब कोई नहीं बेचते हैं तो उत्तर यह है कि बेचनेवाले या ख़रीदने वाले बिरादरी से अलग नहीं किये जाते। सो मेरा मतलब यह सब कहने से केवल इतना सा है कि हम जब दान करते हैं तो दामाद

को देते हैं दूसरे को नहीं। जब उसका परलोक हो गया उसका दान उसके साथ गया। विवाह के समय लड़की लड़के से वचन लिया जाता है। लड़का कहता है कि तेरे जीते जी किसी दूसरी को पत्नी नहीं बनाऊंगा और कभी जुदा नहीं होऊंगा। और इसी तरह लड़की कहती है कि तुम्हारे जीते जी किसी दूसरे पुरुष का ध्यान नहीं करूंगी। तो उसका वचन जीते जी का था सो पूरा हो गया। और जो चीज़ स्वाहाग की पहनाई जाती है वह भी मरने पर उतार ली जाती है जिससे यह मतलब होता है कि लड़की जैसी कुवांरी थी फिर वैसेही हो गई॥

मेरा विचार यह अवश्य है कि पुनरविवाह ऐसी लड़कियों का चाहिये जिनका गोना नहीं हुआ। उन विधवाओं के लिये जो अपना घर बार देख चुकी हैं कोई काम निकाला जाना चाहिये जिससे उनके दिन अच्छी प्रकार व्यतीत हों। पहले तो स्त्री चर्खा, चर्खी, चक्की से अपने दिन काटती थीं। अब सब की कल चल गई. अब क्या करके खाए सो अब इनके लिये कहीं विधवा आश्रम खोला जाय जिससे वह अपना पेट भी भरें और दिन भी खुशी २ काटें। ऐसे आश्रम में सब प्रकार की कल भी रक्खी जावे और उस का खर्च चन्दा से दिया जावे इससे बड़ा परोपकार होगा। अंगरेज़ों की स्त्रियां कैसे २ काम करती हैं कि जो पुरुषों से भी नहीं होते हैं। एक हम भी स्त्री हैं कि जो पति ने कुछ ला दिया तो पका खाया नहीं तो बैठी २ कर्म्म को दोष देती हैं कि हमारे कर्म में ऐसा ही लिखा है। ऐसी जिन्दगी को धिक्कार है॥

समालोचना ।

इसबार हम ६ या ७ बड़ी उपयोगी पुस्तकों की समालोचना सहर्ष स्थानानुसार देते हैं देखने में ये सब पुस्तकें छोटी २ हैं पर वास्तव में बड़ी उपयोगी हैं ॥

स्वामी प्रकाशानन्द की चार पुस्तकें ।

(१) आया सो सुनाया (२) अमृत वर्षा (३) घर का चांद (४) दो देवियों का विवाद । दो आख़री पुस्तकें अधिक ध्यान के योग्य हैं ।

(१) "दो देवियों का विवाद" यह उपदेशक महात्मा की योग्यता सदाचार परायणता की अमृत कथा है । इस १२ पृष्ठ की पुस्तक में 'कुमति' और 'सुमति' का घोर संग्राम दिग्दर्शन भली भांति कराया गया है । युवा पुरुष के लिये इस में अच्छी शिक्षा कूट २ कर भरी हुई है । विषय वासना भोग विलास से युवकों का चित्त हटाकर परोपकार देशसेवा, ईश्वर भक्ति में लगाने का यत्न किया गया है । सब व्यसनों की निन्दा और अव्यसनी सदाचारी पुरुष की सराहना । कुमति व्यसनों की मां की हार और सुमति सदाचार की माता की जीत ।

(२) "घर का चांद" इसमें स्त्री शिक्षा प्रचारकी आवश्यकता और उस के प्रचार के लिये विज्ञप्ति की गई है । स्त्री का महत्व उस की शक्ति और श्रेष्ठता भी खूब दर्शाई गई है दृष्टान्त के लिये आर्य कन्यापाठशाला मेरठ, का विवरण किया गया है । यह पाठशाला हिन्दूकन्याओं को ऐसी शिक्षा देती है "जिससे आर्यावर्त की पुत्रियां पवित्र पातिव्रत धर्मशीला बनें; पति की सेवा अपना परम धर्म समझें" यह पाठशाला केवल एक वृद्ध-८०) वर्ष के महानुभाव रामचन्द्र वर्मा के व्यय पर २० वर्ष से चल रही है ॥

ये पुस्तकें "इलाहाबाद इन्डियन प्रेस" में छपी हैं । परन्तु पाठक यह न समझें कि कहीं इन्डियन प्रेस भी इतना उदार हो गया है कि समालोचनार्थ पुस्तकें बांटने लगा है । ये पुस्तकायें ग्रंथकर्ता ने कृपया देहरादून से भेजी हैं । वहीं से सब को मिल सक्ती हैं ॥

'राघवेन्द्र प्रेस प्रयाग' की भी चार पुस्तकें हमारे पास पहुंची हैं। (१) 'गृहणी—दुर्गति, इसका उपनाम 'सुसन्तानोत्पत्ति विचार' है। परन्तु हमारे देखने से इसके दोनों नाम उचित नहीं। पहले नाम में एक ग़लती भी है। गृहणी के बदले गृहिणी होना चाहिये। इस २८ पृष्ठ की पुस्तिका रचिता एक स्त्री (पुष्प कुमारी) है यह पुस्तक अच्छी योग्यता पूर्वक लिखी गई है। ईश्वर हमारी और बहिनों को भी इतनी बुद्धि व ज्ञान दे। पहले पहल कुठार परदे की ही जड़ पर चला है। परंतु हमें शंका है कि यह पुस्तक भी स्वयं परदे ही के अंदर लिखी गई है। इसी से शायद कुछ लोग यह भी शंका करें कि यह पुस्तक स्त्री के हाथों से लिखी गई या स्त्री के नाम से लिखी गई। हम चाहते हैं कि पहिला ही वाक्य सत्य हो जिसके सत्य होने की सम्भावना भी है। क्योंकि पुस्तिका से कुछ परदे की बू भी आती है और पुस्तक का रंग परदे के अंदर रहने से फीका पड़ गया है। ठीक इसमें लिखा गया है कि हमारा पुरुष समाज आज दिन 'अर्धांग रोग' से पीड़ित है। क्योंकि पुरुष समाज अविद्या परदे इत्यादि कुरीतियों के कारण अपने कार्य में अर्धांगनियों से कुछ सहायता नहीं पाता है। अतएव वह अर्धांग है॥

'बाल विवाह विधवा विवाह' इत्यादि पर तो सभी लिखते हैं। इसलिये देवीजी ने "वृद्ध विवाह" "दरिद्र नीच चित्तवालों का विवाह" "उच्च चित्तवालों का विवाह" और "सामान्य चित्त-वालों का विवाह" की जड़ पर कुठार चलाया है। हम भी खूब कुठार चलाया करते हैं। बुरी प्रथाओं की जड़ पर कुठार अवश्य ही चलना चाहिये पर अपनी राष्ट्र अथवा अपने धर्म की जड़ पर कुठार चलाना मानो आत्महत्या का दोषी होना है॥

"हमारी स्त्रियां और उनकी शिक्षा" यह "कुमार सरयू प्रसाद नारायण सिंहजू देव" का एक व्याख्यान है। इसमें स्त्री शिक्षा का प्रस्ताव बड़े ज़ोर शोर से किया गया है। और स्त्री शिक्षा विरोधियों के पांच बड़े २ प्रश्नों का उत्तर दिया गया है"॥

"विशिष्टा व्यतदर्पण" उपनाम "वैष्णव धर्म दर्पण" इस दर्पण की समालोचना स्त्री दर्पण में पूरी २ नहीं हो सकती

है। इस धर्म से पूरा परिचय न होने के कारण हम इसपर अपनी सम्मति ठीक २ नहीं दे सके। और बिना अच्छा निरीक्षण किये इसकी सराहना भी नहीं कर सके। तथापि यह हम कह सक्ते हैं कि धर्म प्रेमियों के लिये इसका अध्यापन करना लाभकारी होगा॥

यह पुस्तक भी राघवेन्द्र प्रेस प्रयाग जमुनापुल के पास से १) में मिल सक्ती हैं १०) इस पुस्तक का निछावर है। पुस्तक का आकार भी अच्छा है॥

"कृषिकोष" २६२ पृष्ट की हिन्दी भाषा का गौरव बढ़ानेवाली बहुत ही उपयोगी है। स्थान भाव से इस बार इसकी हम अच्छी समालोचना नहीं दे सके जितना इस ऐसी उपयोगी पुस्तक के विषय में लिखा जाय थोड़ा ही है। किसान स्त्री, गुरु—शिष्य के वादाविवाद बड़े बड़े रोचक व शिक्षाप्रद हैं सब हिन्दी के पाठक व पुस्तकालय और विशेषकर कृषि (खेती) वृत्ति (पेशा) वालों को यह पुस्तक अवश्य ही लेना चाहिये। क्याही अच्छा होता यदि ताल्लुकदार लोग इस पुस्तक की कई प्रतियां मंगवाकर अपने काश्तकारों में बंटवा देते। भारत सरीखे कृषि प्रधान देश में ऐसी पुस्तक की बड़ी आवश्यकता है। हमारी समझ में इस पुस्तक का नाम "कृषिशिक्षक" या "कृषणापथदर्शक" होता तो अच्छा होता। वर्तमान नाम अच्छा नहीं है॥

लाल शरबत, लड़के वा प्रसूति की पुष्टई।

क्षीणता होने से बच्चे पनपते नहीं। इनमें अनपच बना रहता है; पेट निकल आता है; हाथ पैर पतले पड़ जाते हैं। कितनों का सिर बड़ा होता है; दांत समय पर नहीं उगते; शरीर शिथिल रहता है; दांत निकलते हुए बच्चे बड़े दुःखी व रोगी हो जाते हैं; थोड़े ही ठंडे से ज्वर, कफ, खांसी, सर्दी हो जाती है। लड़के क्षीणता से दुबले रहते हैं। भूख कम, रङ्गत फीकी और सुस्ती बनी रहती है। क्षीणता अधिक होने से स्वप्न में धातु भी जाती है। जवान लड़कों की क्षीणता से छाती वा कलेजा कमज़ोर हो जाता है। कफ, खांसी, बुखार जब तब होता है। प्रसूति की क्षीणता से उसको दूध कम उतरता है, और पतला होता है। शरीर दुर्बल रहता है। खाना कम खाया जाता है। ऐसी हालत के लिये डाक्टर बर्म्मन का— "लाल शरबत"

एक ही दवा है। इससे खाना हजम होकर अंग में लगता है। खून गाढ़ा शरीर पुष्ट होता है। कफ, खांसी, अजीर्ण, छाती की कमज़ोरी, दुबलापन, मिट जाता है। बच्चों की हड्डी सख्त होती है लड़कों की धातु पुष्ट होती है। और प्रसूतियों का खून व बल बढ़ता है। मोल १ शीशी ||।) डा० व्यय ।) एक साथ तीन शीशी २) डा० व्यय ||=)

विशेष हाल तो प्रशंसापत्र की पूरी पुस्तक बिना मूल्य हज़ारों प्रशंसापत्रों में से केवल एक मंगा देखिये।

पं० शौल्यानन्द झा थर्ड पंडित, मि० इ० स्कूल मु० खड़हुरा पो० बाराहाट जिला भागलपुर से—मेरा दूध का बच्चा आज दो वर्ष से सर्दी खांसी तथा ज्वरादि नाना प्रकार के रोगों से पीड़ित था और मैं भी चिकित्सकों के सिवाय एवं बच्चों के दुःख से उद्विग्नता में पड़ा हुआ था पर सिवाय बच्चे के हाथ धो बैठने के और कुछ हाथ आने की आशा न थी। इस दुःख के समय में आपके विज्ञापन को पढ़कर आपके बनाये लाल शरबत को मंगाने का साहस किया। दो शीशी मंगाकर सेवन करते ही बच्चे का शरीर निरोग्य हो गया। इस अमृत के तुल्य औषध के गुण को देख, मेरे ग्रामवासियों ने बड़ी प्रशंसा की और उसी के अनुरोध से पुनः आपसे निवेदन है कि तीन शीशी और भेजकर कृतार्थ कीजिये।

१ मार्च १९१०

वार्षिक मूल्य २)

एक प्रति मूल्य ।)

सूचीपत्र ।

विषय | पृष्ठ

विषय	पृष्ठ
टिप्पणियां	१०५
विश्वामित्र दशरथ के प्रति (श्रीयुत मन्नन द्विवेदी गजपुर)	११७
परदा और शरम (जानकी बाई अध्यापिका कन्यापाठशाला डूंगरपुर स्टेट)	११६
आर्य्यनारी (श्रीयुत नीरजनाथ शर्म्मा इलाहाबाद) ...	११०
चुप का कल (श्रीयुत तृजुगी नारायन सपरू इलाहाबाद)	१२२
शिल्प शिक्षा (श्रीमती सावित्री देवी लखनऊ)... ...	१२३
मातृभाषा (श्रीमती कैलासरानी बातल इलाहाबाद) ...	१२७
मातृभूमि-मक्का-सुजाता 'स्वदेशी' वाला (वर्म्मा) ...	१३४
सावित्री (श्रीमती गंगाराम जैनी बनारस)	१४१
चिट्ठी पत्री	११७
समालोचना	१५१

नोटिस

संयुक्त प्रदेश की प्रदर्शनी ।

जिन लागा को संयुक्त प्रदेश की नुमाइश के स्त्री विभाग से दिलचस्पी हो उन्हें चाहिये कि उसके बारे में जो कुछ पूंछना हो उसके लिये अप्रेल तक स्त्री विभाग की सब कमेटी की प्रेसीडेन्ट मिसेज़ लेसली पोरटर साहिबा लखनऊ से पत्र व्यवहार करें ॥

जिसके नीचे दस्तखत हैं उसको हुक्म है कि वह स्त्री विभाग में नुमाइश के लिये चीज़ों को पहिली अक्टूबर सन १६१० तक लेवे। नुमाइश के बाद नुमाइश की चीज़ें बड़ी होशयारी के साथ भेजने वाले को लौटा दी जायंगी ॥

रायबहादुर सांवलदास
आनरेरी सेक्रेटरी
बैंकरोड इलाहाबाद ।

अत्यन्त आवश्यकता के समय में ४२० रुपये के मिलने का भेद।

सुबह सरहद की एक माननीय विधवा का वृतान्त।

मित्र सखा तोंही जानीये भाई। जो विपता में होई सहाई॥

मेरे पति लाला शंकरदास शरीफ जुलाई १६०८ में हिन्दुस्तान एश्योरेन्स व म्युच्युएल बेनीफिट सोसाइटी लिमिटेड गुजरांवाला का मेम्बर बना यद्यपि उस समय सोसाइटी का आरम्भ ही हुआ था और इस के लिये तरह तरह के खियालात गुमराह करनेवाले मनुष्य मुश्ताहिर कराते थे तद्यपि मेहरा एन्ड कम्पनी ने जो कि उस सोसाइटी के डबगरी दरवाजे पेशावर में ऐजंट हैं मेरे सर्वस्व परवार की चिन्ता को दूर की और उन की नेक हिदायत पर हम सब मनुष्य सोसाइटी में प्रवेश हुए आयु न रही और वह १८ अकतूबर १६०६ को मर गया और मुझे दुखी और विधवा बना गया। इस शोकदायक मृत्यु की खबर २३ अकतूबर १६०६ को सोसाइटी के कार्यकर्त्ता को दी गई और नियमानुसार सहायता की विनती की। जिस शिघ्रता के साथ सोसाइटी हज़ा के दफतर से मुझे उत्तर दिया गया और पत्र इत्यादि को पूरा करने के लिये तहरीक की गई उसने मुझे और मेरे और सम्बन्धियों को पूर्ण यकीन दिलाया। कि यह सोसाइटी असल में बड़ी मुफीद और नेक काम करनेवाली कम्पनी है। पत्र इत्यादि ३० नवम्बर १६०६ तक पूरे हुए, मुझे खबर मिल गई कि सहायता दिसम्बर के महीने को सेमाही की पूरे होने पर मुझ को खास पिशावर में आकर दी जावेगी। पस हसब वायदा दीवान मंगलसैन मैनेजिंग डरैक्टर सोसाईटी हज़ा ने आप पिशावर आकर मेरे मकान पर मुझ को बिरादरी के पुरुष तथा और मनुष्यों के सामने ४२० रुपया सोसाइटी की ओर से सहायता के लिये दिये। सवा वर्ष के मेम्बर की मृय पर इस कदर बड़ी सहायता देना ऐसे समय में जब कि दो और मौतें भी इस सेमाही में काफी सहायता हासिल करने की मुस्तहक हो चुकी हों। हिन्दुस्तान एस्योरेन्स म्युचुएल बेनीफिट सोसाइटी लिमिटेड गुजरांवाला की बड़ाई के बिलकुल ठीक है। मुझे विधवा की जो अत्यन्त आवश्यकता के समय में सहायता करी है उस के लिये मैं दिल से धन्यवाद करती हूं और परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि यह सोसाइटी एक निहायत कामयाब कम्पनी बनकर जिस शुभ कार्य को पुरा करने के लिय बनी हुई है उस में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करे सफेद पोश मज़लुम सदा इस के ज़ेर साया फैज़ पावें। १२ जनवरी १६१०

श्रीमती गोमा धर्म्मपत्नी लाला शंकरदास

हिन्दुस्तान ऐशयोरेंसव म्युचल बेनीफिट

सोसाईटी लिमिटेड—गुजरांवाला।

॥ ॐ तत्सत् ॥

सूचना भूमण्डल के विद्वान मण्डली को

विवाद दिग्विजय।
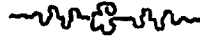
दुनिया के समस्त भाषा में ज्ञान के विषय में दो भांति के शास्त्र पाये जाते हैं तत्वज्ञान अर्थात् प्राकृतिक नियमों का ज्ञान, दूसरी मानुषी का ज्ञान। मानुषी कल्पना काल्पिनिक सिद्धान्तों में सदा से मतभेद चल रहा है उस विषय में प्राकृतिक नियमों के आधार से तीन पुस्तकें हिन्दी और अङ्गरेज़ी दोनों ज़बान में शुद्ध व सरलशैली में छापी जा रही हैं॥

(१) विवाद दिग्विजय—जिसमें तीन प्रसंग से मतभेद निराकरण, धर्मभेद निराकरण और शिक्षा॥

(२) धर्मसमीक्षा—उसमें भी तीन प्रसंग हैं। मानव धर्म, सत्या सत्य विचार, ईश्वर दर्शन। ये दोनों पुस्तकें पाकेट साइज़ में छपी हैं जिसमें उपदेशकों को जुदे २ प्रसंग में लेक्चर देने का सुविधा हो॥

(३) धर्मनिर्णय—ग्रंथ, बृहद् रूप में सर्व विषयों का खुलासा है। उसमें यह दिखलाया गया है (अ) ईश्वर सत्य है तथा उसका नाम ॐ है और यह विश्व उसका गुण अथवा property है। नेचर स्वयम् वस्तु नहीं है (ई) राजा, रंक, साधु पतित, पण्डित मूर्ख सभा का शारीरिक धर्म अथवा अवस्था की चेष्टा समान है और मनुष्य मात्र का स्वर्ग अथवा बिहिश्त भी एक है। भिन्न २ रूप के धर्म उपदेशकों ने अपनी २ दूकान का जुदा २ नाम रख लिया है जिससे ईश्वर का भिन्न २ नाम तथा भिन्न २ रूप की उपासना और जुदे २ स्वर्ग अथवा बिहिश्त सर्वसाधारण को सूझ पड़ते हैं॥

मनुष्य जातिभेद अवस्थाभेद पेशाभेद, तथा उपासनाभेद से उत्तम मध्यम निकृष्ट नहीं कहा जाता। रहन सहन चलन संसर्ग प्रति उत्तम मध्यम निकृष्ट माना जाता है। सभी को अपनी जाति मर्य्यादा में स्थित रहने से मान्य तथा सुख प्राप्त होता है और ॐ की भक्ति करने से ईश्वर ज्ञान प्राप्त होता है और मानसिक रोग भय तृष्णा मोह खटका इत्यादि छुट जाते हैं अर्थात मनुष्य पवित्र हो जाते हैं जो अपने धर्म से विचलित हो अपने को अथवा अपनी जाति मर्य्यादा को समझते

तुच्छ हैं। अर्थात् अपने जाति धर्म से अविश्वासी हो पड़ते हैं वे ही पतित और नीच कहे जाते हैं और सभ्य समाज में वे ही निन्दनीय समझे जाते हैं। वे विना ज्ञानयुक्त कर्म किये चाहे किसी मत के धर्मोपदेशक के मुखिया क्यों न बनजांय, किन्तु वे कदापि मानसिक रोग के स्तब्धता से छुटकारा नहीं पाते किसी मतवाले को विहिश्त अथवा स्वर्ग का ठेका नहीं दिया गया है कि उस दुकान में नाम दर्ज मात्र से स्वर्ग अथवा इच्छा की तृप्ति प्राप्त हो जावे, व्यग्रता छूट पड़े। "विवाद दिग्विजय" एक लाख प्रति हिन्दी में तथा दस हजार प्रति अङ्गरेज़ी में छापी जाती है जिस में सर्वसाधारण को वहुत अल्प व्यय से धर्म मन्दिर का दर्शन हो जावे और वे अपने २ जाति धर्म में विश्वासी बने रहें॥

तीनों पुस्तकें श्रीयुत मनेजर अभ्युदय प्रयाग से मिलती हैं॥

मूल्य नीचे लिखे के अनुसार होगा :-

विवाद दिग्विजय	... =)	विवाद दिग्विजय अथवा			
धर्म समीक्षा ...	... =)	धर्म समीक्षा		१०० प्रति	... ५)
धर्म निर्णय ...	... ॥)	,,	,,	५० ,,	... ३)
		,,	,,	२५ ,,	... २)
		,,	,,	१२ ,,	... १)

जो धर्म निर्णय लेगें उनको तीनों पुस्तक ॥) में मिलेगी अलावा वी. पी.

रचयिता—हरिदास खंडेलवाल मालगुज़ार

मौज़ा सिगवारा विजयराघोगढ़

ज़िला जबलपुर।

स्त्री-दर्पण

भाग २] प्रयाग, १ मार्च, सन् १९१० [अङ्क ३

टिप्पणियां ।

भारत में वस्तुओं का अधिक मूल्य ।

हमारे देश में आज वर्षों से यह देखा जा रहा है कि प्रति दिन यहां हर वस्तु बराबर मंहगी होती जाती है। हिसाब लगाया गया है कि आज से लगभग ५० वर्ष पहिले चावल, गेहूं, ज्वार, बाजरा, चना, आदि जिस भाव आज कल मिलते हैं इस से आधे मूल्य पर मिलते थे । पिछले ५० वर्ष में थोड़ा २ होकर इतना अन्तर हो गया है कि अब दुगने पर नौबत पहुंच गई है। खाने की वस्तुओं के मंहगा होने के कारण देश में हर वस्तु मंहगी हो रही है। जिस चीज़ के लिये पहिले एक रुपया खर्च करना होता था उस के लिये अब दो करने होते हैं। मज़दूरी प्रति दिन बढ़ती जाती है । धुलाई, सिलाई आदि अब वैसी सस्ती नहीं रहीं जैसी पहिले थीं। भारत के कुछ प्रांतों में इतनी मंहगी हो गई है कि थोड़ी आमदनी-वालों को जो पहिले इतने ही रुपये में भली भांति संतोष से रहते थे अब पालन पोषण कठिन हो गया है। नौकर टहलनों का थोड़ी वेतन पर मिलना दुर्लभ होता जाता है । जब पेट पालने के लिये अधिक द्रव्य की आवश्यकता है तो आप से आप हर मनुष्य अपनी वेतन को बढ़ा रहा है। चारों ओर इस मंहगी का परिणाम यह हुआ है कि लोगों में असंतोष फैल रहा है। कोई व्यक्ति अपनी दशा में प्रसन्न व संतोषित दिखाई नहीं देता । इस मंहगी का कारण अविष्कार करने के लिये बहुत दिनों से यत्न किया जा रहा है बहुतेरे लोग भिन्न २ कारण बताते हैं पर अभी तक ठीक २

निर्णय नहीं हुआ है कि वास्तव में इस के क्या क्या कारण हैं कि उन को दूर करके प्रजा के इस दुःख को निवारण किया जाय ॥

कुछ लोग इस का कारण यह बताते हैं कि भारत की देश प्रजा की संख्या बढ़ गई है । आज कल भारत वासियों की संख्या लगभग ३००,०००,००० के है अर्थात ६००००००० मनुष्य पिछले ५० वर्ष में बढ़ गये हैं । हर वस्तु का मूल्य उसकी मांग पूर्ति करने के अनुसार रक्खा जाता है । अर्थात जितनी ही किसी वस्तु की मांग ज़्यादा होती है और पूर्ति कम होती है उतनी ही वह महंगी हो जाती है । अब कि भारत में खानेवाले इतने बढ़ गये व देश की पैदावार उतनी ही रही कि जितनी पहिले हुआ करती थी इस बात की आवश्यकता हुई कि धरती का अधिक भाग नाज आदि के बोने में व्यय किया जाय । इस आवश्यकता को पूरा करने के लिये १२ करोड़ बीघे से ज़्यादा पृथ्वी इस कार्य में लगाई गई परन्तु इस से भी मूल्य में कुछ बहुत अन्तर न पड़ा ॥

कुछ लोगों का मत यह है कि वर्षा अब समय पर नहीं होती जिसकी कमी से नाज अब उतना उत्पन्न ही नहीं होता जितना पहिले होता था । वर्षा की त्रुटि को पूरा करने के लिये भी सरकार ने जगह व जगह नहरें बनाई हैं परन्तु इन का भी कोई अच्छा भाव दिखाई नहीं पड़ता । कोई कहते हैं कि सरकार की ओर से टैक्स इतना लिया जाता है कि उस को अदा करने के लिये किसान को मजबूरन मूल्य बढ़ाने पड़े हैं । किसी की राय है कि देश के सिक्के में कुछ ऐसे दोष हैं कि जिन के कारण ये सब बिगाड़ हो रहे हैं । बाज़ लोगों का विचार यह भी है कि रेल द्वारा नाज एक जगह से दूसरी जगह इस प्रकार पहुंचा दिया जाता है कि उस की बहुतायत एक जगह भी इतनी नहीं रहती कि जिस से मूल्य में कुछ कमी हो । सारांश यह कि अपनी २ मति के अनुसार सब इस के कारण ढूंढ़ रहे हैं परन्तु कोई कारण अभी तक संतोषदायक नहीं मिला है । सरकार ने भी अब इस ओर कुछ ध्यान देना आरम्भ किया है । मिस्टर कृष्ण लाल दत्ता इस दोष के कारण मालूम करने के लिये एक मुक़र्रर

किये गये हैं इस ओर ध्यान देने की अत्यन्त आवश्यकता है। डर है कि जिस प्रकार पिछले वर्षों में मूल्य बढ़ते गये हैं इसी प्रकार आगे भी बढ़ते न जावें। हमें आशा है कि बहुत जल्द यह आवश्यकता पूर्ण की जावेगी॥

इसके कारण चाहे कुछ ही हों यह तो सब पर प्रगट है कि इस समय में अच्छी प्रकार रहना सहना उतना आसान नहीं रहा कि जितना पहिले था और ये कठिनाइयां प्रति दिन बढ़ती जाती हैं। ऐसी हालत में हमारी ओर से भी इस बात का यत्न होना उचित है कि हम भी समय की इन कठिनाइयों को जितना सहज बना सकें बनावें। हमारे यहां की सब मरजादा सस्ते समय की है कि जब मनुष्य थोड़े में गुज़र कर सकता था। अब नये समय में वही बातें करते चले जाने से सिवाय हानि के कुछ लाभ नहीं। आज-कल के समय में हर प्रकार के कारख़ाने खोले जाने चाहियें। अन्य देशों में जो नवीन रीतियां व कलें कृषि की उन्नति देने के लिये निकली हैं वह सब अपने देश में प्रवेश करने चाहियें। कहते हैं कि यदि कृषि की ओर भली भांति ध्यान दिया जावे और द्रव्य व्यय किया जावे तो इसी धरती से दुगनी पैदावार हो सकती है। इन बातों के करने से देश की दरिद्रता बहुत कम हो जावेगी। विशेष करके कारख़ानों के निकलने से तो सहस्रों ग़रीबों की रोज़ी खुल जावेगी और वह अनगिनत रुपया जो हर वर्ष विदेशी वस्तुओं के ख़रीदने से बाहर जाता है देश ही में रहेगा॥

बड़े २ कारख़ानों आदि का खोलना तो हम स्त्रियों के हाथ में नहीं है पर हम उनकी सहायता स्वदेशी वस्तुयें लेकर अवश्य कर सकती हैं। हमें इस बात का बड़ा खेद है कि और सब बातों में तो हमारा प्रांत भारत के और प्रांतों से पीछे था ही परन्तु स्वदेशी की ओर भी यहां कोई ध्यान नहीं देता। विदेशी वस्तुओं की सुन्दरताई को देख सब का मन ऐसा प्रचलित होता है कि उनके ख़रीदने से देश को जो हानि होती है उसकी ओर कुछ ध्यान न दे कर बराबर विदेशी वस्तुएं ख़रीदते जाते हैं। बंगाल, पंजाब आदि और प्रांतों में

लोग स्वदेशी वस्तुएं बहुत ज़्यादा ख़रीदते हैं। क्या अच्छा होता कि हमारे संयुक्त प्रांत में भी स्त्रियों में ऐसे विचार फैल जाते और वह अपने हर काम में देश की उन्नति का ध्यान रखतीं। हम निर्बल हैं कुछ बहुत कर नहीं सकतीं परन्तु यदि हर एक थोड़ी २ करती रहें तो मिलकर बहुत हो सक्ता है और हमारे देश के बहुत कुछ दुःख कम हो सकते हैं॥

लेडीज़ आर्ट और लिट्रेरी क्लब।

कुछ दिनों से इलाहाबाद में बंगाली व मिशनरी ललनाओं ने मिलकर एक क्लब बनाया है जिसका नाम लेडीज़ आर्ट व लिट्रेरी क्लब है। इस क्लब की सभाएं वर्ष भर में चार बार होती हैं। और इन सभाओं के अतिरिक्त बीच २ में सब रमणियां हर सप्ताह, या पन्द्रवें दिन एक जगह जमा होती हैं और चित्रकारी अथवा शिल्पकारी में शिक्षा लेती हैं। गत मास का १५ वीं तारीख़ को इस क्लब की सभा हुई थी। जिसमें भारत ललनाओं की शिक्षा पर व्याख्यान हुए। तीन रमणियों ने व्याख्यान पढ़े और कहा कि हमारे देश की उन्नति उस वक्त तक नहीं हो सकती कि जब तक यहां की ललनाएं विद्यावतियां न हो जावें। मिस विशर्ट ने अपने व्याख्यान में कहा कि अच्छी शिक्षा से स्त्रियां अच्छे स्वास्थ, अच्छे स्वभाववाली हो जाती हैं। सभा के आरम्भ होते समय मीठी आवाज़ से गीत गाए गये जिससे मालूम होता था कि भारत ललनाओं ने अभी तक यह विद्या हाथ से नहीं जाने दी है। लेडी स्टैनली व और कई अंग्रेज़ ललनाएं भी क्लब की सभासद बनाई गई॥

प्रयाग महिलासमिति।

प्रयाग महिलासमिति का पहिला अधिवेशन मिसेज़ प्रयागदास के घर शान्तिभवन में १ फ़रवरी १९१० को हुआ। सिवा दो चार सभासदों के सब सभासद भगनियां ठीक दो बजे आगईं। जिन दो चार रमणियों को देर हुई उनके लिये आध घन्टे तक ठहरना पड़ा। इस बीच में ग्रामोफ़ोन बाजे के रमणीय व सुरीले रागों के सुनने में रमणियों का चित्त लगा रहा। ठीक ढ़ाई बजे श्रीमती कैलासरानी बातल ने अपना व्याख्यान मातृ भाषा पर पढ़ना आरम्भ किया। आपका

व्याख्यान इतना अच्छा लिखा हुआ और हर प्रकार से ऐसा उत्तम था कि हम वह पूरा अपनी पत्रिका में प्रकाशित करती हैं कि हमारे पाठक भी उनके विचारों से लाभ उठा सकें। उनके व्याख्यान के समाप्त होने पर मिसेज़ किशोरी लाल ने एक छोटा सा व्याख्यान पढ़ा जिसमें कहा कि "यह एक बड़ी साधारण बात है कि जब किसी की बहुत ही प्रतिष्ठा की जाती है तब उसे मातृ या माता की पदवी दी जाती है जैसे सीतामाता, गंगामाता, भारतमाता, गौमाता, और मातृ भाषा इत्यादि, फिर जिसको हम माता कहकर पुकार चुके या जो वस्तु माता की सी प्रिय है उसका आदर करना हमारा धर्म है यदि हम उसका निरादर करते हैं तो पाप के भागी होते हैं। इसलिये हिन्दी जो हमारी मातृभाषा है उसका सत्कार करना अवश्य चाहिये। हमें उचित नहीं कि उसका पीताम्बर और वैजंतीमाला उतार कर उसे कलीदार पैजामा और तौक़ पहिनावें, या गौउन कोट और नकलस से उसे सुशोभित करें। सैकड़ों शब्द ठेठ हिन्दी के ऐसे हैं कि जिनका अर्थ हम लोग नहीं जानतीं, सीधी से सीधी रामायण की चौपाई का अर्थ करने में हम लोग चकरा जाती हैं हम आब और वाटर के माने जानती हैं किन्तु वारि के माने कदाचित हमें न मालूम होंगे॥

इसी तरह हज़ारों शब्द ऐसे हैं जिन्हें हम बिलकुल भूलती चली जाती हैं और इसमें बड़ा भारी नुक़सान तो यह है कि हमारे बच्चे कुछ दिन में अपनी मातृभाषा को बिलकुल ही भूल जायेंगे। पहिनाव और रहन सहन तो उनकी बदली ही जाती है लेकिन भाषा जहां बदली फिर यह हिन्दू क़ौम दुनियां की हस्ती से उठ जायेगी। जो देश अपनी मातृभाषा, अपना धर्म, अपना इतिहास और अपने रिवाजों को भूला वह फिर नहीं ठहर सक्ता इसलिये मेरी मन्द बुद्धि में यही आता है कि मातृभाषा जहां तक हो सके अच्छी तरह पढ़ना और पढ़ाना चाहिये। रामायण इसलिये बहुत उपयोगी है या सूर-दासजी, बिहारी के काव्य देखने से बहुत शब्द हिन्दी के मालूम हो सकते हैं हमें चाहिये कि ग़ैर भाषाओं के शब्द जहां तक हो सकें काम में न लाया करें। और यह यत्न करें कि जहां तक हो सके हिन्दी भाषा का प्रचार करते रहें, जिस में हिन्दी

जाननेवालों की संख्या बढ़ती जाय, और एक दिन ऐसा आवे कि सारे भारतवर्ष की केवल हिन्दी ही मातृभाषा हो जावें। प्रिय बहिनों! एक समय वह था, जब संस्कृत ही सारी दुनियां की मातृभाषा थी, फिर उस संस्कृत बोलनेवाले समूह में से जैसे जैसे इधर उधर लोग फैलते गये तैसे तैसे उनके बोल चाल में अन्तर पड़ता गया जो लोग पश्चिम की ओर बढ़ते गये उन में से अंगरेज़ी भाषायें बनती गईं। और जो भाषायें पूर्व में फैलती गईं उनके आपस के मेल से अनेक भाषायें बनती गईं। यहां तक कि भारतवर्ष में आज कल १४७ भाषायें बोली जाती हैं परन्तु सब से विशेष हिन्दी के बोलनेवाले हैं" ॥

मिसेज़ प्रयागदास ने ऐसी कई स्त्रियों को बुलाया था जो कि महिलासमिति की सभासद न थीं। मिसेज़ किशोरीलाल के व्याख्यान के पूर्ण होने के बाद उन में से चार पांच रमणियां और सभासद बनाई गईं और यह स्थिर हुआ कि महिला-समिति का दूसरा अधिवेशन श्रीमती कमला नेहरू के घर पर होगा। और सम्पादिका स्त्री दर्पण व्याख्यान देने के लिये चुनी गईं। इस प्रकार सभा का सब कार्य समाप्त होने पर मिसेज़ किशोरीलाल ने हारमोनियम बजाकर व और कई भगिनियों ने कई शिक्षादायक भजन आदि गाकर सभा को मनोरंजन किया ॥

समिति का दूसरा अधिवेशन २६ फरवरी को श्रीमती कमला नेहरू के मकान पर हुआ इसका पूरा हाल आगामी अङ्क में प्रकाशित किया जावेगा ॥

दोनों दफ़ सभा हर प्रकार से ऐसी सफल हुई कि हम सब सभासदों को बधाई देती हैं और आशा करती हैं कि इस समिति की सदा उन्नति होगी और बहनें इस से लाभ उठाती रहेंगी ॥

हिन्दी ग्रन्थ प्रचारक मंडली।

हम आज बड़े हर्ष के साथ अपने पाठकों को एक सुसमाचार सुनाती हैं कि यहां इलाहाबाद में कुछ हिन्दी हितैषियों ने प्रयाग-नागरी-प्रवर्धिनी सभा के अंतरगत हिन्दी ग्रन्थ-प्रचारक-मंडली खोली है जिसका मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा का साहित्य बढ़ाना और उसके प्रति पाठकों में श्रद्धा बढ़ाना है। इस उद्देश्य को पूरा करने के हेतु बड़ा अच्छा ढंग निकाला गया है। कुछ योग्य लेखकों से अच्छे ग्रन्थ लिखने की प्रेरणा की गई है। यह ग्रन्थ मंडली द्वारा प्रकाश होंगे और उन हिंन्दी प्रेमियों की सेवा में विना मूल्य भेजे जांयगे जो कि उक्त मंडली के साधारण सभासद बनेंगे। सभासद बनेंगे में भी खर्च बहुत नहीं है। अपना नाम व पता भेजते समय मंत्री के नाम पर एक रुपया भेज दीजि और फिर पीछे से शेष तीन रुपेये अपने सुभीते पर साल के भीतर भेजते रहिये। आपको घर बैठे ८०० पृष्ठ से २००० तक की पुस्तकें प्रति वर्ष मिला करेंगी। पहले पृष्ठ पर आधुनिक हिन्दी के पुनरोद्धारक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का चित्र वं उनका प्रिय दोहा:—

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
विन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल॥

देते हुये पहिले २५ पृष्ठों में भाषा के महत्व को दर्शाते हुये और हिन्दी भाषा के गुण व उसके सार्वभौम (भारतीय भाषा) होने के योग्य बतलाते हुये पिछले दश पत्रों में मंडली के नियम दिये गये हैं। व्यवस्थापत्र पुस्तक के साथ हमारे पास एक छपा हुआ पत्र भी आया था जिसका कुछ भाग हम यहां उद्धृत करती हैं। एक कार्ड भेजने पर व्यवस्थापत्र सबको मिल सकता है॥

"भाषा एक महत्व की वस्तु है जैसा उसका सम्बन्ध मनुष्य जाति और संसार के साथ है वैसाही राष्ट्र अथवा जाति के साथ भी उसका गहरा सम्बन्ध है। भाषा जाति की जीवन है। प्रत्येक राष्ट्र के लिये एक सामान्य भाषा—राष्ट्र भाषा—की आवश्यकता है। देश में एक सामान्य भाषा के प्रचार से जो लाभ होते हैं वे किसी से छिपे नहीं हैं। इसलिये

प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है कि वह अपने देश के अभ्युदय के लिये। देश को वास्तविक एक देश बनाने के लिये। हिन्दुस्तान भर में एक सामान्य भाषा के प्रचार के लिये प्रयत्न करें॥

वह कौनसी भाषा है जो भारत के समान विशाल देश की राष्ट्र-भाषा होने का दावा कर सकती है। इस प्रश्न का प्रायः सब विद्वानों ने एक ही उत्तर दिया है अर्थात् हिन्दी ही हिन्दुस्तान की राष्ट्र-भाषा होने की योग्यता रखती है। हिन्दी का हक़ समय २ पर समाचार पत्रों द्वारा सिद्ध किया जा चुका है, इसलिये इसके सम्बन्ध में कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है॥

परन्तु यह बड़े शोक की बात है कि इस हिन्दी भाषा के साहित्य की दशा उतनी अच्छी नहीं है जितनी भारत के समान एक बड़े राष्ट्र की राष्ट्र भाषा बनने का हक़ रखनेवाली भाषा के साहित्य की होनी चाहिये। हिन्दी-साहित्य इस समय बहुत ही ख़राब दशा में है। इसका सुधार करना प्रत्येक देश-भक्त का कर्तव्य है—प्रथम कर्तव्य है॥

साहित्य के जितने आधार हैं उनमें ग्रंथ-प्रकाशन मुख्य है। प्रत्येक भाषा के साहित्य की भलाई-बुराई का भार उस भाषा के ग्रंथ-प्रकाशकों ही पर है। ग्रंथ-निर्माण का कार्य बड़ी ज़िम्मेदारी का है बड़े महत्व का है। किन्तु बड़े खेद की बात है कि हिन्दी संसार में इसकी ओर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया जाता है, और इसका बड़ा निरादर किया जा रहा है। इस लिये शिक्षित भारतवासियों का कर्तव्य है कि वह इस कार्य को अपने हाथ में लेकर अपने देश की एक कमी को पूरा करें। यह देखकर कुछ संतोष होता है कि इधर कुछ दिनों से कुछ उत्साही उदार महाशयों का ध्यान इस ओर गया है और वे इसे बड़ी योग्यता से कर रहे हैं, किन्तु यह काफ़ी नहीं है। इसके लिये अधिक उद्योग की आवश्यकता है। इस प्रकार का उद्योग करना प्रत्येक देश हितैषी का कर्तव्य है। इसी कर्तव्य को पालन करने के लिये प्रयाग की नागरी प्रवर्धिनी सभा ने हिन्दी ग्रंथ-प्रसारक मंडली नाम की एक सभा स्थापित की है॥

इस मंडली का उद्देश हिन्दी साहित्य की सेवा के लिये हिन्दी भाषा में उत्तमोत्तम नवीन ग्रंथ तथा अन्य भाषाओं के उत्तम ग्रन्थों के अनुवाद प्रकाशित करना है। मंडली ने निश्चय कर लिया है कि केवल उत्तमोत्तम पुस्तकें ही प्रकाशित की जायें। पुस्तकों की छपाई सर्वांग सुंदर हो। उचित पुरस्कारों द्वारा लेखकों का उत्साह बढ़ाया जाय तथा उन्हें सहायता पहुँचाई जाय। यह एक सार्वजनिक कार्य है। इसमें किसी का कुछ भी स्वार्थ नहीं है। मंडली के कार्यकर्त्ताओं ने लोक हित—हिन्दी-सेवा-की न कि आत्म-हित अथवा स्वलाभ की इच्छा से इसे आरम्भ किया है। मंडली के द्रव्यादि से उनका निज सम्बन्ध कुछ नहीं है इसलिये सब हिन्दी हितैषियों को इसे अपना समझ इसमें सहायता देनी चाहिये। मंडली ने निश्चय कर लिया है कि पुस्तकों द्वारा जो आमदनी हो उसका कुछ हिस्सा अपने खर्च के लिये रख बाकी सब लेखकों को पुरस्कार के रूप में भेंटकर दिया जाय; किन्तु जो लेखक बिना कुछ लिये मंडली की सहायता करेंगे, मंडली धन्यवाद-पूर्वक उनकी सहायता स्वीकार करेगी" ॥

प्रेस का नया कानून।

बड़े शोक की बात है कि नये नियमों के अनुसार गवर-नर जनरल की नई कौंन्सल के पहिले अधिवेशन में प्रेस का एक ऐसा क़ानून बनाया गया है जिससे प्रेस व समाचार पत्रों को दबाने का यत्न किया गया है। कौंन्सल के सब सभासद सिवा माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय व माननीय बाबू भूपेंद्रनाथ बासू के इस नियम की तरफ़ थे। इस नियम के अनुसार हर शहर के मजिस्ट्रेट को अधिकार है कि जिस समाचार पत्र अथवा जिस प्रेस में वह ऐसी बातें प्रकाशित होते देखे कि जो उनके विचार में सरकारी नियमों के विरुद्ध बातें करने को उकसाते हों, या किसी दो जातियों में कलह बढ़ाने का यत्न करते हों या सरकारी गवर्नमेन्ट का अपमान करना सिखाते हों आदि उनसे वह ५००) से लेकर ५०००) तक की ज़मानत मांगें। लगभग सौ वर्ष से भारतवर्ष में समाचार पत्रों को पूर्ण स्वतं-

ग्रता मिली हुई थी । इस सौ वर्ष में कोई नहीं कह सकता कि इन्होंने अपना काम भली भांति नहीं किया । प्रति दिन इनकी संख्या घटती जाती थी और बावजूद इसके कि अभी तक बहुत कम भारतवासी समाचार पत्र पढ़ने की रुचि करते हैं इस ओर लोगों का ध्यान ज़्यादा होता जाता था । निःसंदेह युगांतर आदि दो चार पत्रों ने अनुचित बातें प्रकाशित कीं परन्तु उनको बंद करने के लिये सरकार के पास पाहिले से नियम मौजूद थे और उन्हीं के अनुसार ऐसे सब पत्रों को बंद भी किया गया है ॥

हमारी समझ में इस नियम के बनाने की आवश्यकता नहीं आई । कहा गया है कि अराजकता को नष्ट करने के लिये यह क़ानून बनाया गया है । शायद ऐसा ही हो ॥

बंगदेश के निर्वासित सज्जन ।

बड़े हर्ष की बात है कि बंगाल के उन सब सज्जनों को सरकार ने गत मास में छोड़ दिया कि जिन्हें बहुत दिन हुए कैद किया था । जो खुशी उन के छुटने से उन को व उन के मित्रों व देश भाइयों को हुई उस का समझना लिखने से ज़्यादा आसान है । ईश्वर इनका छूटना मुबारक करे और अब सरकार को इस प्रकार किसी और को कैद करने या देश से निकालने की आवश्यकता न मालूम हो । हमारे देश भाई भारतवर्ष के उन सब मित्रों को धन्यवाद देते हैं कि जिन्हों ने पार्लिमेन्ट में बराबर इन को छुटाने का यत्न जारी रक्खा ॥

हवाई बाई सिक्ल ।

पिछले ४०, ५० वर्ष में मनुष्यों ने विक विज्ञान में कितनी तरक्क़ी की है यह सब जानते हैं । उड़न खटोलों का नाम व थोड़ा बहुत हाल तो सब ही ने सुना है और यह विचार भी सर्व साधारण में फैलता जाता है कि कोई दिन ऐसा अवश्य आवेगा कि जब मनुष्य हवा में भी इसी सुगमता से सैर करते फिरेंगे कि जैसे अब पृथ्वी व पानी पर । उड़न खटोलों पर बैठकर हवा में उड़ने का हाल तो इतनी बार सुना व पढ़ा है कि अब उस में कुछ आश्चर्यजनक बात दिखाई नहीं देती । अब सुनने में आता है कि जरमनी के एक बड़े भारी आविष्कारक ने एक कल हवा में उड़ने की ऐसी निकाली है कि जिस के द्वारा कोई मनुष्य

या स्त्री बे किसी इंजन आदि की सहायता के हवा में घूम सकता है। इन महाशय का विचार है कि कुछ काल बीतने पर यह कल भी हवा में ऐसी ही आम हो जावेगी कि जैसी वाईसिक्ल पृथ्वी पर। कहते हैं कि इस कल की शकल चिड़िया की सी है जिस में दो हलके २ पर लगे हुए हैं इन परों को इसी प्रकार चलाया जाता है कि जैसे बाईसिक्ल के पहियों को चलाते हैं उन के चलने से यह मेशीन अपने आप हवा में उड़ने लगती है। यदि इस मेशीन को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई तो कुछ दिन में हर मनुष्य का हवा में उड़ता फिरना ऐसा ही आसान हो जावेगा जैसा चिड़िया या कउए का उड़ना॥

स्पर्द्धा का उत्तर

चिट्ठी पृष्ठ में हमारे पाठक श्रीयुत मुकुंदीलाल वर्म्मा की एक चिट्ठी प्रयाग महिलासमिति पर देखेंगे। आप का यह प्रस्ताव कि इस समिति में एक साधारण शिक्षा क्लास भी रखना चाहिये कि जिसका एक अधिवेशन साधारण मासिक अधिवेशन के सिवा प्रति मास हुआ करे बहुत अच्छा है। पर अभी तो हमारी सभा आरम्भ ही हुई है अभी से इस को बहुत बढ़ा देना ठीक नहीं समय पर सब काम ठीक होता है। गरमियां आरही हैं हमारी बहिनों को गरमी के दिनों में महीने में एक बार भी जमा होना कठिन लगेगा। अगली सरदियों से आशा है कि इसका प्रबन्ध भी करने का यत्न किया जावेगा॥

एक और आपत्ति कि जो वर्म्मा साहब हमारी सभा पर करते हैं वह यह है कि अंगरेज़ी महीने की तारीख़ पर इसका अधिवेशन क्यों रखा गया है। इस आपत्ति का अभिप्राय हमारी समझ में अच्छी प्रकार नहीं आया। हमारे देश का सब काम काज अंग्रेज़ी कैलेन्डर के अनुसार होता है। मर्द अपना हर काम इसी के हिसाब से करते हैं। जब कि हमारे देश में हर काम अंगरेज़ी कैलेन्डर के हिसाब से होता है तो हमें अपनी समिति का अधिवेशन हिन्दी हिसाब से करने की कोई विशेष आवश्यकता दिखाई नहीं देती यदि इस हिसाब से कार्य करने में कोई हानि होती तौभी हम इसे छोड़ हिन्दी महीने की तिथि को स्वीकार करते। केवल पक्षपात से अंगरेज़ी हिसाब को छोड़ना हमें ठीक मालूम नहीं होता॥

ट्रान्सवाल के भारतवासी ।

ट्रांसवाल में भारतवासियों की दुरदशा का हाल हम पहले प्रकाशित कर चुके हैं। जब से मिस्टर पोलक भारतवर्ष में आये बहुत सभायें हुईं और हर जगह से हिंदू, मुसलमान ईसाई ने सरकार से यही प्रार्थना की कि भारत के कुली भेजना बंद कर दिये जावें। ट्रांसवाल के वासी भारत के कुली तो मांगते हैं और उनसे जानवरों की प्रकार काम लेकर अपने जेबों को रुपये से भरते हैं परन्तु किसी भारतवासी को जो कुली का काम न करें रहने नहीं देते। इसी वासते सब की प्रार्थना सरकार से यह थी कि कुली जाने बंद कर दिये जावें। बड़े लाट की कांउसिल के मेम्बरों ने गत मास में यह तजवीज़ सरकार के सामने पेश की और हम बड़े हर्ष से लिखते हैं कि सरकार ने इसे स्वीकार किया अब देखना यह है कि किस प्रकार और कब सरकार इस कानून को जारी करती है। इससे यह न समझना चाहिये कि भारतवासियों के सब क्लेश दूर हो गए अभी यह झगड़ा बहुत दिन चलेगा और हम अपने पाठक पाठिकाओं से यह प्रार्थना करते हैं कि जितना रुपया हो सके राय ब्रजनारायण गुरटू के पास भेजें। हमने भी ५-६१) रुपया जो अबतक जमा हुआ था राय ब्रजनारायण गुरटू (१ क्रमेश्रो रोड इलाहाबाद) के पास भेज दिया है और उन्होंने ट्रान्सवाल रवाना कर दिया ॥

विश्वामित्र दशरथ के प्रति।

(श्रीयुत मन्नन द्विवेदी गजपुरी)

कोशलेश कलधौत कलित यश दशरथ नृपति महा बलवीर।
लछमन सहित कुमार राम को यांचन हित आयो तुव तीर॥

हे नरपाल! कराल असुरगन आहि उतपात मंचाते हैं।
शठ सुवाहु मारीच नीच मिलि यज्ञ भंग कर जाते हैं॥ २॥

तेरे कोमल कमल कुंवर युग परम प्रबल अरि मारेंगे।
निज यश विमल विकाशि जगत में वेद विप्र उद्धारेंगे॥ ३॥

बाल वयस लखि मत सभीत हो बाल रूप रवि धरता है।
निज प्रचण्ड प्रखर किरनों से तम त्रिलोक का हरता है॥ ४॥

सिंह सावकों का घरही है कानन कठिन विषम गिरिगार।
बच्चेपनही से भरते हैं उदर गजों का मस्तक फार॥ ५॥

पुत्रों का तो काम यही है देश विदेशों में जाना।
कठिन संकटों को सह २ कर निज भीषम बल दरसाना॥ ६॥

मरजाना बहु विपति उठाना जब कारज ठाना! ठाना।
जब चढ़कर मैदान गये तब चरण नहीं पीछे लाना॥ ७॥

जो २ भीरु वीरता अपनी कादर बनके खोते हैं।
हो गुलाम सिर पटकि शत्रु पद कर मल २ के रोते हैं॥ ८॥

नहीं राम कायर कुपूत है, महाबली पौरुष आगार।
तेरा सुत नृप! जनम लिया है हरने को वसुधा का भार॥ ९॥

जब नहिं राम सरिस सुत सुन्दर आरज कुल जनमावैगा।
बल अभिमान खान गौरव गुन निज सर्वस्व गंवावैगा॥ १०॥

तबहुं पतित अपि सुअन मुदित है सुयश राम का गावेंगे।
गये दिनों की बात सोचकर दुखित हृदय पछतावेंगे॥ ११॥

पहिले ही सा अवध रहैगा सरजू बहै विमल जल धार।
करने से अनुकरण राम का भारत का होगा उद्धार॥ १२॥

परदा और शरम।

(जानकी बाई अध्यापिका कन्यापाठशाला, डूंगरपुर स्टेट)

प्रिय बहिनो! इस में कुछ शक नहीं कि शरम स्त्री जाति का एक प्रधान भूषण था और है किन्तु आज तुमने सच्ची शरम त्याग झूठी शरम ग्रहण की है। बहिनो! कोई जेठ अथवा ससुर सैंकड़ों लाखों में ही एक आध ऐसा दुराचारी व कुकर्मी होगा जो अपनी छोटी भावज को अथवा अपनी बहू को (जो कि उस की पुत्री समान है) कुदृष्टि से देखे और उस की प्रतिष्ठा तथा पवित्रता में बट्टा लगाने का कारण बने व अपना लोक परलोक बिगाड़े यथा:—

अनुज वधू भगिनी सुतनारी। सुनु शठ यह कन्या समचारी॥

किन्तु खेद का विषय है कि आज कल बहू अपने जेष्ठ वा ससुर के सामने मुंह खोलना तो दूर रहा बोल भी नहीं सक्ती। बिल्ली कुत्ता यदि कोई वस्तु बिगाड़ रहा भी हो आप देखा करेंगी पर उसे हंकाने तक न जायेंगी इस से कि बेशरम न कहावें। परन्तु वही बहू जो आप निहायत शरमवान बनने का दावा रखती हैं विवाह आदि उत्सवों पर ऐसे गीत गाकर सुनाती हैं कि शरम की धज्जियां उड़ा देती हैं!!! ज़रा भी नहीं लजातीं वरन गला फाड़ २ कर ताली बजा २ कर गाती हैं अब न्याय पूर्वक सोचो कि क्या यही शरम है? बरात में समधी बराती आदि सब इकट्ठे होते हैं उस समय ऐसी २ गालियां गाई जाती हैं कि सभ्य पुरुषों की (जिन्हें ज़रा भी शरम है) गर्दन ऊपर नहीं उठती। जिस समय बहू गाती हैं उन्हें उनके पति जेठ ससुर सभी सुनते हैं व पहचानते हैं कि यह आवाज़ हमारी बहू ही की है सत्य है कि आप अपने दोष को कोई नहीं जानता। जिस समय मेला वग़ैरा में बहू जी पधारती हैं तो फिर क्या! सब शरम वहां इकट्ठाही खोल देती हैं! यानी अपना सोलह शृंगार से सुशोभित मुंह खोलकर सारे तमाशबीनों को दिखाती हैं। धिक्कार है ऐसी शरम को। शरम अन्यों से करना चाहिये अथवा अपनों से ऐसे २ स्थानों पर जहां पर परमेश्वर के स्मरण का समय है, जिस में हवन सन्ध्या करना चाहिये उस में मेढ़ा, बकरी बकरा,

कोयल नाम के गीत जिन में फुहश की हद्द हो गई है गला फाड़ २ कर गाती हैं और फिर भी शरमवाली बनती हैं। बड़े २ घरों में जो कुलीन गिने जाते हैं स्त्रियां आप नाचती व स्वांग बनाती हैं। अगर किसी जगह पर किसी धर्म्मात्मा विद्वान का धर्म्म विषय पर व्याख्यान होता हो तो न तो आप कहेंगी कि हम को सुनने की इजाज़त दो न पुरुष ही उनको भेजेंगे पर जहां गाली गाने का काम पड़े अथवा मेला हो तो झट आज्ञा लेंगी कि हमें जाने दो व पुरुष खुशी से इजाज़त दे देंगे। धन्य है हमारे देशवासी भ्राताओं की बुद्धि को। असल में देखा जाय तो स्त्रियों का कोई क़ुसूर नहीं है उन को बिगाड़नेवाले पुरुष ही हैं पूर्व समय में हमारे बड़े बूढ़े पवित्र आचर विचारवाले और सदाचारी होते थे इसलिये उस वक़्त झूठा परदा नहीं था। यह भी उन्हीं की सन्तान हैं। जिन को कि अपनी स्त्रियों ही पर विश्वास नहीं है। वाह रे कलियुग!! सज्जन धर्म्मात्मा पुरुषों को स्त्रियों पर अविश्वास का कोई कारण नहीं वरन देखा जाता है कि जब तक स्त्री मुंह छिपाये रखती है (अर्थात घूंघट काढ़े रहती है) तब तक पुरुष की इच्छा उस के देखने पर रहती है किन्तु जिस का मुंह खुला है उस की ओर दुबारा नज़र नहीं उठती सो हे प्रिय बहिनो मुंह छिपाने से ही शरम नहीं गिनी जाती जब तक कि मन पवित्र और उस का परदा न हो तब तक तुम लज्जावती केवल घूंघट के निकालने ही से न कहलाओगी॥

आर्य्य नारी।

(श्रीयुत नीरजनाथ शर्म्मा, इलाहाबाद)

भारतवासी अब समझ गये हैं कि स्त्री शिक्षा उन के देश के पुनरुद्धार के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हर तरफ़ पुकार उठ रही है, भ्राताओ! यदि चाहते हो कि भारत की भी गिन्ती वसुन्धरा के सभ्यदेशों में होवे तो अपनी मा

वहिनों को विद्या से वञ्चित न रक्खो। अख़वारों के तो चिल्लाते २ गले बैठ गये हैं स्त्री शिक्षा के विरोधियों ने तो समझा है कि चिल्लाने की भी तो हद है कभी मनमाना चिल्लाकर आपही चुप हो जायेंगे परन्तु अब बड़े डर की बात तो यह है कि स्त्रियां आपही अपने अधिकारों के पाने के लिये आन्दोलन करने लगीं। सब के कान खड़े हो गये अब तो सोचने लगे कि स्त्री शिक्षा है क्या वस्तु ! विचारशील पुरुष हमारे बीच में थोड़े ही हैं कहने को तो कह गये पर काम करते समय मत भेद का कुछ ठिकाना ही नहीं। यह विषय भी अति गूढ़ है कि स्त्रियों को क्या और कैसी शिक्षा देनी चाहिये। देश के हित चाहनेवालों के लिये इससे बढ़कर महत्व का विषय और क्या हो सकता है॥

हमारी क्षुद्र बुद्धि में जो कुछ आता है उस के अनुसार इस छोटे से लेख में हम इस विषय की आलोचना करेंगे। आशा है कि हमारे शिक्षित भ्राता लोग अपना अमूल्य समय दे इस विषय पर चिन्तन करेंगे॥

अंगरेज़ी शिक्षा देश में फैल गई है और फैलती जाती है। हमारे शिक्षित समाज पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा है। लाभ के साथ हानि भी हुई है। हमारे शिक्षित हिन्दू भ्राताओं में बहुतेरे कहते हैं स्त्रियों को अंगरेज़ी पढ़ाना चाहिये, घोड़े पर चढ़ाना चाहिये क्लबों में भेजना चाहिये जिससे यह पूरी तरह से शिक्षिता हो जायें। लेकिन ऐसा करने से हम इनको न जार्ज इलियट (George Eliot) न मेरी करेली (Marie Correlli) बना सकेंगे पर सीता, द्रौपदी, स्वरूपिणी, नारी संप्रदाय को खो बैठेंगे॥

इसी बुद्धि के द्वारा हम लोग स्त्री जाति को अथवा हम अपने संसार की लक्ष्मी स्वरूपिणी नारी संप्रदायको अंगरेज़ी शिक्षा देने का विचार कर बैठे हैं। यदि हम वास्तविक शिक्षा दे सक्ते तो ठीक होता पर ऐसा न करके केवल थोड़ी सी अंगरेज़ी पढ़ाकर कोमल नारि जाति की प्रकृति बदल देंगे॥

पाश्चात्य शिक्षा की आपात मनोरम तीव्र ज्योति से हम लोगों की दुर्बल आंखें अन्धप्राय हुई हैं, उसी से हम समझते हैं कि स्त्री जाति को अगर पाश्चात्य शिक्षा दी जाय तो हम सुखी होंगे ॥

हमारा मत है कि स्त्रियों को अपनी मातृभाषा और कुछ गणित विद्या सिखाना चाहिये। जिससे मर्द लोग दोपहर की मेहनत के बाद जब घर आवें तब उनको ग्वाले अथवा धोबी का हिसाब लेकर न बैठना पड़े और अवकाश पाने पर स्त्री लोग रामायण, महाभारत, भागवत इत्यादि सद्ग्रन्थों का पाठ करके आमोदित हों और शिक्षाप्रद कथायें सुनाकर अपने सन्तान के कोमल हृदयों में हिन्दू धर्म्म का बीज बोयें ॥

देखिये समाज में मिलने से यानी कालिजों में पढ़कर क्लबों में जाकर स्त्रियां जो शिक्षा और जिस खुशी को पावेंगी उस खुशी को और उस शिक्षा को वह घर बैठे पासकती हैं क्योंकि हमारा यह एकान्नवर्ती हिन्दू संसार ही एक समाज है। इस समाज में ख़ास करके (सुशिक्षिता) सद्वंसजाता हिन्दू रमणी पूर्ण स्वाधीनता व सरल आनन्द को भोगकर सकती हैं ॥

लेकिन बात यह हैं कि इस एकान्नवर्त्ती संसार में कभी २ ऐसी गड़बड़ी उठती है कि हमको पृथकान्नवर्त्ती होना ही पड़ता है। इसका कारण यह है कि हमलोग राम लक्ष्मण युधिष्ठिर आदि महापुरुषों की कथायें भूल गये हैं। हम लोगों में धैर्य्य नहीं है जिससे कि हम सब दोष निरीह प्रकृति रमणी जाति पर डालकर खुद साधु बन बैठते हैं। अगर हम खुद स्त्री कन्या भगिनियों को सुशिक्षा दें पुराणादिक के दृष्टान्त उनको बचपन से सिखावें तो फिर हमारे संसार में कभी अशान्ति अथवा कलह पैदा न होगी ॥

अन्त में सोचना चाहिये कि शिक्षा क्या वस्तु है ? केवल किसी विदेशी भाषा में बात चीत करलेना और अपनी ही मातृ भाषा न जानना कभी भी शिक्षित होने का चिन्ह न समझना चाहिये। वास्तविक शिक्षा का अभिप्राय यह है कि मन को विचार

शक्ति दे जाति के आदर्शों का ठीक २ अनुभव करावें जिस से कि जाति उन को भूल न सके। कहा गया है कि हर एक जाति के आदर्श अलग २ हैं और यही एक जाति को दूसरी जाति से पृथक करते हैं। हमारी नारियों को आर्य्य नारी आदर्श अच्छी तरह समझना चाहिये विना इस के इस महान जाति का जीवित रहना असम्भव है॥

जुए का फल।

(श्रीयुत तृजुगी नारायण सपरू, इलाहाबाद)

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्तिदिव्यैः स्तवैर्वेदैः।
सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायान्तियंसामगः॥
ध्यानावस्थिततद्गतेनमनसापश्यंतियं योगिनो।
यस्यान्तंनविदुः सुरासुरगणा देवायतस्मैनमः॥

जुआ खेलना अति अहित वस्तु है, यदि जो मनुष्य यह समझते हैं कि हम जीतेंगे तो वे भविष्य काल का हाल क्या जानते हैं। जो जुआ खेलते हैं, अपनी सारी सम्पत्ति नाशकर देते हैं, यहां तक कि अपनी पत्नी के समस्त आभूषण को गिरवी रख देते हैं और अंत में भिक्षा मांगने तक की नौबत आ पहुंचती है। जुए के खेलने में जान भी चली जाती है, राजा नल की कथा आपने सुनी होगी उनने जुआ खेला था, और जब वे सारा राज-पाठ हार गये तब उन्हें केवल एक धोती पहनकर बन में जाना पड़ा और भीख भी मांगनी पड़ी। देखिये ये नौबतें इस क्रीड़ा में होती हैं। कौरव पाण्डव की कथा सुनी होगी कि उनकी भी इसी खेल में क्या दशा हुई थी। जब जायदाद बटी तो पाण्डवों को भी मिली और दुर्योधन को भी परन्तु पाण्डवों को अति निकृष्ट देश दिये गये। मगर उन्होंने अपने उसी राज्य को अति अच्छा कर लिया। उस समय राजा अपने मुल्क का जब अधिकार लेता था तब वह दूसरे राजाओं को बुलाता था, अगर नहीं आवें तो युद्ध करने को तैय्यार होता था। जब राजा

युधिष्ठिर ने राजाओं को बुलाया तो सब आए और दुर्योधन भी आए। और उसे जल में स्थल का भ्रम हुआ और स्थल के धोखे जल में गिर गया। तब सब राजा हंसे इस पर वह बड़ा लज्जित हुआ। उसने अपने मन में सोंचा कि इसका बदला पाण्डवों से लेना चाहिये, तब उसने अपने मामू शकुनि से कपट का पांसा बनवाकर जुआ में पांडवों की समस्त सम्पत्ति हर ली। कहां तक कहूं पांडव अपनी स्त्री को भी हार गये। और बारह वर्ष पर्यंत बन में कितने कितने कष्ट सहन किये। प्यारी भगिनियों आपको उचित है कि आप अपनी सन्तान को इस महा अनर्थकारी जूआ क्रीणा से सावधान रखें और इन्हें अच्छे उपदेश से इस सत्यानाशी कर्म से रोककर सत्मार्ग में ले जाने का उद्योग करें॥

शिल्प शिक्षा।

(श्रीमती सावित्री देवी लखनऊ)

गत अंक में सीने की विधि काट, छांट ब्योत तथा सीने का सामान बतलाया गया है और उसके साथ कुरता सीने की विधि चित्र सहित दिखलाई गई है अब इस लेख में कमीज़ सीने की तथा उसका चित्र दिखलाया जाता है॥

कमीज़ की ब्योत—यह पहिले लेख में बतलाया गया है कि किस वस्त्र के सीने में कितना कपड़ा लगेगा इसका निश्चय कपड़े के अर्ज़ पर निर्भर है कमीज़ की चौड़ाई आदमी की छाती और पीठ की चौड़ाई से दुगनी होनी चाहिये। कमीज़ में कली और चौबगले नहीं होते इसकी काट गोल रहती है जितनी लम्बी चौड़ी कमीज़ रखना हो उतना ही लम्बा चौड़ा आगा, पीछा गोल जैसा कि चित्र में दिखलाया गया है काट लेवें कमीज़ के अस्तीन की चौड़ाई हाथ की चौड़ाई से दुगनी चौड़ी रहनी चाहिये ६ अंगुल चौड़ी कमीज़ का कफ़ होना चाहिये॥
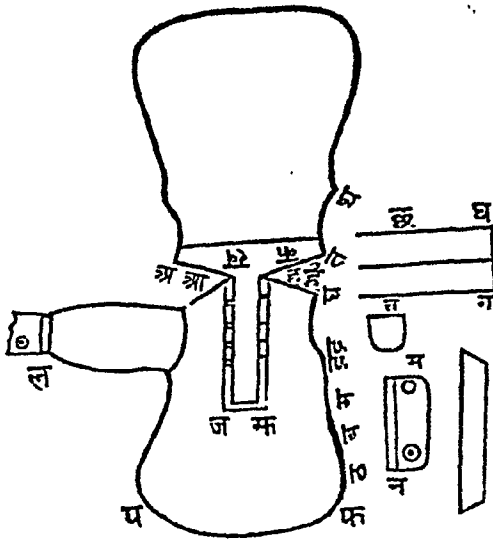
इस चित्र में कमीज़ के सब भाग काटने सीने की सरलता के लिये अलग २ दिखलाये गये हैं।

कमीज़ के सीने की विधि—पहिले कमीज़ के आगा पीछा दोनों पल्लों को बराबर कर (अ)(आ) और (इ) (ई) दोनों पुट्ठों को सिये जैसा कि प्रथम चित्र में दिखलाया गया है फिर अस्तीन की जहां पर कफ़ लगाया जाता है चार अंगुल जगह छोड़कर (जहां कि चित्र में (ग) (घ) लिखा है) अस्तीन को सम्पूर्ण दोनों (च) (छ) पल्लों को जोड़कर सिये फिर आगा की (द) (ध) और पीछा की (त) (थ) जगह को (जहां पर कि आगा पीछा में अस्तीन जोड़ी जाती हैं) छोड़कर दोनों आगा, पीछा पल्लों को बराबर कर नीचे जेब लगाने की थोड़ी जगह (जहां कि चित्र में (ब) (भ) लिखा है) छोड़कर (ट) से (ठ) तक सिओ फिर अस्तीन को (द) (ध) और (त) (थ) जगह से (थोड़ा तिरछा काटकर जैसा कि चित्र में दिखलाया गया है) जोड़े ॥

कमीज़ में कालर और गले के नीचे की पट्टी लगाने की विधि—कमीज़ के पीछे पल्ले में दोनों पुट्ठों के बीचोंबीच गर्दन के नीचे थोड़ा चुनकर सुर्रेदार लंगर डालकर ४ अंगुल चौड़ी पट्टी तिरछी (यानी दोनों पुट्ठे पर दो अंगुल से लेकर तीन अंगुल तक चौड़ी और गर्दन के नीचे चार अंगुल चौड़ी) लगाना चाहिये जैसा कि चित्र में (क) (ख) जगह में दिखलाया गया है पट्टी को दो तह कर भीतर उसके खूब मोटा कपड़ा (जैसे कि

जीन आदि होती हैं) उसी के बराबर भर देना चाहिये और इस प्रकार कफ में भी भरना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से कफ और कालर कड़ा रहता है ॥

कमीज़ में कालर दो प्रकार का लगता है लौट कालर और सादा कालर, लौट कालर तिरछा रहता है यहां पर सादे कालर की विधि बतलाई जाती है। कमीज़ में दो अंगुल चौड़ा कालर लगाना चाहिये कमीज़ के आगे में गले के क़रीब नौ इंच नीचे तक बटन लगाने की जगह को बीचोंबीच काट लेवे जैसे कि कुरते का गला काटा जाता है। कमीज़ में सामने गोट लगाते समय नीचे दो अंगुल चुनकर (जहां कि चित्र में (ज) और (झ) लिखा है) तब गोट लगावे। गोट लगाते समय दहिने तरफ़ १ अंगुल चौड़ी और बायें तरफ़ २ अंगुल चौड़ी गोट लगाना चाहिये दाहिने तरफ़ ४ बटन लगावे बटन के ठीक सामने बायें तरफ़ की गोट में बटन का काज (छेद) बनाने के लिये पेंसिल से ४ निशान कर होलकश (छेद बनाने का औज़ार) से काज बनावे ॥

कमीज़ में कफ लगाना—प्रथम ६ अंगुल चौड़ा कफ काट दोनों सिरों को पखूज कर उलट लेना चाहिये और उसके भीतर मोटा कपड़ा (जैसा कि पट्टी और कालर में बतलाया गया है) भर देवें फिर अस्तीन को चुनकर सुरैदार लंगर डालकर तब कफ को अस्तीन की उस जगह में जहां पर कि चित्र में (ग) (घ) लिखा है जोड़ना चाहिये और उसी जगह पर चुनकर सुरैदार लंगर भी डालना चाहिये जैसा कि ऊपर लिखा जा-चुका है देखो उस चित्र को जहां पर कि (ल) लिखा है ॥

कफ में बटन लगाना—कफ में बखिया कर चुकने पर बटन लगाया जाता है (कमीज़ के कफ और गले में दो प्रकार का बटन लगता है एक सीप का जिसके बनाने की विधि ऊपर

लिखी जा चुकी है और दूसरा कमीज़ का बटन जोकि कमीज़ में सिया नहीं जाता वरन अलग से लगाया जाता है और उसके लिये बायें दाहिने दोनों तरफ़ काज बनाया जाता है यहां पर सीप ही के बटन बनाने की विधि लिखी जाती है) कफ़ में एक तरफ़ बटन और दूसरी तरफ़ काज बनाना चाहिये देखो पहिला चित्र जहां पर कि (न) और (म) लिखा है ॥

कमीज़ में जेब लगाना—कमीज़ में दो जेब रहते हैं एक सामने और दूसरा दाहिने बग़ल के नीचे। सामने का जेब चौखुन्टा रहता है (जैसा कि चित्र में है) और बग़ल के नीचे का जेब तिरछा (जैसा कि कुरते में लगाया जाता है) रहता है इसके बाद नीचे का सब हिस्सा जहां पर कि (प) (फ) लिखा है तुरपना चाहिये ॥

कफ़ और कालर इत्यादि में जहां कि बख़िया की जायगी कच्ची सिलाई अर्थात् सुर्रेदार लंगर डालकर तब बख़िया करनी चाहिये ॥

तैय्यार कमीज़ का चित्र ।
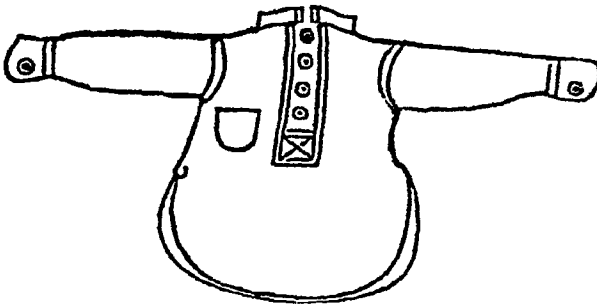
मातृ भाषा।

(श्रीमती कैलासरानी वातल, इलाहाबाद)

बहुत दिनों से मेरी इच्छा हो रही थी कि मैं अपनी बहिनों को अपनी मातृ भाषा अर्थात संस्कृत के विषय में कुछ बताऊं परन्तु ऐसा अवसर कभी नहीं मिला था कि मैं स्वयं ज़बानी अपनी बहिनों को इस के लाभ बताती। बड़े हर्ष का विषय है कि आज इस सभा के स्थापित होने के कारण मैं अपनी सब बहिनों के सन्मुख खड़ी हो अपने विचार प्रगट कर रही हूं और इस अवसर पाने का धन्यवाद श्रीमती रामेश्वरी नेहरू जी व श्रीमती धनराजरानी सपरू जी को देकर सदा के वास्ते इस सभा की उन्नति मांगती हूं क्योंकि इस सभा की मुख्य स्थापितकर्त्ता श्रीमती नेहरू व सपरू हैं उन्हीं की कृपा का यह फल है कि आज हम सब को अपने टूटे फूटे विचार प्रगट करने का अवसर मिला है आशा है कि मेरी बहिनें मुझ को अनुभव अर्थात नातजरुबाकार व आरम्भक जानकर जो कुछ भूल चूक होगी क्षमा करेंगी॥

समय अच्छा आगया है कि हमारी सब बहिनों का ध्यान अब इस ओर आकर्षित हो गया है कि शिक्षा अवश्य होनी चाहिये और निःसन्देह सब अपने बालकों को विद्या देने का पूरा यत्न कर रही हैं। परन्तु यह शिक्षा जिस के लिये यत्न हो रहा है ऐसी सन्तोष दायक नहीं कि जिस से आशा बंधे कि हमारे देश के सौभाग्य के दिन आ रहे हैं और यह बालक जो ऐसी शिक्षा पा रहे हैं अपने देश की, अपने धर्म्म की, और अपने राष्ट्र की दशा सुधार लेंगे। शिक्षा के प्रचार की दुहाई व उस का प्रतिपालन तो प्रायः सभी कर रहे हैं परन्तु यह विचार किसी को नहीं होता कि यह शिक्षा जो हम अपने बालकों को दे रहे हैं किस प्रकार की है और इस से उन के चाल चलन अथवा स्वभाव पर क्या प्रभाव या असर पड़ता है। विद्या देने का अर्थ यह नहीं है कि हमारे बालक अपनी हर एक बात को हर एक वस्तु व हर एक रीति

को बुरा समझें और पराई हर एक बात को अच्छा समझने लगें। हमें तो ऐसी शिक्षा देनी चाहिये कि जिस से वह सच्चे देश भक्त व अपनी राष्ट्र के बनानेवाले बनें। ऐसी विद्या उन को तब तक नहीं मिल सकी जब तक कि संस्कृत की शिक्षा न दी जावेगी और अपनी धार्मिक व मज़हबी पुस्तकें न पढ़ाई जावेंगी। हमारे बालकों का बहुत सा समय व्यर्थ विदेशी भाषा के सीखने में जाता है एक बालक जो सात वर्ष की आयु से विदेशी भाषा (चाहे अंग्रेज़ी हो या कोई और) सीखनी आरम्भ करता है तो कठिनाई से चौबीस पच्चीस वर्ष की अवस्था में उस को इतना बोध हो जाता है कि अच्छी २ ज्ञानिक पुस्तकें तथा रसायन शास्त्र तथा दर्शन शास्त्र इत्यादि को पढ़ सकता है। परन्तु उतना फिर भी नहीं समझ सकता है कि जितना उस देश के वासी जिनकी वह भाषा होती है समझ सकते हैं हमारे देश के बालक तो परदेशी वस्तुओं के नाम सीखते सीखते ही बूढ़े हो जाते हैं यदि कोई भारतवासी अंग्रेज़ी भाषा में कोई पुस्तक लिखता है तो ऐसी शुद्ध व उत्तम नहीं लिख सकता जितनी कि उस देश के वासी लिख सकते हैं। और पुस्तक लिखने का अर्थ यह है कि हम पराई भाषा को तो उन्नति दे रहे हैं और अपनी भाषा को सब की दृष्टि से गिराकर उसकी जड़ काट रहे हैं। अंग्रेज़ी भाषा से देश को कुछ लाभ नहीं पहुंच सक्ता। क्योंकि इसके जाननेवाले बहुत कम हैं लगभग चौदह करोड़ के मनुष्य हैं कि जो हिन्दी व कुछ संस्कृत जानते हैं यदि हम अपनी हिन्दी व संस्कृत को उन्नति दें तो कुछ आश्चर्य्य नहीं कि भारत के सब भागों के मनुष्य इसको शीघ्र ही जानने लगें। बहुत से मनुष्य कहते हैं कि संस्कृत बहुत ही कठिन व कड़ी भाषा है परन्तु यदि गौर से देखा जावे तो यह उतनी कड़ी नहीं जितनी कि लोग कहते हैं और जो कुछ कठिन हम लोगों को यह मालूम होती है वह इस कारण से कि इसका प्रचार नहीं, इसकी पुस्तकों के टीका अच्छी सरल भाषा में नहीं हुए है, नित्य की हमारी बोल चाल में इसके शब्द व वाक्य नहीं आते हैं, सौ में से चार पुरुष ऐसे होते हैं जो संस्कृत व शुद्ध हिन्दी भाषा जानते हैं इन्हीं कारणों से यह हमें

बहुत कठिन मालूम होती है। वास्तव में उतनी कठिन नहीं, यदि उतना श्रम जितना कि हम अंग्रेज़ी भाषा के वास्ते करते हैं इसके लिये करें तो कोई बात नहीं कि यह हमको न आवे जो बातें हम वर्षों में सीखते हैं वह अपनी शुद्ध हिन्दी में हम दिनों में सीख सकते हैं बहुत सी बहिनें कहेंगी कि हमारी भाषा में तो कुछ है ही नहीं पढ़ायें क्या ? सत्य है परन्तु यह दोष किसका है ? क्या हमें अपनी भाषा में सर्व प्रकार की पुस्तकें नहीं प्रकाशित करनी चाहियें ? साइन्टफ़िक किमिस्ट्री इत्यादि की उत्तम २ पुस्तकें क्या हमारी भाषा संस्कृत में नहीं होनी चाहियें ? कितने शोक की बात है कि हमारी धार्मिक पुस्तकों की टीका योरोपवालों ने किये हैं। हमारी गीता, महाभारत, रामायण, भागवत, के टीका मिसेज़ बिसन्ट ने किये हैं हमारी कोई भी रमणी ऐसी नहीं जो वेद, पुराण, उपनिषद, के तरजुमे शुद्ध हिन्दी में कर सके ताकि हमारे नन्हें नन्हें बालक उनको सुगमता से पढ़कर अपने धर्म्म को पहचानने लगें। आज कल हम लोग अपने धर्म्म व सत्य के मार्ग को खोये हुए हैं अपने कर्तव्य व हिन्दू धर्म्म को भूल गये हैं इसका कारण यह है कि हमें अपनी धार्म्मिक या मज़हबी शिक्षा नहीं मिलती और वह इसलिये नहीं कि हम हिन्दी व संस्कृत नहीं जानते हैं हमारी धार्म्मिक पुस्तकें प्रायः सभी हिन्दी संस्कृत में हैं जो कुछ टीके योरोपवालों ने हमारी किताबों के अंग्रेज़ी में किये हैं उनको पढ़कर हमारे ऊपर इतना प्रभाव नहीं पड़ सक्ता जितना कि उनके असली पढ़ने से पड़ सकता है क्योंकि टीका में उसकी वह सुन्दरताई व महिमा नहीं रहती जो वास्तविक में होती है जब श्री रामचन्द्र जी श्री सीता महारानी को वन जाने से रोकते हैं तो वे स्त्री के कर्तव्य जो पति के साथ होते हैं बताती हैं उसका टीका अंग्रेज़ी भाषा में क्या हो सक्ता है ? इसी भांति हरिश्चन्द्र की सच्चाई व और २ कर्तव्य जो हमारी भाषा में लिखे हैं कदाचित् अंग्रेज़ी में उनका वह प्रभाव नहीं पड़ सक्ता और यही कारण है कि हम को अपने प्राचीन महत्व का लेश मात्र भी ध्यान नहीं आता यहां तक कि हम अपने प्राचीन शूरवीरों के

नाम तक भी नहीं जानते हैं। हमारे बालकों से पूंछिये कि राम राक्षस था या रावण कुछ नहीं बता सकेंगे। भीम, अर्जुन, सहदेव का हाल पूंछिये कदाचित् न बता सकेंगें। बालक तो बालक बड़े २ पुरुष स्त्रियां नहीं जानती हैं इनके स्थान यूरोप के शूरवीर निपोलियन, क्रांमवैल, नेलसन, इत्यादि को सब ही जानती हैं। हमारे नवयुवक अपने कवि वालमीक, तुलसीदास, कालीदास, भवभूति, लीलावती, के स्थान यूरोप के कवि टेनीसन, शेक्सपीयर, मिलटन, शेली, बायरन इत्यादि के नाम जानते हैं। मेरा अभिप्राय यह नहीं कि वे यूरोप के कवियों को न जानें किन्तु निवेदन यह है कि अपने कवियों या शूरवीरों को भी न भूलें! हमारे बालकों को अपने प्राचीन हालात व धर्म्म इत्यादि के विषय में कुछ भी शिक्षा नहीं दी जाती है यदि सीता का पतिव्रत धर्म्म व सच्चाई भारत की छोटी २ कन्याओं को सिखाई जावे तो मेरे विचार में बहुत ही अच्छा प्रभाव उन पर पड़े परन्तु शोक की बात तो यह है कि हमारे यहां कोई सत्संग व धार्म्मिक चरचा ही नहीं है। हमारी दशा गिर गई है और गिर जावेगी यदि धार्म्मिक शिक्षा न होगी हमारे हिन्दू धर्म्म की नाव समुद्र में डगमगायगी कभी इस किनारे से टक्कर लेगी और कभी उस से, बहाव आया तो पश्चिम की ओर बह गई। हमारे बालक भी इसी तरह भटकते रहेंगे हम को उचित है कि हम अपनी धार्म्मिक शिक्षा को स्थिर रक्खें आजकल जब कि चारों ओर से राष्ट्र बनाने की पुकार हो रही है तो ज़रूरी है कि एक धार्म्मिक शिक्षा भी इस नेशन के लिये रहे। हमें चाहिये कि हम अपने बालकों को धार्म्मिक शिक्षा दें और उन में धार्म्मिक उत्साह उत्पन्न करावें और प्राचीन हाल सुनावें। लज्जा की बात है कि हमारे बालक जानते ही नहीं कि धार्म्मिक किस चिड़िया का नाम है हमें चाहिये कि प्राचीन शूरवीरों का उन्हें पाठ दें जैसे गुरु गोविन्द सिंह और उन के बेटे। हर एक पुरुष उन के धर्म्म

व शूरवीरता को जानता है औरंगज़ेब ने किस प्रकार उन को जीते जी नेव में चुनवा दिया और पूछता रहा कि अब मुसल-मान हो जाओ तो छोड़ दूंगा परन्तु धर्म्म के प्यारों ने मरना अङ्गीकार किया परन्तु अपने धर्म्म को न छोड़ा। हक़ीक़त राय से कैसी कठोरता व निर्दयता हुई इस को प्रायः सभी जानते होंगे। ऐसे ऐसे उपदेश हउआ, कोको, भूत, चुड़ैल, इत्यादि के स्थान सुनाए जावें तो अच्छा हो प्राचीन समय में माताएँ बातों ही बातों में अपने बालकों को धर्म्म का मार्ग बता देती थीं और बड़े होकर वही बालक धर्म्मात्मा, ज्ञानी, सत्य-वान, ईश्वर भक्त होते थे। महारानी मन्दालसा को देखिये किस प्रकार उस ने अपने बेटों को उपदेश किया। जहां बालक उत्पन्न हुआ तो उस ने लोरियों में ही उपदेश देना आरम्भ किया महारानी के जब पहला पुत्र उत्पन्न हुआ तो ग्यारहवें दिन जब वह राजा के साथ शुद्ध होने के लिये हवन करने बैठी तो राजा ने बेटे का नाम विक्रान्त (जिस के माने दबाया हुआ) रक्खा मन्दालसा हंसी और उसी समय से बेटे को गोद में लेकर लाड के बहाने उपदेश करने लगी "हे बेटा तू शुद्ध है, तेरा नाम नहीं है, यह नाम भी फ़रज़ी रक्खा गया है, यह शरीर पांच तत्व का है, तेरा नहीं है न तू इस का है, तू किस लिये रोता है, या नहीं रोता है, यह शब्द तो राजा का बेटा जो शरीर है, उस को बतला रहा है, तेरी न उन्नति है न पतित्व है, किसी को पिता किसी को पुत्र किसी को माता किसी को स्त्री किसी को अपना किसी को पराया मत समझ यह सब भूतों का समूह है, मूर्ख पुरुष शान्ति को दुःख का उपाय समझता है और भोगों को जो बार बार दुःख देनेवाले हैं सुख का उपाय समझते हैं, पृथ्वी पर सवारी में शरीर है और शरीर में भी और पुरुष बैठा है, मोह जैसा शरीर में है इस में नहीं है यह बड़ी भारी मूर्खता है"। इसी तरह महारानी ने लाड़ ही लाड़ में पुत्र को ज्ञान का बोध करा दिया ज्यों ज्यों बालक बढ़ता गया आत्म बोध भी बढ़ता गया जब पिता ने इस को ब्रह्मचर्य्य के लिये गुरुकुल भेजा तो वह वहीं से सन्यासी हो गया, इसी भांति और पुत्रों

को भी ज्ञान व उपदेश किया अन्त में एक पुत्र बड़ा शूरवीर व धर्म्मात्मा उत्पन्न हुआ जिस ने कुछ काल धर्म पूर्वक राज्य कर जंगल की राह ली। एक मन्दालसा क्या और बहुत सी स्त्री ऐसी हुई हैं जिन्हों ने अपने बालकों तथा स्वामियों को ऐसे ऐसे उपदेश किए। मैं निश्चय करके कहती हूं हमारा भारतवर्ष फिर पहिले महत्व को प्राप्त हो जावे यदि संस्कृत की शिक्षा का प्रचार हो जावे हमारी रमणियां फिर सीता, मैत्री गार्गी सावित्री की भांति शास्त्रार्थ करने लग जावें यदि प्राचीन हिन्दू इतिहासों की शिक्षा हो जावें, हम फिर सब अपने भूले हुये मार्ग पर आ जावें यदि बचपन से ही हमें धार्म्मिक शिक्षा हो। अतएव हमारी गति अब सिवाय संस्कृत शिक्षा के किसी प्रकार नहीं हो सकती जो कि हमारी मातृभाषा थी। मेरे लिखने का अभिप्राय यह मत समझना कि मैं अंग्रेज़ी शिक्षा के विरुद्ध हूं परन्तु मैं यह चाहती हूं कि इस के साथ २ अपने न्याय अपने धर्म व संस्कृत की शिक्षा भी दी जावे ताकि भूल से अंग्रेज़ी पढ़े हुए को ही विद्वान और संस्कृत पढ़े हुए को मूर्ख न समझने लगें क्योंकि आज कल बहुधा इस विदेशी तालीम का ऐसा उत्पादन ही पड़ रहा है। वास्तव में बात यह है कि हम स्त्रियों को पूरी शिक्षा होती नहीं है न तो अंग्रेज़ी ही की पूरी भांति होती है और न संस्कृत ही की, इसका परिणाम यह होता है कि न उधर की रहती हैं न इधर की कुछ स्वभाव उधर के हो जाते हैं और कुछ इधर के लगे रहते हैं और चाल चलन विपत्ति में फंस जाता है एक अंग्रेज़ी मसल है जिस का अर्थ यह है थोड़ी विद्या भयभीत चीज़ है। खैर मेरा अभिप्राय इस लिखने का यह है कि हमारी बहिनें इस अपनी मृतक भाषा को उठाकर इस में फिर आत्मा व शक्ति फूंक दें नहीं तो यह मृतक पड़ी देख पश्चमी लोग कुछ भाग इस के शरीर के ले गये हैं और विशेष जो है वह भी ले जावेंगे॥

परमात्मा का धन्यवाद सदा करना चाहिये क्योंकि वही एक है जो मृतक राष्ट्र को फिर जिला देता है हर्ष व आनन्द मनाना चाहिये कि हमारे देशवासियों का ध्यान अब इस ओर

हो गया है कि संस्कृत हिन्दी भाषा आदि की शिक्षा अवश्य होनी चाहिये और बहुत लोग अपनी मृतक भाषा को फिर जिला रहे हैं जो लोग पहिले संस्कृत के नाम से घृणा करते थे वह अब अपने बालकों को पढ़ा रहे हैं पिछले पच्चीस तीस वर्ष में संस्कृत की बहुत उन्नति हुई है। उस से प्रथम भारत में सिवाय एशिआटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल के कोई अच्छी सोसाइटी संस्कृत की किताबों के छापने व प्रकाशित करने की नहीं थी। लेट डाक्टर राजिन्द्रलाल मित्रा ने जो यत्न हस्त लेखक अर्थात् (Manuscript) के ढूंढ़ने में किया है वह सब पर प्रतीत है। पं० जीवानन्द विद्यासागर कलकत्ता के रहनेवाले उन्होंने एक समय में जब भारत में कोई संस्कृत को सराहता न था बहुत सी संस्कृत की पुस्तकों के टीका बंगाली में किये और कम मूल्य पर बेंचनी आरम्भ कीं उसका परिणाम यह हुआ कि सबको वेद, पुराण, और हिन्दु फ़िलासफ़ी के पढ़ने का अवसर मिला। यदि इनके सरल भाषा में तरजुमे कोई हमारे नवयुवक या रमणियों में से कोई रमणी करतीं तो हमारे बालक भी इसको सुगमता से पढ़ सकते। मिस्टर विटलेसटोक ने जो कि वाइसराय की कौंसिल के मेम्बर थे सन् १८८७ में कहा था कि यह संस्कृत की भाषा भारतवर्ष से बिलकुल उठ जायगी क्योंकि लोगों का ध्यान इस ओर नहीं परन्तु उत्सव की बात है कि उन की यह भविष्यवाणी अर्थात झूठ निकली और हमारी संस्कृत ने दिन दुगनी रात चौगनी उन्नति पाई॥

मातृ भूमि-भक्ता-सुजाता-'स्वदेशी' वाला।

("पितृ—उपदेश")

["वर्म्मा"]

"आज तेरह बरस की कन्या सुजाता का ब्याह है। सुजाता माता पिता की बड़ी लाड़िली एकलौती कन्या है। अतएव बड़ी धूम धाम के साथ उसका विवाह एक बड़े घराने में हुआ। शुभ लग्न पर सुजाता का पाणिग्रहण सुरेशचन्द्र से कराके माता पिता कृतार्थ हुए। विवाह की रात बड़ी खुशी में कटी, दूसरे दिन सुबह नौबत के समय से विदासूचक गीत गाये जाने लगे। अब दिन में पिता माता के प्रेममय हृदय को विदीर्ण कर उनकी प्यारी पुत्री सुजाता ससुराल की राह लेगी। प्रातःकाल से घर व पड़ोस की नारी उस की विदा की तय्यारी में लगी हैं। कोई उस के गहने की पिटारी सजा रही हैं। कोई उस के खाज बना रही हैं। कोई रास्ते के कलेऊ का प्रबन्ध कर रही हैं देखते देखते विदा का वक्त आ खड़ा हुआ। सुजाता अधीन होकर रोते २ माता पिता के पैर छूने को गई। पिता ने पुत्री को गदगद वाणी से आशीष देते हुए कहा 'बेटी सुजाता तू सुहागिनी हो! तू ससुराल की उन्नति करे। तेरे जाने से तेरे स्वामी के घर की बढ़ती हो, तू कीर्तिमती और आयुष्मती होकर जीवन के महान पथ पर आरूढ़ हो! तेरे पिता तुझे पूर्ण हृदय से आशीर्वाद देते हैं'। माता का दिल भी भर आया, माता कन्या के भावी वियोग को स्मरण कर बड़ी २ आंसू की नदी बहाने लगी। पर अपनी लाड़िली को विदा के समय रोना अशुभ समझ कमर कस खड़ी हुई और उसे आशीर्वाद दिया। भाई ने भी अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपनी प्रिय भगिनी को आशीष दी। नैहर में दुःख आंसू और वेदना छोड़कर बालिका ससुराल को चली। राह में उसके मन में अपने घर की छोटी बड़ी बाल्यावस्था की घटना एक एक करके आने लगीं। माता का अगाध प्रेम भ्राता की करुणा उसके हृदय को विदीर्ण करने लगीं। वह अपने मन में सोचने लगी कि वह किस परदेशी के साथ किस अन-जान घर में जो रही थी वहां उसको भला माननेवाला कौन

मिलेगा ! वह नैहर में माता के अवारित स्नेह और पिता के असीम प्रेम से पली थी। अब नवीन गृह (ससुराल) में इस छोटी बालिका को पूर्ण हृदय से कौन प्यार करेगा ? इस अनजान लड़की को यह बोध नहीं था कि इसी अजान घर में उसके जीवन का सुख, आनन्द, प्रेम, प्रीति, व सर्व्वस्व उस की बाट देख रहा था। बहुत लोगों की भीड़ भाड़ व बड़े समारोह के साथ सुजाता ने ससुर गृह में प्रवेश किया। सुरेशचन्द्र (दुलहा) अल्प अवस्थाही में पितृहीन हो गया था। अतएव सुरेशचन्द्र ही सारी सम्पत्ति का एक मात्र अधिकारी था। सुरेश की माता सादर नवागता गृहलक्ष्मी को लिवा ले गई। यद्यपि सुजाता असामान्य सुन्दरी नहीं थी तथापि उसके शान्तिमय मुख पर एक विशेष करुणा भाव था और उस के बड़े २ नेत्रों में मधुर दृष्टि थी। उसके मुखड़े पर की इस करुणाता को देख कर सभी उसे अच्छा मानते थे। सुलक्षणा बहू सुजाता को देख उस पर सुरेश की माता प्रभृति सब की प्रीति हो गई। सब को सुजाता की प्रसन्नता और सुख की ही फ़िकर रहती थी। उसको भली भांति प्रतीत हो गई कि इस अनजान घर में मेरे सुख, आनन्द और स्नेह की सीमा नहीं। जिस चीज़ की वह लालसा भी नहीं करती थी वह भी उसे अनायास ही मिल जाती थी परन्तु एक कारण से सुजाता के चित्त में बड़ा विषाद था। उसने देखा कि मेरा पति सदैव विदेशी चालढाल और विलायती चीज़ों में ही लिपटा रहता है। जिस दिन बंगदेश के नवीन आकाश में स्वदेशी रूपी सूर्य्य की किरण फैली, जिस दिन माता (जन्मभूमि) की पुकार को सुनकर करोड़ों सन्तान माता के पवित्र पुण्य मन्दिर में एकत्रित हुए थे उसी मंगल मुहूर्त पर सुजाता के पिता व भ्राता ने भी (स्वदेश सेवार्थ 'स्वदेशी' का) मातृमन्त्र ग्रहण किया था। सुजाता ने भी उसी सुअवसर पर अपने कोमल हृदय को माता के चरणों पर रख दिया था। (अर्थात स्वदेशी वस्तु व्यवहार का व्रत धारण किया था) इसी कारण अपने पति को विदेशी वस्तु व्यवहार करते देख-कर उस का कलेजा फटता था॥

कुछ दिनों के बाद सुजाता अपने नैहर को गई अपने माता पिता भाई बन्धु के प्रेमालङ्गन से वह तृप्त हुई। वह अपनी पुरानी

सखियों से मिलकर कई दिन की जुदाई एक ही दिन के मेल से भूल गई। सन्ध्या समय सुजाता के पिता उस को पास बुला कर उससे वार्तालाप करने लगे। वे उससे सास ससुर की बातें पूछने लगे। लज्जावती सुशीला सुजाता धीरे २ पिता के प्रश्नों का उत्तर देते हुए बोली पिता जी वहां सब कुछ सन्तोष-जनक है परन्तु एक बात से मैं बहुत दुखी हूं। "वे विलायती चीज़ों के बड़े शौक़ीन हैं विलायती माल से उन का घर भरा हुआ है"। इतना कहते २ सुजाता का कलेजा मुंह तक आगया और वह गदगद स्वर से आगे बढ़ी पिताजी क्या आप को स्मरण है कि जिस दिन स्वदेशी आंदोलन का पुकार सारे भारतवर्ष में गूंज उठी थी। जिस दिन हज़ारों देशभक्त सन्तानों ने माता के चरणों पर अपने प्राण विसर्जन किये थे अर्थात् जिस दिन सब भारतवासियों ने स्वार्थत्याग, आत्मत्याग, और स्वदेश सेवा का बीड़ा उठाया था और विदेशी वस्तु का वहिष्कार करने की प्रतिज्ञा की थी उस दिन मैंने क्या कहा था? मैंने प्रण किया था जब मैं गृहिणी होऊंगी (घरबार सम्हालूंगी) तब मैं अपनी माता (स्वदेश) की मूर्ति सोने के सिंहासन पर स्थापितकर प्रतिदिन उसकी भक्ति पूर्वक पूजा करूंगी किन्तु यह मेरी चिर-वांछित आशा पूर्ण नहीं हुई। सुजाता के पिता ने अपनी कन्या के माथे पर हाथ रखकर गम्भीर स्वर से कहा "सुजाता तू महिमामयी माता (भारत) की महिमामयी कन्या है भक्तों की रक्षा करनेवाली भक्तवत्सल (भारत) माता अपने भक्तों की शुभकांक्षा अवश्य पूर्ण करेगी। किन्तु सुजाता! अधीर न हो समय आने पर सब ठीक हो जायगा अभिमान और कठोरता द्वारा स्वामी के हृदय के ऊपर विजय प्राप्त करने की चेष्टा न करना प्रेम और कोमलता द्वारा स्वामी के मनको अपने वस में करना" सुजाता ने एकाग्रचित्त से पिता का जलद गम्भीर उपदेश सुना। देखते ही देखते सुजाता के ये सुख के दिन भी कट गये पति आकर उसे अपने घर लेगया॥

"व्याह के पीछे तीन वरस बीत गये! सुजाता अब पूर्ण व्यवस्था (जवान) हो गई। किन्तु सुजाता की लज्जा ने अभी भी पीछा नहीं छोड़ा। दिल खोलके उसने अभी तक ससुराल

में स्वामी इत्यादि किसी से भी बातें नहीं कीं। परन्तु स्वामी और सास की सेवा में वह जरा भी नहीं हिचकिचाती थी अर्थात् उसकी वाणी लज्जामयी थी पर हाथ लज्जा से दूर भागते थे। दिन भर के काम काज से छुट्टी पाकर शाम को सुजाता अपने सयनगृह के झरोखे के पास बैठकर राज-पथ की ओर देखती थी। जब बड़े २ लोग गाड़ियों पर चढ़-कर शान से सैर के लिये निकलते थे उनकी ओर सुजाता देखती भी नहीं थी। पर जब मातृ-भक्त-युवक-गण वन्दनार्थ शिर झुकाये नंगे पैरों गले में चादर डाले नगर वासियों को उत्तेजित कर राजपथ में मातृ वन्दना (वन्देमातरम्) के गीत गाते हुये जाते थे सुजाता का कोमल हृदय आनन्द से भर आता था। उत्कण्ठ (बड़े) आनन्द के कारण उसकी करुणामय आंखों से पानी बहने लगता था। वह उनकी ओर देख-कर हाथ जोड़ मत्था झुका मातृ-भूमि के प्रति प्रेम व सन-मान दर्शाती थी। इसी प्रकार सुख दुख से सुजाता के दिन कटते थे॥

"एक दिन सन्ध्या समय सुजाता अपने सोने के कमरे में आनन्द मठ * पढ़ रही थी। सुरेशचन्द्र धीरे २ कमरे में आया और अपनी सहधर्मिणी को कुछ पढ़ते देख उसके समीप चुपके से खड़ा हो गया सुजाता को कुछ मालूम नहीं हुआ। मातृभक्ता सुजाता एकाग्रचित्त से मातृवन्दना (वन्देमातरम गीत) का पाठ करने लगी। सुरेशचन्द्र ने स्नेह से सुजाता के कन्धे में हाथ रक्खा और झट उसकी पुस्तक बन्दकरके प्रेममयीवाणी से कहने लगा 'सुजाता! मैं तुम्हारा स्वामी हूं, मुझ से तुम क्यों छिपाती हो साफ़ कहो तुम सदा किस व्यथा से दुखी रहती हो'। स्वामी के वचन सुनकर सजल नयनों से अपने प्राणेश्वर की ओर

---

* 'आनन्दमठ' श्रीमान बंकिमचन्द्र बंगभाषा के अद्वितीय लेखक का बड़ा विख्यात उपन्यास है। इस पवित्र पुस्तक में देश भक्ति स्वदेशानुराग और आत्म-त्याग की महिमा खूब दिखाई गई है। बंगाल में कोई भी वृद्ध बालक स्त्री पुरुष ऐसा नहीं मिलेगा जिसको 'आनन्दमठ' परिचय न हो। पढ़े लिखे लोगों ने तो इस को कई बार पढ़ा होगा। इसका अनुवाद कई भाषाओं में हो चुका है। हिन्दी में भी इसका अनुवाद हो रहा है॥

देख आकुल भाव से कहने लगी तुम मेरे स्वामी हो, मरने जीने में मैं तुम्हारी हूं। तुम देव, मैं दासी; तुम ज्ञानी, मैं मूर्ख; तुम महान मैं हीन। तुमको मैं उपदेश देने योग्य नहीं। किन्तु मैं तुम्हारी धर्मपत्नी होने के कारण अपना कर्तव्य समझकर और तुम्हारे साहस की भागिनी होने से दो चार बातें कहे बिना नहीं रह सक्ती, मुझे आशा है कि यदि मेरे मुख से कुछ अनुचित निकले तो आप क्षमा करेंगे, मैं विनीत भाव से प्रार्थना करती हूं अबसे विलायती माल का व्यवहार करने से स्वदेश के माथे पर कलंक का टीका न लगाओ। निज माता के कलेजे पर छुरी चलाकर सौतेली मा के स्नेह की बाट न देखो, आकाश वाणी सुनो! "देवताओं ने स्वदेशी हो माग्नि प्रज्वालित की है" आओ प्रभु! इसमें आहुति डालें! देखो माता करुणामय स्वर से हमें बुलाती है! माता का हृदय पुत्र प्रेम से पिघल गया है। आओ नाथ! हम माता की सन्तान हैं हमको अपनी माता के चरणों में जाना चाहिये! * इतनी लम्बी कथा सुजाता ने अपने पति से आज पहिली बार कही थी इसी कारण वह लज्जा के मारे मुर्झा सी गई। सुरेशचन्द्र ने अपनी पत्नी की बातें सुनकर उत्तर दिया "अगर विलायती चीज़ों के बराबर अच्छी स्वदेशी चीज़ें हमें मिल जायें तो हम विलायती माल क्यों ख़रीदें। पर हमारे देश में अभी विलायती माल के समान विलास योग्य सामान नहीं मिलता"॥

कातर होकर स्वामी बन्धनपाश से मुक्त होकर सुजाता फिर बोलने लगी। "विलास प्रभु आप विलास प्राचीन समय (ऐश) की बातें करते हैं आर्य सन्तान

---

* सन्तान के साधारण माने तो सभी जानते हैं। पर 'आनन्दमठ' 'सन्तान' शब्द में कुछ विशेषता दर्शाई गई है। यहां सन्तान से अभिप्राय उन लोगों से है जिन लोगों ने अपना घरबार छोड़कर आप सन्यास धारणकर स्वदेशोद्धार का बीड़ा उठाया था उनका व्रत था कि जब तक अपने देश को स्वतंत्र न बना देंगे तब तक सांसारिक सुख भोग न करेंगे। भवानन्द और उनकी स्त्री शान्ती नवनिानन्द इसी सन्तान के सम्प्रदाय के सभासद थे॥

से मातृभक्त विलास त्यागी संयमी महापुरुष समझे जाते हैं। इसी पुण्य स्थान में राणा प्रताप ने जन्मभूमि के लिये आत्मत्याग की पराकाष्ठा का दिग्दर्शन कराया था। तुम भी तो वही आर्य सन्तान हो! तुम्हारी रगों में भी तो वही आर्यखून है। क्या शेर के बच्चे के मुंह से यह (विलास का बहाना) कथा अच्छी लगती है। सुनो प्रियतम! माता के मन्दिर में आत्मोत्सर्ग और स्वार्थत्याग के बाजे बज रहे हैं। माता की पवित्र वेदिका पर माता के उपासक (देशभक्त) एकत्रित हो भक्तिपूर्वक माता के चरणों की भेंट अर्थ (धन) सुख, विलास, वासना सर्वस्व चढ़ा रहे हैं। हे प्रभु! तुम भी साधकों के साथ सम्मिलित होकर दिलभर के मातृ भूति के दर्शन कर आओ। एक बार गला फाड़कर माता का नाम उच्चारण करो माता का आशीर्वाद तुमको चिरायु बनाकर अमरत्व प्रदान करेगा। सुरेशचन्द्र ने पत्निवाक्य ध्यान देकर सुना और तब स्नेहभरी वाणी से कहा। "सुजाता! तुम मानवी नहीं देवी हो। आज तक मैं अज्ञान से घिरा हुआ था। आज तुमने अपने हाथों मेरा अज्ञान हटाया"। सुरेश मुग्ध होकर निज भार्य्या की रूप गरिमा व गुण गरिमा निरीक्षण करने लगा। उसने पत्निमूर्ति द्वारा माता की ज्योतिर्मयी मूर्ति का अनुभव किया। उसने देखा कि माता करुणा स्वर से पतित पुत्र का आह्वान करती है। उस स्वर में क्या अपूर्व स्नेह माया और करुणा थी। माता के कपोलों से आनन्द के आंसुओं का धारा बह रही थी। दो हाथों में स्नेह उपहार लेकर जननी पतित सन्तान की बाट देख रही थी। तृषित (प्यासा) सुरेश ने दिलभर के माता मूर्ति के दर्शन किये और प्रण किया कि 'आज से प्रतिज्ञा करता हूं कि कभी भी विलायती माल नहीं छुऊंगा। आज तक जो मैंने माता का अपमान किया उसका प्रायश्चित करूंगा'। सुजाता के शान्ता कोमल मुख पर मुसकराहट छा गई। इतने दिनों के बाद सुजाता का पितृ उपदेश सार्थक हुआ। सुजाता ने गुस्से और अभिमान के द्वारा स्वामी के हृदय को पराजय नहीं किया परन्तु प्रेम व मृदुवचनों द्वारा स्वामी के मनको अपने वस में किया। "वन्देमातरम" "श्री सरयूबाला"

हे ईश्वर ! ऐसी सुजात सुजाता ही भारतभूमि में जन्म लेकर अपने पतियों को सच्चे 'स्वदेशी' बनायें। इस समय हमारे देश में ऐसी महिलाओं की बड़ी आवश्यकता है ॥

हे मेरी सुजात बहिनों ! देखा इस मातृ-भूमि-भक्ता-स्वदेशी सुजाता ने कैसे निखट्टू विलायती बाबू को परम देशभक्त स्वदेशी बनाया। क्या तुम इस बाला से कुछ सबक़ न सीखोगी क्या मेरी चार पांच घंटे की मेहनत सफल नहीं होगी। यह कथा मुझ को बड़े प्रयास से श्रीमती कुमारि कुमुदिन मित्र बी. ए. की मासिक पत्रिका 'सुप्रभात' से बंगभाषा से हिन्दी में अनुवाद करनी पड़ी। बंगभाषा से अनुवाद करने का मेरा पहिला उद्योग है। यह परिश्रम मैंने तुम्हारी सेवा अथवा माता की उपासना के निमित्त किया । इस कथा को आप केवल कल्पित न समझें, बंगाल में ऐसी कई एक घटनायें हो चुकी हैं। इस कथा में सुजाता ने पिताके उपदेश का अनुकरण करते हुए अपने मृदुवचनों से काम लिया ॥

सावित्री ।

(श्री युत गंगाराम जैनी, बनारस)

आप लोग इस बात से अवश्य परिचित होंगे कि छोटी २ कन्यायें अपने गुरुजनों की वंदना करती हैं तो उन के मुखारविन्द से ये शब्द उच्चारित होते हैं। "पुत्री तुम भी सावित्री के सदृश सौभाग्यवती हो और फूलो फलो" परन्तु प्रायः बहुत से इस बात को नहीं जानते होंगे कि इस आशीर्वाद से उनका क्या प्रयोजन है। इस में सन्देह नहीं कि हमारे भारतवर्ष में ऐसी २ स्त्रियां हो गई हैं कि जिन्हों ने इस लोक और परलोक दोनों में अपने पतिधर्म और सतीत्व के कारण प्रतिष्ठा पाई है और यदि आप लोग रामायण को स्मरण करें तो मालूम हो जायगा कि स्वयम्बर के समय सीताजी को भी यही आशीर्वाद दिया गया था। अब मेरा प्रयोजन यह है कि कुछ वृत्तान्त उस सावित्री का जिसका नाम हर महात्मा के मुख से निकलता है आप लोगों को सुनाऊं। महाभारत में लिखा है कि प्राचीन काल में जब कि पृथ्वी पर सदाचार की छटा प्रसारित थी एक अस्वपती नाम भूपति रहता था उस के कोई संतान न होती थी। इस दुख से दुखी होकर वह और उसकी महिषी दोनों सावित्री देवी की पूजा करने लगे। अठारह वर्ष के उपरान्त देवी ने उन की प्रार्थना स्वीकार की और प्रसन्न होकर वर दिया कि जाओ तुम्हारे सन्तान होगी। उन के एक पुत्री उत्पन्न हुई जिस के नामकरण के लिये बड़े २ पण्डित दरबार में बुलवाये गये और पण्डित लोगों ने निवेदन किया कि महाराज इसका नाम सावित्री रखना चाहिये क्योंकि ये सावित्री देवी के वर से उत्पन्न हुई है। अतः उस का नाम सावित्री रक्खा गया। बचपन में ही इस के लक्षणों से प्रतीत होता था कि यह बड़ी बुद्धिमती और विद्यावती होगी क्योंकि कहावत है—

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात"

जिस समय वह युवावस्था को प्राप्त हुई उसका सौन्दर्य अवर्णनीय था। उस के पिता ने विवाह करने के हेतु श्रेष्ठ वर

ढूंड़ा परन्तु कोई वर उस के समान विद्यावान और गुणवान न मिला ॥

प्राचीन काल में यह प्रथा थी कि पति पत्नी से विद्या और गुण में श्रेष्ठ होना चाहिये परन्तु आज कल कन्या का पिता तो यह चाहता रहता है कि वर कैसा ही हो घर में रुपया होना चाहिये जिस से उस की पुत्री आभूषणों से लदी रहे । परन्तु वह यह नहीं सोचता कि लड़कियों का आभूषण मृदुवाणी है । और लड़के का पिता चाहता है कि मेरी पुत्र वधू सुन्दर हो चाहे उसके कर्म कैसे ही हों अर्थात् वह सुशीला और विद्यावती हो या न हो । लड़कियों का रूप विद्या और सुशीलता है यदि वे सुशीला नहीं हैं तो वे कितनी ही सुन्दर क्यों न हों एक कुरूप सुशीला स्त्री से कहीं बुरी हैं और वर कैसा ही धनी और स्वरूपवान क्यों न हो यदि वह वीरता, धर्म परायणता, विद्या, और सुशीलता आदि गुणों से विभूषित नहीं तो ऐसे पति से स्त्रियों का अविवाहित रहना श्रेष्ठ है ॥

जब सावित्री १६ वर्ष की हुई तो उस के पिता ने विवश होकर उस से कहा कि बेटी जाओ और अपने लिये श्रेष्ठ वर ढूंड़ो । उस सुन्दर कुमारी ने पिता की आज्ञा का पालन किया और अपनी सहेलियों सहित यात्रा करने का संकल्प किया । बहुत दिनों तक वह घूमती रही अन्त में एक बन में पहुँची जोकि सालवा कहलाता था । सावित्री ने सत्यवान को वहां पर देखा जोकि धुमतस्यायन का इकलौता पुत्र था और जो किसी समय में सालवा का नृपति था, परन्तु, अब वह अपने राज्य से निकाले जाने के कारण जंगल में सन्यासी के भेष में रहता था, सावित्री ने उस से विवाह करना हृदय में ठान लिया । अपने मन में यह प्रण करके घर को लौट आई । जिस समय वह अपने राज्य भवन में प्रवेश करना चाहती थी नारदमुनि ने उस के पिता से पूछा "राजन् तुम्हें अभी अपनी कन्या के लिये श्रेष्ठ वर मिला या नहीं" उन्हों ने कहा कि महाराज मैंने बहुत ढूंड़ा परन्तु अब तक कोई ऐसा न मिला जो उस के योग्य हो और अब मैंने क्षत्रियों के धर्मानुसार उसी से वर ढूंड़ने को कह दिया है । और लीजिये वह आ भी गई है । इतने

में वह बुलाई गई उसने आते ही नारद जी को प्रणाम किया और फिर पिता से हाथ जोड़कर कहा कि "महाराज आप की कृपा से मुझे एक वर मिला है जिस का नाम सत्यवान है अब आप अपना प्रण पूरा कीजिये और मेरा विवाह उन के साथ कर दीजिये। वृद्ध पिता ने यह सुन बहुत आश्चर्य किया और मुनिजी से प्रार्थना की कि उसका कुछ और वृत्तान्त सुनायें। उन्होंने कहा "राजन् सुनो, सत्यवान साधुता की उपमा, सब विद्याओं में निपुण महात्माओं का संगी और बड़े जनों का आदर करने-वाला है अब वह अपने पिता की सेवा में जो कि अन्धा है मग्न रहता है" यह सुनकर नृपति बहुत ही प्रसन्न हुए परंतु इतने ही में नारदजी ने फिर कहा कि "महाराज वह आज से १२ मास उपरान्त इस असार संसार को छोड़कर परलोक को सिधारेगा"। यह बात सुनकर सावित्री के पिता ने कहा कि "बेटी इस विवाह से न तो तुम्हारा न तुम्हारे माता पिता का और न तुम्हारी प्रजा का कल्याण होगा क्योंकि तुम बच पन में ही विधवा हो जाओगी"। सावित्री ने कहा "पिताजी अब तो दांव हार चुकी अब क्या होता है अब तो मैं अपने हृदय में प्रण कर चुकी हूं और यह प्रण ऐसा नहीं है कि टूट जाय। मैं तो अब उनसे विवाह कर चुकी और हे पिताजी आपको भी अब अपना प्रण न तोड़ना चाहिये। सुकृत जाय जो प्रण परि हरिऊं। कुंवारि कुंवारि रहे का करऊं। अब तो सत्यवान मेरे स्वामिन् हो चुके चाहे वे बुद्धिमान हों वा मूर्ख चाहे वे रूप-वान हों वा कुरूप और चाहे दीर्घ आयू हों वा न हों उनसे अब मैं विवाह कर चुकी पिता ने उसको बहुत समझाया और कहा कि "अभी मैंने तो सब राजा और महाराजाओं के सामने स्वयम्बर रचा ही नहीं है तुम्हारा विवाह कैसे हो गया"। उसने कहा "पिताजी क्या इस बात को आप नहीं जानते कि किसी वस्तु का ध्यान करना कहना और उसका करना सब एक ही हैं केवल ये भिन्न २ अवस्थायें हैं इस हेतु आपको उचित है कि इसमें हठ न करें"। पिता इन सब बातों को सुनकर चुप रह गया। यह देखकर मुनि ने कहा कि "राजन् अपनी पुत्री की प्रतिज्ञा को पालन करो"। अबतो उनकी आज्ञा को मान कर यथा विधि विवाह करना ही पड़ा। इस के उपरान्त सावित्री

अपने स्वसुर की पर्णशाला में सादे वस्त्र पहिनकर गई उस के सास और स्वसुर उस को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और आनंद से अब समय व्यतीत होने लगा। परन्तु १२ मास व्यतीत होते क्या लगता था अन्त में अब चार दिवस शेष रह गये सावित्री जो कि नारद के वचनों को नहीं भूली थी अपने सास स्वसुर की अनुमति लेकर ३ दिन के लिये तप करने को उद्यत हुई चौथे दिन जो कि उसके परीक्षा का समय था अर्थात जिस दिन सत्यवान परलोक को सिधारनेवाला था सावित्री की जो व्यवस्था थी केवल कल्पना करने के योग्य है। उसने अपने मन में विचारा कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और अच्छे काम का फल बुरा नहीं होता परंतु कहीं आज मेरे पति का देहांत हो गया तो हाय मेरी क्या गति होगी। इसी सोच विचार में डूबी हुई थी कि इतने में देखती क्या है कि सत्यवान होम करने के लिये वन से लकड़ी लाने को उद्यत हुआ। वह चुप न रह सकी क्योंकि वह इस बात को भली भांति जानती थी कि इनको आज मृत्यु पकड़े लिये जाती है। उसने उनसे साथ जाने की आज्ञा मांगी परन्तु उसके पति ने आज्ञा न दी और कहा "हे प्रिये कहां तो तुम तीन दिवस तक अनाहार रही हो और अब वन में मेरे साथ चलना चाहती हो यह कैसे सम्भव है निदान बहुत अनुनय के उपरांत उन्होंने अपने साथ ले जाना अंगीकार किया। दोनों लकड़ी लाने के लिये वन में गये और इच्छा के अनुसार ईंधन जमा करके गृह की ओर लौटे, अकस्मात् सत्यवान को थकावट मालूम हुई वह अपनी प्रिया की गोद में लेट गया और क्या देखता है कि आकाश मार्ग से एक देव जो कि काले वस्त्र पहिने था जिसका मुख लाल चमकता था और जो अपने हाथों में एक रस्सी लिये हुए था उसके पास आया परंतु वह पास आने का साहस न कर सका क्योंकि पतिव्रत और सुशीलता की ज्वाला प्रचण्ड थी। दूत का तो कहना ही क्या उससे धर्मराज भी डरता था बहुत यत्न करने के उपरांत धर्मराज स्वयं उसके समीप आये और सत्यवान को रस्सी से बांधकर ज्योंही चलने पर उद्यत हुए त्योंही सावित्रीने उन से प्रश्न किया कि आप कौन हैं उन्होंने उत्तर दिया "हे आर्य महिला तू सदैव सुशीला और पतिव्रता रही है इस कारण मैं प्रसन्न होकर तुझ

से बोलना चाहता हूं। हे सावित्री ! तेरा पति भी बड़ा महात्मा था और मेरे दूत उसके लेने को नहीं आसक्के थे इस कारण मैं स्वयं आया हूं। उन्होंने यह कहकर सत्यवान के शरीर में से एक छोटी सी वस्तु निकाली और दक्षिण की ओर रखदी इतने ही में सत्यवान की सांस रुक गई। सावित्री ने उनका पीछा किया उन्होंने जब फिरकर देखा तो सावित्री को आते पाया, यह देखकर कहने लगे कि "अब तू क्यों आती है जा और मृतक की दाह क्रिया कर"। अहा हा वाह री सावित्री तुझे धन्य है! आप जानते हैं उसने क्या उत्तर दिया उसने कहा कि "स्त्री का धर्म है कि पति के साथ रहे जहां पति जांय उसके साथ उसको भी जाना उचित है इसी लिये मैं भी आपके पीछे आती हूं। महाराज आपही कहिये क्या मैं झूठ कह रही हूं। "हे नाथ इसलिये मैं अपनी भक्ति के पुण्य के पति के प्रेम के, अपने तपके फल के और आपकी कृपा के सहारे आरही हूं आप कृपा करके सुनिये धर्म कर्तव्य पालन का फल है चाहे वह किसी ने किया हो। क्या कभी मेरे पति अपने कर्तव्य पथ से हटे थे, क्या मैंने उनका साथ नहीं दिया क्या वह कभी सच्चाई के मार्ग से भटक किसी दूसरे पथ पर चले थे यदि नहीं तो आपने मुझे और उन्हें इस प्रकार दण्ड का भागी क्यों उचित समझा। जैसे कोई पापी अकाल मृत्यु का भागी होता है वैसे ही आपने इनके प्राण हरण कर लिये"। धर्मराज ने कहा "अच्छा सत्यवान के अतिरिक्त तुम जो चाहो मांग सक्ती हो सावित्री ने कहा मेरे ससुर की आंखें अच्छी हो जांय"। उसकी यह प्रर्थना स्वीकार की गई और फिर उससे लौट जाने को कहा गया परन्तु उसने कहा "मैं अपने स्वामी को छोड़कर कैसे जासकती हूं आपही बताइये कि स्त्री का धर्म पति से प्रथक रहने का किस शास्त्र में लिखा है यह सुनकर धर्मराज ने फिर कहा अच्छा जो कुछ वर मांगना हो एक बार फिर मांगलो और मेरा पीछा किसी तरह छोड़ दो। सावित्री ने विचार करके यह वर मांगा "मेरे स्वसुर को राजपाट फिर मिलजाय"। परन्तु फिर भी उसके पीछे २ लगी रही क्योंकि स्त्रियों के लिये इस लोक व परलोक में उनके पति के सिवाय और कोई नहीं है और धर्मराज भी उससे कुछ नहीं कह सकते थे क्योंकि स्त्रियों के लिये पतिव्रत धर्म सब से श्रेष्ठ है। उन्होंने उसको इस प्रकार से

समझाना आरम्भ किया "हे सावित्री तुम तीन दिन से तप कर रही हो आहार गृहण नहीं किया है और इतनी देर से वन में घूम रही हो होम करने के लिये लकड़ी लेकर अपने गृह को जाओ, परन्तु वह कब माननेवाली थी निदान फिर उन्होंने कहा कि अच्छा एक वर और तुम्हें मिल सकता है यह सुनकर सावित्री बहुत हर्षित हुई और मन में विचार करने लगी कि इस अवसर को हाथ से न जाने देना चाहिये यह बड़ी बुद्धिमती थी पहिले ही से उनको अपने वचनामृत से मोहित कर चुकी थी बहुत उत्कण्ठा से ये वचन बोली "हे नाथ मेरी प्रार्थना है कि मुझे अब यह वर दीजिये कि मेरे बहुत से पुत्र और पुत्री हों। वाहरी सावित्री! तुझ सी देवी भी पृथ्वी पर कम ही हुई हैं जब पति हीन होगई तो पुत्र और पुत्री कहां से होते परन्तु धर्मराज ने विना सोच विचारे प्रसन्न होकर कहा "एवमस्तु" अर्थात् ऐसा ही हो। आज्ञा दी कि अब तुम लौट जाओ और मुझे जाने दो उसने कहा महाराज मैं अब आप से कुछ नहीं चाहती सिर्फ मुझे यह तो कृपा पूर्वक बताइये कि मेरे स्वामी के विना पुत्र क्यों कर उत्पन्न होंगे यह कहकर मनही मन में प्रफुल्लित हुई और फिर हाथ जोड़कर कहा कि अब मेरे प्राणनाथ को मेरे साथ कीजिये। धर्मराज इसपर अत्यन्त प्रसन्न हुए और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उसकी प्रार्थना स्वीकार की। सावित्री शीघ्र ही उस स्थान को लौटी जहां उसके पति का मृत शरीर पड़ा था और उसको फिर पहिले के तरह गोद में लेकर बैठ गई थोड़ी देर में सत्यवान उठ बैठा जैसे कि कोई घोर निद्रा से जागता है और अपनी प्राणप्यारी को धन्यवाद देकर पूंछा "क्या तुम जानती हो कि यह देव जो मुझे लेने आया था कहां गया"। उसने कहा रात बहुत हो गई है इस कारण चलिये प्रथम पाठशाला में चलें फिर वहां पर सब वृतान्त आपको सुनाऊंगी यह कहकर वे दोनो गृह को गये और सावित्री ने सब हाल कह सुनाया इसके पश्चात् उनको राज्य मिल गया परन्तु धुमतस्यायन ने सत्यवान को राजगद्दी देदी और स्वयम् सन्यासी होगये सत्यवान और सावित्री सूर्य्य और चन्द्रमा की भांति अपना राज्य कार्य कर आनन्द से अपने दिन विताने लगे॥

चिट्ठी पत्री

(विधवा विवाह)

श्रीमती सम्पादिका जी !

मैं स्त्री दर्पण का अवलोकन किया करती हूं और कई उत्तम लेखों को पढ़कर प्रसन्नता लाभ करती हूं। श्रीमती गंगादेवी जी ने दिसम्बर के स्त्री दर्पण में ४५ वें पृष्ट में विधवा विवाह पर बड़े ज़ोर का लेख लिखा है मैं विवाद के अंश से तो नहीं वरन अपना विचार सर्व वहिनों पर प्रगट करती हूं। आशा है उसे आप स्त्री दर्पण में स्थान देकर सुखी करेंगी ॥

जो कुछ कि श्रीमती जी ने लिखा है कई अर्थों में तो ठीक है परन्तु पांच उंगलियां परमात्मा ने बराबर की नहीं बनाई हैं उन्होंने जो एक विधवा की उपमा दी है यह चाहे सत्य हो या मिथ्या किन्तु भारत में अब भी (अविद्या के समय) बहुत विधवाएं ऐसी हैं जो सत्यधर्म को धारण किये हुए हैं और अन्त में सत्यवती का नमूना हमारे लिये छोड़ जाती हैं। कई ऐसी भी हैं जो अपने सत्य को छोड़ देती हैं उसका कारण यह है कि या तो उन में ज्ञान नहीं होता या वह बहुत सताई जाती हैं जिस का फल यह होता है कि वह कुल की लाज को खो बैठती हैं। विधवा के दुःख दूर करने का यह नियम लाभकारी न होगा कि पुनर्विवाह की रीति आरम्भ करदें। इस का बीज बोना मानो स्त्रियों के धार्मिक पथ में कांटे लगाना है और स्त्री के पवित्र नाम को अपवित्र करना है सुख के संसार को दुःख में पलट देना है। यदि यह प्रश्न होकि क्योंकर ऐसा होगा देखने में तो विधवाएँ सुखी हो जाएंगी, परन्तु देखो एक तो माता पिता तथा सकल परिवार को कुछ लज्जा उठानी पड़ेगी दूसरे जिस घर में यह लड़की जायगी वहां इसका कुछ आदर न होगा तीसरे जब द्वितीय विवाह प्रचार हुआ तब तीसरे और चौथे में कुछ भी भूल न होगी। चौथे यह बड़ी हानि होगी कि पातिव्रत धर्म का नाम संसार से मिट जाएगा जैसे आज कल इतिहास के देखने से कई सती और पतिव्रता स्त्रियों के जीवन चरित्र पाये जाते हैं।

उपदेशकगण इनकी उपमा सुनाकर सर्व को शिक्षा देते हैं। फिर हमको कोई ऐसी कहानी न मिलेगी क्योंकि जब तक ऐसी रीति (विधवा विवाह) का प्रचार नहीं हुआ है कोई तो ईश्वर के डर से कोई कुल की बदनामी के डर से कोई भ्राता पिता तथा रक्षक के डर से स्वधर्म का पालन करती हैं, परन्तु जब आज्ञा हो जाएगी तब कोई भी गूढ़ विचार पर अपना समय न लगाएंगी। जैसे पुरुषों में चार पांच विवाह करने की रीति है तो स्त्रियों की संख्या से पुरुष अधिक व्याभिचारी हैं इसी तरह और कई सबूत हैं जिनसे मालूम होता है कि इस स्वतन्त्रता के देने से बहुत नुक़सान है। इसके बदले में यदि इस बात का मन लगाकर यत्न किया जाय तो सर्व भारत का दुःख दूर हो जाय जैसे कि आर्या समाजवाले लड़कों को २५ वर्ष तक ब्रह्मचारी रखकर पूर्ण विद्या और ज्ञान से भरपूर करते हैं इसी तरह यदि लड़कियों को भी ब्रह्मचारिणी बनाने के लिये गुरुकुल खोला जाय जिसका सर्व प्रबन्ध स्त्रियों के हाथ में हो और लड़कियें सारी विद्या और गुणों से अलंकृत की जांय तो फिर भारत स्वर्ग समान हो जाए। मेरे ख्याल में विधवाओं की भी संख्या कम हो जाय और पापों की भी कमी हो जाय। अब जो कि भारत में बहुत विधवा कन्या तथा स्त्रियें हैं उनके लिये ऐसे आश्रम खोले जायें जिस का प्रबन्ध स्त्रियां करें और उन को उत्तम रीति से शिक्षा दें जिससे उन को पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाय, जब उनको पूर्ण विद्या प्राप्त हो जायगी तो किसी धोखे या जाल में नहीं आ सक्ती हैं ऐसा न करने से हमारी वही दशा होगी—

'गये दोनों जहानों के कामों से हम, न इधर के रहे न उधर के रहे'

(एक स्त्री दर्पण की दर्शिका)

प्रयाग महिला समिति ।

श्रीमती सम्पादिका जी !

प्रयाग महिलासमिति की स्थापना का समाचार पढ़कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ हमारा प्रान्त जो कि प्राचीन समय में आर्यावर्त के नाम से विख्यात था जो कि राम कृष्ण इत्यादि ईश्वर अवतारों की जन्म भूमि, वशिष्ट व्यास इत्यादि ऋषियों का निवासस्थान और सीता सावित्री इत्यादि देवियों के पतिव्रत धर्म से पवित्र की हुई भूमि है वही हमारा प्रान्त इस समय अन्य भारतीय प्रान्तों से सब बात में पीछे गिना जाता है । अन्य प्रांतों में कई वर्ष पूर्व ही महिलामण्डल स्थापित हो चुके थे । यह बड़ा हर्ष का विषय है कि अब प्रयागराज में भी कुछ विचार शील महिलाओं के उद्योग से महिलासमिति स्थापित हुई है । इसमें सन्देह नहीं कि कुछ अदूरदर्शी और संकीर्ण चित्त लोग रमणीगण के इस उद्योग पर हसेंगे या शायद डरेंगे कि क्या इस मण्डली में भारत ललनाओं की स्वाधीनता का बीज बोया जायगा या सफ़रेजिस्ट (प्रतिनिधि चुनने का अधिकार मांगने-वाली समितियां) की नेव डाली जायगी । अपनी २ कल्पना शक्ति के अनुसार सब को मनके लड्डू खाने की स्वतन्त्रता है । मेरा निज विश्वास यही है कि जब तक हमारी ललनाएं जागृत नहीं होंगी जब तक बाहरी बातों को अर्थात् राजनीति देश की दशा और अन्य देशों की दशा समझने की शक्ति, महिलामण्डल में न आजायगी और जब तक स्त्रियां हमारा साथ नहीं देंगी तब तक हमारी कड़कड़ भड़भड़ विना जल के बादलों के गर्जन के समान है । वास्तव में हमारी भावी राष्ट्र की जन्म-दाता और लालन पालन करनेवाली तुम्हीं माताएं हो ! अतएव तुम्हें जागृत होना बहुत ज़रूरी है । परन्तु तुम्हारी जागृत और शक्ति ऐसे कामों में न लगे जो तुम भी हमारे साथ राष्ट्रीय "आत्मघात" के कलंक की भागी हो । तुमको हम पश्चात्य शिक्षारूपी मंदिर से उन्मत्त भारत के गारत करनेवाले कुपुत्रों का अनुकरण न करना होगा ॥

इस समिति का अधिवेशन हर अंगरेज़ी मास की पहिली तारीख को करने की क्या आवश्यकता है ? क्या पहिली तारीख

को प्रयाग की महिलाओं को छुट्टी हुआ करती है। मेरी याद में शायद न तो यहां ऐसा कोई महकमा ही है जहां स्त्रियां भी नौकर हों और न कोई ऐसी छुट्टी ही है। क्या हिन्दुस्तानी पक्ष या मास की पहिली तिथि वा वार को इस सभा का अधिवेशन अशुभ समझा गया है। हमारे भाई बन्धु तो कहते हैं कि यदि हम हिन्दुस्तानी मास या तिथी इत्यादि का प्रयोग करें तो कभी दफ्तर से गैरहाज़री हो जाय, कभी वकालत की फीस हाथ से जाती रहे। इसलिये उनको अंग्रेज़ी कैलेन्डर (जन्त्री) रखना पड़ता है। परन्तु हमारी भगिनियों को तो कैलेन्डर सामने लटकाये रखने की इतनी आवश्यकता नहीं! क्या ही अच्छा होता जो स्त्री दर्पण पर भी हमारे महीने का नाम व संवत लिखा रहता। मास में एक बार तर्क वितर्क व हेल मेल के लिये समिति का अधिवेशन निश्चय हुआ है। प्रति मास एक बार इस बात के लिये भी एकत्रित होना बहुत ज़रूरी है कि एक या दो योग्य सभासद किसी विशेष विषय पर व्याख्यान देकर अन्य सभासदों को 'इतिहास' 'भूगोल' 'साइन्स' 'शिल्पविद्या' इत्यादि से परिचय करायें अतएव मेरा प्रस्ताव है कि साधारण मासिक अधिवेशन के अतिरिक्त एक "साधारण शिक्षा" क्लास भी खोला जाय जिसके द्वारा कम से कम प्रति मास एक बार उपयोगी विषयों पर स्त्रियों को शिक्षा मिले। इस में इतिहास व भूगोल जिसके ज्ञान की बड़ी आवश्यकता है नक्शों और गोल (Globe) के द्वारा सिखाया जा सकता है और कालान्तर में उचित द्रव्य संचय होने पर मैजिक लालटैन के ज़रिये वैज्ञानिक विषयों में वैज्ञानिक ढंग पर शिक्षा देने में बड़ा सुभीता होगा। इस विचार को कई लोग असम्भव बतलायेंगे। पर असम्भव शब्द केवल काहिल और निरउद्यमी लोगों के मुख की शोभा बढ़ाने के लिये है। ईश्वर की कृपा से असम्भव भी सम्भव हो जाता है॥

मेरी तीसरी विज्ञप्ति यह है कि 'महिलासमिति' के आधीन एक पुस्तकालय भी हो जिसमें अच्छी हिन्दी की पुस्तकें रखी रहें और सभासदों को पढ़ने के लिये दी जायें। ऐसे पुस्तक संग्रह की आपकी समिति के लिये बड़ी आवश्यकता होगी। यह प्रश्न बड़े महत्व का है। इसके लिये आप चन्दा अच्छी तरह से कर सकती हैं। आपके मांगने पर मिलता भी खूब है॥ वर्म्मा.

समालोचना।

रसायन शास्त्र (हिन्दी कैमस्ट्री)

यह पुस्तक हिन्दी साहित्य में अपने ढंग की पुस्तकों में अद्वितीय है। जिस भाषा में विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें न हों उस भाषा का इस समय कोई मान नहीं करता न उसके साहित्य की गिनती ही किसी साहित्य में होती है। यह सौभाग्य भी महेशचरन सिंह जी की कृपा से भारतवर्ष की प्रांतीय भाषाओं में पहिले पहल उसी (हिन्दी भाषा) को हुआ है जो देश भाषा बना चाहती है। ईश्वर कृपा से महेशचरन सिंह जी अपने कर्तव्य में कृतकार्य हुए तो थोड़े ही समय में हिन्दी भाषा में विज्ञान पर कई कितावें लिखी जायेंगी। इस ग्रंथ के कर्ता महेशचरन सिंह जी की योग्यता और देश भक्ति और विद्वता का विवरण इस समय स्थानाभाव से नहीं हो सकता है। किन्तु इतना ही कहना बस होगा कि यहां (प्रयाग) से बी. ए. पास करने पर आप साइन्स (विज्ञान) सम्बन्धी बात सीखने अमेरिका गये। वहां आपने २ वर्ष में १६ विषयों का अध्यन किया और तीसरा बरस नवीन आविष्कार करने में लगाया। आपने एक ऐसी नई बात निकाली जिसका परिणाम देख सारा अमेरिका और यूरुप देश इनकी सराहना करने लगा। बड़े २ वैज्ञानिक विद्वानों के आपके पास कई सार्टिफ़िकट (सनद) हैं। आपकी विद्वता के कारण आपको अमेरिका के प्रसिडेन्ट रूसवेल्ट साहब से भी मिलने का मौका हुआ। तीन बरस के कठिन परिश्रम के पारितोषिक में आपको मास्टर आफ़ साइन्स (विज्ञानाचार्य) की पदवी मिली। अपने वर्ष आपका नम्बर परीक्षोतीर्ण विद्यार्थियों में पहिला था। इनके साथ एक इन्हीं के अध्यापक ने भी इम्तिहान दिया था जिसके नम्बर इनसे कुछ बढ़ गये थे॥

अपनी मातृ-भूमि को लौटकर आपने उसकी सेवा करने का संकल्प किया है। चाहते तो आप बढ़िया से बढ़िया सर्कारी कालेज के प्रोफ़ेसर बन जाते पर आपने दरिद्री ही रहना पसन्द किया आपका विचार है कि अपनी मातृ भाषा हिन्दी में अपने देश

बान्धवों के हितार्थ साइन्स (विज्ञान) की बातों पर किताबें लिखी जांय रसायन शास्त्र इस भावी वैज्ञानिक ग्रंथमाला की पहिली पुस्तक है। क्रमशः २ विद्युतशास्त्र ३ कृपिरसायन ४ भौतिक विज्ञान ५ कृषिशास्त्र ६ वनस्पतिशास्त्र ७ कीटाणुविद्या ८ औषधि क्रिया ९ भोजन रसायन इत्यादि कई उपयोगी पुस्तकें तैयार होंगी॥

'रसायनशास्त्र' जो इस समय हमारी समालोचना का विषय है प्रायः साढ़े चार सौ पृष्ठ की पुस्तक है। इसमें रसायन सम्बन्धी ६२ चित्र भी दिये गये हैं। वैज्ञानिक शब्दों का कोष और उनके अंग्रेज़ी हिन्दी परयाय शब्द भी दिये गये हैं। कई निरे अंग्रेज़ी शब्दों की नाक कान काटकर आपने हिन्दी शब्द बना लिये हैं। बिना इस तोड़ मरोड़ के हमारा काम चलाना भी मुशकिल है। कालान्तर में यही 'आभिद्रवजन' 'ओपजन' इत्यादि नकटे शब्द सर्वांग हिन्दी शब्द बन जांयगे॥

पुस्तक "इण्डियन प्रेस" में छपी है इसलिये इस की सफ़ाई और सौन्दर्य्य की प्रशंसा करनी वृथा होगी। पर दोष बताना हमारा काम है ताकि आगामी संस्करण में मात्राओं की ग़लती न रहे। कदाचित इण्डियन प्रेस में मात्राओं की त्रुटि है या बिना हाथ पैर के अक्षर उन्हें सुन्दर मालूम होते हैं। यह भी सम्भव है क्योंकि चित्र विद्या के बड़े २ "विलायती पंडित" भी इस जन्त्रालय में हैं। उदाहरण के लिये सातवें पृष्ठ से शब्द लेलिये जाते हैं। अकर्पित के बदले "आकर्षित" और कहलाती के बदले "कहलाता" है। इस प्रकार के मात्राहीन शब्द इस पुस्तक में कई आये हैं ऐसे शब्द सरस्वती में भी और इण्डियन प्रेस की अन्य किताबों में भी रहते हैं पुस्तक के आदि में ग्रंथ-कर्ता का चित्र दिया गया है। यह फ़ोटो पुराना मालूम होता है जब आप भी "विलायती लिवास के विलासी बाबुओं की मंडली के सभ्यगण रहे हों" पर अब तो आप हिन्दुस्तानी "असभ्य" ठाठ से रहते हैं॥

इस पुस्तक की जितनी भी प्रशंसा की जाय थोड़ी ही है। जो लोग अब वैज्ञानिक बातें सीखना चाहें वे अंग्रेज़ी नजाने और कालेज में भर्ती हुए बिना भी घर बैठे कुछ साइन्स की बातों का ज्ञान प्राप्त कर सके हैं। स्त्रियों को इस पुस्तक से बहुत लाभ पहुंचेगा। बी, एस, सी, पासवाले भाई अपनी स्त्रियों को भी रसायन शास्त्र घर बैठे भली भांति सिखा सक्ते हैं। मेट्रीक्यूलेशन और एफ़ ए, वाले विद्यार्थियों को पास करने में इस पुस्तक से बड़ी सहायता मिलेगी। हर एक हिन्दी जाननेवाले हिन्दू को यह पुस्तक मंगाकर ग्रंथकर्ता का उत्साह बढ़ाना चाहिये जिस से वे अपने शंकल्प को पूरा कर हिन्दी साहित्य की उन्नति कर देश सेवा में कृतकार्य्य हूं। इस पुस्तक के विषय में हम निम्न लिखित शब्द उद्धृत कर पाठकों से क्षमा चाहते हैं॥

"यह पुस्तक उन लोगों के लिये रची गई है जो कि हिन्दी भाषा द्वारा रसायन शास्त्र की बातें, नियम, सिद्धान्त और उनके प्रयोग तथा मूल तत्वों के जानने की आकांक्षा रखते हैं, आज कल साधारणतः हिन्दी जाननेवालों को जैसी योग्यता होती है उसका भले प्रकार ध्यान रखकर इस पुस्तक की रचना की गई है और इसलिये यह पुस्तक बहुत आसान और छोटे बड़े सब के लिये समान उपयोगी है। पुस्तक में रसायन विषय को तो भली भांति समझाया ही है परन्तु लेखन-प्रणाली भी ऐसी रक्खी है जोकि विचार शक्ति और अनुभव को बढ़ाती है। इस को पढ़कर हिन्दी जाननेवाले बड़ी से बड़ी साइन्स-सम्बन्धी बात की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसमें रसायन के उन सिद्धान्तों को जो कि इस विद्या के बड़े बड़े विषयों के मूलाधार हैं पूर्ण रूप से समझाया है"॥

यह पुस्तक अङ्गरेज़ी की उन सब पुस्तकों से बढ़ी चढ़ी है जो कि विद्यार्थियों को साइन्स की बातें रटने की ओर ले जाती हैं और जो कि इस कारण उनके जीवन के व्यवहार में किसी काम को सिद्ध नहीं हो सकती। हिन्दी केमिस्ट्री पढ़ने-वालों की विचार शक्ति को बढ़ावेगी, प्रति दिन प्रत्यक्ष दिखाई देनेवाली वस्तुओं में अधिक रुचि उत्पन्न करेगी और उन उन बातों को स्पष्ट कर देगी जिनसे कि आजकल इंगलैंड

महिला हितकारक—स्त्रियों और लड़कियों के लिये एक उत्तम और शिक्षाप्रद साप्ताहिक पत्र है इस समय हमारे सामने "महिला हितकारक" का तृतीय अंक मौजूद है इसमें "महिला हितकारक का उद्देश्य" अति व्यय से हानि" "श्वसुर का उपदेश पुत्र वधू को" तीनों अच्छे लेख हैं तीनों ही अच्छे और शिक्षाप्रद हैं। आशा है यह पत्र दिन पर दिन उन्नति करता जायगा और इसके द्वारा स्त्रियों की बहुत बड़ी उन्नति होगी इसकी भाषा भी सरल है इस पत्र का वार्षिक मूल्य २) रुपया साल है॥

महानन्द बाल बोधनी—बहुत सी हिन्दी पुस्तकें बच्चों के पढ़ने के वास्ते बनी हैं परन्तु कोई इस प्रकार की पुस्तकें ऐसी न थीं जिस्से सर्व साधारण को ऐसी शिक्षा मिलती जैसी चाहिये। सर्कार ने सं० १९०७ में एक नोटिस दिया कि जो कन्याओं की शिक्षा के वास्ते अच्छी पुस्तकें बनावेगा उसे ५००) दिया जावेगा और उसकी पुस्तक स्कूलों में पढ़ाई जावेगी। बहुत सी पुस्तकें बनी हैं। जिस पुस्तक का नाम ऊपर लिखा है हमारे पास आई है। लाला महानन्द डिप्टी इन्स्पेक्टर स्कूल ने यह पुस्तक बनाई है। हमने इधर उधर इस पुस्तक को देखा और यह पाया कि लड़कियों के पढ़ने योग्य यह पुस्तक है। सिलाई और घर के कामों के बाबत इसमें सबक हैं। स्त्रियों के इतिहास और छोटी छोटी उत्तम कहानियां इस में पाई जाती हैं सफ़ाई के लाभ, रसोई बनाना, मां बाप का कहना करने की आवश्यकता इत्यादि लड़कियों को सिखाया है मूल्य ।) है। अक्षर बहुत बड़े हैं। कुछ छोटे होते तो अच्छा था। काग़ज़ बहुत सफेद और अच्छा है। हम आशा करती हैं कि यह पुस्तक स्कूलों के लिये मंजूर हो जावेगी॥

वधकारी वाटिका

वंध्या की औषधी

स्त्रियों के वास्ते कोई रोग ऐसा नहीं जैसे वंध्या । जब तक यह रोग रहता है उन का बच्चा नहीं होता । इस औषधी को खाने से शीघ्र वह इस कष्ट से छुटकारापाती है और सुखी रहती है ॥

एक बक्स, जिस में ३० गोलियां होती हैं १॥) को मिलता है डाक माहसूल =) वी पी द्वारा १॥=)

डाक्टर द्वारका नाथ चक्रवर्ती जहानाबाद दक्खिन से लिखते हैं ॥

"मैं ने आप की बनाई हुई औषधी से वंध्या को अच्छा किया है रोगी को पहिले २०, २२ वर्ष तक नाना प्रकार की औशधी खिलाई गई परन्तु कुछ लाभ न हुआ । फिर मैं ने एक मित्र के कहने से आप की बनाई हुई औशधी का एक बक्स मगाया और उससे तुरन्त ही आराम हो गया ॥

महाशय कुछ दिन हुए मैं ने वधकारी वाटिका का एक बक्स और विशतु तेल अपनी एक नातेदार स्त्री के वास्ते मगाया । इस से उस का वंध्या को रोग बिलकुल जाता रहा ॥

द: काला चंद दास पोजे नैतिपुराज टिपीरा

मिलने का पता:—

श्री देवेंद्रनाथ सेन कविराज

श्री उपेंद्रनाथ सेन कविराज

२९ कोलू टोला स्टीट कलकत्ता ।

ॐ आनन्द का समाचार ॐ

———:०:———

लीजिये जिसके लिये स्त्री शिक्षा के प्रेमीजन बहुत दिनों से चिल्ला रहे थे कि कोई पुस्तकों की ऐसी दुकान नहीं जिसमें स्त्रियों के लिये सब प्रकार की लाभदायक पुस्तकें मिल सकें सो इस त्रुटि को पूरा करने के लिये "जानसेनगंज प्रयाग" में एक "ओंकार पुस्तकालय" खोला गया जिसमें स्त्रियों के लिये नाना प्रकार की उत्तम २ पुस्तकें बम्बई बरोदा और लाहौर आदि नगरों तक से मंगाकर विक्रयार्थ रक्खी गई हैं आशा है कि अब हमारी बहिनें अपने बहुमूल्य समय को वृथा न खोकर हिन्दी भाषा की उत्तम २ पुस्तकें "ओंकार पुस्तकालय" से मंगाकर विद्या रूपी अमृत का स्वाद लेगीं ॥

पुस्तक मगाने का पता:—
मैनेजर—ओंकार पुस्तकालय
जानसेन गंज—प्रयाग।

———

ऊन।

और ऊन का काम बनाने की चीजें

रामा जी कम्पनी सब से पुरानी और सस्ती दुकान है

जहां से हर क़िस्म का ऊन, ऊन के काम बनाने का कपड़ा कार्पिट की सुई, मोज़ा बिनने की सुई बेलबूटा बनाने के रेशम क्रूशा की सुई और हर क़िस्म की चीज़ें जो ऊन के काम बनाने में इस्तेमाल होती हैं बहुत किफायत के साथ बिकती हैं ऊन के सिवा और सब क़िस्म की चीज़ें जैसे काग़ज़ लिफाफे पेनसिल वग़ैरह भी सब मेलकी मिलती है ॥

मिलने का पता:—
रामा जी कम्पनी,
चौक—इलाहाबाद।

केशरञ्जन तेल।

KESHRANJAN
The Cause of The Beautiful Hair

जिनको रात दिन मानसिक परिश्रम करना पड़ता है उनके हक़ में केशरञ्जन महा हितकर है। ग्रन्थकार, वकील, बेरिस्टर, स्कूल के विद्यार्थी, परीक्षार्थी, युवक सब के लिये यह उपकारी है॥

जिनका सिर जलता है, सिर भारी होना, वायु पित्त के प्रकोप से जिनकी आंख से धुंध मालूम होता है, सामान्य चिन्ता से जिसका सिर घूमने लगता है। पित्त के प्रकोप से जिनके हाथ पैर में जलन होती है। उनको हमारा केशरञ्जन तेल नित्य लगाना चाहिये॥

जिनके सिर में टाक पड़ गया है। जिनका केशमूल शिथिल हो केश झड़ने लगे हैं उनको केश दृढ़ करने के लिये केशरञ्जन तेल लगाना चाहिये॥

औरतों में जो शौक़ीन और विलासी हैं जिन को केश नरम और चिकना करने की इच्छा है वेग्रटके केशरञ्जन तेल लगावें। केशरञ्जन लगाने से घर सर्वदा वेला जूही और चमेली आदि की मधुर सुगन्ध से भर जाता है॥

दाम फी शीशी	१)	डा० म०	।-)
„ ३ „	२॥)	„ „	॥≈)

प्रीति उपहार।

[तीन किसिम के एसेन्स के तीन शीशी का बकस]

तीन बड़ी शीशी का बकस	...	...	२॥)
तीन मझोली शीशी का बकस	...	...	२)
तीन छोटी शीशी का बकस	...	...	१।)

एकत्र १२ शीशी का दाम उसी हिसाब से १० रुपये ८) रुपये॥

सुरमा।

"सुरमा" एसेन्स नहीं है, सुरमा तेल है। पर बाज़ार में जितने सुगन्धित तेल नित्य दिखाई देते हैं, सुरमा उस ढंगका केशतेल नहीं है। सब तेलों से इसका दाम बहुत कम है। हर एक आदमी एक रुपया खर्च कर तेल खरीद नहीं सक्ता है। इसलिये केवल लागत के दाम पर यानी ≈) आने में एक बड़ी शीशी सुरमा मिलता है। एकत्र १२ शीशी ७॥) डाक महसूल अलग॥

एस, पी, सेन एण्ड कम्पनी–१९।२ न० लोवर चीतपुर कलकत्ता।

१ अप्रैल १९१०

वार्षिक मूल्य २)

एक प्रति

बेगम बहार ।

(स्त्रियों के आदर योग्य पदार्थ)

इसके बराबर कोई और तेल नहीं बना है। गुण में सब तेलों से श्रेष्ठ है इससे बेगम और बादशाह आनन्दित रहते हैं, बहुत खर्च से यह बनाया गया है, और सर्वगुणदायक है। जो इसको एक दफह लगाते हैं वह कदापि इसको नहीं छोड़ सके। सिर का दर्द जाता रहता है। एक दफह लगाने से कई दिन तक सुगंध देता है आंख को भी लाभदायक है ॥

मूल्य १) शी० डाक ।-); ३ शी० का मूल्य २॥=); १२ शी० का १०॥)

बादशाही आमोद ।

स्त्रियों के योग्य आश्चर्य की चीज़ बादशाह और नवाब इसको खाकर प्रसन्न हो जाते हैं। यह सब ताक़तों को बढ़ाता है और इसको खाने से इसका गुण खुल जाता है ॥

मूल्य ५॥) डाक महसूल ॥-)
पहिला नम्बर

मूल्य ३॥) डाक महसूल ।-)
दूसरा नम्बर

माजून चोबचीनी ।

(खून साफ़करने की दवा)

इसको खाने से बादी, दाद, और सब प्रकार के चर्म रोग जाते रहते हैं और ताक़त आती है और शरीर बलवान हो जाता है भूख बहुत बढ़ाता है और कब्ज नहीं रहता है ॥

मूल्य एक डिबिया १) डाकव्यय ।-)

पता—हकीम मशीहुर रहमान
२६, ११४ मछुआ बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता ।

ॐ आनन्द का समाचार ॐ

———:०:———

लीजिये जिसके लिये स्त्री शिक्षा के प्रेमीजन बहुत दिनों से चिल्ला रहे थे कि कोई पुस्तकों की ऐसी दुकान नहीं जिसमें स्त्रियों के लिये सब प्रकार की लाभदायक पुस्तकें मिल सकें सो इस त्रुटि को पूरा करने के लिये "जानसेनगंज प्रयाग" में एक "ओंकार पुस्तकालय" खोला गया जिसमें स्त्रियों के लिये नाना प्रकार की उत्तम २ पुस्तकें बम्बई बरोदा और लाहौर आदि नगरों तक से मंगा-कर विक्रयार्थ रक्खी गई हैं आशा है कि अब हमारी बहिनें अपने बहुमूल्य समय को वृथा न खोकर हिन्दी भाषा की उत्तम २ पुस्तकें "ओंकार पुस्तकालय" से मंगाकर विद्या रूपी अमृत का स्वाद लेंगी॥

पुस्तक मंगाने का पता:—

मैनेजर—ओंकार पुस्तकालय

जानसेनगंज—प्रयाग।

ऊन

और ऊन का काम बनाने की चीजें।

रामा जी कम्पनी सब से पुरानी और सस्ती दुकान है

जहां से हर क़िस्म का ऊन, ऊन के काम बनाने का कपड़ा कार्पेट की सुई, मोज़ा बिनने की सुई बेलबूटा बनाने के रेशम क्रूशा की सुई और हर क़िस्म की चीज़ें जो ऊन के काम बनाने में इस्तेमाल होती हैं बहुत किफायत के साथ बिकती हैं ऊन के सिवा और सब क़िस्म की चीज़ें जैसे काग़ज़ लिफाफे पेनसिल वग़ैरह भी सब मेल की मिलती हैं॥

मिलने का पता:—

रामा जी कम्पनी,

चौक—इलाहाबाद।

स्त्री-दर्पण

भाग २]   प्रयाग, १ अप्रैल, सन् १९१०   [अङ्क ४

टिप्पणियां।

हम अपने पाठक पाठिकाओं को नए सम्वत की बधाई देती हैं और आशा करती हैं कि यह साल उनको मुबारक होगा॥

मोहनदास कर्मचन्द गांधी

अर्थात दक्षिण अफ्रिका के वीर की जीवनी इस अंक से छपनी आरम्भ हुई है। दक्षिण अफ्रिका प्रवासी भारतवासियों के नेता की जीवन कथा जानने की इच्छा प्रायः सभी लिखे पढ़े लोगों को होगी। आशा है भारत माता के सच्चे पुत्र गांधी का चरित्र सब पाठकों को रोचक व शिक्षाप्रद प्रतीत होगा। अगले अंकों में उनके जीवन की विचित्र घटना दिखाई जायंगी। वीरों के देश में जो २ कष्ट गांधीजी को सहने पड़े और जो वीर कर्म उन्होंने ट्रांसवाल में किये वे आगामी अंक में दर्शाये जायंगे। इस जीवनी के लेखक 'आदर्श जीवन माला' नाम की पुस्तक समय २ पर लिखनेवाले हैं। उस जीवन माला में ऐसे ही स्वार्थत्यागी वीर पुरुष और आत्मत्यागी देशभक्तों के जीवन रहा करेंगे। इस आदर्श जीवन माला के दो कांड होंगे। पुरुष कांड और स्त्री कांड इस जीवन माला की यह प्रथम पुस्तक होगी। पृष्ठ संख्या ६० के लगभग होगी। स्त्री दर्पण के ग्राहकों को यह पुस्तक अपने स्त्री दर्पण के चंदे के साथ अथवा मेनेजर के नाम अलग चार आने भेजने से स्त्री दर्पण के साथ भेज दी जायगी। सम्वत १९६६ तक इसकी क़ीमत सब से ।) ली जावेगी १९६७ से उसका मूल्य बढ़ा दिया जायगा। परन्तु स्त्री दर्पण के ग्राहकों

को फिर भी ।/) ही में यह पुस्तक मिलेगी। इस जीवनी के रचिता का विचार है कि इस पुस्तक की आयु का चतुर्थांश दक्षिण अफ़्रिका प्रवासी भारतवासियों की सहायतार्थ भेज देवें। इस पुस्तक को लेनेवाले अभी से अपने नाम कृपया स्त्री दर्पण के मेनेजर के पास भेज दें॥

नए कर।

बंग विभाग तथा और और कारणों से सरकारी शासन का खर्च बहुत बढ़ा हुआ है। इसके वास्ते सरकार को रुपये की अधिक आवश्यकता थी। रुपया जमाकरने के वास्ते सरकार को बहुत से पदार्थों पर कर लगाने पड़े। मट्टी के तेल, चुरट, शराब, चांदी इत्यादि पर कर लगाए गए। शराब, और चुरट पर कर बढ़ाने से हमारे देश में इन पदार्थों की विक्री कम हो जायगी। और इन चीज़ों की विक्री जितनी ही कम हो उतना ही लाभ है। चांदी और मिट्टी के तेल के बारे में हम यह नहीं कह सकते। कडुवा तेल तो योंहीं बहुत मंहगा हो रहा है, खाने तक को कम मिलता है जलाना तो बड़ी दूर की बात है। सस्ते होने के कारण घर घर मिट्टी का तेल जलाया जाता है। ग़रीब लोग उसे भी रात भर नहीं जला सकते हैं। अब जो टीन २॥=) को मिलता था वह ३) का मिलेगा और जो बोतल -)। की मिलती थी =) की मिलेगी। ग़रीबों को)। कम नहीं है। इतने में वह एक सवेरे चबेना खाते हैं। कर धनवानों से लेना उचित है न कि ग़रीबों से।

चांदी पर भी कर लगाने से ग़रीबों की हानि है। ग़रीब आदमी चांदी मोल लेकर गहना बनाकर अपनी जमा बनाये रखता है। अब चांदी महगी होने से यह भी कठिन हो जावेगा।

चुने हुए मेम्बरों में से कई ने सरकार से यह प्रार्थना की कि चांदी और तेल के बदले विदेशी चीनी पर कर लगा दिया जावे परन्तु सरकार ने इस को स्वीकार न किया। यदि विदेशी चीनी पर सरकार टैक्स लगा देती तो वह

मंहगी हो जाती और देशी चीनी की विक्री अधिक बढ़ जाती। देशी चीनी के कारख़ाने कई खुले हैं। ये सब विदेशी चीनी के सस्ता होने के कारण इसका मुक़ाबला नहीं कर सकते। जिन देशों से चीनी भारत में आती है वहां की सरकार चीनी बनानेवालों की बहुत सहायता करती है। हमारी सरकार को भी उचित है कि इसमें अपनी प्रजा की सहायता करें। हम आशा करती हैं कि सरकार शीघ्र इस पर ध्यान देगी।

बिछौना।

सुना जाता है कि फ्रांस में एक बिछौना किसी ने बनाया है। देखने में तो यह साधारण बिछौना मालूम होता है परन्तु इस पर सोने से बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। इस पर लेटते ही नाना प्रकार की मीठी २ आवाज़ें लेटनेवाले के कान में आने लगती हैं और नींद आ जाती है। यदि कोई किसी मुख्य समय पर उठना चाहे तो इस का भी यत्न उस में कर दिया गया है। एक घड़ी इस के सिराने पर लगी है जिस घड़ी कोई उठना चाहे घड़ी की सुई को ठीक उसी समय पर कर देना होता है और ठीक उसी समय पर उस बिछौने में से बड़ी भयानक आवाज़ें निकलने लगती हैं और अगर सोनेवाला फिर भी न जागे तो उस बिछौने के दो टुकड़े हो जाते हैं और सोनेवाला ज़मीन पर गिर पड़ता है और फिर उठना ही पड़ता है। यूरुप में ऐसी २ चीज़ें बहुत निकला करती हैं इस कारण हम को इस बिछौने का हाल सुनकर थोड़ा भी आश्चर्य्य नहीं हुआ।

हिन्दू मैरिज रिफ़ॉर्म लीग।

मालूम होता है कि अब हमारे देश के भाग्य जाग रहे हैं अभी तक तो यह हाल है कि यदि किसी से कहो कि लड़कियों का विवाह दस या बारह वर्ष की अवस्था में होना उचित नहीं है तो वह यही कहेगा कि कहनेवाला भ्रष्ट हो गया अपने धर्म कर्म कुछ नहीं जानता और न शास्त्र का प्रमाण ऐसा है, उस में अंगरेज़ियत बहुत आ गई है हमारे पाठकों को यह सुनकर बड़ा हर्ष होगा कि कलकत्ते शहर में बड़े २ पण्डितों ने एक सभा नियत की है कि जिस का काम यह होगा कि सर्व

साधारण को लड़कियों के जल्दी विवाह देने की हानियां बतलावे और उन को यह भी सिखलावे कि कन्याओं का विवाह बिलकुल बचपन में होना उचित नहीं है। और जो २ बातें इस विषय में लाभदायक हैं वे भी यह सभा सिखलाने का यत्न करेगी। हम आशा करती हैं कि इस सभा को अपने कार्य में सफलता प्राप्त होगी। हम को यह देखकर बड़ा हर्ष है कि बड़े २ पण्डित इस सभा के सभासद हैं और इसी कारण हम को अपने देश के भाग्य जागते दिखाई देते हैं॥

गौतम बुद्ध की अस्थियां।

हमारे पाठकों को स्मरण होगा कि गत वर्ष की एक संख्या में हम गौतम बुद्ध की अस्थियों का समाचार लिख चुकी हैं पेशावर के पास एक खंडहर के नीचे यह मिली हैं। यह ज़मीन आज कल कुछ मुसलमानों की है। जब से इन अस्थियों का पता चला था तब से अब तक सरकार को नाना प्रकार की सलाह दी गई। अङ्गरेज़ी समाचार पत्रों ने सरकार को यह सलाह दी कि बौध मत के देशों में यह अस्थियां बांट दी जावें। हिंदुस्तानी पत्रों ने यह प्रार्थना की कि सरकार इन अस्थियों को देश से जाने न दे। बहुतों ने यह कहा कि सरकार को उचित है कि इन अस्थियों को किसी अच्छे स्थान पर रखकर इन पर एक अच्छा मन्दिर बनावें, और उसके वास्ते चंदा जमा करें। जिन मुसलमानों की ज़मीन में यह अस्थियां निकलीं उन्होंने भी सरकार को यह अर्ज़ी दी कि इन अस्थियों का एक भाग उनको मिल जावे, कि वह अपने खर्च पर एक मन्दिर बनाकर इनको उसमें रक्खें। बरमा देश की एक धनवान स्त्री ने कहा कि यदि यह अस्थियां मंडले में रखी जावें तो वह कुल खर्चा मन्दिर बनाने का अपने पास से देंगी। सरकार ने इन अस्थियों को मंडले में रखना स्वीकार करके गत १६ मार्च को मंडलेवालों को दे दीं। लार्ड मिंटो के पास कुछ सज्जन इन अस्थियों को लेने आये थे और ले गये। इनके देने के समय बहुत से व्याख्यान हुए जिन में यह साबित कर दिया गया कि बुद्ध की अस्थियां हैं जो महाराजा कनिष्क के समय से बड़े मन्दिर में रखी गई थीं॥

इन अस्थियों का बरमा भेजना वैसा ही है जैसा चीन जापान भेजना। भारत के ऐसे बड़े मुनि की अस्थियां जैसे गौतम बुद्ध भारत ही में रहने योग्य थीं। हिंदू मुसलमान ईसाई सब इनको यहीं रखना चाहते थे। बरमावासी बौध मत के हैं और इन अस्थियों को बड़े आदर से रखेंगे। भारत में बरमा बस इतना ही है कि एक राजा की दोनों प्रजा हैं॥

एनीबेसंट।

हमारी पाठिकाएं श्रीमती ऐनी बेसेंट के नाम को भली भांति जानती हैं। बनारस का हिन्दू कालिज और लड़की लड़कों के स्कूल आप ही ने खोले और चला रही हैं हिन्दू जाति की उन्नति के वास्ते आप कोई यत्न उठा नहीं रखतीं आपने बड़े २ परिश्रम कर के स्कूल कालिज के लिये रुपया जमा किया। इसके लिये आप शहर २ और देश २ घूमती फिरीं और फिरती हैं जो कमेटी स्कूल कालिज के इन्तज़ाम करने को बनाई गई है आप उसकी प्रेसिडेंट हैं। कालिज के एक लड़के को किसी अंग्रेज़ ने रेल पर गाली देदी। इस पर आपने एक अपील अंग्रेज़ों के नाम छापकर बांटी। उसमें आपने सब अंग्रेज़ों से प्रार्थना की कि भारत के युवकों को इस प्रकार गाली न दिया करें क्योंकि वह अपने दिल में इन बातों को रहने देते हैं और इनका नतीजा बुरा होता है। आपने सरकार से भी यह प्रार्थना की कि ऐसे अंग्रेज़ों को जो भारतवासियों से ऐसा सुलूक करें कड़ा दण्ड दिया करे इस अपील पर बहुत से लोगों ने यह समझा कि श्रीमती पर राज विद्रोह का मुकदमा चलाया जावेगा। परन्तु लाट साहब ने अपनी कौन्सिल में यह कह दिया कि उनका ऐसा इरादा नहीं था॥

महिला परिषद काशी

होली के चार दिन की छुट्टी में बनारस में बड़ी धूम धाम रही प्राविन्शल कानफरेंस सोशल कानफरेंस इनडसट्रियल कानफरेंस और महिला परिषद के अधिवेशन हुए। महिला परिषद का अधिवेशन २८ मार्च को हुआ।

निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किये गये दूर दूर से स्त्रियां आई थीं।

(१) इस परिपद् की सम्मति में भारतवर्ष की उन्नति का सब से बड़ा साधन स्त्री शिक्षा है परिपद् संयुक्त प्रान्त के निवासियों से प्रार्थना करता है कि स्त्री शिक्षा के प्रचार के लिये जितने उपाय हो सकें, उनका शीघ्र अवलम्बन किया जाय।

(२) इस परिपद् की सम्मति में स्त्री जाति में शिक्षा केवल मात्र लिखने पढ़ने की ही न दी जाय—वरन घर गृहस्थी का सुधार गान और चित्रकारी आदि, सीना परोना, रोगी सेवा, बच्चों को पालना, कन्याओं को पढ़ाना आदि विषयों की भी शिक्षा मिलना चाहिये।

(३) इस परिपद् की सम्मति में बाल विवाह की मर्यादा स्त्री शिक्षा के रास्ते में बड़ी बाधक है। देश के हितैपियों का कर्त्तव्य है कि इस कुरीति को शीघ्र ही दूर करने का उपाय सोचें।

(४) इस परिपद् की सम्मति में परदे की सख़्ती का कम करना अत्यावश्यक है क्योंकि विद्या और ज्ञान की प्राप्ति और तन्दुरुस्ती के लिये जैसा परदा इस प्रान्त में प्रचलित है वह अत्यन्त हानिकारक है।

(५) इस परिपद् की सम्मति में बच्चों को गहिना पहिनाने का रिवाज बहुत बुरा है इस से प्रायः बच्चों की जान ख़तरे में पड़ जाती है।

(६) इस परिपद् की सम्मति में हिन्दू विधवाओं की दशा बहुत शोचनीय है, इन दुखिया अवलाओं को उन की पीड़ित अवस्था से बचाने और उन कष्टों को कम करने के लिये विधवा आश्रम खोलना अत्यावश्यक है जहां शिक्षा प्रदान करने का प्रबन्ध हो और जिस से उन का जीवन सुधर सके।

(७) इस परिपद् की सम्मति में विवाह आदि के अवसर पर स्त्रियों को अश्लील गान गाना बड़ी लज्जा की बात है। स्त्री जाति को हम कुरीति से दूर करने का प्रयत्न हमको करना चाहिये।

हम को आशा है कि अगामी संख्या में इस का पूरा हाल छाप सकेंगे।

देहरादून कन्या पाठशाला ।

देहरादून की सातवीं रिपोर्ट हमारे पास अभी आई है। इस रिपोर्ट को जो पढ़ेगा वह फिर स्त्री जाति को इतनी बुरी न समझेगा जितनी वह इस समय समझी जाती है। इन पाठशालाओं की शासनकर्त्ता स्त्रियां ही हैं । इनमें से एक श्रीमती महादेवीजी हैं जिनका हाल हम फरवरी के अंक में प्रकाशित कर चुकी हैं। कन्या पाठशाला के पास ही आपका घर है और हर दम आप पाठशाला ही में मौजूद रहती हैं। आपके साथ और अच्छे घरानों की स्त्रियां इस पाठशाला में काम करती हैं १३ अध्यापिकाएं भी पढ़ाने को नौकर हैं जिनमें दो बी. ए. पास हैं। ११८ कन्याएं इस पाठशाला में पढ़ती हैं और कई एक पाठशाला ही में रहती हैं । रिपोर्ट से हमको मालूम होता है कि पढ़नेवाली और रहनेवाली कन्याओं की संख्या प्रति दिन बढ़ती जाती है। दूर २ शहरों से आकर कन्याएं इस पाठशाला में रहती हैं । इन्सपेक्टर लिखते हैं कि किसी और पाठशाला में ऐसी काम करनेवाली स्त्रियां नहीं हैं और न किसी और पाठशाला में इतने देर तक कन्याएं पढ़ने को ठहरती हैं। हम आशा करती हैं कि इस पाठशाला की प्रति दिन उन्नति होगी ॥

होली ।

श्रीमती किशोरी रानी कूल ने होली पर एक कविता बनाकर हमारे पास भेजी है इस को हम नीचे प्रकाशित करती हैं ॥

होली में हाहाकार मचाओगे कबतलक।
अयभाई! सभ्यता को गँवाओगे कबतलक ॥ १ ॥

बच्चों को धर्म शिक्षा, व विद्या का पढ़ाना।
यह छोड़, बुरी गाली गवाओगे कबतलक ॥ २ ॥

जातियता का जोश तनिक भी रहा, न हाय!
सभ्यों में अपना नाम लजाओगे कबतलक ॥ ३ ॥

वेदों का रंग शास्त्र का बुक्का अबीर छोड़।
अज्ञानता के रंग से नहाओगे कबतलक ॥ ४ ॥

गांजा, चरस, अफीम व चंडू, मदक, शराब ।
पीकर के अपनी बुद्धि गँवाओगे कबतलक ॥ ५ ॥

देखो मनू की आज्ञा "स्त्री हैं मातृवत" ।
दे गाली इनको पाप कमाओगे कबतलक ॥ ६ ॥

देखो तो सारी दुनियां उन्नति में लगी है ।
इस राह पै अफसोस ! तुम आओगे कबतलक ॥ ७ ॥

भारत की बनी वस्तु जो दुनियां में थी प्रसिद्ध ।
छोड़ उनको सब व्यापार मिटाओगे कबतलक ॥ ८ ॥

देशी उन्नति से मुंह को न मोड़ो, ऐ भाइयो ।
सीधी है राह इस पर नआओगे कबतलक ॥ ९ ॥

भारतवर्ष के त्योहारों में यह त्योहार सब में श्रेष्ठ समझा गया है । इस दिन रंग खेला जाता है और बहुत उत्सव मनाया जाता है बहुत से बुद्धिहीन लोग यह समझते हैं कि शास्त्रों में लिखा है कि आज के दिन गालियां बकनी उचित हैं यह उनकी भूल है शास्त्रों में दुर्वचन बोलना मना है और स्त्रियों का आदर करना लिखा है । होली में विशेष करके स्त्रियों ही को गालियां देते हैं और उन दिनों स्त्रियों का निकलना बंद हो जाता है ॥

इस से नीचे होली में उत्सव मनाने के कारण लिखते हैं एक समय में भारतवर्ष में हिरराम कथा नामी एक बड़ा शक्तिवान राजा था इस राजा ने अपने राज्य में यह आज्ञा दे दी थी कि कोई मनुष्य ईश्वर का नाम न लेवे वह अपने को परमेश्वर बतलाता था । उस ने यह भी आज्ञा दी थी कि किसी पाठशाला में विद्यार्थी अपनी तख्ती पर परमेश्वर का नाम न लिखने पावे हिरण्यकश्यप कृष्ण भक्तों पर बहुत अत्याचार करता था । इस राजा का पुत्र प्रहलाद जो बड़ा हरि भक्त था एक पाठशाला में पढ़ता था यह सब विद्यार्थियों को ईश्वर की भक्ति सिखाता था गुरुजी ने हर प्रकार से इस युवक को सिखलाना चाहा कि ईश्वर का नाम न ले परन्तु इस लड़के ने न माना । तब गुरुजी ने बाप को खबर दी कि उनका पुत्र ईश्वर का नाम लेना बंद नहीं

करता। हिरण्यकश्यप ने तब बहिन होलका अथवा होला नामी से यह कहा कि लड़के को समझा दे कि ईश्वर कोई चीज़ नहीं है और राजा ही उसका ईश्वर है परन्तु इस बालक ने स्वीकार न किया। राजा ने बहुत क्रोधित हो यह आज्ञा दी कि इस बालक को ऊंचे पहाड़ से नीचे फेंक दिया जावे कि वह मर जावे और दूसरे लड़कों को हरिभक्त बनाकर खराब न करे पहाड़ के ऊपर से फेंकने में इस बालक के चोट भी न लगी। इस पर राजा ने इस को मारने को दूसरा यत्न सोचा राजा की बहिन होलका अथवा होला को यह वर था कि अग्नि उसको जला न सकेगी। राजा ने बहिन को यह आज्ञा दी कि यदि लड़का अब भी ईश्वर का नाम लेना न छोड़े तो चिता पर लेकर उसे बैठ जावे वह जल न सकेगी परन्तु लड़का मर जावेगा। जब लड़के ने न माना तो होला उसे चिता में ले फाल्गुण सुदी पूर्णमासी को संध्या समय बैठ गई और चिता में आग लगा दी गई। ईश्वर की करनी ऐसी हुई कि होला तो भस्म हो गई और प्रहलाद श्री हरि श्री हरि कहता हुआ उस चिता में से निकल आया। इस से सारे देश में उत्सव होने लगा और खुशी में सब मनुष्य रंग खेलने लगे और आपस में मिलकर प्रहलाद के बचने की खुशी करने लगे। हिरण्यकश्यप और प्रहलाद को कितने ही युग बीत गये परन्तु यह उत्सव आज तक प्रचलित है और उसमें मिलने का सब से बड़ा व्यवहार माना गया है॥

दक्षिण भारत में विवाह की अनूठी चाल।

(श्रीयुत युगल किशोर अखौरी बी. ए.)

दक्षिण में अनेक जंगली जाति बसती हैं। इन में विवाह की कितनी ही अनूठी चाल हैं। आज इन्हीं का हाल पाठिकाओं की भेंट करता हूं॥

दक्षिण में, गड़ेरियों की कुटुम्ब नाम की एक जाति है। इनमें दुलहिन चुनने का यह नियम है कि भावी पत्नी के शरीर में शुभ चिन्ह देखते हैं तभी उसका पाणिग्रहण करते हैं। यनादी नाम की जंगली जाति में युवा होने पर ही विवाह होता है। इनमें वर दान का नियम यह है कि वर अपना दहिना पांव दुलहिन के दहिने पांव पर रखता है और उसके गले में "टाली" बांधता है। जोड़ी एक दूसरे के सिर पर अक्षत छींटते हैं। इसके बाद अपने देवता की पूजा करते हैं॥

कोरावर भी जंगली जाति है। ये लोग चोरी करने में प्रसिद्ध हैं। इनमें बहुविवाह की बड़ी चलती है, विवाह-बन्धन भी ढीले से होते हैं। स्त्री एक पुरुष को छोड़कर स्वच्छन्द दूसरे पुरुष को ग्रहण कर सकती है वाग्दान (शगुन) की रीति यह है कि वर दुलहिन के पिता को एक मटका ताड़ी देता है, इसीमें जातिवाले शरीक होते हैं। इसी प्रकार मद्यपानादि में तीन दिन बिताते हैं। विवाह की रीति रस्में बहुत मामूली होती हैं॥

दक्षिण में पासियों को सगाली कहते हैं। ये लोग विवाह में एक प्रकार का 'पान' व्यवहार करते हैं। यह पान, भांग मसाला आदि कितनी ही वस्तुओं के मेल से तय्यार होता है। वर अपने भावी ससुर को कुछ रुपये और गौ देकर दुलहिन के गले में टाली बान्धता है। तीसरे दिन दुलहिन घर जाती है साथही एक बैल को हांककर वर के यहां ले जाती है। योगी नाम की जंगली जाति में १२ खम्भे का मण्डप बनाने की चाल है इसी मण्डप में वर और दुलहिन के पक्षवाले अपने २ पाहुनों को भेड़ी और मिट्टी के बर्तन नज़र करते हैं। जिस किसी के हाथ पर तीन छड़ी नहीं पड़ी हों उसे कुछ अर्थ दण्ड (जुर्माना) देना पड़ता है और उसके सिर में कीच लगाते हैं।

इनमें यह भी चाल है कि दुलहिन के गले में टाली बांधने के पहिले उस टाली को बिल्ली के गले में बांधते हैं। क्यों यह चाल चली इस का कारण योगी लोग स्वयं नहीं बता सकते। चकलर जाति के चमार "अवरम" नाम के वृक्ष को बड़ी पूज्य दृष्टि में देखते हैं अतएव चकलर लोग पहिले इसी वृक्ष में टाली बांधते हैं पीछे वधू के गले में बांधते हैं। इन लोगों के विवाह में मद्य का बहुत व्यवहार होता है। मद्य का खर्च अधिकतर वर के पक्षवाले देते हैं॥

"पलयक्करण" नाम की एक जाति है। ये लोग मृगया (अहेर) से ही अपनी जीवन वृत्ति चलाते हैं। ये लोग जामुन को बहुत पवित्र समझते हैं। विवाह के पहिले दिन ये लोग जामुन के पेड़ को दूध, घी और धूप दीप देकर पूजन करते हैं, वर इसके पल्लव से विवाह मण्डप के खम्भे को नीचे से ऊपर तक बांधते हैं। विवाह के दूसरे दिन प्रातःकाल के समय दम्पति गांव के बाहर सजधज कर धूम धाम से वाल्मीक (दियांड़) के समीप जाते हैं। दियांड़ पर दम्पति दूध और घी अर्पण करते हैं और उसकी मिट्टी एक टोकरी में घर ले आते हैं। वर इसी मिट्टी में पानी मिलाता है और मण्डप के बारहों खम्भे पर थोड़ी थोड़ी मिट्टी रखता है। तीसरे दिन वर अपने सम्बन्धियों के साथ गांव के बाहर किसी खेत को गोड़ता है, खेत गोड़कर उसमें ६ तरह का धान रोपता है। "येरलमकपू" जाति की ब्राह्मणों से बड़ी शत्रुता रहती है। ये लोग विवाह में ब्राह्मणों को नहीं बुलाते हैं। इस ब्राह्मण द्वेष का कारण ये लोग यों वर्णन करते हैं कि येरलमकपू जाति एक ब्राह्मणी की सन्तति है। इस ब्राह्मणी का नाम येरलम्मा था। इसका विवाह शास्त्रानुसार बाल्यावस्था में नहीं हो सका अतएव यह ब्राह्मण समाज से पृथक कर दी गई। ब्राह्मण समाज से बहिष्कृत होकर इसने एक नीच जाति के हिन्दू से शादी की। इसी असवर्ण विवाह की सन्तान येरलमकपू हुई॥

पश्चिमी घाट के समीप ही जावदी नामकी पहाड़ियां हैं इन्हीं पहाड़ियों में मलयाली नाम की जंगली जाति बसती है इन में विवाह की रीति रस्में बड़ी विचित्र हैं। जब पुरोहित जो दुलहिन

के गले में टाली बांधते हैं तब एक तलवार दम्पति की गोद में रक्खी जाती है वधू के मा बाप से मंजूरी लेने के पूर्व वर अपने भावी संसुराल में जाकर कम से कम एक वर्ष तक सेवा टहल करता है। प्राय: यह भी देखा गया है कि वर अपनी भावी सास ससुर की ओर से हताश होकर अथवा प्रेमिका के प्रेम से उत्तेजित होकर उसे ले भागता है इस कन्या हरण के लिये वर को दण्ड भोगना पड़ता है दण्डविधान इस प्रकार है अपराधी को अपना मुह रंग कर टूटे फूटे वर्तनों और कूड़ा करकटों से भरी हुई टोकरी उठाना पड़ता है॥

इन में विवाह वन्धन शिथिल रहता है व्यभिचार का बहुत प्रचार है इस के लिये कोई दण्ड भी नहीं है। ये लोग काली की वार्षिक पूजा बड़ी रहस्य पूर्ण और भीषण रूप से करते हैं इस पूजा को न तो कोई बाहरी आदमी न घर की स्त्रियां ही देखने पाती हैं। पूजा गांव के बाहर सूनसान पहाड़ी पर होती है ऊपर कुटुम्ब जाति का उल्लेख किया गया है इन कुटुम्ब लोगों की कितनी ही शाखा हैं इन के मुखिया गौड़ बोले जाते हैं। इन्हीं मुखियों को विवाह कराने का अधिकार रहता है॥

घोया नाम की जाति बड़ी लड़ाकू होती है। ये लोग बड़े हृष्ट पुष्ट और बलिष्ठ होते हैं। ये लोग पाल्की भी ढोते हैं। वर और दुलहिन लोहे की अंगूठी पहिनते हैं उन के हाथों में भेड़ी के बाल का कङ्कन पहिराया जाता है। दुलहिन के गले में टाली पहिराई जाती है। दक्षिण में अन्तेइडुगन्डला नाम की तेलियों की जाति में टाली पहिरने की चाल नहीं है॥

दक्षिण में अनेक मन्दिरों में देवदासियां रहती हैं। ये लोग किसी मन्दिर की मूर्त्ति से व्याही जाती हैं। इन की शादी की रस्में वर की जगह पर एक तलवार रख कर पूरी की जाती है। देवदासी होने पर वे किसी दूसरे से पाणिग्रहण नहीं कर सकती हैं ये विवाह सूचक टाली गले में पहिरती हैं इन में व्यभिचार का बहुत प्रचार है। हाल में सरकार ने देवदासियों की प्रथा उठा दी है। इस से सरकार समाज सुधारकों को धन्यवाद भाजन हुई है॥

नोट—विवाह सूचक रंगीन तागे के कङ्कन को तामिल भाषा में "टाली" कहते हैं॥

श्रीमोहनदास करमचन्द गांधी, बैरिस्टर एट ला.

Indian Press, Allahabad.

मोहनदास कर्मचन्द गांधी।

[दक्षिणअफ्रिका का भारतीय वीर]

("वर्म्मा")

"ऐसे वीर पुरुष, देशभक्त, धर्मवीर, समाज के असली सुधारक और (सच्चे) वास्तविक मनुष्य बहुत कम हैं जो राज्य (गवर्नमेंट) की अपने अन्तःकरण के भावों के अनुसार अथवा धर्म के अनुसार सेवा करते हैं। ऐसे निष्कपट लोगों को बहुधा शासन प्रणाली का विरोध करना पड़ता है। इस कारण ऐसे लोग शासनकर्ताओं से राज के शत्रु समझे जाते हैं। जिस राजशासन में एक व्यक्ति भी अन्याय से कारागार में बंद किया जाता हो उस राज्य में नेक और निष्कपट आदमी के रहने का स्थान वन्दिगृह ही है"। यह 'थौरियो' के वचन दक्षिण अफ्रिका की राज पद्धति गवर्नमेन्ट के विषय में चरितार्थ होते हैं। इसी कारण हमारे चरितनायक 'मोहनदास कर्मचन्द गांधी' को इस अलपकाल तीन वार जेल भोगना पड़ा॥

यह वीर पुरुष गांधी महाशय जिनकी वीरता का डंका आज दिन उनकी मातृ-भूमि भारत में जगह जगह बज रहा है; जिन्होंने विदेश में अपनी माता के गौरवार्थ अपने आत्मीय गौरव को ताख में रख दिया और जो तीन वार इस थोड़े से समय में कारागार हो आए; जहां उनको कठिन से कठिन और निकृष्ट से निकृष्ट काम करने पड़े वे शरीर में ऐसे योद्धा या हृष्ट पुष्ट नहीं हैं जैसे कि वे कार्य कर चुके हैं। अर्थात् इनका शरीर कृष, कद मझोला, मुखारविन्द शान्तिमय और रंग सांवला है। दूर से देखने में गांधी महाशय दक्षिण आफ्रिका में जो कठिन कर्म कर चुके हैं उनको करने या सहने के योग्य वे नहीं समझे जांयगे, पर उनके समीप जातेही उनके कान्तिमय मुख पर दृष्टि डालने से सहसा विदित होने लगेगा कि यह वीर पुरुष के लक्षणों से युक्त हैं॥

कर्मचन्द गांधी जी के हट्टीपन और अप्रत्यक्ष प्रतिरोध *

* "अप्रत्यक्षप्रतिरोध" के साधारण माने अड़ंचन डालना अड़ंगा लगाना या धरणा देना है। अंग्रेजी में इसे Passive Resistence कहते हैं॥

का ज़िकर सुनकर कुछ लोग शंका करेंगे कि इन की आदत ही अड़ंगा लगाने या झगड़ा पैदा करने अथवा बदला लेने की होगी यह बात नहीं हैं । एक बार वहीं अफ़्रिका में कुछ उदंड पठानों ने आप पर आक्रमण किया । इन्हीं लोगों के निमित्त गांधी ने अपना सर्वस्व त्याग दिया था, क़ैद भोगने को तैयार थे । इन काबुलियों ने उन्हें इतना मारा कि आप बहुत घायल हुये; अंग से खून बहने लगा । बेहोश हो गये थे । पासवाले शफ़ाखाने में पहुंचाये गये, और जब उन्हें होश आया तो कहा कि "मैं आक्रमणकारियों को पकड़वाना नहीं चाहता । ये क़ाबुली समझे होंगे कि हम गांधी को मारने में उचित बात कर रहे हैं । जो उन्होंने ठीक समझा वह किया । अतएव मैं उन्हें सज़ा नहीं दिलवाना चाहता" । यदि पाठकवृन्द यह पूछें कि आप अपने ऊपर अत्याचार की परवाह नहीं करते तो क्यों स्वयं दक्षिणअफ़रीका की सरकार के अन्याई क़ानून का विरोध करके बन्दिगृह में जाते हैं और अन्य बोरदेश प्रवासी भारतवासियों को भी अपने साथ क़ैद में क्यों ले गये ? गांधी के अप्रत्यक्षप्रतिकार के कारण गत बीस महिनों में तीन हज़ार बालक वृद्ध, स्त्री, पुरुष, भारतवासी बोरों की जेलों में दुःख भोग चुके हैं ॥

अब हम गांधी महाशय के ही शब्दों में इसका उत्तर देंगे कि ऐसी नीति का प्रयोग करके उन्होंने अपने तईं और अपने देशवासियों को क्यों कष्ट में डाला । "लोग चाहे जो कहें । मैं बार २ धार्मिक स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ने के निमित्त फिर फिर क़ैद में जाऊंगा । धर्म से मेरा किसी विशेष धर्म से अभिप्राय नहीं । मेरा उस धर्म से मतलब है जो कि सब धर्मों की जड़ हैं और जो हमको हमारे कर्ता के सन्मुख पहुंचाता हैं । हे मेरे स्वदेश बान्धव हिन्दुस्तानी भाइयो ! अगर तुम मनुष्यत्व की पदवी छोड़ना चाहो, यदि तुम एक बार प्रण कर उसका उलंघन करना चाहो, और अगर तुम बिना कष्ट सहे ट्रान्सवाल में रहना चाहते हो तो निश्चय ही तुम ईश्वर को छोड़ते हो । जो ईश्वर की राह पर चलते हैं उनको संसार छोड़ना पड़ता है । (अर्थात् सांसारिक सुख छोड़ने पेड़त ह, कष्ट सहेन को तैयार रहना पड़ता है) अतएवं मैं

अपने देशवासियों से कहता हूं कि वे सांसारिक सुख को छोड़ें और जैसा बालक अपनी मां के स्तनों पर चिपटता है वैसेही हम भी परमेश्वर से लिपटे रहें।

श्रीयुत मोहनदास कर्मचन्द गांधी से पादरी डोक (Doke) साहब * ने प्रश्न किया "इस कार्य के हित के लिये आप कितना कष्ट सहने को तैयार हैं"।

गांधी ने उत्तर दिया "मेरे समीप तो यह मामला पूरे २ आत्मत्याग का है। मैं कुछ (चीज़) नहीं हूं। मैं सदैव इस कार्य के लिये मरने को भी तैयार हूं। मैं इस पवित्र काम के लिये सब कुछ करने को हूं।" यदि पाठकवृन्द यह पूछें कि

वह कार्य

क्या है जिसके निमित्त हमारे चरितनायक अपने प्राण देने को तत्पर हैं, असीम असह्य कष्ट सहने पर कटिबद्ध हैं। तथा तीन हज़ार के लगभग ट्रान्सवाल प्रवासी भारतवासी कड़ी कैद भोग चुके और भुगतते आ रहे हैं। स्त्रियां पतिवियोग से कुम्हला रही हैं। बालक बिना पोषक (पिता) के भूखों मर रहे हैं, बालकों के उदर पोषणार्थ प्रतिष्ठित भारत ललनायें कुंजड़ियां बन रही हैं॥

वह कार्य जिस के लिये इतना कष्ट सहा जा रहा है यह है कि 'हमारे देश से ठीके में जो कुली दक्षिण अफ्रीका में भेजाये जाते हैं। उन पर अत्याचार न हो। उनके साथ ऐसा बर्ताव हो जैसे मनुष्यों से होना चाहिये। उनसे जानवरों का सा बर्ताव न हो' जैसा कि पोलाक साहब के कथनानुसार "हाल ही में एक कुलियों के मालिक ने अपने हिन्दुस्तानी मज़दूर को ज़मीन पर पटककर उस की छाती पर चढ़ बैठा और चाकू से उस के दाहिने कान का एक भाग काट डाला। जब उस से पूछा गया कि तुम ने हिन्दुस्तानी कुली का कान क्यों काटा तो उस ने कहा कि 'मैं इस कुली को भेड़ के समान समझता हूं।

---

* Joseph J. Doke साहब जब गांधी महाशय के पास उनके जीवन चरित्र की सामग्री लेने गये थे उन्होंने यह प्रश्न उनसे पूछा था। डोक साहब ने गांधी महाशय का अच्छा जीवन चरित्र १०० पृष्ठ का अंग्रेज़ी में लिखा है जो लाहोर के "पंजाबी" अखबार के कारखाने से २) में मिल सकता है॥

जैसे मुझे भेड़ के कान काटने का अधिकार है वैसे ही मुझे इसका कान काटने का भी अधिकार है"। भेड़ न होते तो क्यों यह दशा होती कि हिन्दुस्तानी स्वतन्त्रता पूर्वक दक्षिण अफ्रीका में विचरण तथा व्यापार न कर सकें! यह न हो कि हिन्दुस्तानी उपनिवेशवासी स्वेतांग लोगों के साथ उसी गाड़ी पर बैठने से रोके जायें, उसी सड़क पर चलने न पायें अथवा शहर से बाहर गंदे स्थानों में रहने के लिये बाधित (मजबूर) किये जायें; कि हिन्दुस्तानी को गुलामी अथवा अपने कालेपन का तकमा लटकाये न घूमना पड़े; बार २ खूनी कैदियों की तरह अंगुलियों के निशान न देने पड़ें; कि भारत से ट्रान्सवाल प्रवासी हिन्दुस्तानियों की धर्म रक्षा व धर्म उपदेश के निमित्त योग्य पुरुष पंडित मौलवी इत्यादि आने पायें; कि वरण भेद के कारण हिन्दुस्तानी राजकीय स्वत्वों से वंचित न रहें॥

यह सब सख्ती व अत्याचार अफरीका के स्वेतांग उपनिवेशवासी (कालोनिष्ट्स) इसलिये करते हैं कि ट्रांसवाल इत्यादि उपनिवेशों में हिन्दुस्तानियों की संख्या बढ़ने न पाये। इस के उदाहरण के लिये एक छोटी सी कथा सुनिये। एक बालिका का जन्म नेटाल में हुआ था। वहीं उस का पालनपोषण हुआ। किसी कारण से वह अपनी मातृभूमि भारत को आई थी। पर विवाह की अवस्था आने पर वह विवाह के निमित्त वापिस दक्षिणअफरीका जाना चाहती थी। वहां की व्यापार विषयक सभा ने निश्चय किया कि उसे नेटाल में पांव नहीं रखने देना चाहिये। अपनी आपत्ति की पुष्टता में एक स्वेतांग महाशय ने जो वहां की पार्लियामेंट के सभासद भी थे कहा कि "अगर हम इस युवती को यहां आने देंगे तो विवाह होने पर इस की कन्या होगी और कन्याओं की भी सन्तति बढ़ती जायगी जिस का परिणाम यह होगा कि सारी कालोनी (उपनिवेश) हिन्दुस्तानियों से भर जायगी" क्या दूर की सोची इसी का नाम दूरदर्शिता है, हिन्दुस्तानियों के कूड़मग़ज़ों में कब ऐसी बातें समाने लगीं?

इस आपत्ति व बाधा के दूर करने, स्वतन्त्रता पूर्वक ट्रांसवाल में जीविका उपार्जन करने और स्वेतांग लोगों से राजकीय समता तथा अपने हक प्राप्त करने के हेतु

बड़ा शान्तिमय और उपयोगी है । गांधी महाशय लड़ाई करके अपने हक़ लेना नहीं चाहते हैं । आपने अप्रत्यक्ष प्रतिरोध का प्रयोग किया है अर्थात आप कहते हैं कि हम उस अन्याय पूर्ण क़ानून को नहीं मानेंगे जो हम भारत और एशियावासी लोगों को पशुवत समझता है। जो हम से वही बर्ताव करना चाहता है जैसा खूनी, डाकू, हब-शियों से किया जाता है। इस क़ानून को न मानने के कारण आप स्वयं तीन बार जेल भोग चुके हैं । और शायद इस जीवनी के प्रकाश होते २ आपको चौथी बार भी जेल जाना पड़े। उनका अनुकरण ३००० के लगभग भारतवासी कर चुके हैं। बड़े २ प्रतिष्ठित पारसी, हिंदू, मुसलमान सौदागर भी जेल में आप का साथ दे चुके हैं। आप का सुपुत्र भी ट्रांसवाल के कारागार को पवित्र कर चुका है। पिता पुत्र को साथ ही अपनी मातृभूमि के गौरवार्थ क़ैद जाना क्याही वीरता का काम है॥

जिस शास्त्र का आपने प्रयोग किया है वह बड़ा पुराना शास्त्र है । इस शास्त्र को हिन्दी में 'धरणादेना' भी कहते हैं और अप्रत्यक्ष प्रतिरोध वा प्रतिकार भी कहते हैं। प्राचीन काल में भी इस अड़चन का प्रयोग किया जाता था। विशप हेबर साहब ने इस "धरना' देकर बैठने के विषय में यों लिखा है। "धरना देकर बैठने की विधि यह है कि जब किसी से कोई काम करने के लिये या कोई चीज़ देने के लिये कहा जाय और वह उसे स्वीकार न करे तो मांगने या चाहनेवाला चुप-चाप बिना खाये पिये, हिले चले, रात दिन, धूप व वर्षा, में तब तक बैठा रहे जब तक उसके मन की बात न मान ली जाय। हिंदुओं का यह भी विश्वास है कि जो कोई इसी धरना अथवा शोक आसन में मर जाय तो वह प्रेत बनकर जिनके प्रति धरना दी जाती है उन्हें सताता है" । क्या ही अच्छा होता अगर उन भारतवासियों की आत्मा-जो दक्षिणआफ्रिका में धरना देते हुये क़ैद में मर गये हैं प्रेत बनकर अपने अत्या-चारियों की खबर लेतीं॥

धरना का प्रयोग बालक बहुधा किया करते हैं। बचपन में लेखक इस अप्रत्यक्ष प्रतिकार का अवलम्बन किया करता था। जब कभी माता पिता किसी खेल तमाशे में शामिल होने से रोकते या मन मांगी चीज़ न देते तो यह क्षुद्र लेखक भी खाना पीना छोड़कर गुस्सा हो जाता अर्थात धरना देकर बैठ जाता। जीतं भी धरना धारी की ही होती। इस शास्त्र का उपयोग विलायत की वोट (राजकीय सत्व) चाहनेवाली स्त्रियां भी कर रही हैं। उत्कट उपाय व उद्दण्ड कारस्वाइयों के कारण जब वे जेल में ठूंस दी जाती हैं तो वे वहां खाने पीने पहिरने से इन्कार करती हैं। मृत्यु भय से उन्हें छोड़ना पड़ता है। भारतवर्ष के राष्ट्रीय दल के नेता विपिनचन्द्रपाल भी इस शास्त्र के प्रयोग के पक्षी थे। गोखले महाशय यहां धरना से काम लेना उचित नहीं समझते हैं। परन्तु ट्रांसवाल प्रवासी हिंदुस्तानियों को आप इसी शास्त्र से काम लेने की सलाह देते हैं।

इस संग्राम के नेता का जन्मस्थान

काठियावाड़ (गुजरात) द्वारिका के समीप सुदामापुरी जिसे अब पोरबन्दर कहते हैं है। समुद्र के तट पर वह बड़ी ही रमणीय पुरी थी, इसकी वह प्राचीन शोभा अब जाती रही। गांधी महाशय के पूर्वज इसी मनोहर नगर में रहते थे। यह नगर गुजरात के राजाओं की राजधानी थी। इनका जन्म इसी नगर में २ अक्टूबर १८६९ (सम्वत १९२६) को हुआ था।

गांधी के पूर्वज

राना के मंत्री रहते आये हैं। इस राज ख़ान्दान से आप के पूर्वजों का सम्बन्ध भी था। इनके पितामह उत्तमचंद गांधी बड़े स्वतंत्र चित्त निडर मंत्री थे। राजा का भी आप तड़ाक फड़ाक का कोरा जवाब दिया करते थे। टीका साहब विकमत जी की माता जो उस समय राज का भार सम्हाले थीं इनसे एक बार नाराज़ हो गईं। उत्तमचन्द जी रानी के मंत्री का पद त्याग जूनागढ़ गये। नवाब के दरबार में आप का अच्छा स्वागत हुआ। दर्बार में उत्तमचन्द जी ने नवाब को बांये हाथ से सलाम की। इसका कारण पूछा जाने पर उत्तर दिया कि "यद्यपि पोरबन्दर के दरबार ने मुझ से अच्छा सलूक

नहीं किया तौभी मेरा दहिना हाथ उसी पोरबन्दर के लिये है" नवाब भी आपके देशानुराग से प्रसन्न हुआ॥

गांधी के पिता कर्मचन्द गांधी ने भी २५ वर्ष तक पोरबंदर के मंत्री पद की शोभा बढ़ाई। इनकी भी पीछे राजा से अनबन हुई। इन्होंने अपना पद अपने छोटे भाई को सौंपा और आप राजकोट आब से।

माता पिता

के पवित्र व धार्मिक जीवन का गांधी के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि गांधी जी के सदाचरण और वीरप्रकृति के मूल कारण इनके माता पिता ही हैं॥

सड़ी गली रियासतों में घूस रिसवत का रिवाज़ बहुत है। पोरबंदर के मंत्री रहते हुये गांधी के पिता कर्मचन्द जी रियासत द्वारा आनेवाली लक्ष्मी को अपने पास नहीं आने देते थे। पोरबन्दर से आप राजकोट की रियासत में आये वहां भी वैसे ही त्यागी बने रहे। एक बार राजकोट के ठाकुर ने आपसे प्रसन्न हो जागीर लेने के लिये कहा। ठाकुर साहब ने कहा 'हम आपकी दिवानी व राजसेवा से बहुत प्रसन्न हैं आप जितनी जागीर चाहें लें'। गांधी के पिता जी ने उत्तर दिया 'मैं यह घूस समझता हूं। मैं कोई पुरष्कार स्वीकार नहीं करूंगा'। ठाकुर साहब ने कहा 'आपकी मृत्यु के पश्चात आपकी सन्तति क्या खायगी। उनके लिये आपको कुछ प्रबन्ध करना उचित है।' दिवान जी से उत्तर मिला कि वे अपने भाग्य और करतूत से खायंगे।' ठाकुर साहब के बहुत कहने पर केवल ४०० गज़ भूमि स्वीकार की। द्रव्य की आपको ज़रा भी लालसा नहीं थी। मृत्यु से पहिले ६३ वर्ष की अवस्था तक आपने प्रायः सारा संचित धन दान पुण्य में लगा दिया था। यह पितृ गुण हमारे चरितनायक में पूरा २ आ गया है। ४५०००) सालाना की आमद को छोड़ आज भिक्षुक की तरह फटे कपड़ों से आप स्वदेशगौरवार्थ व स्वदेश बांधवों के कष्ट निवारण के निमित्त परोपकारी कार्य में लगे हुये हैं। दक्षिण अफ्रिका प्रवासी हिंदुस्तानी लोग इस बात की

शिकायत करते हैं कि "जब हमारे दुःखों का रोना रोने के लिये गांधी इंगलैंड गये थे, हम लोगों ने चंदा करके खरच के लिये कुछ रुपये आपको दिये थे। वे आप अपने व्यय में न लाये और वापस आकर हमारे ही हवाले कर दिये। जब हम लोगों ने नेटाल में उनको कुछ पुरस्कार (भेंट) दिया वह भी उन्होंने हमारे जातीय कोश में लौटा दिया। गांधी महाशय ग़रीब इसलिये हैं क्योंकि वे दरिद्री ही रहना चाहते हैं"। विदित होता है हमारे चरितनायक द्रव्य से अपने पिता से भी अधिक घृणा करते हैं। परोपकारी वीर पुरुषों को लक्ष्मी की चंचलता से दूर ही रहना उचित है। द्रव्य रूपी दलदल में एक वार फंसने से वाहर निकलना मुश्किल होता है। अतएव देश सेवकों को सदैव दरिद्री रहना ही श्रेय है॥

हमारे चरितनायक मोहनदास गांधी के पिता कर्मचन्द गांधी बड़े निडर व साहसी पुरुष थे। एक समय अंगरेज़ प्रतिनिधि (एजेंट) के मुख से अपने राजा के प्रति अवहेलना पूर्ण वचन सुन आपसे न रहा गया और पोलिटिकल एजेंट से झगड़ने लगे। साहब गरम हो गये और क्षमा मांगने को कहा। कर्मचन्द जी क्षमा क्यों मांगते। दम्भी साहब ने आपको गिरफ्तार करवाके कुछ घंटों के लिये एक पेड़ के नीचे रखा। दीवान साहब तौभी न माने। अन्त में अप्रत्यक्ष प्रतिरोध (धरना) जिसका प्रयोग उनके पुत्र कर रहे हैं उसी के द्वारा आपकी विजय हुई और फिर एजेंट साहब उनके मित्र बन गये॥

मोहनदास गांधी अपने पिता के तीन पुत्रों में सब से छोटे थे। उनका इस छोटे पुत्र पर विश्वास व स्नेह बहुत था। परन्तु गांधी महाशय को अपनी माता में बड़ी गाढ़ भक्ति व प्रेम था। जब गांधी अपनी माता के विषय में कहने लगते हैं, प्रेम से आंखों में पानी डबडबाने लगता है और स्नेह के मारे गद् गद् स्वर हो जाते हैं क्यों न हो माता के समान इस जग में और कौन है! मनुष रूपी माता ने दस माह हमारे लिये गर्भ की वेदना सही लालन पालन किया वसुंधरा (पृथ्वी) रूपी माता आयु-पर्यन्त हमें खिलाती पिलाती हैं और मरने पर अपनी गोद पर सुलाती हैं। माताही तो हमारी सर्वस्व हैं॥

गांधी की माता साधारण स्त्री नहीं थी। गुजरात में परदे की चाल न होने के कारण उनकी माता को राजभवन में आने जाने और राजकीय कामों में हाथ डालने का अवसर था। यद्यपि उन की अवस्था कम थी तथापि वे बड़ी बुद्धि मती दूरदर्शी और तीव्रबुद्धि थीं। रानी और अन्य दरबारी स्त्रियों से उनकी मित्रता और उनके पास आने जाने के कारण राजकीय मामलों में उनका बड़ा प्रभाव पड़ता था। उन्हें गहनों का बहुत शौक़ नहीं था। नाक में नथ, हाथ में हाथीदांत की चूड़ी, पैरों में पायजेब, के अतिरिक्त आप के अंग पर और आभूषण नहीं थे दिवान जी की स्त्री को तो गहनों से लदे रहना चाहिये था ? हमारी माता जी की धर्म निष्ठता के विषय में अगर आधुनिक काल की शिक्षा-धारी ललनायें सुनेंगी तो अचम्भित होंगी या नाकसिकोड़ेंगी। पूजा, पाठ, स्नान, व्रत इत्यादि में उनको बड़ा विश्वास था। सात सात दिन तक वे व्रत रखती थीं। वे सारे जीवन ही को धर्म की परिपाटी मानती थीं अथवा जीवन उनके समीप निरा धर्म ही था। उनके सारे घर में मानों धर्म रूपी कुसुम खिला रहता था। उसकी सुगन्ध का प्रभाव सारे भवन में फैला हुआ था। धन्य है ऐसी धार्मिक देवियों को। यद्यपि वह अपने बालकों को ताड़ कर रखती थीं जिससे बिगड़ने न पायें तथापि वे उन्हें अति प्यार करती थीं। घर में जब कोई बीमार पड़ता तो वह सारी रात उसी की सेवा सुश्रूषा में जागती रहतीं। ब्राह्मण शूद्र जो कोई भी किसी आफत या ज़रूरत में हो उसे द्रव्य इत्यादि से सहायता देतीं। प्रातःकाल सदैव उन के द्वार पर दरिद्र लोगों की भीड़ रहती थी। बिना कुछ न कुछ पाये निराश कोई नहीं जाता था। ऐसी ही भारत ललनायें पूरी गृहलक्ष्मी कहे जाने योग्य हैं॥

बाल्यावस्था

में मोहनदास जी साधारण बालक थे उनकी बाल्या-वस्था के विषय में कोई विशेष घटना नहीं है। ५ वर्ष की अवस्था में गांधी गुजराती पाठशाला में प्रवेश हुये १० वर्ष की अवस्था में अंग्रेज़ी स्कूल में भर्ती हुये। १७ वें वर्ष आपने मेट्रीक्यूलेशन (इन्ट्रेंस) का इम्तिहान पास किया। १२ वें वर्ष आप का विवाह हो गया था। यद्यपि हमारे चरितनायक

को पत्नी योग्य मिलीं तथापि आप बाल विवाह के बड़े विरोधी हैं। उनका विचार है कि बाल विवाह प्रथा ने हमारी राष्ट्र के शारीरिक बल और स्वास्थ की जड़ पर कुठार चलाया है और अन्य कई बुराइयां इस बाल विवाह से फैलती हैं।

जिस समय आप स्कूल में पढ़ते थे आप पर भी अंग्रेज़ी शिक्षा का भूत सवार हुआ। बचपन से आप स्वभावतः धार्मिक माता के पुत्र होने के कारण ईश्वरभक्त और देवताओं के उपासक थे। कहावत है "अधजल गगरी छलकत जाय"। अब के ज़माने के लड़के थोड़ा भी अंग्रेज़ी पढ़ने पर अपने को बड़े विवेकी और ज्ञानी समझकर हिंदूधर्म को भ्रांत धर्म अथवा गुड़ियाओं का खेल समझ आप विवेकवादी (rationalists) लोगों के दल में जा मिलते हैं और क्रमशः नास्तिक हो जाते हैं। वही हाल इस बाल्यावस्था में गांधी जी का भी था। माता उन की बड़ी श्रद्धावान और भक्त थीं। हिन्दू धर्म की अध्यात्मविद्या व दर्शन-शास्त्र का अवलोकन करने का अवकाश आपको नहीं मिला था जिससे वह अपने "विवेकी" पुत्र जी को हिन्दू धर्म के गूढ़ अर्थ, और मूर्ति पूजा के असली आशय बताती। स्कूल में तो जहां तक होता भ्रांति पैदा करने का ही सामान था। धर्म का तो वहां नाम भी न था। यह स्वाभाविक ही था कि मोहनदास गांधी भी कुछ समय के लिये नास्तिक हो गये।

धर्म में अश्रद्धा और अरुचि का परिणाम यह हुआ कि इन की पहिले एक मांसाहारी मुसलमान और फिर ऐसे ही पांच और मित्रों से मित्रता हो गई। खाने पीने का परहेज़ छोड़ ये लोग बाहर जाकर मांस भक्षण करने लगे। गांधी के बड़े भाई भी इस मंडली के सभासद् बन गये। इस खान पान के निमित्त कई घंटों के लिये बाहर रहना पड़ता था। मां से आज्ञा लें तो कैसे लें। वे मांस भक्षण की आज्ञा कब देतीं। गांधी बड़े सत्यप्रिय थे। इन्होंने माता से झूठा बहाना न करना चाहा, अतएव उन्हें सत्य के भय से मंडली त्यागनी पड़ी। पर माता जी को इन की भ्रष्टता का कुछ पता लग ही गया था।

मैट्रीक्यूलेशन पास करने के पश्चात गांधी ने भावानगर के कालेज में प्रवेश किया। इस बीच एक राजकोट निवासी

विलायत से बारिस्टरी पासकर लौट आये थे । गांधी कुल के एक ब्राह्मण मित्र ने गांधी को परामर्श (सलाह) दिया कि

विलायतगमन

कर बारिस्टर बन कर आओ । ऐसी सलाह तो आप चाहते ही थे, क्योंकि आप देशाटन के बड़े शौकीन थे । परन्तु माता कब इस प्रस्ताव को सहसा स्वीकार करतीं । वह सुन चुकी थीं कि लंदन में युवकों के आचरण बिगड़ने के बहुत मौके हैं । अन्त में बहुत कहने सुनने पर माता जी राज़ी हो गईं किंतु उन्होंने विलायत के लिये प्रस्थान करने से पहिले गांधी से सौगंध खिलवाई कि 'विलायत में मांस मदिरा सेवन न करूंगा' इस विषय पर गांधी महाशय स्वयं यों कहते हैं। "जब मेरे इंगलैंड जाने का प्रस्ताव हुआ मां ने बार २ मना किया। अन्त को माता जी ने जाने की आज्ञा एक शर्त पर दी। वह सुन चुकी थीं कि उस दूर देश के विशाल नगर (लंदन) में लोगों के आचार ठीक नहीं रहते। इसी कारण वह अपने पुत्र के निमित्त भी बहुत घबराती थीं। माता जी मुझे एक जैन स्वामी के पास ले गईं। और मुझे उन के सामने तीन सौगन्ध खाने को कहा कि 'मैं मद्य मांस और नारि से दूर रहूंगा'। इसी मेरे प्रण ने जो मैंने माता के सामने किया था मुझे लंदन में कई बुराइयों से बचाया"। क्याही अच्छा होता कि हमारी सब माताएं अपने पुत्रों को विदेश अथवा यूरप भेजते हुये गांधी की माता की तरह इन तीन बातों से बचने की क़सम खिलवातीं ?

लन्दन प्रवास

संवत् १९४५ में मोहनदास कर्मचन्द गांधी लंदन में पहुँचे। जाते ही पहिले आप एक होटल में ठहरे। अपने लंदन प्रवासी मित्र को तार दिया। उसके मिलने तक आपको कुछ दिक्कत रही। यहां (भारतवर्ष) के अंग्रेज़ी पढ़े बाबू कोटबूट पेंट पहन- कर अपने को पूरे जेंटलमेन समझने लगते हैं। विलायत का यह हाल नहीं है। वहां हरेक ऋतु में किसी विशेष रंग विशेष काट छांट का कपड़ा पहिनना पड़ता है। गांधी जी भादों के महीने फलालैन के कपड़े पहिन बाहर निकले लोग इन्हें देख हंसने

लगे। गांधी इस हंसी का मतलब न समझे। पीछे आपके मित्रने इस गूढ़ रहस्य की समस्या की। तब आपने कपड़े बदले और फ़ैशन के मुताबिक पोशाक पहिनने लगे। लंदन में जेंट्सड्रेस पहिनकर ही जेंटलमेन नहीं बन जाते हैं। और कुछ सिफतें लंदनी जेंटलमेनों में होनी चाहियें। गाना बजाना नाचना (डानसिंग) और फ्रेंच भाषा का जानना वहां सभ्य समाज के मुख्य आभूषण समझे जाते हैं। अपना कुछ समय व द्रव्य गांधी ने भी पहिले पहल इन गुणों की प्राप्ति में व्यय किया।

एक दिन गांधी को एक भोज (डिनर) में जाना पड़ा जब शोरबे की तश्तरी आपके सामने आई आपने खानसामा से पूछा कि 'शोरबा काहे का है मांस तो नहीं'। इस पूछा पाछी को देख भोजदाता ने गांधी से पूछा "क्या मामला है"? अतिथि ने अपना आशय प्रकट किया। सुनते ही निमंत्रक जी बिगड़ गये। और मूह फोड़ कह दिया कि 'आप-जो मांस नहीं खाते—सभ्य समाज के योग्य नहीं बेहतर होगा आप तसरीफ़ लेजायं'। गांधी उठ खड़े हुये। धिक्कार है उस समाज को जिसमें मांस भक्षण सभ्यता का मुख्य चिन्ह समझा जाय। क्या ही ज़मीन आसमान का भेद है? हम मांसाहारी लोगों को निकृष्ट समझते हैं और और विलायत के लोग 'बीफईटर्स', को सर्वोच्च पद देते हैं अब गांधी ने जेंटलमैनी से अपना पल्ला छुड़ाया। नाच सीखना छोड़ा। भायोलिन (बाजा) बेच डाला। अपनी सारी दिनचर्य्या बदल दी। अब आपने बारिष्टरी की पढ़ाई के साथ २ लंदन का मैट्रिक्यूलेशन पास करने का उद्योग किया। अलग एक किराये के कमर में रहकर अपना भोजन स्वयं बनाने लगे। इससे आपका खर्च भी बहुत घट गया। ६०) रु० माहवार पर आप सादी चाल से रहने लगे। जैंटलमैनी चालवाले विद्यार्थियों के कम से कम २५०) रु० लगते हैं।

पाठकवृन्द को यह बात बहुत ही विलक्षण विदित होगी कि लंदन में गांधी नास्तिक से आस्तिक बने। विलायत जाकर हमारे युवगण नास्तिक वा इसाई होजाते हैं और गांधी वहां जाकर पक्के व सच्चे हिन्दू हो गये, लंदन में जेंटलमैनी से अपना पीछा छुड़ाने के बाद आप धर्म पर भी कुछ विचार करने लगे।

ईसाई बनें ? या थिओसौफ़िस्ट बनें ? या हिन्दू धर्म का अवलम्बन करें ? कुछ न कुछ धर्म ग्रहण करना ही था। घासपार्टीवाले कुछ अंग्रेज़ आपके मित्र बन गये। इन्हीं में से एक पादरी साहब ने आपसे पूछा 'आप ईसाई धर्म क्यों नहीं ग्रहण करते'? गांधी ने उत्तर दिया। "जब तक मैं अपने धर्म को भली भांति अवलोकन न करलूं तब तक मैं ईसाई मत की किताबें नहीं पढूंगा"। यहां पर लेखक को अपने विषय में ऐसी ही घटना जो तीन वर्ष पहिले हुई थी याद आती है। प्रायः ठीक यही शब्द एक अंग्रेज़ पादरी और इस क्षुद्र लेखक के बीच भी निकले थे। एक ईसाई छात्रालय के अध्यक्ष साहब ने पूछा था। 'तुम बाइबल क्यों नहीं पढ़ते' उसे यह उत्तर दिया गया था "जब तक मैं अपनी धर्म पुस्तकों को भली भांति न पढ़लूं तब तक मुझे दूसरे मत की किताबें देखना महापाप है" यह वाक्य सब हिन्दू युवकों को याद रखने चाहियें। जब तक अपने धर्म शास्त्रों का निरीक्षण न कर लिया जाय तब तक बाइबिल इत्यादि ईसाई मज़हब की किताब छुई भी न जायं। याद रहे कि हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म का सब से बड़ा शत्रु ईसाई मत ही है॥

थिओसोफ़ी (ब्रह्मविद्या) की गुरुघंटाल मैडम ब्लेवास्टकि से भी आपका परिचय लंदन में हुआ। उनके समाज में भी यह आया जाया करते थे, किन्तु इन पर उसका इतना ही प्रभाव पड़ा कि धार्मिक प्रश्नों के प्रति इनकी श्रद्धा बढ़ी। दो थिओसोफ़िस्ट भाइयों से इनको बहुत फायदा पहुंचा। उन्होंने गांधी को गीता पढ़ने के निमित्त उत्तेजित किया। उनके साथ इन्होंने गीता पढ़ना आरम्भ किया। गांधी को शरम मालूम होती थी कि संस्कृत जानने पर भी उसने गीता सरीखी अद्वितीय धर्म पुस्तक का अवलोकन अब तक नहीं किया था! वास्तव में हिन्दुओं के लिये इससे ज़्यादे शरम की बात और क्या हो सकती है जो वे अपनी राष्ट्रीय धर्म पुस्तक का पाठ न कर सकें। गीता के गूढ़ अर्थ को आप बछड़े की नाईं धर्म शास्त्र रूपी गाय के थनों से पीने लगे। इस गीता रूपी दूध का आपकी रग रग में संचार हो गया। गीता का जो प्रभाव उन पर पड़ा उसके विषय में गांधी कहते हैं कि "गीता ने मेरे सामने

मानों जीवन का नवीन परदा खोला। उसने मेरी आत्मा पर ऐसा प्रभाव डाला जैसा कि केवल भारतवासी ही के दिल पर पड़ सक्ता है अन्त में मुझे वह ज्योति मिली जिस की मुझे परम आवश्यकता थी"। तीन वर्ष में गांधी जी वारिष्टर बने और एक धार्मिक पुरुष भी बनकर १८९८ में घर लौट आये॥

(क्रमशः)

राष्ट्र की उन्नति में स्त्री का स्थान।

(श्रीमती रामप्रिया देवी, रायगढ़)

आज कल भारत में राजकीय अधिकार पाने की बड़ी पुकार है। मान लो कि कल हमें हमारे अधिकार सरकार से मिल जांय तो क्या केवल इस बात से हमारे देश का उद्धार हो जायगा। जब तक हम अपनी समाज के दोषों को अलग करने का प्रयत्न न करेंगे तब तक लाभ होने की संभावना नहीं दीखती। पहिले प्रत्येक मनुष्य का धर्म है कि वह अपने घर को सुधारे फिर शहर प्रदेश और अंत में देश आप ही सुधर जांयगे। आप अपने घर की बहिन बहू बेटियों को सुधारिये॥

राष्ट्र का जीवन शुद्धाचरण और मान इन्हीं पर निर्भर है। यदि आप चाहते हैं कि आप के पुत्र स्वदेश प्रेमी हों तो आप अपनी महिलाओं को सुशिक्षिता और सुगृहिणी बनाईये॥

अशिक्षित नारियां अपनी संतान के चित्त पर शुद्ध और उच्चभाव कभी अंकित नहीं कर सकतीं। उन्हें अविद्या रूपी अंधकार की कोठरी में बन्द रखकर मूर्ख बनाये रहना और फिर उन से बड़ी २ आशाऐं रखना निरी भूल है। देश के युवकों का जैसा आचरण होगा वैसा ही राष्ट्र का समझा जायगा। बालक

के आचरण का सुधार विगाड़ उन की जननियों के हाथ में है। यदि उनकी मातायें ही शिक्षित, उच्च हृदया और धर्म परायण न हुईं तो हमारे देश के युवकों में इन गुणो का होना दुर्लभ है। यदि हमारी इच्छा है कि फिर से हमारे देश में पूर्वकाल के समान देशप्रेमी वीर तथा नीतिकुशल पुरुष पैदा हो तो हमारी वहिनों को चाहिये कि वे पूर्वकाल के समान आदर्शशिक्षा प्राप्त करें॥

हमारे देश की नारियों में कई ऐसे स्वाभाविक गुण हैं जो कि दूसरे देशों की स्त्रियों को सीखने से भी नहीं आते हैं; जैसे—

(१) पातिव्रत धर्म—यह वात तो जगत प्रसिद्ध है कि इस धर्म में भारत की नारियां अद्वितीय हैं। उन का प्रेम इतना निष्कपट स्वार्थहीन होता है कि वे अपने पति के निमित्त प्राण तक निछावर कर देती हैं। वे अपने स्वामी के हित और प्रसन्नता को सर्वोपरि समझती हैं।

(२) अपनी संतान पर प्रेम—इस देश की स्त्रियां अपनी संतान पर वहुत प्रेम करती हैं। जप, तप, व्रत इत्यादिक कार्य संतान कल्याण के अर्थ करती हैं उन के हित के लिये अपने क्लेश को तुच्छ समझती हैं।

(३) गृहस्थी कार्यों पर ध्यान—राजा से लेकर रंक तक की स्त्रियां वड़ी उद्यमी होती हैं। अपने घर के काम काज अपने हाथों से करना पसंद करती हैं। केवल नौकर चाकरों के भरोसे नहीं रहतीं।

(४) दीन दुःखियों पर दया—उन के द्वार से कोई भूखा, प्यासा, वस्त्रहीन अनाथ खाली नहीं जाने पाता, वे उन्हें शक्ति अनुसार कुछ न कुछ देती ही हैं।

(५) मधुर भाषण और सुशीलता—ये गुण भारत नारियों के आभूषण हैं। तुलसीदास जी कहते हैं—

दोहा—"तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजत चहुं ओर।
वशी करण एक मंत्र है, परिहरु वचन कठोर"॥

उन के कुछ दोष भी हैं। जैसे—

(१) अज्ञानता—आजकल स्त्रियों में अज्ञानता के कारण अनेक दोष विद्यमान हैं। उन से अपना समय कादे नहीं कटता। उन्हें इस दोष को हटाने का प्रयत्न करना चाहियें, ऐसा करने से उन की प्रतिष्ठता और उनका मान बढ़ेगा।

(२) अपने बालकों को यथोचित शिक्षा देने में असमर्थता॥

बालकों के आचरण का सुधार बिगाड़ माता पर अवलम्बित है। सुशिक्षिता माता की संतान उत्तम गुण शीघ्र ग्रहण कर सकती हैं। माता से बढ़कर संतान के लिये दूसरा शिक्षक नहीं, वे चतुराई से अपने बच्चों को क्रोध, ईर्षा, कपट, हठ इत्यादि से बचाकर शील, संतोष, चतुराई और नम्रतादिक गुणों का उपदेश कर सकती हैं॥

बचपन में जो बुरी आदत पड़ जाती है वह बड़े होने पर कदापि नहीं छूटती सत्य है—

दोहा—"हरे वृक्ष की ज्यों छड़ी, मनमानी लचजाय।
सूखे पर नहीं लचत है, कोटिन करो उपाय॥

हम बहुधा देखते हैं कि मूर्ख नारियां अपने बच्चों को भूत पिशाचादिक से डरवाया करती हैं। ऐसी बातों से बालक डर-पोक हो जाते हैं। कई स्त्रियों में यह दोष होता है कि वे अपने लड़के लड़कियों को अपने सामने अश्लील शब्द बकने देती हैं। कई तो उन की तोतली गाली सुनकर बहुत प्रसन्न होकर कहती हैं "हमारा बच्चा बोलने लगा" बुद्धिमान माता अपने बच्चे को बिना डरवाये उन के चित्त पर अपने सदुपदेश का प्रभाव डालकर उन्हें आज्ञाकारी और सुशील बनाकर यश की भागी बनती हैं। मूर्ख स्त्री अपने पति को किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकती प्रथम तो वह विचारी अपढ़ है, दूसरे संसार के अनुभवों से अपरिचित है, ऐसी दशा में वह घर के काम काज सिवाय अच्छे कामों में कैसे सहायक होगी? "मेंडक की दौड़ बाड़ी तक" की कहावत प्रसिद्ध है। यदि मेंडक बाड़ी के बाहर न कूद सके तो उस में भला उस विचारे को क्या दोष॥

दोषों की औषधि—अपने पति के महत् कार्यों में सहायक होना स्त्री का महान धर्म है। बिना स्त्री शिक्षा के यह कार्य

असंभव है। हमारे पुराने इतिहास से स्पष्ट है कि प्राचीन काल में कैसी २ विदुषी नारियां हो गई हैं गार्गी, सावित्री को कौन नहीं जानता। कल्याणदेवी के लेख अब तक प्रसिद्ध हैं। लीलावती ने गणित और तर्क शास्त्र में नाम कमाया। याज्ञवल्क्य की स्त्री ने अपने स्वामी से दर्शनशास्त्र सीखा। दुर्गावती और लक्ष्मीबाई ने युद्धस्थल में अपने वीरत्व का परिचय देकर अमर पद प्राप्त किया। खेद का विषय है कि अब भारत में ऐसी नारियों का अभाव है। स्त्री शिक्षा के विरोधियों का कथन है कि स्त्री शिक्षा से अधिक लाभ नहीं; वे कहते हैं कि स्त्रियों को विद्या से क्या प्रयोजन, क्या वे मुन्शी, वकील बनकर कचहरी में लड़ने जावेंगी ?

यदि विद्या प्राप्त करके रुपया पैसा कमाने से केवल प्रयोजन है तो यह विद्या के उच्चभावों की निंदा करना है। विद्या उपार्जन का मुख्य अभिप्राय केवल आर्थिक लाभ नहीं है ज्ञान का पारितोषिक ज्ञान है। ईश्वर ने अपनी सृष्टि में मनुष्य को सर्वोपरि बनाकर उसमें अनेक गुण और ज्ञान प्राप्त करने की अनुपम शक्ति दी है, चाहे स्त्री हो या पुरुष, बालक हो या बालिका। सुशिक्षा सबको अति आवश्यक है। कुछ विरोधी कहते हैं, कि स्त्री शिक्षा से स्त्रियों को गृहस्थी के काम काजों में बाधा पड़ती है। इसमें कोई संदेह नहीं, कि गृहस्थी के काम काजों में बाधा पड़ती है। इसमें कोई संदेह नहीं, कि गृहस्थिनी का पहिला काम गृहस्थ से है। परन्तु शिक्षिता नारी अशिक्षित स्त्री की अपेक्षा अपने काम अधिक शीघ्रता और सुगमता से कर लेगी, और अपना बचा हुआ समय अपने बच्चों के पढ़ाने सिखाने में लगा सकती है। बालकों को बचपन से अच्छी शिक्षा दी जावे तो वह अधिक लाभकारी होंगे। माता के सिवाय कोई दूसरा इस प्रकार की शिक्षा नहीं दे सकता। अशिक्षित नारियां अपना समय व्यर्थ लड़ाई झगड़े में खर्च करती हैं। उनकी बात चीत बिलकुल सामान्य होती हैं। सुशिक्षिता अपने गृहस्थी के प्रबन्ध और अपने स्वास्थ्य पर यथोचित ध्यान देती हैं। उनके रहन

सहने और बोल चाल का सब जगह आदर होता है, कहा भी है—

दोहा—"मुख श्रवण दृग नासिका, सब ही के इक ठौर।
कहबो सुनबो देखबो, चतुरन को कछु और" ॥

कुछ सज्जन कहते हैं कि स्त्रियों को पढ़ाना और बन्दर के हाथ में छुरी देना दोनों समान हैं। उत्तर में ऐसे सज्जनों से निवेदन है कि वे कृपया अपने पैर छुरी से काट डालें, नहीं तो कदाचित वे एक दिन पैर रहते खाई में न गिर पड़ें। जब पैर ही न रहेंगे तो खाई में न गिरेंगे !

फ्रांस देश के एम० पालबर्ट नाम के विद्वान ने सत्य कहा है "एक लड़के को पढ़ाने से एक ही व्यक्ति शिक्षित कर सक्ता है, परन्तु एक लड़की को पढ़ाने से एक शिक्षित कुटुम्ब बनता है।"

विद्या से जितने लाभ पुरुषों को होते हैं उतने ही स्त्रियों को हो सकते हैं। दोनों के विद्वान होने से उनके मानसिक विचारों में बहुत कम अन्तर रह जायगा। मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि स्त्रियां भी अपने पति के समान ग्रेजुएट हों। वर्तमान स्थिति में ऐसा होना कठिन है। शिक्षित स्त्री अपने पति के विचारों को समझ सकती है और उन्हीं के अनुसार अपने स्वामी के मार्ग पर चलने का प्रयत्न कर सकती है ॥

जब स्त्री अपने पति के अनुसार कार्य्य करेगी तब उनमें परस्पर कभी लड़ाई न होगी। लड़ाई न होने से घर में आनन्द से वास करेगी, आनन्द के वास से दोनों प्रसन्न रहेंगे, और प्रसन्नता से गृहस्थ की गाड़ी संसार के मार्ग पर सुगमता से चलेगी। ऐसे स्थान में लक्ष्मी जी निवास करती हैं। और जहां सुख और सम्पदा है वहां किस बात की कमी है ऐसे स्त्री पुरुष को इस पृथ्वी के ऊपर स्वर्ग है। यही ईश्वर के नियम हैं, इनके पालक परमपद के अधिकारी हैं ॥

हमारे धर्मशास्त्रों में स्त्रियां पुरुषों की अर्धाङ्गिनी मानी गई हैं। यदि पढ़े लिखे पुरुष की पत्नी अपढ़ तो उसके शरीर का आधा भाग सड़े मुर्दे के समान है। आधे शरीर से मनुष्य कुछ

नहीं कर सकता। यदि उनके पति और भाई शिक्षित हैं, तो उन्हें अवश्य शिक्षित होना चाहिये। ईश्वर ने विवाह वह वस्तु बनाई है जिससे मनुष्य की पूरी २ उन्नति हो, और उसको अपने सब गुण और पुरुषार्थ दिखाने का अवसर मिले॥

अब सोने का समय नहीं है, संसार के अन्य देश तो उन्नति कर रहे हैं और हम नींद के खर्राटे भर रहे हैं। नारियों के बन्धन तोड़िये। नहीं तो कुछ दिन में इन के स्वाभाविक उत्तम गुणों का लोप हो जायगा। प्रकृति का नियम है कि स्वतंत्र जाति बहुत बढ़ते हैं और परतंत्र शीघ्र घटते हैं यहां तक कि एक दिन उनका नाश हो जाता है यदि भारतवासी अपने राष्ट्र और जाति को महान बनाने की इच्छा रखते हैं तो उनको उचित है कि प्रथम वे अपनी स्त्री जाति को इस हीन दशा से उभारें॥

दान ।

गत मास के स्त्री दर्पण में हम लिख चुकी हैं कि हमारे देश में की सब मर्य्यादा सस्ते समय की हैं जिनको निवाहे जाने से हमें बहुत हानि होती है । ऐसी रीतियों में से एक अर्थात अपने हानि दानि की रीति की बुराइयां हम इस बार दर्शाती हैं । आशा है कि हमारे पाठकवृन्द इस ओर ध्यान देंगे और अपनी २ सम्मति इस विषय पर लिखकर भेजेंगे ॥

हमारे देश में जहां और सहस्रों रीतियां बदलने के योग हैं वहां एक दान की रीति भी है होने को तो हमारे यहां सैकड़ों हज़ारों का दान होता है परन्तु कुछ इस प्रथा से होता है कि लाभ के बदले हानि होती है । दान का तात्पर्य यह है कि मनुष्य से जहां तक हो सके अन्य पुरुष की सहायता करने का यत्न करे परन्तु सहायता करते समय इस बात का ध्यान कर लेना उचित है कि जिस मनुष्य की हम सहायता कर रहे हैं वह इस का पात्र है कि नहीं । प्रायः हमारे देश की स्त्रियां इस रीति पर दान करती हैं कि जिस की जैसी शक्ति हो अपनी श्रद्धा के अनुसार ब्रह्मभोज किया, मन्दिर में चढ़ाया, गंगाजी पर वहां के पंडों को दिया, कन्याओं को भोजन करवाया । सहस्रों रुपये खर्च करते हैं मगर यथायोग पुरुषों के अंश में एक पैसा भी नहीं जाता बहुधा दान लेनेवाले बहुधा ब्राह्मण ही होते हैं कि जिन की सिवाय दान लेने के और किसी प्रकार की जीविका नहीं होती । इसी प्रयागराज में सहस्रों पंडों के घर हैं जिनका जीवन केवल दान ही पर है यदि कुल भारतवर्ष के मनुष्यों की संख्या ली जाय तो विदित होगा कि उन में से कितने पुरुष काम काज करनेवाले हैं और कितने मनुष्य केवल दान पर ही जीवन व्यतीत करते हैं, एक बड़ा अंश भारतवर्ष का नष्ट हो रहा है और परिश्रमी पुरुषों की कमाई पर जीवन व्यतीत कर रहा है । सहस्रों ब्राह्मण, पुजारी, पंडे, साधु वा मंगते ऐसे हैं कि जिन्हें इसी दान की रीति ने बाल्यावस्था से ही आलसी बना रखा है । उनका विचार यह हो गया है कि हमारे देश के लोगों का

यह धर्म है कि हमारा पालन पोषण करें। अपने पालन पोषण के निमित्त सरल चित्तवाली स्त्रियों को विविध प्रकार की बात सुनाकर उन से मनोच्छित द्रव्य लूटते हैं और उन के परिश्रमी पुरुषों की कमाई को अपने स्वार्थ में लगाते हैं॥

हर देश के मनुष्य तीन चार प्रकार से धन उपार्जन करते हैं। एक ज़रिया धन उपार्जन करने का यह है कि उस देश के रहनेवालोंका परिश्रम है। जब कि देशवासियों का अधिकांश भाग बेकार बैठा रहता है और परिश्रमी मनुष्यों का उपार्जन किया हुआ धन कायर निकम्मे मनुष्य अपने स्वार्थ में लगाते हैं तो भला ऐसा देश कब उन्नति को प्राप्त कर सक्ता है॥

साधु ब्राह्मण पंडों के सिवा और कई प्रकार के मंगते भांति भांति की बोलियां बोलते हुए भारतवर्ष के हर शहर के गली कूंचों में दिखाई देते हैं और यह नीच निर्लज कार्य अपने बालकों को भी बाल्यावस्था ही से सिखाते हैं। यदि आप किसी तीर्थ स्थान पर जायें तो आप को विदित होगा कि यह छोटे २ बालक बल पूर्वक गाड़ियों के पीछे दौड़ते हैं और हर एक आदमी को पैसा देने के लिये मजबूर करते हैं। यदि उन से यह कहा जाय कि तुम लोग कोई और कार्य करो तो वह करने पर तैयार नहीं होते और कठिन से कठिन रीति से भीख मांगते हैं ये लोग भीख मांगने को अपना मुख्य कार्य समझते हैं। मंगताओं में कुछ ऐसे कुल के हैं कि उनके हां भीख मांगने की प्रथा पूर्वजही से चली आती है। मांग २ कर भली भांति धन जमाकर लेते हैं परन्तु मांगने की रीति को नहीं त्यागते हमारे भारतवासी कुछ ऐसे सरल चित्त के होते हैं कि देते चले जाते हैं। देनेवालों में से बहुतेरे मांगनेवालों से अधिकतर ग़रीब होते हैं फिर भी देते हैं॥

दान को हमारे धर्म में अथवा अन्य जातियों के धर्म में बहुत उत्तम माना गया है और जो कुछ पदवी उस को दी गई है यथार्थ में ठीक भी है क्योंकि जैसा कि मैं ऊपर लिख आई हूं दान देने का असल तात्पर्य यह है कि दीनों की सहायता की जाय। सच्चा दान वही है कि जो बिला इस मतलब के दिया जाय कि इसका फल हमें इस जन्म या अगले में मिलेगा। ऐसी इच्छा

से दान करनेवाले दान के असल तत्व को नहीं पहुंचते और इसी कारण उनका दान सदा निष्फल होता है ॥

दान सच्चे मन से होना चाहिये और उसके करने का केवल एक ही कारण अर्थात मनुष्य मात्र के साथ सहानुभूति करना होना चाहिये। जब कभी और जहां कहीं दान केवल मनुष्य की सहायता के लिये किया जाता है कभी निष्फल नहीं जाता। यही एक गुण अर्थात दूसरों के दुःख दूर करने का यत्न करना मनुष्य मात्र में ऐसा है कि जो हमारे विचार में सब गुणों से बढ़कर है। जिस मनुष्य में सहानुभूति नहीं वह मनुष्य नहीं। इसलिये दान करना हर मनुष्य का मुख्य धर्म है। और इसी मुख्य धर्म को चुकाने के लिये मनुष्य जि प्रकार उससे हो सके दान करता है। भारतवासियों के दान अनुचित रीति पर करने का एक कारण तो पहिले बताया जा चुका है अर्थात उनकी यह इच्छा कि हमें उसका फल मिले और दूसरा कारण यह है कि बहुत काल से दान करने की कोई उत्तम रीति नहीं दीख पड़ती थी ॥

इंगलिस्तान में दीन दुःखियों के लिये दीनालय बने हुये हैं जिनका व्यय इंगलिस्तान के हर मनुष्य से उसकी हैसियत के अनुसार सरकार लेती है। इस रीति से हर मनुष्य के हाथ से कुछ न कुछ दान होही जाता है और सहस्त्रों दीन भी पल जाते हैं। यद्यपि इस प्रबन्ध से यह नहीं हुआ कि इंगलिस्तान में दीन न हों या यह कि वहां का यह प्रबन्ध दोष से खाली हो तथापि यह ऐसे दान से बहुत अच्छा है कि जिससे देश की उलटी हानि हो। बहुधा यह वहां भी सुनने में आता है कि जो मनुष्य मान हैं वह दीनालय में जाना स्वीकार नहीं करते हैं और किसी दीनालय में जाने की अपेक्षा सरदी और भूख का दुःख उठाना ज़्यादा उत्तम जानते हैं। यह हो सकता है कि यदि हमारे यहां भी दीनालय खोले जावें तो कुछ दिन के बाद वही बातें यहां भी होने लगें जो वहां होती हैं। परन्तु इस समय अगर यहां के लोग दीनालय में आना अंगीकार न करेंगे तो केवल इस कारण कि उन्हें कुछ भीख ही मांगकर खाना अच्छा लगता है न इस कारण कि

वह वहां जाने में अपना अपमान जानते हैं। इन मोहताजों के सिवा जो रुपया यहां पुजारियों और ब्राह्मणों को देकर नष्ट करते हैं वह अगर देश की उन बहुत सी आवश्यकताओं को पूरा करने में खर्च किया जावे कि जो द्रव्य की कमी से पूरी नहीं हो सकतीं तो कितना लाभ देश को हो। एक तो देश के उन मनुष्यों को रुपया पैदा करने की इच्छा से और अपना पेट पालने की ज़रूरत से कुछ काम करने का अभ्यास पड़े कि जो इस समय बेकाम बैठे हैं और उन जीवधारियों की तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं जो अपनी खाद्य पदार्थ दूसरे जीवधारियों के रुधिर और चर्म से पैदा करते हैं दूसरे यह रुपया जो उन से बचे उन कार्यों में लगे जो देश के लिये लाभदायक हों दीन दुखिया केवल मनुष्य ही नहीं होते जातियां भी बहुधा इस दशा में होती हैं। जैसे दीन दुखिया मनुष्यों की सहायता करना हमारा धर्म है वैसे अपने देश और अपनी जाति की आवश्यकताओं को पूरा करना भी हमारा धर्म है किसी भूखे को रोटी खिला देना या किसी दीन को शरद ऋतु में वस्त्र दे देना किसी पाठशाला के बनने में सहायता देने से या किसी दीनालय में चन्दा देने से ज़्यादा अच्छा काम नहीं है। आवश्यकतायें कि जिनको जाति या देश की आवश्यकताएं कहा जाता है प्रत्यक्ष ऐसी दुःखदायक नहीं जान पड़तीं कि जैसी किसी एक मनुष्य की आवश्यकता जान पड़ती है और इसी कारण लोग किसी एक आदमी की आवश्यकता को पूरा करने की ओर अधिक ध्यान देते हैं। जब कभी कोई नया काम कुछ हिम्मतवाले आदमी मिलकर करना आरम्भ करते हैं तो उनकी यही शिकायत होती है कि हम आशा के अनुसार कार्य सिद्ध नहीं कर सके, इस कारण कि लोगों को यथा उचित सहानुभूति हमारे और हमारे कार्य के साथ नहीं थी॥

यूरुप और अमरीका के लोग दान करने के लिये प्रसिद्ध हैं जिसका कारण कुछ तो यह है कि लोग धनवान हैं और कुछ यह कि वह दान करना जानते हैं। वह रुपया उठाकर यह सोचकर फेंक नहीं देते कि हमें तो इसका अच्छा फल अगले जन्म में मिलेगा हमें इससे क्या कि लेनेवाला इस दान

का पात्र है या नहीं। यहां हिन्दुस्तान में अकसर जब चन्दा जमा करने की ज़रूरत पड़ी तो बहुतेरा रुपया यूरुप और अमरीका से लाया गया। पण्डिताबाई को जब अपने विधवा-शालय के लिये रुपया की ज़रूरत हुई तो सीधी इङ्गलिस्तान अमरीका पहुंची और वहां की हमदर्द स्त्रियों से रुपया लेकर आई। इज़ाबिलाथोबर्न को हिन्दुस्तानी स्त्रियों के लिये कालिज बनाने के प्रयोजन से रुपये की ज़रूरत पड़ी तो सिवाय अमरीका जाने के और कुछ न जान पड़ा। हमने बहुधा उन ख़ैराती अस्पतालों को देखा है कि जो कनेडा और संयुक्त प्रदेश अमरीका की उन प्रतिष्ठित और दयालु दिल स्त्रियों के दान से बने हैं। कि जिन्हों ने कभी भारतवर्ष का किनारा भी नहीं देखा था। उन अस्पतालों में सैकड़ों ग़रीब स्त्रियां और पुरुष इलाज के लिये आते हैं और सख़्त से सख़्त रोगों से अच्छे होकर जाते हैं। अंधे आदमियों की आंखें बनवा दी जाती हैं। सहस्रों आदमी तरह २ के रोगों से दुख उठाते हुए आते हैं और उन दवाख़ानों से आराम पाकर जाते हैं। धन्य हैं वह साहसी स्त्रियां कि जिनके कोमल हृदयों पर हिन्दुस्तान के निवासियों के दुखों का भाव ऐसा पड़ा कि उन्होंने उनको दूर करने का यत्न सैकड़ों मील की दूरी से किया। इसकी अपेक्षा हमारे देशकी स्त्रियों को ५) भी किसी अच्छे २ काम के चन्दे में देना अच्छा नहीं लगता क्योंकि चन्दा देते हुए उनको यह निश्चय नहीं होता कि इसका फल हमें इस या अगले जन्म में मिलेगा। कैसे शोक की बात है कि दान जैसे परोपकारी कार्य में स्वार्थ को भाग देकर हम ने नीचे और देश हानिक कार्य बना रखा है॥

यदि हम थोड़ी देर के लिये अपने देश की ओर देखें तो हमें मालूम हो कि दान करनेवालों के लिये यहां कितने द्वार खुले हैं। बालकों के लिये पाठशालाएं खोलने की, कालिजों की, बड़े नगरों में पुस्तकालय बनाने की, औषधालय, की, दीनालय और विधवाश्रम की ज़रूरत है। लड़के लड़कियों को पढ़ने का शौक दिलाने के लिये इनाम देने की, वज़ीफ़ा मुकर्रर करने की, और किस २ वस्तु का नाम लिखाऊं हमारे देश की तो यह दशा है कि आदि से अंत तक हर चीज़ की ज़रूरत है। इन आवश्य-

कताओं को पूरा करने में हम वही आसानी से अपनी २ शक्ति के अनुसार मदद दे सकती हैं यदि हम अपने दान की रीति बदल दें। थोड़ा २ इकट्ठा करने से बहुत हो जाता है। एक २ करके सहस्रों हो जाते हैं हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि हमारे एक के किये से क्या होगा यदि हर आदमी अलग २ यह विचार करता रहे कि हमारे करने से क्या होगा तो दुनियां में कभी कोई काम न हो। बुराई भी देश में एक ही एक करके फैलती है और भलाई भी। हम में से हर एक यदि यह प्रतिज्ञा करते कि हम से जहां तक हो सकेगा हम अपनी बुरी रीतियों को बदलेंगे तो बहुत जल्दी वह सब रीतियां बदल जावें कि जिनके लिये बरसों से यत्न हो रहा है॥

विद्या का परिणाम।

(श्रीयुत आयोध्या प्रसाद वांट्र)

आगरा देश में साधूराम के कूंचे के चौराहे पर एक महा विद्वान् पुरुष बाबू विद्याभूषण मुख्योपाध्याय नामक रहा करते थे जो कि एक उच्च श्रेणी के पुरुष थे, बीस वर्ष की अवस्था ही में आपने एम्. ए. पास करने के चार पांच मांस उपरांत ही आपको एक पाठशाला में अध्यापकी की पदवी १००) मासिक की मिल गई। कुछ काल गये अकस्मात् आप पर बड़ा दैवी कोप प्रगट हुआ कि जिस कारण आप माता रहित हो गये। जाति बान्धवों व पिता के आग्रह से आपने गृहस्थाश्रम को अंगीकार किया। मथुरा निवासी मोहनी मोहन बन्ध्योपाध्याय की चिरंजीवि कन्या चन्द्रकला से संबंध हुआ। चन्द्रकला को भी ईश्वरेच्छा से विद्या के उपार्जन में बड़ा अनुराग था। यदा कदा वह स्वामी से विद्या संबंधी वार्त्ताएं विशेष किया करती थीं। परन्तु अंग्रेजी व संस्कृत भाषा को नित्य पढ़ा करती थीं। वास्तव में श्रीमती की बुद्धि इतनी तीव्र थी कि तीन चार वर्ष के अन्तर ही में वह दोनों

भाषाओं में बातचीत करने लगीं। थोड़ा काल जाने पर एक पुत्र अति स्वरूपमान् भी हुआ, जिसका शशिभूषण यह नाम करण किया। महाशय के पिता बड़े ही साधु पुरुष थे। अहर्निश उनका भगवत भजन ही में व्यतीत होता था आपकी अवस्था भी ६०; ६५ के निकट थी। बाबू साहब तथा श्रीमती भी उनका इतना मान व सेवा करती थीं कि किसी प्रकार से उनको इस अवस्था का कष्ट नहीं उठाना पड़ता था। एक दिन बाबू साहब के पिता जिनका समाचार कालीचरण मुख्योपाध्याय के नाम से आगे वर्णन किया जायगा श्रीमती यमुना जी के स्नान के लिये ब्रह्म मुहूर्त्त में उठकर चले। यमुना तट पर आपने पहुंचकर धोती वस्त्रादि को स्थापन कर, दंत धावनादि कर्म करना प्रारंभ किया। महाशय में भक्ति का अंश तो था ही आप भजन प्रभाती का गान करते २ महाराणी में प्रविष्ट हुए, अकस्मात् एक कच्छप पर जो चरण पड़ा तो उछल पड़े। काल तो बड़े ही एक अजय पदार्थ का नाम है, अवस्था के धर्म ने आकर और जो उसका साथ दिया तो जल ही में उसने इनसे युद्ध प्रारंभ कर दिया। कहां तो विचारे प्रभाती गा रहे थे कहां जल के झकोरों से मिलकर विलाप करने लगे। दो चार शब्द ही मुख से उच्चारण किये होंगे कि काल रूपी वीचियों ने परमधाम यात्रा का मार्ग बता दिया। इधर जब इनकी यह दशा हो रही थी उसी समय एक रामनाथ नामक श्रेष्ठी जिसकी दूकान कोतवाली के पास है चले आ रहे थे कुछ दूर से एक दो शब्द जो इनके कर्णगोचर हुए तो चकित होकर नदी की तरफ़ शीघ्रता से बढ़े। परन्तु तट पर पहुंचकर कुछ न ज्ञात हुआ, थोड़ी देर इधर उधर भ्रमण करने उपरांत चित्त में शंका करने लगे कि जो शब्द कि मेरे कर्ण गोचर हुए निस्सन्देह मेरे प्रेमी बा० विद्याभूषण के पिता के कंठ से निकले हुए थे। परन्तु क्या कारण है कि उनके दर्शन नहीं होते। ज्ञात होता है कि इस अथाह जल द्वारा इस असार संसार का परित्याग कर परलोक सिधारे व जो शब्द सुने थे यह अन्त समय के पद थे। दैवेच्छा, काल बड़ा बली है इसी प्रकार कहते हुए उसी स्थान पर पहुंचे जहां कि स्वर्ग-वासी की धोती व अंगोछा रखा हुआ था। उसको वहीं देख

कर पूर्ण विश्वास हो गया क्योंकि उस पर उनका नाम लिखा था। इस बीच में प्रभात तो हो गया ही था सूर्यदेव ने अपनी ज्योति से सारे जगत में प्रकाश कर दिया और भी भक्त जन जो सदैव स्नानार्थ आया करते थे एकत्रित हुए। समाचार सब को विदित हुआ। उनमें से एक राधारमण नामक द्विज पुत्र जो बाबू साहब का गृह जानता था इस घटना की सूचना देने चला और उचित स्थान पर पहुंचकर आवाज़ दे रामटहल ने बाहर आकर कहा मालिक पूजन पर हैं कुशलता है तुम्हारी चेष्टा से तो किसी बड़ी आपत्ति के आगमन का भय परिज्ञात होता है, ईश्वर कुशल करें। शीघ्र कहो, विलम्ब क्यों करते हो" इतना श्रवण कर राधारमण ने गद्गद्वाणी से कहा कि "नमस्कार कहने के उपरांत बाबू साहब से कहना कि आपके जनक की वैकुंठ यात्रा आज यमुना जी द्वारा हुई"। इतना सुनते ही रामटहल ने जल्दी जो भीतर यथावत् कह सुनाया। इस समय उन दोनों पर जो कष्ट हुआ होगा हर एक गृहस्थ मात्र को विदित है, अतएव लिखना व्यर्थ समझा। विद्याभूषण पूजन छोड़ तत्क्षण ही उन द्वारस्थमहाशय के सहित यमुना मार्ग पर विचरने लगे। तट पर जहां सब एकत्र मनुष्यों की पंक्ति विद्यमान थी पहुंच आपने संपूर्ण वृत्तान्त आद्योपांत रामनाथजी के द्वारा श्रवण किया। समाचार को सुनते समय आपकी अश्रुधारा से प्रतीत होता था कि वास्तव प्रेम व शोक का भी मार्ग कठिन है। चिरकाल के उपरांत आप और २ तटस्थ महोदयों के आग्रह से गृह के जाने में कटिबद्ध हुए। आचार्य पुरोहितों के मतानुकूल दाह क्रियादिकृत्य यथा विधि समाप्त किया। जाति मर्यादा के पालन से क्रिया कर्म के दिवसों में जो भोजन इत्यादि नित्य नियमों का पालन पूर्व प्रक्रिया के अनुकूल नहीं हुआ अतएव बाबू साहब को अजीर्ण रोग के पंजे में फसना पड़ा, जिससे कि यकृत् क्रिया में भी अन्तर पड़ गया व देह क्षीण होने लगी, इस रोग के विषय में आपने अच्छे २ बुद्धिमान चिकित्सकों से परामर्शकर यथा विधि चिकित्सा कराई पर भाग्य के वश से आरोग्यता न पाई किसी महापुरुष ने सत्य लिखा है "भाग्य फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषं" भोजन के यथा विधि परिपाक न होने से देह प्रतिदिन

निर्बल होती चली जिस कारण जीवि कास भी हताश होना पड़ा श्रीमती ने इस दशा को अवलोकन कर स्वामी से विनय की कि यहां से दूसरे ही देश में चलकर वास करना योग्य परिज्ञात होता है इस देश के वासी चिकित्सकों से भी निराश हुए व्याधिने अपना पूर्ण स्वरूप धारण प्रारंभ कर दिया अतएव देहली नगर में यदि आपकी भी सम्मति हो तो चलकर वास करें या किसी सुवैद्य द्वारा आप की चिकित्सा प्रारंभ करें नारायण ने चाहा तो सफल मनोर्थ अवश्य होगा प्रिया की इस सम्मति पर बाबू साहब का भी विचार आरुढ हुआ व जिस प्रकार हो सका स्वसाद उपरान्त वहां से चल दिये यहां पहुँच आपने एक स्थान सीता-राम के बाज़ार में ४) मासिक पर ले निवास कर पण्डित सुधा करजी वैद्य द्वारा चिकित्सा प्रारंभ कराई दो तीन मास के उपरान्त आपको स्वास्थ्य प्राप्त हुआ परन्तु निर्बलता इस प्रकार की होगई थी कि गृह से बाहर चलने फिरने में असमर्थ थे कई मास से जीवि का से तो रहित थे ही और व्यय की अधि-कता हो ही रही थी इस कारण और भी बड़े संकोच में रहा करते थे। चन्द्रकला ने एक समय पति को उदासीनता में बैठे देख बड़ी आधीनता के सहित प्रश्न किया कि स्वामी आप उदास क्यों हैं इस वचन को श्रवण कर उत्तर दिया कि प्रिये रात्रि दिन में इस चिन्ता में निमग्न रहता हूं कि जब से परलोक गामी पिताजी का शरीर मोद हुआ है केवल व्यय के आप की स्वप्न में भी आशा न हुई और शरीर इस प्रकार का निर्बल हो गया है कि कार्य के करने में असमर्थ हैं विचारे बालक की यह दशा है कि जो अवस्था उस के सुख करने की हैं वह दुःख में कटरही है तुम्हारी इस दशा को देखने से जो कुदशा हो रही है वह अकथनीय है इन्हीं सब विचारों में निरन्तर मग्न हो रहा हूं भगवत ही का एक मात्र आधार हैं अधिक क्या कहूं। प्रियतम के ऐसे दुःखिद वचनों को श्रवण कर इस साध्वी का भी चित्त भर आया और गद्गद्वाणी से विनय पूर्वक पति से बोली "प्राणनाथ धैर्य धारिये दुःख में धैर्य ही एक मात्र प्राणका आधार है ईश्वर सर्वशक्तिमान से प्रतिदिन शुभ ही की आशा रखनी योग्य है देखिये कवियों ने लिखा है। "विपदि धैर्य-माथाभ्युदयेक्षमा" इत्यादि इस असार संसार में किसी जीव का भी एकसा काल नहीं व्यतीत हुआ, परन्तु ईश्वर का

स्मरण सुख से अधिक दुःख में मनुष्य करते हैं जिससे कि दीनानाथ शीघ्र उनका दुःख दूर करते हैं अतएव उस ही भक्त हितकारी सर्वव्यापी का स्मरण करना चाहिये और उद्योग करना चाहिये जीविका के लिये, क्योंकि " उद्योगिनं पुरुष सिंह मुपैति लक्ष्मी " ऐसा ग्रंथकारों का वाक्य है चन्द्रकला इसी प्रकार के वचनों से पति को धैर्य व संतोष दिला मौन हो गई व अपने नित्य के कार्य में आरूढ़ हुई, इस पतिव्रता के निकट के ही दूसरे स्थान में पं० वेणीमाधव नामक एक सुपात्र महा विद्वान पुरुष रहा करते थे जिनका कि मान इस नगर के बड़े २ धनाढ्य व विद्वान किया करते थे, इन की स्त्री महा चतुर गुण रूप संपन्न अति योग्य थीं करुणा की तो मानो यह एक अंश ही थीं, चन्द्रकला को यह सखी अधिक प्यारी थी व वह भी इसकी बुद्धिमता को देखकर इस से अधिक प्रसन्न रहा करती थी, एक दिन गृह के कार्य से छुट्टी थी चन्द्रकला अपने योग्य पति से आज्ञा ले उस माननीय के स्थान पर गई उस ने इसको देखकर बड़े आदर से आसन दिया व कुशल प्रश्न करने के अनन्तर दोनों ने आपस में वार्त्तालाप आरंभ की पं० वेणी माधव भी उस समय गृही में विद्यमान थे चन्द्रकला की वाक्शक्ति को श्रवण कर बड़े प्रसन्न हुए और विचारने लगे कि यदि यह स्त्री वा० सुरेन्द्रनाथ जी के स्थापित कन्या पाठशाला में नियत हो जाय तो वास्तव में यह वहां का प्रबन्ध प्रवीनता व बुद्धिमता से अति सुंदरता से करे कुछ काल के उपरान्त चन्द्रकला पं० जी की स्त्री से जिनका नाम "सुशीला" था विदा हो अपने स्थान पर आई उस के जाने के अनन्तर संकल्प गृहिणी के प्रति कह सुनाया, जिसके श्रवण करते ही सुशीला अत्यंत प्रसन्न हुई, दो चार दिवस व्यतीत होने पर पं० महादेव ने अपना मनोरथ पूर्ण करने के लिये गृह से प्रस्थान किया व जो पाठशाला के यावत कार्यकर्त्ता थे उन सब सज्जनों से इस विषय परामर्श कर सुफलता प्राप्त की, तत्पश्चात् उन सब से विदा हो घर आ इस शुभ समाचार को कह सुनायां और कहा तुम चन्द्रकला से कहो कि वह पति से आज्ञा मांगे इस कार्य पर नियत होने के लिये मैं भी बाबू विद्याभूषण से इस विषय में कहूंगा, सुशीला तत्क्षण ही चन्द्रकला के स्थान पर गई व

संपूर्ण समाचार आद्योपान्त कह सुनाया पश्चात यह भी कहा कि वहिन पं० यह भी कहते थे कि अभी तो २०) मासिक ही मिलेगा परन्तु तुम्हारे कार्य को देखकर और अधिक की भी आशा है, इस प्रीति भरे आनन्ददायी समाचार को श्रवण कर चन्द्रकला ने जितना कि ईश्वर का व उन दोनों परोपकारियों को धन्यवाद दिया उसके लिखने की सामर्थ्य लेखनी में नहीं। तदनन्तर पूज्य पति से इस शुभ समाचार को कहा व आज्ञा इस के उत्तर की मांगी, बा० विद्याभूषण ने इस समाचार को जैसे ही सुना अति हर्षित हो उत्तर दिया, प्रिये मैं प्रथम उस जगदीश को धन्यवाद देता हूं कि जिसने इस संसार सागर में डूबते हुये हम निराश जीवों को कृपा रूपी तरणी में बैठा काल ग्रह रूपा से बचाया, इसके साथ ही पं० जी का गुणानुवाद गाता हूं कि मेरे ऐसे निर्जीवि जीव को जीविका को दान दे सजीव किया, ईश्वर करें कि उनके कुटुंब की भी वृद्धि हो तुम अवश्य पं० महाशय की आज्ञा पालनकर मान की भागी हो, बाबू साहब के वचन को श्रवण कर चन्द्रकला ने धर्म भगिनी सुशीला से यथावत् कह सुनाया सुशीला भी सब श्रवण करते ही अपने गृह गई और पूर्ण वृत्तान्त पति के आगे निवेदन किया। ईश्वर की दया से विचारी चन्द्रकला अपनी बुद्धिमतादि गुण व पं० जी की दयालुता के प्रभाव से पूर्वोक्त पाठशाला में नियत हुई व यथोचित रीति से कार्य का निर्वाह करने लगी। जिससे कि दरिद्र का निवारण व गृह का पालन होना प्रारम्भ हो गया सत्य है यह विद्या रूपी गुण ऐसा ही है नारी अथवा नर जिसके निकट होगा उसका मान बढ़ावेगा देखो राजा भर्तृहरिने अपने नीतिश तक में विद्या की महिमा के ऊपर कैसे उत्तम २ श्लोक लिखे हैं जिन में से एक दो नीचे लिखता हूं जिनके केवल पठनमात्र से ही चित्त में उत्साह होता है व विद्या के प्रचार करने में तत्पर होने का सहायक होता है वास्तव में इस दरिद्री भारतवासियों के मानव धन का दाता एक मात्र विद्या रूपी धन है अतएव मुख्य बात सब प्राणी मात्र के लिये यही एक है भारत के वासी बालक, अथवा युवा, कन्या, वा स्त्री सब को विद्या का उपार्जन करना अवश्य है सो हे भारतवासी सज्जनों आप लोगों की सेवा में यही प्रार्थना है कि आप विद्या

का दान दे सबको गुणवान कर यश के भागी हों । बिना दान के यश, व पुण्य प्राप्त नहीं होता ॥ (यशः पुण्यश्चदानेन)

भर्तृहरि श्लोक

विद्यानामनरस्यरूपमधिकंप्रच्छन्नगुप्तधनं ।
विद्याभोगकरीयशस्सुखकरीविद्यागुरूणांगुरुः ॥
विद्याबंधुजनो विदेशगमने विद्यापरंदैवतं ।
विद्याराजसुपूज्यतां नहिधनं विद्याविहीनः पशुः ॥ १ ॥

केयूरानविभूषयंतिपुरुषं हारानचन्द्रोज्ज्वलान स्नानन्नविलेपनन्नकुसुमंनालङ्कृतामूर्धजा ॥ वाण्येका समलङ्करोतिपुरुषंया संस्कृताधार्यते । क्षीयन्ते खलुभूषणानि सततंवाग्भूषणंभूषणम् ॥

सेन्ट्रल हिन्दू कालिज ।

(श्रीयुत केशवदयाल सिंह बनारस)

मुसलमान विद्यार्थियों को शिक्षा दान के निमित्त अलीगढ़ में मोसालेम कालिज स्थापित ही है । ईसाइयों के लिये भी अनगिनित स्कूल और कालिज इत्यादि उपस्थित हैं तो क्या केवल हिन्दू युवकों को विद्या प्राप्त करने के अर्थ कोई विद्यालय न होता जिसमें वह विद्याध्ययन के साथ ही साथ अपने कर्म धर्म इत्यादि का बोध प्राप्त करते ? इन प्रश्नों का उत्तर सेन्ट्रल हिन्दू कालिज है । क्योंकि काशी सम्पूर्ण भारत का मुख्य धार्मिक स्थान है और यह कालिज विशेषकर हिन्दू युवकों को शिक्षा प्रदान करने के निमित्त खोला गया था इस कारण इसका नाम सेन्ट्रल हिन्दू कालिज रक्खा गया ॥

यह काशी के टाउन हाल के निकट एक छोटे से घर में ७ जुलाई सन् १८९८ में स्थापित किया गया था जिसका मुख्य मन्तव्य हिन्दू बालकों को अपने धार्मिक विषयों के साथ शिक्षा देना था। जिस समय यह कालिज खोला गया था केवल दो कक्षाएं नवीं और दसवीं स्कूल में थीं और एक फर्स्ट इयर कालिज में महाशय रिचर्डसन इसके अवैतनिक प्रिन्सिपेल हुए। ६ अगस्त सन् १८९८ में यह इलाहाबाद यूनीवर्सिटी से मध्यम परीक्षा तक सम्बन्धित कर दिया गया और मार्च १८९९ में सेकिंड इयर क्लास कालिज में और आठवीं और सातवीं कक्षाएं स्कूल में और बढ़ाई गईं। थोड़े ही मास के उपरान्त विद्यार्थियों की अधिक संख्या होने के कारण यह घर इस कार्य के निमित्त उपयुक्त न हुआ परन्तु इसी बीच में काशी के महाराजा ने बड़ी उदारता पूर्वक इसके प्रथम रक्षक और सहायक बन और एक बड़ा विशाल महल चारों ओर की भूमि समेत भेंटकर इस कठिनाई का निवारण किया कालिज तब उस घर से इस नव भवन में लाया गया जिसमें वह इस समय तक विराजमान है॥

जुलाई १९०० में एक छात्र भवन स्थापित किया गया जिसमें प्रथम केवल पन्द्रह विद्यार्थी रहते थे परन्तु शीघ्र ही उनकी संख्या बढ़ती गई। मार्च १९०१ में स्कूल में छटी और पांचवीं कक्षाएं खोली गईं और अगस्त १९०३ में थर्ड इयर बी. ए. और बी.एस.सी कालिज में बढ़ा दिये गए। कालिज भवन में कुछ वर्ष उपरान्त भौतिक और रसायनिक रस संस्कार शालाएं खोली गईं जो म्योर सेन्ट्रल कालिज को छोड़ किसी कालिज से कम नहीं हैं। छात्रशाला का भवन भी आवश्यकतानुसार बढ़ाया गया और सन् १९०५ में उसमें १२० विद्यार्थी रहने लगे। छात्रों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ते जाने से एक और छात्रशाला खोली गई जिसमें लगभग २५ विद्यार्थियों के रहने लगे॥

स्कूल के सम्बन्ध में एक संगीत कक्षा भी है जिसमें पांचवें छटे दरजे तक के विद्यार्थी गान विद्या सीखते हैं। सन् १९०७ में यहां मैनुएल ट्रेनिंग (Manual Training) टाइप राइटिंग (Type Writing) क्ले मोड़िलिंग (Clay Mode-ling) के दर्जे खोले गये। विद्यार्थियों की संख्या और भी बढ़

आने के कारण सन् १९०८ में एक और छोटा सा स्कूल पहिले ही के सम्बन्ध में खोल दिया गया है ॥

हिन्दू बालिकाओं के विद्याध्ययन के निमित्त एक और स्कूल स्थापित किया गया जिसमें उनको धार्मिक विषयों पर शिक्षा दी जाती है । सीना, पिरोना, रुमाल, मोज़े इत्यादि बुनना और अनेक २ उपयोगी वस्तुएं बनाना सिखाई जाती हैं । इसमें दो गोरांग रमणियां अध्यापिका हैं और बहुत सी भारतीय कमलाएं यहां स्नेह पूर्वक अपनी भगिनियों और पुत्रियों को पढ़ाती हैं ॥

कालिज की दक्षता और वृद्धि इसी से प्रकाशित है कि ग्यारह वर्ष के समय में ही इसके फण्ड में लगभग पांच लाख रुपये के एकत्रित हो गए हैं जिसका धन्यवाद विशेषकर बोर्ड आफ़ ट्रस्टीज़ (Board of Trustees) के सभापति के पद को सुशोभित करनेवाली श्रीमती एनी,बेसन्ट को है काशी, काश्मीर भावनगर बड़ौदा ट्रावनकोर, अलवर, फ़रीदकोट और मय्यूर भंज के महाराजे इस कालिज के मुख्य सहायकों और रक्षकों में से हैं ॥

कालिज और स्कूल दोनों के विद्यार्थियों को सनातन धर्म की पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं कालिज और स्कूल के आरम्भ होने पर प्रति दिन प्रथम संस्कृत श्लोकों का पाठ होता है और पंडित महाशय हिन्दू धर्म पर व्याख्यान देते हैं । इसके अतिरिक्त विद्या र्थियों के शरीर पुष्टि की ओर भी पूरा ध्यान दिया जाता है । सायंकाल में कुल विद्यार्थी क्षेत्र में भिन्न २ खेलों में लीन दृष्टि पड़ते हैं । थोड़े ही काल में यहां के छात्रों ने हाकी फुटबाल टेनिस और क्रीकेट आदि में पूर्ण दक्षता प्राप्त करली है । बहुत से बालक मलखम्ब कबड्डी और कुश्ती में बड़े चतुर हैं ॥

हिन्दू कालिज में नेपाल, भूटान, आसाम, पंजाब, बिलो- चिस्तान, सिन्ध, गुजरात, बम्बई, मदरास, इत्यादि दूर २ के विद्यार्थी आते हैं । छात्रशाले में एक चतुर सन्ध्या पण्डित भी नियत हैं जो प्रात व सायंकाल लड़कों को विध विधान सहित सन्ध्या सिखाते हैं और प्रत्येक छात्र दोनों काल की सन्ध्या

करता है। खाने का प्रबंध भी भिन्न २ जातियों के अनुकूल ही है ब्राह्मण, क्षत्री, कायस्थ, वैश्य इत्यादि का प्रथक २ भोजन बनता है। बोर्डिंग में एक बड़ा वाचनालय और पुस्तकालय है और विद्यार्थियों ने स्वयम बहुत सी सभायें खोल रक्खी हैं और उन में से एक 'हिन्दी भाषा प्रवर्धनी' सभा भी अपना कर्तव्य कुशलता पूर्वक चला रही है। कालिज में भी एक बड़ा पुस्तकालय है जिस में लगभग दस हज़ार के पुस्तकें हैं और इस में बहुत से समाचारपत्र व मासिक पुस्तकें इत्यादि आती हैं॥

कालिज के साथ ही साथ एक संस्कृत पाठशाला है जिसकी प्रतिष्ठा काश्मीर के महाराजा रणवीरसिंह ने अपने हस्त कमल से की थी इसका प्रबंध कालिज के निरीक्षण में होता है। इस पाठशाला में निम्न लिखित कक्षाएं हैं प्रवेशिका विभाग, शास्त्री जिस में न्याय, व्याकरण, ज्योतिष, वैद्यक, वेदान्त इत्यादि सम्मिलित हैं। उसके छात्रों के निमित्त महाराजा काश्मीर ने एक छात्रशाला भी स्थापित करदी है॥

सेन्ट्रल हिन्दू कालिज में विद्यार्थियों से फीस बहुत काम ली जाती है। पाठशाले में विद्यार्थी मुफ्त पढ़ाये जाते हैं और उनको बहुत सी छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। स्कूल के तीसरे दरजे में दस आने प्रति मास फीस ली जाती है और दसवें दरजे में केवल एक रुपया है। कालिज में एफ.ए दरजे में दो रुपये और बी.ए में चार रुपये प्रति मास हैं। स्कूल और कालिज दोनों में निर्धन और असहाय विद्यार्थियों को छात्र वृत्तियां मिलती हैं। छात्रशाले की फीस बारह रुपये मासिक है। इस में प्रथम मांसाहारी विद्यार्थियों के निमित्त भी रसोई का प्रबंध था जिन से सोलह रुपये लिये जाते थे परन्तु गत वर्ष से इस में मांसाहारी विद्यार्थी नहीं रक्खे जाते॥

कालिज और स्कूल के विद्यार्थियों ने मिलकर एक 'विद्यार्थी सहायक सभा' खोल रक्खी है, जिसके चन्दे से वे योग्य और बेचारे निर्धन विद्यार्थी भ्राताओं की उन के भोजन, वस्त्र' पुस्तक इत्यादि में सहायता करते हैं। कालिज और स्कूल में अध्यापक और विद्यार्थी भारत के अन्य २ भागों से आते हैं। बहुत से

सज्जन अवैतनिक अथवा बहुत ही थोड़े वेतन पर काम करते हैं और छात्रों और अध्यापिकों में हिन्दू कालिज की राष्ट्रीय संस्था बनाने की हार्दिक आकांक्षा है जिस में भारत की हिन्दू सन्तान इस प्रकार की विद्या प्राप्त करे जो युवावस्था पर पहुंचकर अपनी मातृभूमि की सेवा में सर्वस्व अर्पण कर सकें ॥

परन्तु जैसा कि कालिज और स्कूल का कार्य बढ़ता जाता है उसी प्रकार इसको व्यय की अति आवश्यकता है। इस निमित्त बहुत से विद्यार्थियों ने कर्मचारियों की आज्ञा से एक डेपूटेशन कमेटी (Deputation Committee) बनाई है जिस से कि अधिकृत प्रतिनिधि भारत के भिन्न २ भागों में जा सेन्ट्रल हिन्दू कालिज की सहायता करने के निमित्त द्रव्य एकत्रित करते फिरते हैं जिस प्रकार पूर्व भारत के ब्रह्मचारी अपने गुरु के हेतु कार्य करते थे । कुछ काल से यह कार्य सफलता पूर्वक हो रहा है जिसकी हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी इत्यादि सब प्रसन्नता से सहायता करते हैं। बहुत कम पुरुष इसका ध्यान करते हैं कि कालिज ने थोड़े ही से काल के बीच में कितनी उन्नति की है और सफलता से बाधाओं का विचार न कर अपनी कामना में कितनी सिद्धि प्राप्त की है ॥

कालिज के मनोहर भवन के सन्मुख एक विशाल पत्थर का प्लेटफ़ार्म है। इसके सामने ही नीचे उतरकर दो टेनिस खेलने के स्थान हैं और उनके मध्य में श्री सरस्वती देवी का एक संगमरमर का मंदिर है जिसके चारों ओर गुलाब और अनेक २ पुष्पों के सुन्दर वृक्ष क्यारियों में लगे हैं। इस रुचिर मंदिर को श्रीमती महारानी मझोली ने बनवाया था । इसके पास ही बोर्डिंग हौस में प्रवेश करने के निमित्त एक द्वार है भीतर जाने पर एक चौकोना विशाल प्रासाद दृष्टि गोचर होता है जिसके तीन ओर दुमंज़ली इमारत में छात्रों के लिये कमरे बने हुए हैं और चौथी ओर रसोई है। सड़क के किनारे ही एक मनोहर विशाल सदरफाटक इस में प्रवेश करने को है जिस पर सन्मुख की ओर श्री गणेश जी की मूर्ति है और

भीतर की तरफ़ श्री सरस्वतीजी की मूर्त्ति विराजमान है और इसके स्पष्ट अक्षरों में 'विद्याधर्मेण शोभते' लिखा हुआ है। इस बोर्डिंग हौस में इस समय लगभग २२५ लड़कों के हैं जो श्रीयुत पंडित छेदालालजी बी. ए. के निरीक्षण में हैं। विद्यार्थियों की संख्या प्रति वर्ष अधिक होते जाने के कारण एक और छात्र भवन इसी साल खोला गया है। "धन्य हैं वे महा पुरुष जो इतना धन, पुरुषार्थ और समय अपने देश के उद्धार तथा भारत माता की सन्तान की शिक्षा में लगाते हैं स्त्रियां निस्सन्देह जात्युद्धार में बहुत बड़ा भाग ले सकती हैं और हमको पूर्ण आशा है कि हमारी भारतीय कमलायें भी श्रीमती एनी बेसन्ट के जीवन से शिक्षा ग्रहण करेंगी ॥"

प्रयाग-महिला-समिति और हमारा सम्वत ।

श्रीमती सम्पादिकाजी !

मैं आपको कोटिशः धन्यवाद देता हूं कि आपने मेरे पत्र पर अपने विचार सम्पादकीय टिप्पणी में प्रगटकर मुझे अपने संवत तथा तिथि मांस इत्यादि पर अपने विचार प्रगट करने का अवकाश दिया है। आपने लिखा है कि "इस आपत्ति का अभिप्राय हमारी समझ में नहीं आया" सम्पादिकाजी इस आपत्ति का अभिप्राय यह था कि महिला समिति का अधिवेशन हमारे हिन्दुस्तानी महीने के पहिले दिन या तिथि को या किसी हिन्दुस्तानी विशेष वार को हो। इसका फल यह होता कि महिला समिति की सब सभासद हिन्दू महीने के दिन वार गिना करतीं और नियत दिन पर सभा में उपस्थित होतीं। इसका अंतिम परिणाम यह होता कि हमारे अपने जातीय संवत की याद बनी रहती। हमें कुछ यह पता लगता रहता कि हमारी राष्ट्र का कहीं पर भूत काल है या अमुक राष्ट्रीय घटना या राजा के समय से

हमारी यह गणना चली आ रही है। पिछली पीढ़ी की स्त्रियां खास २ तिथि को व्रत रखा करती थीं। उनको याद रहता था कि आज फलाना दिन वा तिथि है। वार त्योहारों को भी वे मनाया करती थीं। इस प्रकार अपने संवत् की याद बनाये रखती थीं पर अब व्रत छूटते जा रहे हैं। एकादशी पूर्णमासी इत्यादि व्रत व उत्सवों में वर्तमान समय की पढ़ी लिखी ललनायें कोई विशेषता अनुभव नहीं करती हैं। उन्हें अपने वार त्योहार याद करने की ज़रूरत नहीं पड़ती है। इस कारण वे अपने महिनों के नाम भी नहीं जानती हैं। ऐसी बहिनों की स्मरण शक्ति बढ़ाने के अभिप्राय से मैंने यह ढंग निकाला था। महिला समिति के नाम से ही कभी अपने महिने का नाम आ जाता। इसका फल यह होता कि माता को महिने का नाम लेते या वार की गणना करते देख छोटे २ बालक भी अपने महिनों के नाम यादकर लिया करते। आपकी दूसरी 'आपत्ति' यह है कि "समिति का अधिवेशन हिन्दी हिसाब से करने की कोई विशेष आवश्यकता दिखाई नहीं देती" अगर दिखाई देवें तो शायद आप 'हिन्दी हिसाब' से ही 'अधिवेशन' करने लगेंगी! "मर्द अपना हर काम इसी ('अङ्गरेज़ी कैलन्डर') के हिसाब से करते हैं।" इसीलिये बड़ी ज़रूरत है कि तुम भी अपना काम विदेशी जंत्री के अनुसार न करो क्योंकि उनको तो अपना काम अंग्रज़ी जंत्री से करना ही पड़ता है। तुम्हें तो उसकी आवश्यकता नहीं तो तुम क्यों हिन्दी हिसाब से न करो? अगर तुम भी अपने पुरुषों का अनुकरण करोगी तो हमारे संवत का बिलकुल ही लोप हो जायगा॥

अपना सम्वत कायम रखने की ज़रूरत

इतना ही ज़रूरी है जितना कि इस राष्ट्र के जीवित रहने की ज़रूरत है। यदि आप इस बात को स्वीकार करलें कि हमें इस बात से कोई मतलब नहीं कि हिन्दू जाति कभी प्राचीन समय में संसार के किसी कोने पर वास करती थी या नहीं; यदि आप अपने भूतकाल के होने न होने में कोई भेद नहीं समझती हैं; यदि आप यह स्मरण नहीं रखना चाहती हैं

कि हमारे इतिहास में बड़ी बड़ी गौरवयुक्त घटनायें हो गई हैं; यदि आप अपने पूर्वजों की कीर्ति का स्मरण नहीं किया चाहती हैं; यदि आप अपनी राष्ट्र के भूत वर्तमान तथा भविष्य के बीच कुछ सम्बन्ध नहीं रखना चाहती हैं तो अपने संवत का नाम भूलकर भी न लीजिये ! महिला समिति और स्त्री दर्पण का कार्य सब ईसाई (अंग्रेज़ी) जंत्री के अनुसार कीजिये ! आपको मालूम होगा कि ईसाई सन ईसा के सूली पर चढ़ाये जाने की याद दिलाता है और हमारा विक्रम संवत उस घटना का स्मरण कराता है जब विक्रम महाराज ने निज बाहुबल से म्लेच्छों को परास्त कर अपने राज्य में 'रामराज' का प्रदुर्भाव किया था। विक्रम संवत हमें यह याद दिलाता है कि ईसा के जन्म से ५७ वर्ष पहिले विक्रम सरीखे प्रतापशाली प्रजा हितैषी परोपकारी राजा हमारे बीच हो गये हैं। यदि सब के हृदय में न सही तो किसी २ के हृदय पट पर अपना संवत याद करते ही अपने प्राचीन वैभव की तरंग लहराने लगती होगी ! और ईसाई सन का नाम लेते ही अपने दासत्व व पतन का स्मरण होता होगा ! ईसाई सन का व्यवहार करने से मानो हम ईशु को अपना लार्ड अर्थात पिता वा ईश्वर मानने लगते हैं। मूंह से चाहे हम स्वीकार न करें कि हम ईसाई हैं पर वास्तव में हम अपने को सन ईस्वी के प्रयोग करने से ईसाई संकेत करते हैं। एक और बड़ा भारी अनर्थ 'सन ईस्वी' को काम में लाने से हम यह करते हैं कि हम अपने ईश्वर अवतार, अपने ऋषी और अन्य धर्म आचार्यों को और अपने धर्म (मज़हब) को झूठा मानते हैं क्योंकि ईसाई कहते हैं कि ईसा मसीह के सिवाय दूसरा ईश्वर का अवतार ही नहीं और इसाई धर्म के अतिरिक्त सब धर्म झूठे हैं। सन के प्रयोग से हम ईसा का आस्तित्व (होना) मानते हैं। इस के माने यह हुये कि अन्य अवतार व धर्म अर्थात हिंदू धर्म झूठा है॥

जिन जातियों का अपना राष्ट्रीय संवत न हो व चाहे किसी का सन माने पर जब हमारे पास निज संवत है तो हम औरों का क्यों माने ? अगर माने तो हम मानो स्वीकार करते हैं कि हबशी अथवा अन्य जंगली जातियों की तरह हमारे पास अपना कुछ नहीं है। औरों की नक़ल व भिक्षा से काम चलायेंगे॥

संवत इतिहास का प्राण है और इतिहास राष्ट्र का कलेवर है। बिना संवतीय गणना के इतिहास का संगठन नहीं हो सका और बिना इतिहास के किसी जाति का पता नहीं लगता। यदि किसी जाति को जीवित रहना है तो अपना संवत कायम रखने का प्रयत्न करना चाहिये अन्यथा वह राष्ट्र कालान्तर में स्वभावतः भूमण्डल से लोप हो जायगी! यदि आप कहें कि जाति का लोप कैसे होगा? मनुष्य तो रहेंगे ही; उन की संतति भी बढ़ती ही जायगी? तो फिर कैसे सारी राष्ट्र काफूर हो जायगी? देखिये जाति का लोप ऐसे होता है। जैसे रोम का हुआ; यूनान का हुआ; मिस्र देश का हुआ और अगर हम भी क्रमशः इसाई होते जांय तो पहिले हम गुदड़ी बाज़ार के टोप कोटवाले इसाई बाबू बनेंगे। दूसरी पीढ़ी में नेटिव क्रिश्चियन तीसरी में यूरेशियन, चौथी में यूरोपियन, पांचवीं में 'काफूर' हो जायेंगे॥

इस क्रम से हिन्दू जाति का लोप होगा। यह वाक्य आप भविष्यवाणी न समझें! ईश्वर इस आर्य जाति को लोप नहीं किया चाहता है। क्योंकि परमेश्वर को हमारे द्वारा संसार का बड़ा उपकार करना है। संसार के सन्मुख उच्च आदर्श रखनेवाले हमही हिन्दू सन्तान हैं। बलवान जातियां हमारे शरीर व राजकीय देश को भलेही पराजय कर दास बना लें पर हमारी आत्मा, हमारे धार्मिक भाव, हमारा दर्शन शास्त्र, हमारी चित्रकारी, हमारी शिल्प विद्या, हमारा ललनादर्श इत्यादि तब तक लोप न होंगे जब तक ईश्वर न रूठें। यदि हमारा कार्य इस संसार में हो चुका है और यदि अब परमात्मा को हमारी स्थिति की कोई आवश्यकता नहीं तो हमारे तुम्हारे संवत बदलने से क्या होगा वह सारी काया क्षणभर में पलट देगा। परन्तु मनुष्य की यह प्राकृतिक प्रकृति (स्वभाव) है कि सब लोग अपने संरक्षण की इच्छा करते हैं इसी कारण यह सारा संघर्षण है॥

इतिहास की ओर दृष्टि डालने से विदित होता है कि बलवान राष्ट्र बलहीन जातियों को दुनियां के पर्दे से हटा देने का प्रयत्न करती हैं। इसी कारण जेता लोग विजित जातियों के इतिहासों को बहुधा भस्म कर देते हैं, कभी उसकी घटनाओं में

उलट फेर कर देते हैं। जहां उनकी जीत हो वहां हार बतलाते हैं। विजित लोगों के पुरुषाओं में दोष निकालते हैं। संवत इति. हास का प्राण है इसलिये पहिले उसी पर हाथ फेरते हैं। आप को विदित होगा कि मुसलमान लोगों ने हमारे विक्रम संवत के बदले 'हिजरी' संवत चलाने का कितना प्रयत्न किया था? परन्तु उस समय हिन्दु जाति इतनी हीन दशा को प्राप्त नहीं हो गई थी। इसी कारण प्रायः ८०० वर्ष के मुसलमानी राज्य में भी वह बात न हो सकी जो अब पचास वर्ष में हो गई है। अपने संवत को बनाये रखने के लिये समाचार पत्रों को चाहिये कि उच्च स्थान अपने संवत तथा वार इत्यादि को दें। क्या ही अच्छा होता कि आपकी पत्रिका के पाहिले पृष्ठ पर हिन्दुस्तानी जंत्री दी होती। मार्च के साथ अपने हिन्दी महीने (फाल्गुन) का भी नाम दिया होता तो अच्छा होता। आप अपनी कहिये कि आपको हिन्दी हिसाब की गणना के विषय में क्या आपत्ति है? मेरी सारी आशा अपनी माताओं पर ही है। सारी राष्ट्र की रक्षिका तुमही हो। इसी कारण आपके सन्मुख अपनी 'आपत्ति' रखी थी। आशा है आप मेरी विनय पर विचार करेंगी॥

"वर्म्मा"

अत्यन्त आवश्यकता के समय में ४२०

रुपये के मिलने का भेद।

सुबह सरहद की एक माननीय विधवा का वृतान्त।

मित्र सखा ताही जानीये भाई। जो विपता में होई सहाई॥

मेरे पति लाला शंकरदास शरीफ जुलाई १९०८ में हिन्दुस्तान एश्योरेन्स व म्युच्युएल बेनीफिट सोसाइटी लिमिटेड गुजरांवाला का मेम्बर बना यद्यपि उस समय सोसाइटी का आरम्भ ही हुआ था और इस के लिये तरह तरह के खियालात गुमराह करनेवाले मनुष्य मुशतहिर कराते थे तथापि मेहरा एन्ड कम्पनी ने जो कि उस सोसाइटी के डबगरी दरवाज़े पेशावर में एजंट हैं मेरे सर्वस्व परवार की चिन्ता को दूर की और उन की नेक हिदायत पर हम सब मनुष्य सोसाइटी में प्रवेश हुए आयु न रही और वह १८ अक्तूबर १९०९ को मर गया और मुझे दुखी और विधवा बना गया। इस शोकदायक मृत्यु की खबर २३ अकतूबर १९०९ को सोसाइटी के कार्यकर्त्ता को दी गई और नियमानुसार सहायता की विनती की। जिस शीघ्रता के साथ सोसाइटी हज़ा के दफतर से मुझे उत्तर दिया गया और पत्र इत्यादि को पूरा करने के लिये तहरीक की गई उसने मुझे और मेरे और सम्बन्धियों को पूर्ण यकीन दिलाया कि यह सोसाइटी असल में बड़ी मुफीद और नेक काम करनेवाली कम्पनी है। पत्र इत्यादि ३० नवम्बर १९०९ तक पूरे हुए, मुझे खबर मिल गई कि सहायता दिसम्बर के महीने की समाही के पूरे होने पर मुझ को खास पिशावर में आकर दी जावेगी। पस हस्व वायदा दीवान मंगलसेन मैनेजिंग डरेक्टर सोसाइटी हज़ा ने आप पिशावर आकर मेरे मकान पर मुझ को बिरादरी के पुरुष तथा और मनुष्यों के सामने ४२० रुपया सोसाइटी की ओर से सहायता के लिये दिये। नया वर्ग के मेम्बर की मृत्यु पर इस कदर बड़ी सहायता देना ऐसे समय में जब कि दो और मौत भी इस समाही में काफी सहायता हासिल करने की मुस्तहक हो चुकी हों। हिन्दुस्तान एश्योरेन्स म्युचुएल बेनीफिट सोसाइटी लिमिटेड गुजरांवाला की बड़ाई के बिलकुल ठीक है। मुझ विधवा की जो अत्यन्त आवश्यकता के समय में सहायता करी है उस के लिये मैं दिल से धन्यवाद करती हूं और परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि यह सोसाइटी एक निहायत कामयाब कम्पनी बनकर जिस शुभ कार्य को पूरा करने के लिये बनी हुई है उस में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करे सफेद पोश मज़लूम सदा इस के ज़ेर साया फैज़ पावें। १२ जनवरी १९१०.

श्रीमती गामा धर्म्मपत्नी लाला शंकरदास

हिन्दुस्तान एश्योरेंसव म्युचुएल बेनीफिट

सोसाइटी लिमिटेड—गुजरांवाला।

विज्ञापन

अध्यापकाओं की आवश्यकता।

हमें कुछ योग्य अध्यापकाओं की आवश्यकता है जो मिडिल और अपर प्राइमरी तक नागरी व गणित इत्यादि भली भांति पढ़ा सकती हों सूची कर्म और गृह कार्य्य में चतुर हों सहन शील और उत्तम कुल की हों व्याख्यान दाती हों तो अति उत्तम है एक ऐसी प्रथमाध्यापका की आवश्यकता है जो पाठशाला का प्रबंध और निरीक्षण योग्यता के साथ कर सके। वेतन योग्यतानुसार २०) रुपये से ६०) रुपये तक प्रार्थना पत्र प्रशंसा पत्र सहित निम्न लिखित पते पर शीघ्र आने चाहिये।

लाला जानकीप्रसाद जी

आनरेरी मजिष्ट्रेट खुर्जा-यू. पी.

ज़िला—बुलंदशहर।

नोटिस

संयुक्त प्रदेश की प्रदर्शनी।

जिन लोगों को संयुक्त प्रदेश की नुमाइश के स्त्री विभाग से दिलचस्पी हो उन्हें चाहिये कि उस के बारे में जो कुछ पूछना हो उसके लिये अप्रेल तक स्त्री विभाग की सब कमेटी की प्रेसीडेन्ट मिसेज़ लेसली पोरटर साहिबा लखनऊ से पत्र व्यवहार करें॥

जिसके नीचे दस्तखत हैं उसको हुकम है कि वह स्त्री विभाग में नुमाइश के लिये चीज़ों को पहिली अक्टूबर सन १९१० तक लेवे। नुमाइश के बाद नुमाइश की चीज़ें बड़ी होशयारी के साथ भेजने वाले को लौटा दी जायंगी॥

रायबहादुर सांवलदास

आनरेरी सेक्रेटरी

थॅकरोड इलाहाबाद।

केशरञ्जन तैल ।

जिनको रात दिन मानसिक परिश्रम करना पड़ता है उनके हक़ में केशरञ्जन महा हितकर है । ग्रन्थकार, वकील, बैरिस्टर, स्कूल के विद्यार्थी, परीक्षार्थी, युवक सब के लिये यह उपकारी है ॥

जिनका सिर जलता है, सिर भारी होना, वायु पित्त के प्रकोप से जिनकी आंख से धुंध मालूम होता है, सामान्य चिन्ता से जिसका सिर घूमने लगता है । पित्त के प्रकोप से जिनके हाथ पैर में जलन होती है । उनको हमारा केशरञ्जन तेल नित्य लगाना चाहिये ॥

जिनके सिर में टाक पड़ गया है । जिनका केशमूल शिथिल हो केश झड़ने लगे हैं उनको केश दृढ़ करने के लिये केशरञ्जन तेल लगाना चाहिये ॥

औरतों में जो शौकीन और विलासी हैं जिन को केश नरम और चिकना करने की इच्छा है वेखटके केशरञ्जन तेल लगावें । केशरञ्जन लगाने से घर सर्वदा बेला जूही और चमेली आदि की मधुर सुगन्ध से भर जाता है ॥

दाम फी शीशी १) डा० म० ।-)

गवर्नमेन्ट मेडिकल डिप्लोमाप्राप्त श्री नगेन्द्रनाथ सेन वैद्यशास्त्री
१९।१ लोवर चितपूर रोड कलकत्ता

प्रीति उपहार ।

[तीन किसिम के एसेन्स के तीन शीशी का बकस]

तीन बड़ी शीशी का बकस	...	२॥)
तीन मझोली शीशी का बकस	...	२)
तीन छोटी शीशी का बकस	...	१।)

एकत्र १२ शीशी का दाम उसी हिसाब से १० रुपये ८) रुपये ॥

सुरमा ।

"सुरमा" एसेन्स नहीं है, सुरमा तेल है । पर बाज़ार में जितने सुगन्धित तेल नित्य दिखाई देते हैं, सुरमा उस ढंग का केशतेल नहीं है । सब तेलों से इसका दाम बहुत कम है । हर एक आदमी एक रुपया खर्च कर तेल खरीद नहीं सक्ता है । इसलिये केवल लागत के दाम पर यानी ≡) आने में एक बड़ी शीशी सुरमा मिलता है । एकत्र १२ शीशी ७॥) डाक महसूल अलग ॥

एस, पी, सेन एण्ड कम्पनी—१९।२ नं० लोवर चितपुर कलकता ।

कलकत्ते के नामी डाक्टर बर्म्मन की बनाई प्रसिद्ध दवाएं २६ वर्ष से सारे हिन्दुस्तान में प्रचलित हैं।

डाक्तर बर्म्मन का प्रसिद्ध अर्क पुदीना।

विलायती पुदीने की हरी पत्तियों से यह अर्क बना है। इसका रंग पत्ता ऐसा हरा है। और स्वाद भी ताज़ी पत्तियों की ऐसी है।

बादी के लिये यह विशेष लाभकारी दवा है। पेट फूलना डकार आना, पेट में दर्द, अजीर्ण, जी मितलाना भूख कम होना आदि बादी के लक्षण इससे शीघ्र ही मिटते हैं। बच्चों के लिये ऐसी दूसरी दवा नहीं है।

मो० १ शीशी ॥) डा० म० १ से २ तक ।-) आने

नीबू का तेल

ताजे हरे मानो अभी पेड़ से टूटे हुए नीबू का मनोहर सुगन्ध ठीक ही ठीक इस तेल में मिलता है। चाहे किसी उत्तम भोजन के पदार्थ में एक बूंद डाल कर इसके मन लुभाने वाली सुगन्ध का आनन्द लीजिये। चित्त हरा और दिमाग तर हो जायगा। इत्र की जगह भी इसका व्यवहार कर सकते हैं। फुलेल या बाल में लगाने के तेल में मिला के इसके लपट की मौज ले सकते हैं।

मोल ।) आने शीशी.

पेकिंग वो डाक म० १ से ४ शीशी ।-) ८ शीशी तक ।=) आने।

लेवेंडर का तेल।

विलायती सुगंधित अर्क्कों में अर्क (एसेंस) लेवेंडर का प्रचार अधिक है। अर्क तेल से बनता है इसलिये अर्क से तेल में अधिक सुगन्ध रहती है। यह फ्रांस से मंगाया जाता है जो कि बजारू तेल लेवेंडर से कहीं बढ़ कर तेज और ताजे फूलों का सुगंध मिलता है। रूमाल में तेल में या चाहे किसी चीज में एक या दो बूंद टपका कर इसका व्यवहार कर सकते हैं।

मोल ।=) आने शीशी

पेकिंग वो डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) ८ शीशी तक ।=) आने।

डॉ. एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

१ जून १९१०

वार्षिक मूल्य २।)

एक प्रति मूल्य ।)

बेगम बहार ।

(स्त्रियों के आदर योग्य पदार्थ)

इसके बराबर कोई और तेल नहीं बना है । गुण में सब तेलों से श्रेष्ठ है इससे बेगम और बादशाह आनन्दित रहते हैं, बहुत खर्च से यह बनाया गया है, और सर्व गुणदायक है । जो इसको एक दफह लगाते हैं वह कदापि इसको नहीं छोड़ सके । सिर का दर्द जाता रहता है । एक दफह लगाने से कई दिन तक सुगंध देता है आंख को भी लाभदायक है ॥

मूल्य १) शी० डाक ।-); ३ शी० का मूल्य २॥=); १२ शी० का १०॥)

बादशाही आमोद ।

स्त्रियों के योग्य आश्चर्य की चीज़ बादशाह और नवाब इसको खाकर प्रसन्न हो जाते हैं । यह सब ताक़तों को बढ़ाता है और इसको खाने से इसका गुण खुल जाता है ॥

मूल्य ५॥) महसूल ॥-)
पहिला नम्बर

मूल्य २॥) डाक महसूल ।-)
दूसरा नम्बर

माजून चोबचीनी ।

(खून साफ़ करने की दवा)

इसको खाने से बादी, दाद, और सब प्रकार के चर्म रोग जाते रहते हैं और ताक़त आती है और शरीर बलवान हो जाता है भूख बहुत बढ़ाता है और कब्ज़ नहीं रहता है ॥

मूल्य एक डिबिया १) डाकव्यय ।-)

पता—हकीम मशीहुर रहमान
२६, ११४ मछुआ बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता ।

सूची पत्र।

विषय — पृष्ठ

टिप्पणियां २६१
मोहनदास कर्मचन्द गांधी (वर्म्मा) २६९
विद्या की बड़ाई २७८
सीता राम के प्रति (श्रीयुत मक्खन द्विवेदी गजपुरी) ... २७९
गिरगट के रंग की रिवायत (पण्डित प्रान नाथ, ग्वालियर) २८०
तीर्थ यात्रा (श्रीमती मुन्नी देवी, आसाम) २८१
स्त्री जाति पर पुरुषों का बुरा व्यवहार (श्रीमती सवित्री देवी) २८३
स्त्री सुधार (श्रीमती भुवनेश्वरी देवी) २८६
प्रान्तिक महिला परिषद् (श्रीमती महा देवी का व्याख्यान) २८७
वकील की कारसतानी (श्रीयुत रामचन्द्र दुबे) ... २९९
समालोचना ३०९

नोटिस

संयुक्त प्रदेश की प्रदर्शनी।

जिन लोगों को संयुक्त प्रदेश की नुमाइश के स्त्री विभाग से दिलचस्पी हो उन्हें चाहिये कि उस के बारे में जो कुछ पूछना हो उसके लिये अप्रैल तक स्त्री विभाग की सब कमेटी की प्रेसीडेन्ट मिसेज़ लसली पोर्टर साहिबा लखनऊ से पत्र व्यवहार करें॥

जिसके नीचे दस्तखत हैं उसको हुक्म है कि वह स्त्री विभाग में नुमाइश के लिये चीज़ों को पहिली अक्टूबर सन १९१० तक लेवे। नुमाइश के बाद नुमाइश की चीज़ें बड़ी होशियारी के साथ भेजनेवाले को लौटा दी जायेंगी॥

राय बहादुर सांवलदास
आनरेरी सेक्रेटरी
बैंकरोड इलाहाबाद।

स्त्री-दर्पण

भाग २] प्रयाग, १ जून, सन् १९१० [अङ्कः ६

टिप्पणियां ।

महाराज एडवर्ड सप्तम का स्वर्गवास होना ।

गत मास में भारत के सर्व प्रीय एडवर्ड सप्तम के स्वर्गवास होने का समाचार एकाएक सुन कर सारी प्रजा शोक में डूब गई। आपका देहांत ऐसा अकस्मात् हुआ कि आपकी बीमारी का समाचार भी अभी लोगों के कान तक नहीं पहुंचा था कि देहांत की ख़बर आन पहुंची। साधारण सीत के लग जाने, व खांसी के आने से आप प्राण घात हुए। ५ तारीख़ को पहले पहल आपकी बीमारी का समाचार प्रजा को सुनाया गया जिसके सुनते ही महल के सामने भीड़ जमा हो गई। उस समय कोई यह नहीं जानता था कि काल इतने पास आ गया है। ज्यों २ समय व्यतीत होता गया हालत बिगड़ती गई यहां तक कि ६ तारीख़ की रात को अंत समय आन पहुंचा और बड़े २ डाक्टर हकीमों के सामने जान निकल गई। चक्रवर्ती एडवर्ड के देहांत से लगभग सारी दुनिया में मातम होने लगा। आपकी मृत्यु पर इतना शोक न केवल इस कारण हुआ कि आप एक ऐसे राज्य के राजा थे कि जिसमें सूर्य्य कभी अस्त नहीं होते और जो भूगोल पर सबसे बड़ा है, बरन् आपके अपने सतगुण ऐसे थे कि जिनसे आप अपने देश और अपनी सारी राजधानी में प्रेम और आदर से देखे जाते थे। सब से मेल रखना, हर एक से प्रेम करना आपको सदा से आदत थी। यूरप के देशों में आपने

" मेल कराने वाले " का नाम पाया था। आपही के राज्य में हिन्दुस्तान में, कौन्सलों का रिफ़ार्म हुआ। विलायत में भारत के मंत्री की कौंन्सल में और यहां बड़े लाट की कौंन्सल में आपही के राज्य में पहिले पहल हिन्दुस्तानी सभासद् लिये गए। राज गद्दी पर बैठते हुए जो प्रतिज्ञा आपने की थी उसका पालन अपनी शक्ति भर किया। अभी थोड़े ही दिन हुए १६०८ के नवम्बर में जो संदेसा उन्होंने भारतवर्ष के राजा महराजों और प्रजा को भेजा था वो अभी तक कानों में समाया हुआ है। सारे भारत में जो शोक तीर्थ रूपी शांति के भक्त एडवर्ड के देहांत से हुआ वो उन अनगिनित सभाओं से प्रगट होता है जो छोटे से छोटे शहर से लेकर बड़े से बड़े शहर में हुईं। इस शोकमय समाचार के सुनते ही हर शहर पर मातम छा गया। सारा काम बन्द हो गया, दुकानें, दफ्तर, कचहरियां सब बन्द हो गईं। सब सभाओं की ओर से शोक प्रकाश तार विलायत भेजे गए। प्रयाग महिला समिति की ओर से भी एक तार दिया गया जिसमें महाराज की मृत्यु पर शोक व महारानी एलैगज़ेन्डरा से प्रयाग की महिलाओं ने सहानुभूति प्रगट की।

महाराज को अपनी परम पूज्य माता की तरह हिन्दुस्तानियों से पैतृक स्नेह था। हिन्दुस्तानियों के कष्ट पर आप सदा शोक किया करते थे। पिछले दिनों जब आपने भारत में प्लेग व अकाल की बढ़ती का समाचार सुना तो बहुत खेद करने लगे। ऐसे राजा के काल पर कैसे प्रजा का हृदय दुःखी न हो।

एडवर्ड महराज का जन्म कर्म।

महाप्रतापी एडवर्ड, महारानी विक्टोरिया के श्रेष्ठ पुत्र ने महल बकिङ्घम में ९ नवम्बर १८४१ में जन्म लिया। बालकपन में आप अपनी माता के अधीन शिक्षा पाते रहे। कुछ काल घर पर पढ़ कर आप पहिले एडिनबरा फिर आक्सफोर्ड और फिर केमब्रिज पढ़ने को गए। १३ डिगरियां यूनिवर्सिटियों से प्राप्त कीं और सिवा अङ्गरेज़ी के फ्रांसीसी, जर्मनी, इटली और रूसी भाषाओं को

भी सीखा। सन् १८५९, में १८ वर्ष की अवस्था में इटली, स्पेन की यात्रा की जिस के दूसरे ही वर्ष संयुक्त प्रदेश अमरीका व कैनेडा देखने गए यहां आपका बहुत आदर से सत्कार हुआ। केमब्रिज में अपनी पढ़ाई समाप्त करके आप फ़ौज में दाखिल हुए। १८६१ में आप के पिता जी का स्वर्ग वास हो गया। १८६२ में अपने पिता की इच्छा के अनुसार आप पैलेस्टाइन की यात्रा को गए। १८६३ में आपका विवाह राजकुमारी एलेगज़ेन्डरा, डेन्मार्क के राजा की पुत्री से हुआ। इङ्गलैन्ड में रानी एलेगज़ेन्डरा, का स्वागत बड़ी धूम धाम से हुआ। १८६४ में आप के पहिला पुत्र राजकुमार एलबर्ट विकटर का जन्म हुआ। १८६५ में कुमार जौर्ज, १८६७ में कुमारि लुईज़ विकटोरिया, १८६८ में कुमारी विकटोरिया एलेग-ज़ेन्डरा मेरी, १८६९ में राजकुमारी मौंड शार्लट मेरी विकटोरिया पैदा हुईं। पिता जी के स्वर्गवास हो जाने से युवराज व उन की पत्नी को बहुत से ऐसे काम करने पड़े, जो उन से पहिले बहुत कम युवराजों को करने पड़े थे। महारानी विकटोरिया को पती की मृत्यु के बाद राज के कामों से न तो इतनी छुट्टी ही मिलती थी न उनका चित्त ही ऐसा प्रसन्न रहता था कि वह राज घराने के समाजिक कामों में भाग लेतीं, जिस से सामाजिक सम्बन्धि सब काम इन्हीं के सर आलगे। इन सब कामों को युवराज व उन की पत्नी ने ऐसी अच्छी तरह निभाया कि जिस से सर्व साधारण की स्नेह आप से प्रतिदिन बढ़ने लगा। सामा-जिक हित आप में इतना था कि ६ महीने के अंदर आप ११५ सभा वा समाजों में शरीक हुए। कोई सभा या समाज जिस में राजकुमार आ सकते थे ऐसी न होती कि उस में ये समय पर न पहुंच जावें।

१८६९ में आप मिसर देश की यात्रा को गए और इस बीच में आयरलैन्ड भी दो बार गए। १८७१ में दुरभाग्य से बहुत बीमार हो गए, भीषण ज्वर हो गया और रोग इतना बढ़ा कि राज़ घराने के सब मित्र सम्बन्धी एकत्र हो गए। कुछ दिन तक युवराज के बचने की आशा बिलकुल न रही परन्तु प्रजा के भाग्य से परमात्मा ने उस से आप को बचा दिया।

१८७५ में हिन्दुस्तान आए जहां सवा तीन महीने रह कर

आप सारे भारतवर्ष में फिरे और यहां के सब राजा महाराजाओं से मिले। जिन सब के दिलों में आप के प्रेम भाव और नम्रता का नक़्शा जम गया।

१६०१ में महारानी विकटोरिया के देहांत पर आप एडवर्ड सप्तम के नाम से शासन पर बैठे। राज्य तिलक धारण करने की रस्म जून महीने १६०२ में होने की थी। सारी राजधानी में खुशियां मनाई जाने लगीं परन्तु इन्हीं दिनों में आप बीमार हो गए। डाक्टर हकीमों ने सलाह दी कि राज्य तिलक नवम्बर तक मुलतवी होनी चाहिये परन्तु हमारे यहां विजयी एडवर्ड ने सर्व साधारण को निराश न करना चाहा और इस बात पर हठ की कि राज्य तिलक धारण करने की तारीख अगस्त के आगे न टले। कहते हैं कि एडवर्ड राज्य तिलक धारण करने के दिन दो बार घनटे २ भर के लिये मूर्छित हो गए तिस पर भी किसी तरह साहस न घटा।

६ वर्ष के राज में महाराज फ्रान्स के प्रेसिडेन्ट, जरमनी, रूस औस्टरियाहंगरी, इटली, स्पेन, पुरतगाल के महाराजों से मिलने गए, इन से मिलने भी जरमनी, रूस, इटली, स्वेडन, नारवे आदि के महाराजा आए। इससे आप उस के मेल मिलाप से महाराज एडवर्ड की मित्रता युरप के सब देशों से बहुत बढ़ गई।

स्वर्गवासी महाराज एडवर्ड को खेलों से बहुत प्रेम था। थियेटर देखने का बड़ा शौक़ था और सदा थियेटरों की सहायता किया करते थे। परिश्रमी बहुत थे, आखरी दम तक काम करते रहे। कहते हैं कि हकीमों ने कई बार बीमारी में आराम करने को कहा परन्तु हर बार हंसकर यही उत्तर दिया कि मैं मरते दम तक काम करूंगा। महाराज ने अपना वचन पूरा भी किया क्योंकि केवल एक ही दिन वो बेकाम पलंग पर रोग की हालत में रहे। उनके यही गुण थे जिन के कारण उन की प्रजा उन से इतना प्रेम रखती थी। ईश्वर परमात्मा अब उनकी आत्मा को उच्च गति प्रदान करे और महारानी एलेगजेन्डरा और उन के दुःखी मित्रों सम्बन्धियों और प्रजा को संतोष दें।

महाराजा पाचंवें जौर्ज ।

हमारे नए महाराज जौर्ज व महारानी मेरी को ईश्वर चिरंजीव रखे। सारी दुनियां की हृदय से यह प्रार्थना हैं कि ईश्वर इनको चिरकाल राज करना नसीब करे। महाराज जौर्ज १८६५ में पैदा हुए, लड़कपन से आप को यात्रा करने से बहुत प्रेम है। कहा जाता है कि भूगोल पर किसी सम्राट ने इतनी यात्रा नहीं की जितनी आपने की हैं। बालकपन ही में बड़े भाई के साथ आप ३ वर्ष के लिये यात्रा को गए, अपनी सारी राजधानी को तो आप बहुत ही अच्छी तरह देख चुके हैं परन्तु सिवाए उसके दुनियां का कोई देश आपने नहीं छोड़ा। आपको भारतवर्ष में आए अभी थोड़े ही दिन हुए हैं। महारानी विक्टोरिया व बादशाह एडवर्ड से शिक्षा पाए हुए पांचवे जौर्ज का दिल नेकी व दयालुता से ऐसा ही भरा है कि जैसा इस घराने के सब शासनकर्त्ताओं का सदा से चला आया है। जैसे इनके पिता जी ने राजगद्दी पर बैठते हुए इस बात की प्रतिज्ञा की थी कि वह अपनी पूज्यनीय माता के आचार पर चलेंगे वैसे ही आपने अपने पिता के आचार पर चलने की प्रतिज्ञा की हैं। बहुतेरी छोटी २ बातें जिनसे आप की दयालुता का पता चलता है आप के समबन्ध में मशहूर हैं परन्तु उनका यहां लिखा जाना सम्भव नहीं। हमें आशा है कि आगामी किसी अंक में हम उनका पूरा जीवन चरित्र दे सकेंगी। भारत वर्ष से लौट कर जो बातें उन्हों ने भारत के समबन्ध में कहीं वह भारत वासियों को कभी न भूलेंगी।

मिसेज़ बेसन्ट की यूनीवरसिटी।

कुछ काल से मिसेज़ एनी बेसन्ट भारत के लिये एक ऐसी यूनीवर्सिटी बनाने का यत्न कर रही हैं जिसमें नीचे लिखी बातों का विशेष करके ध्यान रखा जावे।

(१) धार्मिक शिक्षा—कोई ऐसा कालेज जिसमें धार्मिक शिक्षा न हो यूनिवर्सिटी में नहीं लिया जावेगा। धर्मों में कोई विशेषता नहीं रखी हैं। ईसाई, बुद्ध, हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, यूनिवर्सिटी के लिये समान होंगे।

(२) भारतवर्ष के इतिहास, फ़िलासफ़ी और व्याकरण की ओर सब से पहले और सबसे ज़्यादा ध्यान दिया जावेगा। पहले यह पीछे पश्चिमी शिक्षा दी जावेगी।

(३) शिल्प विद्या, खेती वारी का काम, कारख़ानों के चलाने का काम सिखाया जावेगा और इस बात का यत्न किया जायगा कि भारत की कारीगरी को फिर जिलाया जावे।

यूनिवर्सिटी का सरकार से कोई सम्बन्ध नहीं रखा जावेगा। इसका प्रबन्ध एक बोर्ड के आधीन होगा जिसमें देश के हर मत के बड़े २ आदमी होंगे। अभी थोड़े दिनों तक तो यह यूनिवर्सिटी केवल परीक्षा लेने ही का काम करेगी जैसा कि सरकारी यूनिवर्सिटियां कर रही हैं परन्तु विचारा गया है कि कुछ काल बीतने पर शिक्षा देने का काम भी इसके सिर लगाया जावेगा। शुरू शुरू में परीक्षा बनारस हिन्दू कालेज के कमरों में लीजाया करेगी और वहीं यूनिवर्सिटी के कार्य्यालय बनाए जावेंगे।

शिक्षा के प्रचार की आवश्यक्ता जितनी हमारे देश में है वह अब सब जानते हैं। इस यूनिवर्सिटी के बनने से जो लाभ होगा उसके लिखने की भी कोई विशेष ज़रूरत नहीं है। यह सब काम पश्चिम की एक स्त्री के रात दिन के परिश्रम का परिणाम है। ऐसे दिल कि जिसमें हर जात और हर मत के मनुष्यों के प्रेम की ज्योति रात दिन जगती रहे सदियों में कभी कभी उत्पन्न होते हैं। श्रीमती बेसन्ट के अहसान भारत पर बहुत हैं और उनका पूर्ण धन्यवाद देना सम्भव नहीं। हम केवल इतना ही कहना काफ़ी समझते हैं कि ईश्वर परमात्मा इनको इसका फल दे और यह भारतवासियों के सर पर चिरकाल बनी रहें। इनका जीवन चरित्र किसी आगामी अंक में प्रकाशित किया जावेगा।

दयाल सिंह कालज लाहौर।

गत मास में लाहौर में एक ऐसा कालेज खोला गया कि जिसका इन्तज़ार करते २ सब साधारण की आंखे थक गई थीं। यह कालेज पंजाब के एक बड़े भारी रईस के (जिसके नाम से कालेज को नाम दिया गया है) दान का परिणाम है। सरदार

दयाल सिंह के पिता पंजाब के उन बड़े सरदारों में से एक थे कि जो महाराजा रंजीत सिंह के राज के रत्न थे। विद्या से भरपूर। कई भाषाओं के जानने वाले पिता को पुत्र वैसा ही विद्वान था सरदार दयाल सिंह अपनी हिम्मत, देशभक्ति और उदारदिली में अपने पिता से भी बढ़ गये थे। आप का सारा जीवन अपने देश की सेवा में व्यतीत हुआ। लाहौर का मशहूर समाचार पत्र ट्रीब्यून आपही ने निकाला जिसको कई वर्ष तक बहुत नुकसान से चलाते रहे। देश के भले के लिये जो काम होता उसमें आप से अवश्य सहायता मिलती, आप शिक्षा के प्रचार के बड़े हामी थे। अपने जीवन में एक स्कूल खोला था जो अब तक बड़ी कामयाबीसे चल रहा है। आप की इच्छा एक कालेज खोलने की भी थी परन्तु कालेज वह अपने सामने न खोल सके। सरदार साहब का देहान्त १८८८ में हुआ।

अपनी सारी जायदाद आप वसीहत द्वारा इसी कालेज के लिये छोड़ गए जो अब खुला है। परन्तु आप के देहान्त के बाद आप के सम्बन्धियों ने जायदाद पर दावा किया जो मुक़द्दमा १९०७ तक चलता रहा। इस मुक़द्दमे में सरदार साहब की जायदाद का बहुतेरा रुपया खर्च हुआ और सम-बन्धियों को दे दिलाकर अब कठिनाई से इतना रुपया बचा है कि जिस में कालेज का गुज़ारा भला भांति हो सके। जायदाद के प्रबन्ध में जो खर्चा पडता है उसको निकालकर कालेज के लिये २०००) महीने का आमदनी है। अभी थोड़े दिनों के लिये सरदार साहब के रहने के मकान में कालेज बना दिया है परन्तु कालिज़ का असल मकान भी बनना आरम्भ होगया है यह बड़े सौभाग्य की बात है कि कालेज के लिये प्रोफ़ेसर बड़े योग्य मिल गए हैं सरदार साहब की इच्छा के अनुसार धार्मिक शिक्षा भी कालेज में रखी गई है। ऐसे ऐसे उदारदिल, देश-भक्त लोग यदि बहुत से भारत वर्ष में हो जावें तो इसका उद्धार कुछ कठिन नहीं।

महाराज एडवर्ड सप्तम के स्वर्गवास होने पर मिसेज मुरारान ने हमारे पास एक कविता लिखकर भेजी है जो प्रकाशित की जाती है। कविता वास्तव में उरदू में लिखी गई थी स्त्री दर्पणा के लिये हिन्दी में करली गई है।

झुक गया एडवर्ड हफ़तुम आज क्यों झन्डा तेरा।
इन्डिया इङ्गलेन्डो यूरप क्यों बने मातम सरा॥
मर गया है शैहन्शाहे हिन्द—शाहे दिल रुबा।
जिसके मरने का हर एक छोटे बड़े को ग़म हुआ॥
मरने से दो रोज़ पहिले ये खबर ज़ाहिर हुई।
शैहनशा बीमार हैं दिल में फ़िकर पैदा हुई॥
गिरजों में और मन्दिरों में मसजिदों में जा बजा।
जल्द हों अच्छे शैहन्शा कर रहे थे सब दुआ॥
बेअसर थी सब दुआ बेकाम थी सारी दवा।
तीसरे दिन मौत का पैग़ाम आख़िर आगया॥
ये खबर सुनते ही ग़म की थाम के दिल रह गए।
आंसुओं की शक्ल में आंखों से दरिया बह गए॥
थी रिआया चैन से इस बादशाह के राज में।
जैसे सुख पाया कूईन विक्टोरिया के राज में॥
कूईन एलगज़ान्डरा तेरा क्या हाल ग़म से हो गया।
है क़यामत आज तेरा वक्त कैसा सो गया॥
चांद से चेहरे पे तेरे अब्र है छाया हुआ।
फूल सा चेहरा तेरा है ग़म से मुरझाया हुआ॥
क्या करें दुख बोझ होता बांट लेते हम तेरा।
क्या कहें ग़म राह होती साथ देते हम तेरा॥
क्या करूं इज़हारे ग़म कुछ कर मदद मेरी क़लम।
शाह का मरना हुआ हाय सितम हाय सितम॥
है दुआ यह ईश्वर से स्वर्ग में रक्खें उन्हें।
मादरे मुशफ़िक़ के पैहलू में जगा देवें उन्हें॥
कूईन मेरी—जोर्ज पंजुम के लिये है ये दुआ।
हो मुबारक राज इनको चैन से रहवें सदा॥
ईश्वर से यह दुआ आजिज़ बिरान है कर रही।
शाह जीवे सौ बरस सौसाल की हो हर घड़ी॥

मोहनदास कर्मचन्द गांधी।

[दक्षिण अफ्रिका का भारतीय वीर]

("वर्म्मा")

(गताङ्क से आगे)

बोर—युद्ध में

गांधी और अन्य हिन्दुस्तानियों ने इन अत्याचारी स्वेतांग उपनिवेशवासियों की कितनी सहायता की उस से परिचित होना अत्यावश्यक है।

जब संग्राम आरम्भ हुआ हिन्दुस्तानियों ने कहा कि वालन्टियर (अवैतनिक) सिपाही बनकर हम भी लड़ेंगे स्वेतांग लोगों ने तिरस्कार करते हुए उत्तर दिया कि 'हमें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता नहीं है। काले आदमियों को साथ लेकर हम कैसे लड़ सकते हैं?' कई वार हमारे देश वासियों की सेवा अस्वीकार हुई। इन भारतीय प्रवासियों का अनुराग ट्रांसवाल और नेटाल से इतना बढ़ गया था कि उस देश की रक्षा के निमित्त लड़ना या किसी अन्य प्रकार की सहायता पहुंचाना वे अपना परम कर्तव्य समझते थे। अतएव उन्होंने अन्त में यह प्रार्थना की कि हम सेना विभाग के किसी न किसी काम पर लगाये जांय। गांधी के बहुत अनुरोध करने पर यह निश्चय हुआ कि सामान्य हिन्दुस्तानी रणभूमि में कुलियों का काम दें, घायल सिपाहियों को समराङ्गण से उठाकर अस्पताल में लावें। सौदागर लोग भोजन सामग्री पहुंचाने में लगें। गांधी सरीखे पढ़े लिखे लोग शिफ़ाखानों में दवा बांटनेवाले कम्पौंडर बनें। ३६ पढ़े लिखे लोग एक ही साथ बड़े परिश्रम से कम्पौंडरी सीखने लगे। औषधियों का अथवा काट फांट (सर्जरी) का काम सीखकर सेना के साथ २ दिन रात चलते रहे।

'कोलेन्सो' की लड़ाई में एक सहस्र हिन्दुस्तानी लोगों ने बड़े साहस व वीरता के साथ तोप के मोड़ पर गोलियों की झड़ी में घायल व मृतक सैनिकों को रणभूमि से उठालाने में क्या ही अद्भुत साहस दिखाया! कैसे लुड़कते फुड़कते टकराते हुये

भागते थे ! इस लड़ाई में सात सौ घायल सिपाही हिन्दुस्तानियों से बचाये गये थे ।

इसी प्रकार 'स्पिओनकोप' के युद्ध में भी तीन सप्ताह तक हिन्दुस्तानी सैनिकों की सेवा तथा रक्षा करते रहे । इस लड़ाई में जनरल उडगेट साहब के बड़ी चोट आई । गांधी इन्हें अपने कंधे पर रख रणभूमि से शिफ़ाखाने में लाये । यह दृश्य बड़ा ही विलक्षण था ! घायल जनरल वेदना के मारे तड़फड़ाता था और गांधी इस मोटी लहास को बड़ी सहन शीलता के साथ कड़ी गरमी और तोफ़ान (आंधी) में लिये चले आते थे ।

एक समय धूप कड़ाकेदार पड़ रही थी । गरमी के मारे मनुष्य हताश हो रहे थे । नदी के उस पार घायल सिपाहियों की खबर लेनेवाला कोई नहीं था । मेजर बापते ने गांधी से कहा कि उस पार सहायता की आवश्यकता है किन्तु राह में गोले गोलियों की वर्षा हो रही है इस कारण कह नहीं सकते । गांधी को इतना ही इसारा काफ़ी था । आप तत्काल ही अपने हिन्दुस्तानी भाइयों को साथ लेकर वहां पहुंच गये । कई सिपाहियों के प्राण उस दिन उनके ही आत्मत्याग और परिश्रम के कारण बचे ।

इस सिलसिले में डाक साहब के वाक्य उद्धृत करना अनुचित न होगा । एक लड़ाई के विषय में वे लिखते हैं "फिर भी वे (भारतवासी) वाल रेंज (Vaal Krantz) की लड़ाई में गोलियों की बौछार के नीचे थे । जब वे (कुली) घायल सिपाहियों को रणस्थल से हटाते थे ; उन्हीं के सामने गोलियां पड़ती थीं अस्पताल के अर्दली, पानी ले जानेवाले (भिश्ती), घायलों की ख़िदमत करनेवाली धायें और बीमारों को ले जानेवाले कुली सबके सब इस आपदा में सहायता पहुंचाने पर कटिबद्ध थे । कई बार उन्हें स्वेतांग सिपाहियों के हाथों से तिरस्कार व अपमान भी सहना पड़ता था । गोलियों के नीचे सिर दिये रहना पड़ता था । तिसपर भी उन लोगों ने अपना कर्तव्य पालन बड़ी सहनशीलता तथा दक्षता पूर्वक किया और सिपाहियों की बड़ी सराहना और धन्यवाद के पात्र बने ।"

आगे चलकर डोक साहब फिर लिखते हैं कि "जौन्सबर्ग में एक यादगार (स्मारक चिन्ह) बना हुआ है। यह यादगार उन भारतवासियों की यादगारी में बनवाया गया है जो गांधी के साथ घायल सिपाहियों को उठा लेजाने और शिफ़ाखाने में उनकी टहल और देख भाल इत्यादि काम करने में सैनिकों की सेवा करते हुये रणक्षेत्र में काम आये (मरे)। यह स्मारक चंदे तथा मृतक भारतवासियों के मित्रों की सहायता से बना था । किन्तु वास्तव में यह स्मारक चिन्ह उस उत्साह और कृतज्ञता का फल है जो बोर युद्ध के शान्त होने पर ट्रांसवाल में उन हिन्दुस्तानियों के प्रति उत्पन्न हुआ था जिन्होंने ब्रिटिश राज के एक भाग अर्थात् दक्षिण अफ्रिका की रक्षा में अपने प्राण दिये थे। परन्तु यह गुण ग्राहकता तथा कृतज्ञता अब लोप होगई ! यह कितने आश्चर्य की बात है कि इस यादगार के सामने और इस भूमि में जिसकी रक्षार्थ भारतवासियों ने अपना खून बहाया भारतवासी सिर्फ ब्रिटिश राज के नागरिकों के हक्क चाहने के निमित्त जेलखानों में सड़ रहे हैं। और अपने नैसर्गिक सत्वों के लेने के उद्योग में हिन्दुस्तानियो को दक्षिण अफ्रिका में इतनी आपदायें सहनी और कष्ट भोगने पड़े हैं। *

प्लेग (ताऊन) के दिन

संवत १९६१ (सन १९०४) में गांधी ने लोगों को प्लेग से बचाने का बड़ा प्रयत्न किया। मदनजी इत्यादि भारतवासी और डा० गॉडफ्रे साहब स्वेतांग कालोनिष्ट को साथ ले प्लेग पीड़ित लोगों की रक्षा में लगे। लोग साधारणतः ऐसी बीमारी से दूर भागते थे पर यह उनके लिये गुदाम घरों को खाली कर शिफ़ाखाने खोलते थे। उनके रहने के लिये अच्छे स्थान ढूंढते थे। इस विषय में Rand Plague Committee की सरकारी रिपोर्ट में लिखा है कि ता० १८ मार्च १९०४ की शाम को श्रीयुत गांधी मदनजीत और डाक्टर गौडफ्रे साहब प्लेगपीड़ित हिन्दुस्तानियों की सहायता में लगे रहे। दुःखी रोग पीड़ित लोगों को Stand 36 Coolie Location ले जाते थे उनके लिये बिस्तर कम्मल

* जे. जे. डोक (J. J. Doke) साहब की Johannesburg पुस्तक 'M. K. Gandhi' के ५७ पृष्ट से अनुवादित हैं।

इत्यादि का प्रबन्ध करते थे। बिचारों को यथा शक्ति आराम पहुंचाने का प्रयत्न करते थे।

"ता० १६ को गंगग्रस्तग्रस्तों नं० ३६ पर हटा दिए गये थे। श्रीयुत गांधी के नेतृत्व में हिन्दुस्तानियों ने बीमारों की हिफ़ाज़त तथा खिलाने पिलाने का सब बन्दोबस्त स्वयं किया"

यह केवल दो दिन की दिनचर्या का हाल है। ऐसे ही और दिनों आपको प्लेग पीड़ित भाइयों की सेवा में लगा रहना पड़ा।

ज़ूलू लोगों की बग़ावत

में भी संवत १९६३ में उपनिवेशवासी अंग्रेज़ों को गांधी जी की नेतृत्व में हिन्दुस्तानियों ने बड़ी सहायता दी। जैसे 'बोर वार' के समय हिन्दुस्तानी निवासी एक कंपनी बनाकर लड़ाई में घायल लोगों की देख भाल करने में लगे थे वैसे ही पहिले तो केवल बीस स्वतंत्र हिन्दुस्तानी लिये गये थे जिनके नायक (सरजेंट मेजर) गांधी बनाये गये थे। पीछे अधिक आदमियों की आवश्यकता होने पर इन की संख्या बढ़ा दी गई थी। इन हमारे बान्धवों के इस कार्य के विषय में डॉक साहब लिखते हैं कि "इस तरह ये भारतवासी अपने इस दुःख जनक कार्य पर रात दिन लगे रहते थे। वे घावों को धोते थे, उन पर पट्टी बांधते थे घायल सिपाहियों का रणभूमि से उठा· कर अलग रखते थे घायलों को पहाड़ियों पर नीचे से ऊपर एक ही सांस में २०, २५ मील की दूरी तक अपने कंधों पर उठाकर ले जाते थे। यह एक महीना (हिन्दुस्तानियों का) बड़े कठिन परिश्रम में बीता जिसमें उन्हें बड़ा आत्मत्याग करना पड़ा। इसमें उन्हें बड़ी दिक़्क़त सहनी पड़ी। भारतवासियों के समीप यह काम करना साधारण बात नहीं थी। ये भारतवासी मामूली आदमी नहीं थे। ये लोग उस जाति के व्यक्ति हैं जिनकी रग रग में प्राचीन सभ्यता भरी हुई है; जिनके पूर्वजों से संसार को सर्वोत्तम साहित्य तथा उच्च विचार मिले हैं। इन ऐसे सभ्य लोगों का असभ्य निकृष्ट दशा के लोगों की सेवा करना बड़े आत्मत्याग का काम है। परन्तु यह बड़े खेद की बात है कि दक्षिण अफ्रिका में

भारतवासियों के इस आत्मत्याग और परिश्रम की कुछ भी कदर नहीं होती। ऐसे सभ्य भारतवासी यहां के हवशियों की श्रेणी में रखे जाते हैं। ट्रांसवाल में भारतवासी ट्राम गाड़ियों में नहीं बैठने पाते हैं। रेलगाड़ी में उनके लिये अलग एक खास तरह के कमरे बने हुए हैं। जेल में भी हिन्दुस्तानी हवशियों के ही साथ रखे जाते हैं और उनके गले पर एक टिकट लटकाया जाता है जिससे यह सूचित किया जाता है कि वे हवशियों के सहवासी हैं। खाने को भोजन और पहिनने को कपड़े जैसे हवशियों को मिलते हैं वैसे ही हिन्दुस्तानियों को भी मिलते हैं। जेल में जो भोजन हिन्दुस्तानियों को मिलता है वह बड़ा रद्दी है और उनके योग्य बिलकुल नहीं।"*

नेटाल में गांधी के व्यवसाय।

गांधी का व्यवसाय साधारणतः बैरिस्टरी के सिवाय और क्या हो सक्ता था। वकालत से आप को आय भी अच्छी हो जाती थी। औसद हिसाब से सलाना ५०००) रु० की आमद वकालत से आप को होती थी पर जब से आप अपने हिन्दुस्तानी भाइयों की सेवा में लगे आप को वकालत को कम समय देना पड़ा। यहां तक कि अब आप को बैरिस्टरी करने का समय नहीं मिलता है। अब आप को सदैव अफ्रिका प्रवासी भारतवासियों की दशा सुधारने में ही सारा समय लगाना पड़ता है। इस आंदोलन के आरम्भ होने से बहुत सारा समय आप का कारागार में ही कटता है।

अपनी वकालत के सिवाय नेटाल में गांधी ने और भी कुछ व्यवसाय खोले। ये काम भी आपने अपनी आमदनी के लिये नहीं चलाये वरन्च हिन्दुस्तानियों की दशा सुधारने के ही लिये और व्यवसाय भी खड़े किये।

वर्तमान समय में विना समाचार पत्रों के समाज को संगठन करना तथा उस में नये विचार फैलाना वा उन्नति करने के लिये उत्तेजित करना प्रायः असम्भव है। गांधी ने देखा कि दक्षिण अफ्रिका में प्रायः डेढ़ लाख भारतवासी प्रवास करते हैं। ये लोग ट्रांसवाल नेटाल और केप कालोनी में विस्तृत हैं। इन

---

* ये वाक्य डोक (Dook) साहब के वचनों का अनुवाद है जो उनकी अंग्रेज़ी की पुस्तक M. K. Gandhi के ७१ वें पृष्ट में मिलेंगे॥

को यह मालूम नहीं था कि कहां कहां और कितने भारतवासी दक्षिण अफ्रिका में रहते हैं। इस अज्ञान को हटाने तथा उन में जीवन डालने या यों कहिये कि दक्षिण अफ्रिका में भारत वासियों की एक राष्ट्र खड़ी करने के अभिप्राय से गांधी ने संवत १९६० में 'इण्डियन ओपीनियन' Indian Opinion नाम का एक अखबार निकालने का विचार किया। दक्षिण अफ्रिका प्रवासी हिन्दुस्तानियों में शिक्षा का बहुत अभाव था। तिस पर भी विशेषता यह थी कि वहां कई प्रांतों के लोग थे। वे एक ही भाषा में निकलनेवाले पत्र से कुछ लाभ न उठा सकते। अतएव एक समाचार पत्र Indian Opinion चार भाषा अंग्रेज़ी, तामील, गुजराती और हिन्दी में निकलने लगा। मदन-ज़ीत और नाज़र इन दो देश भक्तों की सहायता से आप इण्डियन ओपीनियन निकालने लगे। यद्यपि सम्पादक का पद नाज़र महाशय को सौंपा गया था तथापि गांधी को इस पत्र के लिये बहुत लिखना पड़ता था। वहां रहनेवाले हिन्दुस्तानियों में अभी इतना उत्साह वा जीवन नहीं आया था कि वे ऐसे पत्र के ग्राहक बन गांधी जी की द्रव्य से सहायता करते। इस कारण अखबार के चलाने में द्रव्य की न्यूनता के कारण बड़ी कठिनाई पड़ी। यहां तक कि बिना गांधी की उदारता के पत्र बन्द ही करना पड़ता। पहिले साल का खर्च चलाने के लिये गांधी ने ३००००) तीस हज़ार रुपये अपनी गांठ से दिये तब पत्र का काम चला। पहिले वर्ष के अंत में फिर भी बड़ा घाटा रहा! जिस के कारण "इण्डियन ओपीनियन" ('भारतवासियों की सम्पति') बन्द ही करना पड़ता। धन्य है गांधी की उदारता व देश भक्ति को! उन्होंने इस पत्र का सब भार अपने ऊपर ले लिया और अपने खरच से अखबार चलाना निश्चय किया। इस समाचार पत्र द्वारा हिन्दुस्तानियों को बड़ा लाभ पहुंचा है। उन में नवीन जीवन का प्रादुर्भाव हो गया है। हक़ चाहने तथा भारतीय कुलियों पर अत्याचार रोकने के लिये इस पत्र ने बड़ा उद्योग किया है। अब वह पत्र पोलक साहब के सम्पादकत्व में जो आज के दिन हमें हमारे भाई बहिनों पर अत्याचार की हृदय विदारक कथायें सुना रहे हैं बड़ी योग्यता पूर्वक चल रहा है। उद्योगी पुरुषों की छोटी बातों से तृप्ति कब

होती है। महान पुरुष बड़े दूरदर्शी हुआ करते हैं। गांधी का विचार है कि दक्षिण आफ्रिका में नेटाल के समीप

भारतवासियों की उपनिवेश

अर्थात् कालोनी बसाई जावे। दरबान से कुछ दूरी पर एक अच्छी रमणीय एकान्त भूमि में बाग़ और खेत बनाने लायक कुछ ज़मीन बंज़र पड़ी थी। गांधी ने विचारा कि यहां पर हिन्दुस्तानियों की एक छोटी सी बस्ती बसाई जाय जो कालान्तर में क्रमशः भारतवासियों की छोटी सी उपनिवेश (कालोनी) बन जाय। आपका विचार है कि भारतवासी दक्षिण आफ्रिका सरीखे अन्य देशों में जाकर यूरुपवासियों की तरह अपनी कालोनी बनावें। आप चाहते हैं कि जो लोग ऐसी उपनिवेशों में वास करें वे अपनी मातृभूमि (भारत) से अपना सम्बन्ध बनाये रखें अपने रीति रसम चालढ़ाल वार तेहवार वही रखें। कपड़े भी भारतवासियों के से पहिनें ताकि विदेश में रहने पर भी वे स्वदेशी (भारत वासी) बने रहें। यह बहुत अच्छा विचार है। अन्य देशवासियों की तरह हमें भी दूर देशों में अपनी कालोनियां बनानी चाहियें। विना ऐसा किये हमारा यहां कालक्षेप होना कठिन है। इसी अपने मन्तव्य को पूरा करने के विचार से दरबान से दो घंटे के रास्ते पर 'फोनिक्स' नाम की एक छोटी सी कालोनी (बसासत) गांधी ने बसाई है। पारसी सौदागर रुस्तमजी ने इन्हीं के परामर्श के अनुसार एक ही माह के भीतर वहां एक भवन निर्माण करवा दिया। गांधी के चचेरे भाई और इनके बड़े भाई ने भी यहां अपने २ व्यवसाव खोले 'इण्डियन ओपीनियन' भी (१९०१ से) इसी छोटीसी नवीन उपनिवेश से निकलने लगा फोनिक्स में फल फूलों के बाग़ और कृषिक्षेत्र तय्यार हो गये हैं। इनके आस पास हिन्दुस्तानियों के छोटे मकान भी बनने लगे हैं इस नवीन वस्ती में एक स्कूल भी खोलदी गई है। यहां के वाशिन्दे बड़ी साधारण चाल से रहते हैं। जोन्सबर्ग और दरबान से कुछ दिनों के लिये गंदे शहरों की दूषित वायु से अपना पीछा छुड़ाकर निर्मल वायु सेवनार्थ और एकान्त में लिखने पढ़ने

का काम करने के लिये गांधी इसी कालोनी मे आया करते हैं।

हम उन लोगों से सहमत नहीं जो कहते हैं कि अन्य देशों में भारतवासियों से अच्छा वर्ताव नहीं होता है अतएव उन्हें घर से वाहर नहीं निकलना चाहिये। क्या खूब! ऐसा क्यों न कहा जाय 'क्योंकि मनुष्य को उदर पोषणार्थ व अपने कालक्षेप के लिये संसार में कई कष्ट सहने पड़ते हैं। अतएव उसे जन्म ही नहीं लेना चाहिये' *। जिस प्रकार अन्य देशवासियों का हक़ है कि वे दूर देशों में जाकर अपनी कालोनियां वसाते हैं वैसे ही हमारा भी हक़ है जावा इत्यादि और कई द्वीपों में हमारे पूर्वजों की उपनिवेशों की गवाही इतिहास और हमारी चित्रकारी के चिन्ह दे रहे हैं। अभीतक आफ्रिका प्रवासी भारतवासियों ने माता की लाज खूब रखी है इसी लिये वहुत सारे लोगों का विचार है कि "असली भारतीय राष्ट्र दक्षिण अफ्रिका में तय्यार हो रही है।"

गांधी की राष्ट्रीय पाठशाला।

यह 'गांधी उपनिवेश' जिसको नेटाल में Phonix Settlement कहते हैं दरवान से १२ मील की दूरी पर North Coast Railway of Netal के स्टेशन से दो मील की दूरी पर है। यहां मोहनदास कर्म चन्द गांधी ने एक राष्ट्रीय पाठशाला खोली है। यद्यपि आत्मत्यागी निस्वार्थी पढ़ानेवालों के अभाव और द्रव्य की कमी के कारण यह स्कूल अभी अच्छी दशा में नहीं है तथापि इसे दक्षिण आफ्रिका प्रवासी भारतवासियों का आनेवाली पीढ़ी के लिये राष्ट्रीय विद्यालय समझना चाहिये। गांधी की

---

* इस विषय म श्रीमान महादेव गोविंद रानडे जी की भी राय इसी प्रकार थी। "भारतवर्ष के उन भागों से जहां बसासत घनी और जन संख्या बढ़ती जा रही है लोगों को इन देशों में चले जाना चाहिये जहां मज़दूरी अधिक मिलती हो"। History of the Intellectual Development in Europe में लिखा है कि 'पूर्वीय जातियों का कल्याण इसी में है कि वे अपना देश छोड़ छोड़ अन्य देशों में जा बसें इस के यह माने नहीं हैं कि अपनी मातृभूमि की ओर पीठ फेर सौतेली मा को अपनावें। इसका यह आशय है कि अन्य देशों में जाकर अपना मान धन और गौरव बढ़ावें। लेखक।

यह प्रबल इच्छा है कि फोनिक्स की जातीय पाठशाला में सब आफ़्रिका प्रवासी हिन्दुस्तानियों के लड़कों को तालीम बिना फीस लिये मुफ्त मिले। और इस शिक्षा से बालकों को आचार शुद्ध और उत्तम बनें। वे इस पाठशाला में बालकों को यूरुप की नास्तिक * कुबेर महाराज के उपासक बननेवाली शिक्षा नहीं दिया चाहते हैं। गांधी आशा करते हैं कि इस पाठशाला में शिक्षित बालक बालिकायें एक दिन न एक दिन अपनी जाति की सेवा के लिये खड़ी होंगी। उनका यह पूर्ण विश्वास है कि फोनिक्स में पढ़े सब व्यक्ति भारत माता और दक्षिण आफ़्रिका प्रवासी हिन्दुस्तानियों के बड़े काम के होंगे। गांधी का देश भक्ति बातों में ही खर्च नहीं होता है वह अपनी देश भक्ति को अपने जीवन के कार्य में घटित कर दिखाते हैं। गांधी का यह विश्वास है कि कोई भी जाति अपने व्यक्तियों से पृथक नहीं है अर्थात प्रत्येक राष्ट्र के सब लोग मिलकर एक 'जाति' का रूप धारण करते हैं अतएव देश भक्तों का यह मुख्य कर्तव्य है कि वे जाति के प्रत्येक व्यक्ति का जीवन को सुधारने व उस में गाढ़ निस्वार्थ और देश भक्ति का संचार करने का उद्योग करें। इसी अभिप्राय से गांधी ने यह राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित किया है। आशा है कि इस पाठशाला से कई "नेटालीवाली" * और "ट्रान्सवाली वीर" * निकलेंगे।

हमारा भी यही सिद्धान्त है कि सभा समाजों के स्थापित करने के बदले यदि कोई देश भक्त अपने जीवन में एक ही निस्वार्थी शुद्धचित्त (Sincere) परम देश भक्त बनाकर छोड़ जाय तो समझना चाहिये कि उसका जन्म सफल हो गया और वह माता की सेवा कर चुका, ऐसे देशभक्त बिना राष्ट्रीय शिक्षा और जातीय विद्यालयों के मिलने कठिन हैं। हम गांधी की राष्ट्रीय पाठशाला की उन्नति चाहते हैं और उन्हें बधाई देते हैं।

---

* कुबेर—धन के अधिष्ठाता इष्ट देव को कहते हैं।

* इस जीवनी का लेखक 'नेटाली वाली' और 'ट्रान्सवाली वीर' नाम के मनोहर ऐतिहासिक उपन्यास लिख रहा है।

विद्या की बड़ाई ।

वस्तु अनेकें अहैं जुग माहीं । विद्या सम कतहूं कोउ नाहीं ॥
धर्म बढ़ै चाहत जो कोई । मन लगाय विद्या पढ़ सोई ॥

जो चित दे विद्या पढ़ते हैं । वह विन दुःख सर्वस लहते हैं ॥
विद्या ही धन धाम बढ़ावै । विद्या सव को गुणहि सिखावै ॥

पूरी इच्छा जो कोइ पावें । ताही का गुण सब कोइ गावें ॥
काम धेनु सम विद्या राखत । पढ़ै लोग जो लाभहिं चाहत ॥

विद्या है सबही सुख दाता । सबही से रखती एक नाता ॥
नाता मान विद्या जो पढ़हीं । भवसागर के पार उतरहीं ॥

लाभहिं चाहत पुरुष जो, पढ़ै विद्या चित लाय ।
सब से रख के भिन्नता, राग द्वेश विलगाय ॥

जो नर इगिरदिगिर करते हैं । भवसागर में वे मरते हैं ॥
मरते सबहिं पुरुष अरु नारी । मूरख जन मर खाते गारी ॥

मरना उसका जग में अच्छा । जो विद्या की करते परिच्छा ॥
जो तन जग में धारण करते । निश्चय विस्वम वह मरते ॥

भाई ! जग में तन धारण करते हो । हाय ! स्वकर्म नाहिं करते हो ॥
यह नहि कर्म तुम्हारो भाई । मद पीकर सब करत बड़ाई ॥

पी शराब होटल में खाते । अपने धर्महि नाश कराते ॥
यदि अपनी आप भलाई चाहो । तो सब विधि विद्या को गाओ ॥

यह कर्म मन मह निर्धारो । शिक्षा हेतु गुरु पंह पग धारो ॥

विद्या विन सब होत है, देख धर्म को नास ।
याते सब मिल गुण सिखो, छूट जाय सब त्रास ॥

सीता राम के प्रति।

(श्रीयुत मन्नन द्विवेदी गजपुरी)

हे रघुनाथ! सीलगुन सागर! ग्यान पुंज बल बुद्धि निधान।
स्वामी सुखद भक्त भय भंजन, मम तन मन सरवस भगवान॥

महा विषम महि भार हरन हित, करन हेतु पितु वचन प्रमान।
तजि पितु मातु प्रजा परिजन गन, करत नाथ इन वेगि पयान॥

कुश कंटक, मग भालु बाघ वृक, कहें नाथ जो कष्ट कठोर।
लागें सलिल, दुखद इनते बहु, तुव वियोग कृत आपद घोर॥

तुव संयुत सुख तुरग विपिन वसि, अवधनाथ बिनु संकट भार।
अस विचारि उर चरन सरन दै, तजहु न मोहि दया आगार॥

यदपि अवध धन धान ग्यान बहु, सास ससुर प्रिय सुजन समान।
पै जल हीन दीन सफरी को सुख, सम्पति आवै केहि काज॥

प्राणनाथ के बिना नारि को, पड़ता कहीं न दिखलाई।
पति समेत सुर सदन नरकहू, पति बिनु सब कुछ दुखदाई॥

साथ नाथ के पर्न कुटी में भी, अमोघ सुख पाऊंगी।
कोमल चरन पखारि पिया के, हिय की पीर मिटाऊंगी॥

ला, ला, कुसुम विपिन वृक्षों से, बहु सुगन्ध शोभा वाले।
पहिनाऊंगी निज हाथों से, गुथे हुए मोहन माले॥

विनै करूं हे नाथ! दया दासी पै कीजै।
संग चलन हित वेगि मोहि प्रभु आयसु दीजै॥

नतु वियोग सन्तप्त मुझे आकर पाओगे।
तब अवश्य करुनेश! हाथ मलि पछताओगे॥

गिरगट के रंग की रिवायत ।

(पण्डित प्रान नाथ, ग्वालियर)

दुनियां में बहुत से रंग रूप हैं। बाग़ में देखो कितने रंग रूप के फूल और परंद और तितलियां हुआ करती हैं। किसी को इसका घमंड करना ठीक नहीं है बल्कि परमेश्वर को धन्य-वाद देना चाहिये कि जिसने हमें आंखें दीं कि हम उनको देख कर खुश हों। इसी तरह आदमी की तबियतें और उनके ख़या-लात भी तरह तरह के हुआ करते हैं। यह कुछ ज़रूरी नहीं कि सब की तबियत और ख़याल एक से हों, अगर ऐसा होता तो दुनियां बहुत उदास मालूम होती। आदमी में ज़ाहिर के रंग रूप से उसके दिल की खूबियां ज़्यादा क़द्र के क़ाबिल होती हैं। जिस क़द्र दिल व दिमाग़ की खूबियां बढ़ती जाती हैं उसी क़द्र जिस्म की सजावट का शौक़ घटता जाता है। शाइस्ता क़ौमों के मुक़ाबिले में वहशी और नीम वहशी गिरोहों में ज़ेवर का रिवाज ज़्यादा है। यह ख़्याल भी ठीक नहीं कि सिर्फ़ हमारा ख़्याल और राय ठीक है। और बाक़ी सब के ख़यालात ग़लत हैं। तजरुबे से मालूम होता है कि ख़ुद हमारे ख़यालात बदलते रहते हैं। अगले ज़माने के ख़यालात और थे, फिर कुछ अरसे बाद वह बदल गये और अब कुछ और हैं। विलायत के सफ़र और स्त्री शिक्षा के मामले में ख़यालात में किस क़द्र तबदीली हो गई। इसी तरह जो ख़यालात अब हैं वह आगे बढ़कर ऐसे ही नहीं रहेंगे। ज़माने की ज़रूरत उसको बदल देगी। ख़यालात पर तालीम और सोहबत का भी बहुत कुछ असर होता है। सब के लिये तालीम और सोहबत के मौक़े एक से नहीं हुआ करते। इस लिये जो राय हमारी राय के ख़िलाफ़ हो उसे गुस्से और नफ़रत से नहीं देखना चाहिये। कभी २ ऐसा भी होता है कि हम ख़ुद ग़लती पर होते हैं। मुल्क के रिफ़ार्म के मामलों में धीरज की ज़रूरत है। मैं इस छोटे मज़मून को गिरगट की रिवायत पर ख़त्म करता हूं। किसी आदमी ने कहा कि मैंने नीले रंग का गिरगट देखा। दूसरा बोला कि नहीं वह हरे रंग

का था। तीसरे को ताब न आई कहा तुम झूठ कहते हो मेरे पास गिरगट मौजूद है काले रंग का है। लो देखो? जब निकालकर सामने रखा तो वह सफेद रंग का था। इस रिवायत से हमको सबक़ लेना चाहिये और खयाल करना चाहिये कि और लोग जो कहते हैं क्या अजब कि उनका कहना भी ठीक हो॥

तीर्थ यात्रा।

(श्रीमती मुन्नी देवी, आसाम)

हम लोगों में तीर्थ यात्रा का बहुत चलन है। इसे मैं अब तक नहीं समझ सकी कि लोगों को तीर्थ क्यों अच्छा लगता है। बहुत सी बहिनों को तो तीर्थ यात्रा से इतना प्रेम है कि जब तीर्थ यात्रा से लौटती हैं तो अपने पड़ोस की और २ स्त्रियों में बैठकर अनेक बड़ाई करती हैं कि हम तो फ़लाना तीर्थ कर आईं, मरने जीने का क्या ठिकाना और ऐसी २ बातें कह-कर उनको भड़काती हैं। वह भी भड़कनेवाली उसी ख्याल की होती हैं, और चट अपने घरवालों से लड़ने को तय्यार हो जाती हैं और कहती हैं कि देखो फ़लाने के घर की कैसी रीति है। यह कहने पर उन को जाने का हुक्म मिल जाता है और यह भी कहती हैं कि ऐसे २ उत्तम तीर्थ जो छोड़े उसकी मुक्ति कैसे हो, उसे वैकुण्ठ कब प्राप्त हो सकता है। हम तो ऐसे पापियों के यहां आई जहां तीर्थ व ठाकुर पूजा या दर्शन का नाम तक नहीं इस में तो हमारा मैका ही अच्छा था। ऐसा कहती हैं उन को अभी तक तीर्थ के अर्थ ही नहीं मालूम हुए, जो विद्यावती से पूछें तो जान जांयेगी। मथुरा, जगन्नाथ, बद्रीनारायण, विन्ध्याचलादि और २ तीर्थ स्थान आप लोगों के लिये कैसे हानिकारक हैं। आप लोग इन्हें एक धर्म समझती हैं। स्त्री के लिये सब से उत्तम तीर्थ बड़ों की सेवा करना है। सो आजकल वह तो सब ने त्याग दिया और यह झूठे तीर्थ अपने हृदय में जमा लिये। जाने यह अविद्या

कब भारतवर्ष से टलेगी । विद्याहीन बहिनों पर इस का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा है। स्त्रियों का यह तीर्थ कुवांरी स्त्रियों को माता पिता के घर बड़ों की सेवा दर्शन तीर्थ है। और विवाहिता स्त्रियों का मुख्य तीर्थ पति की सेवा और सास ससुर आदि के दर्शन हैं। स्त्रियों का यही उत्तम तीर्थ करना अवश्य है और विधवाओं को ईश्वर पूजा और शास्त्रादि ज्ञानक पुस्तकों को पढ़ना और २ स्त्रियों को शिक्षा देना विद्या पढ़ना ही तीर्थ है। बहुत सी स्त्रियां तीर्थ यात्रा उत्तम बताती हैं, परन्तु वे भूली हुई हैं कि रास्ते में उन्हें तीर्थ स्थान में कितने धक्के खाने पड़ते हैं। तो फिर जान बूझकर क्यों विद्याहीन बनती हैं। देश सुधार शील स्वभाव का खयाल नहीं जब आप तीर्थ करके लौटती हैं तो क्या फिर भी वही शील स्वभाव बना रहता है। और जो अच्छी अच्छी बाहिनें हैं उनको कभी यह तीर्थ यात्रा अच्छे न लगते होंगे, विधवा स्त्रियां जब तीर्थ से लौटती हैं तो उनको अपने सर मुड़ाने पड़ते हैं। बस यह उनकी पहिचान है। कौनसा लाभ इन तीर्थों से होता है। मेरे ख़याल में अब तक कोई ऐसी पुस्तक न निकली होगी जिसमें शहरों को तीर्थ माना हो। और बाज़ बहिनों के मुंह से यह भी सुनाई पड़ता है कि हम तो भटकती ही रह गईं बहन तुम्हीं अच्छी जहां मन हुआ आई गई। क्या जिसके कोई नहीं वह स्त्री तक़दीर-वाली है। मेरे ख़याल में जिसके सब कोई हैं उसी का जीवन सफल है। मैं जानती हूं कि भारत की बहिनें अपनी बढ़ती नहीं चाहतीं और सन्तान को देखकर कहती हैं कि बस अधिक तो हम इन के पाबन्द हैं। कुछ नहीं कर सकतीं। तुम्हारी तक़दीर खूब अच्छी है मेरी देश बहिनों यह मेरा पहिला ही लेख लिखने का समय है। आशा करती हूं कि आप सब बहिनें व माताएं अपनी बहन पुत्री पर कृपा करके पसन्द करेंगी और जो भूल चूक हो उसकी सब बहिनों से क्षमा मांगती हूं॥

स्त्री जाति पर पुरुषों का बुरा व्यवहार।

(श्रीमती सावित्री देवी)

हा शोक! स्त्रियां हर तरफ से निर्बल निःसहाय हैं ऐसी दशा पर भी उनके ऊपर पुरुषों का कितना अत्याचार होता है जोकि केवल स्त्रियों के सिवा सर्वव्यापी ईश्वर छोड़ कोई भी नहीं जान सकता जिसके लिखने में लेखनी असमर्थ होती है। किस प्रकार इस कष्ट से उनका छुटकारा मिले उसका उपायही नहीं मालूम होता। कष्ट देनेवाले पुरुष यह नहीं जानते कि जो हमारी लोक मर्य्यादा रखती हैं, जो हमारे दूषित चरित्र को भी ढांकती हैं, जो हमारे घर की दिन भर टहल करती हैं, हर तरह पर हमको सुखी रखने की कोशिश करती हैं, घर को स्वर्ग बनाने का प्रयत्न करती हैं, अपने जीवन को तुच्छ समझकर पति का हर तरह परमान रखने का यत्न करती हैं, ऐसी गृहलक्ष्मियों को कष्ट पहुंचाकर वे क्या सुखी होंगे सिवा इसके कि वे अपने घर को घोर नरक बनाकर बिना दम्पति प्रेम के कलह मचावेंगे और स्वयं दुखी हो परिवार भर दुःखित करेंगे॥

पहिला अत्याचार पुरुषों का स्त्रियों पर जो होता है वह उनको शिक्षा का न देना है। बाहर बाबू साहब समाज बंधन को लात मार विलायत जाने को क़दम उठाये हुये हैं, जोश में भर बाल्यविवाह, विधवा विवाह, समाज संशोधन आदि पर कोरी लेक्चरबाज़ी करते हैं, परन्तु घर में स्त्रियों का कुछ निरालाही ढंग रहता है। दूसरा अत्याचार उन पर बाल्यविवाह है जिसके कारण उनके उठने की आशा कहीं से भी नहीं पाई जाती। तीसरा अत्याचार उन पर उनको नीची निगाह से देखना है इसीसे उनमें और भी स्वाभिमान नहीं बाक़ी रह जाता। वे ऐसी दशा में जब कि पुरुष उनको मूर्ख समझ और अपने को महा विद्वान पंडित समझकर उनको घृणा की दृष्टि से देखते हैं दुखी हो अपने जीवन को भी दुशवार समझने लगती हैं॥

पुरुष यह नहीं समझते कि हमारी कट्टर जाति की अपेक्षा भोली भाली निर्दोष और निष्पाप स्त्री जाति विशेष गौरव और

प्रतिष्ठा पाने योग्य हैं जोकि अपना तन मन जलाकर सर्वस्व सुख से हाथ धो कुल की मर्य्यादा का निबाह करतीं हैं. सौंदर्य और सौभाग्य में साक्षात लक्ष्मी का अवतार, नम्रता मल मन साहित्य सिधाई व सरलता में मानों भवानी की मूर्ति, लज्जा की खानि श्रद्धा दया व शांति की मूर्ति, भारत के इस गिरे दिन में भी जिनका यश सूर्य्य की भांति चमक रहा है और जो ऐसे समय में भी अपनी क़ौम का ज़ेवर और आर्य जाति की शृंगार हैं। ऐसी देवियों का अनादर करके क्या सुख व शांति पा सकेंगे। आज कल की सभ्यता के समय में भी जब कि पुरुष जेंटलमेन बनने का दावा करते हैं, शराब तथा होटल की तरफ़ झुकते हैं, विलायत जाकर मेमों के फंदे में पड़ जाते हैं, ऐसे समय में भी स्त्रियां ही उनके दुर्चरित्त को ढांकती हैं और अपने पातिव्रत धर्म से ज़रा भी नहीं डिगतीं। इस में सन्देह नहीं कि वर्त्तमान समय की ललनायें मूर्ख अवश्य हैं परन्तु यह दोष भी पुरुषों ही के कारण इनको मिले क्यों कि यहां लोग इनको विद्या देकर और घृणा की दृष्टि से देखकर उनके में आत्माभिमान तथा आत्मा-निर्भरता पर कुठार चलाते हैं। जो कहीं आज कल की ललनाओं में मूर्खता का एक अड़ंगा न लगजाता तो यह पूर्णरूप से देवी रहतीं अतएव इनकी अज्ञानता तब तक न जायगी जब तक कि इनके हृदय पटल पर विद्या के गुण भली भांति अंकित न हो जायेंगे॥

स्त्रियों को शिक्षा देना ही उनको सब सुखों से ज़्याद सुख देना और संतुष्ट रखना है। बहुतों का मत है कि स्त्रियां पढ़कर अपने बड़ों का अपमान करने लगेंगी, घर गृहस्थी का काम धन्धा करना उनको बुरा मालूम होगी, विद्या को पढ़-कर स्त्रियां स्वतंत्रता की अभिलाषणी होंगी इत्यादि। ठीक, जब विद्या ऐसी ही बुरी चीज़ है तब पुरुष लोग स्वयं इसको क्यों ग्रहण करते हैं और स्त्रियों को इस से वंचित रखते हैं। सिवा इसके कि वे अपने घर की रोशनी तथा उनकी रखवाली शुभचिंतक लक्ष्मियों को अंधेरे में रखकर अपने जीवन के आनन्द को फीका करने के और दूसरा लाभ उनको कदापि नहीं मिल सकता, स्त्रियों को अच्छे से अच्छे राह पर

लेजाने के लिये पुरुषों में नम्रता तथा धैर्य्य का होना अत्यावश्यक है वह तभी उत्तम पथ का अनुकरण करेंगी जब कि उनके साथ नम्रता का वर्ताव होगा और उनको पूरी शांति और सुख पहुंचाया जावेगा। मनु महाराज का वचन है—

जामयो यानि गेहानि शपन्त्यऽप्रतिपूजिताः।
तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः॥

भली भांति आदर न पाय वधू जन जिस घर को शाप देती है वह घराना कृत्याहत के समान सब ओर से नष्ट हो जाता है। सच है कितने घर इन्हीं के अनादर से दीन दरिद्र तथा निरवंश हो गये। बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है अपने देश ही की ओर दृष्टि पात करना चाहिये। जब से इस देश में स्त्रियों का अनादर होने लगा तभी से यह भारतवर्ष सुख समृद्धि से खाली हो गया। याद रहे कि वर्त्तमान समय की सैकड़ों बुराइयों को दूर करने को चाहे लाखों उपाय सोंचे जाय या किये जाय परन्तु तब तक कुछ भी न होगा, जब तक कि भारत ललनाओं के हृदय में यह भाव रहेगा कि कन्या आठ वर्ष की न ब्याही जायगी तो पुरुष नरक में जायेंगे। यह कहना अत्युक्ति न होगा कि पुरुष चाहो बड़ा से बड़ा इम्तिहान पास करें परंतु स्त्रियों की दशा में जब तक परिवर्तन न होगा तब तक कुछ भी न होगा। आर्य ललनाओं की दशा का परिवर्तन सुधार की पहिली सीढ़ी कहना चाहिये। बिना इनकी दशा सुधरे देश की दशा का सुधरना टेढ़ी खीर है। स्त्रियां जो स्वतंत्रता चाहें तो आप नदी समान कुल रूपी कगारे को एक दम ढहाय दूर फेंक सक्ती हैं। यह उन्हीं के परदे के सुचरित्र का नमूना है कि कुचरित्र पुरुषों के भी दोष को ढांक उनको इज्ज़तदार तथा कुलाभिमानी बनने का मौक़ा देती हैं।

स्त्री सुधार।

(श्रीमती भुवनेश्वरी देवी)

अब ऐसा समय आगया है कि स्त्री समाज स्वयं अपनी बुराइयों को दूर करके अपना सुधार करे। क्योंकि जो कुरीतियां अविद्या के कारण प्रचलित हो गई हैं उनको मानते रहना मूर्खता है। अहो परम पिता परमेश्वर ! संसार में जब सब ही वस्तुओं में परिवर्तन रहता है, तो फिर स्त्री समाज की हीन अवस्था का परिवर्तन क्यों न होगा ? पुराणों के कर्त्ताओं ने जो रात्रि जागरण की विधि निकाली थी यद्यपि इसके द्वारा ईश्वर का आराधन कराना ही उनको इष्ट था, पर आजकल हम क्या देखती हैं कि रात्रि जागरण में हरि कीर्तन नहीं रहा बल्कि उसमें जो कुछ गाया जाता है उसे लिखते लज्जा आती है। जब हरिकीर्त्तन के बहाने से कुवाच्य गाया जावेगा तो क्या ईश्वर अप्रसन्न हो उसका दण्ड न देगा ? हमें चाहिये कि इस कुरीति को छोड़ दें॥

शास्त्रों में पति को स्त्रियों के लिये देवता बताया है इसी से स्त्रियें जन्म भर अपने स्वामी की सेवा दासी की समान करती हैं, पर लिखते लज्जा आती है कि विवाह के समय वर दुलहिन से जूतों पैजार के कल्पित देवी देवता पुजवाये जाते हैं। फिर कुल के आचार से निवट कर वर दुलहिन में परस्पर संटियां खिलवाई जाती हैं, उस समय वह नयी व्याही बहू अपने स्वामी को संटियों से खूब पीट लेती है। यदि वह ऐसा करने से शरम करे तो दूसरी मूर्ख स्त्रियें उसे ऐसा करने के लिये हठ से प्रवृत करती हैं। बालकों के नरम स्वभाव के ऊपर असर बड़ी जल्दी डाला जा सक्ता है, और बाल विवाह की कुरीति हमारे यहां बहुत दिनों से चल ही रही है बस जब बचपन ही में उन छोटी २ बालिकाओं को अपने स्वामी के पीटने का साहस हो जाता है तो फिर वे अपने पति को देववत् कैसे पूज सक्ती हैं ? हा परलोक में कुगति कराने वाले इस कुत्सित कार्य से हमारी भगनियों को कोई नहीं रोकता ?

ऐसी कुरीतियों के रोकने का प्रबन्ध करने से बड़ा लाभ हो सक्ता है ॥

मेरी समझ में पुत्री पाठशालाओं और कन्या महाविद्यालयों में स्त्रियों को गृह कर्म और उनके कर्त्तव्य की शिक्षा का अवश्य प्रबन्ध होना चाहिये ॥

प्रान्तिक महिला परिषद ।

(श्रीमती महा देवी का व्याख्यान)

मैं उन भाई और बहिनों की सेवा में हार्दिक धन्यवाद समर्पण करती हूं, जिन्हों ने महती कृपा से मुझे इस उच्च पद के लिये नियत किया जिस के काम सम्पादन करने की मुझ में कोई योग्यता नहीं। यदि मैं अपने शरीर और अपनी बुद्धि से अपनी जाति और देश की सेवा करना परम धर्म औरआप लोगों की आज्ञा पालन करना परम कर्तव्य न समझती तो मुझे अपनी अयोग्यता के कारण, इस उच्च पद को स्वीकार कर हास्यास्पद न बनना पड़ता। अब मैं आप की सेवा में उपस्थित हूं और प्रार्थना करती हूं कि आज से पहिले मुझे कभी ऐसी महती सभा में जैसी कि आज यहां एकत्रित है सेवा करने और बोलने का मौका नहीं मिला है इससे यदि मेरे कथन में कोई बात अनुचित प्रतीत हो अथवा मेरे काम में त्रुटि रह जावे तो आप कृपा पूर्वक क्षमाकर भूल चूक को संभाल लीजियेगा ॥

आज कैसी खुशी और सौभाग्य का समय है कि आप ऐसी महाशया देश और स्त्री जाति की दशा पर विचार करने के लिये इतना कष्ट और खर्च उठा तथा अपना अमूल्य समय लगाकर यहां उपस्थित हुई हैं इस से हमको पूर्ण आशा होती है कि अब हमारा भाग्य उदय होनेवाला है। एक तो वह समय था कि जब स्त्रियों का इकट्ठा होना कठिन था और हुई भी तो कितनी बहू बेटियां तो केवल इसी लिये आती थीं कि एक दूसरे के गहने कपड़े को देखें या अपने और दूसरों के घरों की गप्प हांकें और सुनें, अथवा बड़ी उम्र

की या वृद्धा हुई तो घरवार के बखेड़े कहने और सुनने सुनाने को और जिन्हों ने गृहस्थी के पापड़ बेल बालकर वैराग्य साधा उन्होंने माला हाथ में ली और घर के धंधों से किनारा पकड़ा। न तो देश की ओर और न स्त्री जनों के उपकार का कोई सामान दिखाई पड़ता था। पुरुष लोग उन दिनों उनको किसी योग्य भी नहीं समझते थे। अबला तो हमारा नाम ही है, घरों में ऐबों की तरह छिपा रखने के सिवाय कभी स्वप्न में भी हमें इस योग्य नहीं समझते थे कि जाति और देशोपकार के कामों में हम से योग लें अथवा हम से सहायता मांगें, और सच भी है हमें वह इस लायक़ समझते ही कैसे। पढ़ने लिखने का तो कहा जाता था कि अधिकार ही नहीं। कितने ही लोगों को तो इस बात के कहने में भी संकोच न था कि स्त्रियां लिखने पढ़ने से बिगड़ जाती हैं। अहो समय का कैसा परिवर्तन है कि जो लोग पहिले कात्यायन ऋषि के नाम से इस सूत्र का प्रमाण दिया करते थे कि "स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्" अर्थात् स्त्री और शूद्र इन दोनों को पढ़ने का अधिकार नहीं। आज उन्हीं कात्यायन महर्षि के बनाये और सूत्रों में "स्त्री चाविशेषात्" स्त्री और पुरुश के अधिकार (जिसमें विद्या विना काम ही नहीं चलता) एक बराबर बतलाते हैं और "सैषाऽत्मनोऽर्द्धं जाया" स्वीकार कर रहे हैं कि जो पुरुष की साक्षात् अर्द्धांगिनी है और हमको हमारी भूत पूर्व पदवी देकर, लिखा पढ़ा कर हर तरह अपने बराबर बनाने और अपने कामों की सफलता में हम से सहायता प्राप्त करना आवश्यक समझते हैं। चारों ओर स्त्री शिक्षा के लिये पाठशाला खोल रहे हैं, अध्यापिका और उपदेशिका की तलाश में अपना रुपया और समय ख़र्च कर रहे हैं। यदि इस सुअवसर पर भी हम लोग झट से कमर बांधकर अपने पिता, भ्राता और पुरुषों को हर काम में साथ देने और हाथ बढ़ाने तथा समय पर सेवा करने के लिये खड़ी न हो जायें तो कैसे शोक का स्थान होगा। प्यारी बहिनो! यह सब को मालूम है कि विवाह के समय गांठ जोड़ी जाती है, क्या वह केवल कपड़े ही की गांठ है? नहीं कदापि नहीं, उसका अभिप्राय यही है कि तुम अपने पुरुषों के साथ सम्पत्ति विपत्ति में कंधे से कन्धा अड़ाये खड़ी रहो।

फिर अब कायरता कहां से आई. यदि हमारे पुरुष किसी काम को करना चाहें तो हम पीछे क्यों हटें। याद रक्खो जैसे एक और एक मिलकर ग्यारह हो जाते हैं ऐसे ही हमारे साथ देने से पुरुषों की ताकत दस गुनी बढ़ जायगी। कहा भी है कि "अल्पानामपिवस्तूनां संहति कार्य साधिका। तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः।" इसका अर्थ यह है कि तिनके भी इकट्ठे होकर जब रस्सी बन जाते हैं तब मतवाले हाथी को बांध लेते हैं, इसी तरह जब सब स्त्री पुरुष छोटे बड़े एक रस होकर किसी काम को करना चाहें तो चाहे वह कितना ही बड़ा और कठिन क्यों न हो आसानी से ही हल हो सकता है। एकता बड़ा बल है, "संहतिः श्रेयसी पुंसां" "United we stand, divided we fall" मनुष्यों का कल्याण इकट्ठे होने में है। इकट्ठे खड़े होकर हम सब कठिनाइयों को जीत सकते हैं, पर अलग हुये युग टूटा और नरद मारी गई। प्यारी बहिनो! यह महिला परिषद जिसके अधिवेशन पर भाग्य वश हम सब को मिलने का शुभ अवसर मिला है मर्दों के निकाले हुये उपायों में से एक उपाय है जो वह लोग हमारे सुधार और देशोद्धार के लिये सोच रहे हैं॥

(स्त्री शिक्षा)

इस महिला परिषद के विचारणीय विषयों में सब से पहिला विषय स्त्री शिक्षा है। ईश्वरानुग्रह से अब वेद मंत्र बच्चे बच्चे की ज़बान पर हैं। कौन नहीं जानता कि वेद में कन्या के लिये "ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्" आज्ञा है कि ब्रह्मचर्य करके जवान पति को प्राप्त हो और वात्स्यायन ऋषि बताते हैं कि ब्रह्मचर्य में वत्वा विद्या ग्रहणात्" जब तक विद्या प्राप्त हो तब तक ब्रह्मचर्य की अवधि है। मनु महाराज कहते हैं "अपत्यम् धर्म कर्माणि शुश्रूषा रति उत्तमा दारा धनि स्तथा स्वर्गः पितृणामात्मन श्रह। औलाद पैदा करना, धर्म कर्म, सेवा और परम सुख प्राप्त कराना ही नहीं, किन्तु स्वर्ग लाभ भी स्त्रियों के आधीन है, अपना ही नहीं किन्तु पितृ लोगों का भी, अर्थात् माता पिता और सास ससुर का भी। क्या इस श्लोक से

यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि स्त्री केवल मर्दों के पांव की जूती ही नहीं है बल्कि रति की खानि, धर्म का जान है। सुश्रूषा और विनय, मान के द्वारा अपने और सब घरवालों के लिये स्वर्ग का अनुसन्धान स्त्री के द्वारा ही सम्भव है। पर इतने बड़े और कठिन काम को विद्या विशेष की प्राप्त किये बिना कौन पूरा कर सकता है। इसी लिये वात्स्यायन ऋषि ने फ़र्माया है कि "प्राग यौवनात् (२) प्रत्ताच पत्युरभि प्रायात्, अभ्यास प्रयोज्याश्च चातुश्शष्टिकान् योगान् कन्या रहस्ये कारकिन्य भ्यसेत्"। कि स्त्री युवावस्था को प्राप्त होने से पहिले पिता के घर और पीछे इसके जब विवाह हो चुका हो तो पति की इच्छा के अनुसार स्त्री एकाग्रचित्त होकर ग्रहण करे, और अभ्यास करने से जो चौंसठ विद्या सिद्ध हो सकती हैं उन्हें कन्या चित्त दे के पढ़े। सारी विद्याओं को विस्तार पूर्वक यदि गिनाने लगें तो लेख इतना बढ़ जावे कि जिसके लिये समय नहीं मिल सकता तौभी उनमें मोटी २ विद्याओं के नाम मात्र वात्स्यायन सूत्रों से यहां गिनाती हूं॥

(१) पहिले तो मातृभाषा और देश भाषा का लिखना पढ़ना अच्छी तरह सीखे।

(२) विदेश भाषा तब सीखे।

(३) व्यायाम, विनय और विजय विद्या।

(४) सिलाई और सुई का सब तरह का काम।

(५) चित्रकारी तथा नाना शिल्प विद्या, वाद्य बेंतादि का काम।

(६) खाना पकाना।

(७) नाना प्रकार के रस शरबत और अचार आदि बनाना।

(८) नृत्य, गीत, वाद्य, नेपथ्य, और शृंगार विधि तथा आभूषण आदि सजाना।

(९) रत्न और धातु परीक्षा।

(१०) यानादि बनाना, बनवाना और सवारी की विद्या।

(११) वास्तु विद्या (इंजिनियरिङ्ग)।

(१२) पशु पालन विद्या।

(१३) कृष्यादि तथा वृत्त विद्या।

(१४) प्रजादि पालन।

(१५) आयु विद्या।

(१६) स्वच्छतादि (सफ़ाई)।

सारांश यह है कि जो विषय आज आप के विचार के लिये उपस्थित है उसका निस्सन्देह यही अनुसन्धान और निर्णय होना चाहिये कि लड़कियों को अवश्य पढ़ावा और साधारण विद्या के सिवाय नाना प्रकार की विद्या विशेष यथावसर ज़रूर सिखाओ। परन्तु पढ़ाऐ लिखाई के दो सब से बड़े प्रतिफल होने चाहियें। एक औलाद का परिपालन दूसरी पति सेवा, इनमें औलाद का प्रतिपालन स्त्री का ऐसा कर्त्तव्य है जिसके विषय में अधिक समय से कुछ कथन करने की आज्ञा मांगती हूं॥

(बच्चों का पालन)

उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम्।
प्रत्यहं लोक यात्राया प्रत्यक्ष स्त्री निबन्धनम्॥

औलाद पैदा करना और पैदा हुये का परिपालन भी स्त्रियों का मुख्य कर्तव्य है। किसी छोटे बच्चे को देखिये जब वह इस संसार में आता है बिल्कुल भोला भाला, अनजान और परम आनन्द रूप होता है। हर तरफ़ उसके अजायबख़ाना भरा हुआ है प्रकृति के गर्भ में उसके अपने जीवन, में औरों की ज़िन्दगी में, शास्त्रों में, हुनर में, विज्ञान में और सृष्टि में क्या २ आश्चर्य भरे हुये हैं पर उस बच्चे के लिये इस अजायब ख़ाने में के दर्वाज़े बन्द हैं। वह बच्चा कुछ नहीं समझता। छोटे से छोटे मोटे से मोटे हर्फ़ों को भी वह नहीं पढ़ सकता और मामूली सी बात के भी माने नहीं जानता पर तौभी वह यहां इसीलिये आया है कि जहां तकहो सके सीखे और इस सृष्टि के भेद को जाने जो उसके चारों तरफ़ फैली हुई है। इन सब चीज़ों में आत्मा का प्रकाश है और यह प्रकाश इसी लिये रक्खा गया है कि यह छोटा बालक सुने और समझे कि वह भी आत्मा रूपही है। इसी पर उसके सुख

और भलाई का निर्भर है परन्तु उस बालक को कोई समझाने वाला चाहिये। वह जैसे पैदा होता है उसी वक्त से सीखना शुरु कर देता है। एक पल भी उसका निकम्मा नहीं जाता उस समय उसका रक्षक शिक्षक और उपदेशक कौन है कि जो कर्तार की सृष्टि में इल्म के खज़ाने खोल कर दिखाये और आदमी बनावे ? "माता" ॥

नहि वेदात् परं ज्ञानं नतु मातुः परं गुरुः।
मातृमान् पितृमान् आचार्यवान पुरुषो वेद इति॥

जिसका अर्थ यह है वेद से बढ़कर तो ज्ञान नहीं और माता से बढ़कर गुरू नहीं है। वेदभगवान कहते हैं कि वही बच्चा विद्वान होगा जिसके माता पिता और आचार्य विद्या वाले प्रशस्त गुणशाली हों॥

यदि माता शुरु में भूल या बेपरवाही कर जांव तो फिर चाहे बृहस्पति भी पीछे आवे तो वह कुछ भी नहीं कर सकेगा। फ़ारसी में कहा है कि "जबल गरदद जिबिल्लो न गरदद"। यानी पहाड़ चाहे टल जावे पर माता के गोद की पड़ी हुई आदतें नहीं बदलतीं। प्यारि बेटियों! ज़िन्दगी का सर तुम्हारे ही हाथ है। अगले ज़माने की और अपनी औलाद की भलाई तुमही पर निर्भर है तुम्हारा अशिक्षित रहना बड़ी भारी भूल है और ऐसी भूल है कि जिससे वंश और देश का नाश हो जाता है और हो ही रहा है। बच्चा पालना एक बड़ा इल्म है बच्चा पहले अपनी मीठी आवाज़ से "ता,बा" कह कर तुम से पूछता है कि यह जो सब दिखाई देता है क्या है और इसके मानी क्या हैं जैसे २ वह सीखता जाता है उसका ज़िहन खुलता जाता है जब बच्चा तीन हफ्तों का होता है उसी वक्त से उसकी निगाह में जिज्ञासा पैदा हो जाती है। जैसे २ वह बड़ा होता है जीवन का सिद्धान्त उसके आगे खुलता जाता है, इसी वक्त होशियार और समझदार मा की ज़रूरत है जो पल २ में जांचती रहे कि उसका बच्चा क्या और कितना समझ सकता है और उसकी कितनी बुद्धि बढ़ गई है, उसी के अनुसार उसको बतलाती रहें। आप देखती है कि बच्चे

बाज़ दफ़ा इतने सवाल करते हैं कि हम लोगों को जवाब देना कठिन पड़ जाता है और दुखी होकर हम उन्हें झिड़क बैठते हैं पर यह बड़ी भारी ग़लती है, इससे बच्चों की बुद्धि थोड़ी हो जाती है और आगे की उन्नति के रास्ते में उसे शंकासुर डराने लगता है, उसके डराने का इलाज सिवाय माता के किसी के हाथ नहीं। बच्चा जितनी चीज़ अपने इर्द गिर्द देखता है उन सबको जानना और काम में लाना चाहता है उस वक्त उसकी बुद्धि बहुत ही तेज़ होती है जितना वह पांच वर्ष में सीख लेता है उतना वह सारी उम्र में भी नहीं सीखता। आदमी का बचपन लोहे का सा ताव है यदि बच्चे सवाल पूछें तो उन्हें गुस्ताख़ न समझना चाहिये, वह तो उनका हक़ है कि वह हम से हर चीज़ की बाबत प्रश्न करें कि वह क्या है, कहां से आई, किसने और क्यों बनाई है। उस बच्चे को मूर्ख, निर्बुद्धि और गोबर गणेश समझना चाहिये जो मिट्टी के माधव की तरह चुपचाप रहे और किसी चीज़ के जानने की कोशिश न करे॥

जैसे कि तरह २ के बच्चे होते हैं, वैसे ही अलग २ पढ़ाने और सिखाने के ढंग भी होने चाहियें और सिखाने वाले भी उतने ही चतुर होने चाहियें। आपने सुना होगा कि आज कल बच्चों को पढ़ाने का सबसे अच्छा तरीक़ा किंडरगार्टन (बजाय इसके कि ज़बानी बताया जावे चीज़ों का साक्षात्कार दिखा देना "किंडर गार्टन सिस्टम" कहलाता है) समझा जाता है और यह कहा जाता है कि यह पढ़ाने का नया ढंग निकला है, पर हमारे ऋषि मुनि सदा अपने शिष्यों को बन में रक्खा करते, और हर एक विषय को केवल दिखा के ही नहीं बल्कि साक्षात्कार दिखा के उपदेश देते थे, यहां तक कि कठिन से कठिन ईश्वर और आत्मा के विषय को भी एक तौर पर साक्षात् करा देते थे। उपदेश का तरीक़ा ही यह है कि साक्षात् कार करके दिखा दे। कौन जाने यह शक्लें जो आज कल देवता समझी जाती हैं किसी वक्त शिष्यों के समझाने के लिये तजवीज़ की गई हों॥

(बच्चों को सधाना और अच्छी आदत डालना)

प्यारी बालिकाओ ! इधर ध्यान दो, बच्चे के मुंह के आगे तुम्हारी चाल ढाल, बोल चाल और घर का रहन सहन शीशा सा है जैसे तुम चलती फिरती बोलती चालती हो, बच्चे भी वैसा ही अनुकरण करते हैं और ठीक वैसे ही रंग ढंग सीख लेते हैं। यदि आपको बहुत से बच्चों के देखने का मौक़ा मिले तो आप देखेंगी कि उनमें से हर एक में कुछ न कुछ अलग ऐसी आदतें होंगी कि जिनसे यह जाना जा सकता है कि उनका पहिला वक्त कैसी जगह और किस सुहबत में व्यतीत हुआ है, चाहे बड़ों के काम में तो कभी देरी हो भी जाये, किन्तु बच्चों का काम उत्तम ढंग से और ठीक समय पर ही करना चाहिये। उनसे सदा मीठा बोलना और उनकी भली इच्छाओं को पूरा करना चाहिये, पर किसी हालत में भी उनको सिर चढ़ा ज़िद्दी, रोवनियां, झूठा हुक्म न मानने वाला और ईश्वर से विमुख न बना देना चाहिये। मा को चाहिये कि शुरू से अपने बच्चे के हृदय में पवित्रता, सत्यता, और निर्भयता को कूट २ कर भर दे और उसका मन सदा ईश्वर की भक्ति और प्रेम से परिपूर्ण कर दे। ऐसे बच्चे पलेंगे तो आशा है कि केवल कुल दीपक ही नहीं, किन्तु देश दिवाकर बनेंगे और अपने देश और जाति भर के लिये कल्याण पात्र उठेंगे।

(पति सेवा)

इस बात को तो हमारे शास्त्र पुकारे कहते हैं और सब ही मानते हैं कि पति सेवा स्त्रियों का परम धर्म है, सिर्फ़ शास्त्र और बुद्धिमान पुरुष ही नहीं जानते, बल्कि गांव २ कूचे २ की भोली भाली स्त्रियां भी यह जानती हैं कि लुगाइयों को अपने पुरुष की सेवा करना ही उनका मुख्य धर्म है और इसी से मुक्ति होगी। भारतवर्ष में यह ख़याल जैसा स्त्रियों के हृदय में जमा हुआ है वैसा और किसी देश में नहीं देखा जाता और न इस को ढीला डालने की ज़रूरत है। यह एक ऐसा ख़याल है कि जिसने हमको बहुत सी बुराइयों से बचाकर हमारे घरों को स्वर्ग धाम

बना रक्खा है। हिन्दुस्तानी औरतों के जी में कभी यह बुरी बात नहीं आती है कि हमारे स्वामी ने हमारे प्रति बुरा किया हमभी उसके साथ बुराई करें जब कि हमारी सयानी २ लड़कियें इस बात की उत्सुक रहती हैं कि पति सेवा करें तो उनको कौन बतलाने वाला है कि पति सेवा किस को कहते हैं और किस तरह होना चाहिये। केवल अंगूठा धोके पीने या उच्छिष्ट खाने का नाम पति सेवा नहीं है पति सेवा वही है जिस में सब से अधिक पति का हित हो। शादी के दिन से ही हमको इस बात पर ग़ौर करना चाहिये कि हमारे पति का कैसा स्वभाव है कैसी खान पान रहन सहन की आदत है उनके घर में किन २ बातों को ज़रूरत है उनकी कितनी बड़ी इज्जत है और फिर उनका क्या काम है। उनका दूसरों के साथ कैसा बर्ताव है देश भक्ति में कैसे लगे हुये हैं कितनी हिम्मत है और धर्म में कितनी दृढ़ता है इन सब बातों को पहिले अच्छी तरह समझने लगो तब तुम को शायद पति सेवा करने का अच्छा मौक़ा मिलेगा। तुम इन सब बातों में योग दे सकती हो और अपनी बुद्धि के अनुसार मदद भी कर सकती हो। जब तुमको यह मालूम हो जाय कि तुम्हारे पति का स्वभाव कैसा है और किन २ बातों की ज़रूरत होती हैं तब तुम ऐसा बन्दोबस्त करो कि वे वक्त के पहिले सब काम तय्यार पावें। खाना ऐसा बनावो कि जिस में मर्दों की रुचि हो। मर्दों के घर में आने के वक्त किसी क़िस्म का क्लेश या किसी क़िस्म का शोरग़ुल न हो। तुम सदा ढंग से उनके सामने आओ और तुम्हारी बड़ी अक्ल का काम यही है कि तुम कहने से पहिले उनके मन की बात जान लो और उसी के अनुसार चलो। यह तो तुम जानती ही हो कि बेटों का सब से बड़ा धर्म अपने मा बाप और गुरूजन की सेवा करना है बस समझ लो कि जिस दिन से गांठ ज़ोड़ी गई पति के कुल धर्म तुम्हारे हो गये। शुद्ध चित्त से उनके गुरुओं की सेवा करो और उनके कुटुम्बियों से मेल रक्खो फिर देखो तुम परिवार में कैसी प्यारी हो जाती हो ज़िन्दगी का कैसा रस आता है और घर स्वर्ग की तरह कैसा सुखदायक बन जाता है॥

"ओं प्रमेपातियानः पन्था कल्पता ॐ शिवा अरिष्टा पति लोकं गमेयम्"।

घर में चैन का सामान करने के बाद तुम उन बातों पर ध्यान दो, जिससे तुम्हारे पति का वंश नाम और यश बढ़े और धर्म की दृढ़ता हो। असल यह है कि तुम अपने पति का आधा अंग बन जाओ, जैसा कि दायां और बायां हाथ शरीर की रक्षा के लिये काम करता है ऐसे ही तुम और तुम्हारे पति अपने धर्म और यश की रक्षा के लिये काम करो॥

(बुरे पति के साथ निर्वाह)

प्यारी बहिनों! यहां तक तो तुम्हारा काम एक तरह पर सहज ही था, पर कठिनता तो वहां आती है जहां दैव योग से स्वामी धर्म से मुंह फेरे हुये हो। वहां क्या करोगी? कहते हैं कि पति की आज्ञा तो टाल नहीं सकते और पति की आज्ञा ही धर्म रहित हो तो क्या करना चाहिये। सारी ज़िन्दगी में धर्म ही तो सार है सत्य मार्ग में चलने के लिये कोई भी संसारिक बन्धन हम को नहीं रोक सकते॥

द्रव्याणि भूमौ पशवश्च गोष्ठे, भार्यागृहद्वारि जनः स्मशाने।
देहश्चितायां परलोक मार्गे, धर्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

धन दौलत ज़मीन में गड़ा रह जाता है स्त्री घर के दरवाज़े तक और बन्धुजन और जाति श्मशान भूमि तक और अपना शरीर चिता तक साथ आता है बाकी परलोक के रास्ते पर जीव को अकेले चलना पड़ता है केवल धर्म ही साथ जाता है॥

यह तो सच है कि पति की आज्ञा नहीं टालनी चाहिये पर ज़रा देखिये तो माता हो के या मालिकनी बन के या चाहे जिस सूरत में कहिये इस संसार की स्त्रियां ही तो सारा नाच मर्दों को नचा रही हैं। तुम्हारा नाम पत्नी है यानी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों की रक्षा करने वाली हो सिर्फ पांव की जूती ही नहीं हो। तुम पति को ऐसी हिकमत से कुमार्ग से फेर लो जो वह जाने भी नहीं कि मेरे साथ कुछ प्रयत्न किया गया है ऐसा करने में बेशक तुम को बहुत कोशिश और मिहनत करनी पड़ेगी॥

तुम को जितना मुश्किल काम मिले उतनी ही ज़्यादा मिहनत करके उसे सिद्ध करो। जादू टोने और गंडे तावीज़ तथा औषधि आदि के द्वारा कभी मत प्रयत्न करो कि तुम अपने पति को वश में कर सकोगी। यह बातें सब मूर्खता की हैं और इन से हानि के सिवाय लाभ कुछ भी नहीं होता॥

(परदा)

मुसलमानी राज्य से पहिले भारत वर्ष में ऐसे परदे का रिवाज़ न था जैसा आज कल देखा जाता है। यह बात बहुत तरह से साबित हो सकती है। जब सीता जी श्री रामचन्द्र जी के साथ बन गई थीं, वहां जितने ऋषि मुनि और ग्रामवासी आते थे वह सब सीता और राम के दर्शन साथ ही पाते थे। यदि यह कहा जाय कि सीता जी बन में थीं, ऐसे मौके पर पर्दा कहां होता है तो ज़रा इधर निगाह कीजिये और देखिये कि जहां सीता जी के स्वयम्बर में हज़ारों राजे महाराजे बैठे हुये थे वहां रानियां तथा और स्त्रियां भी विराजमान थीं। यह रामायण की इन चौपाइयों से साफ़ खुलता है॥

सखि सब कौतुक देखन हारे। जोउ कहावत हितू हमारे॥
कोउ न बुझाइ कहै नृप पाहीं। ये बालक अस हठ भल नाहीं॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवन्त लघु गनिय न रानी॥

रानी कैकई लड़ाई में अपने पति के साथ गई थीं वहां राजा को मदद पहुचाने से खुश करके वर पाये थे जिन के बादे में भरत को राज्य और रामचन्द्र जी को बनोबास दिलवाया। जब रामचन्द्र जी ने अश्वमेध यज्ञ किया था उस वक्त भी रामचन्द्र की सब मातायें सारा रनिवास और सब स्त्रियां मौजूद थीं। दुर्गावती रानी रण में गई थी लड़ने के लिये, अहिल्याबाई सब राजकाज आपही किया करती थी और भी इतिहास में बहुत सी मिसालें मिलेंगी। जहां मुसलमानी राज्य का प्रभाव नहीं पड़ा, वहां अब भी परदा नहीं होता। पर सवाल यह है कि आज कल परदा छोड़ना कहां तक मुनासिब है। यदि ध्यान देके देखा जाय तो मालूम होगा कि पहिली हालत में और अब की हालत में बड़ा फ़र्क है गोकि मुसलमानी राज्य से अंगरेज़ी राज्य में हमारे देश की नेक चलनी में बड़ी उन्नति है पर तौभी अभी

कमी है। अभी हम इस लायक़ तैयार नहीं हुये कि परदे का लिफ़ाफ़ा बिलकुल खोल दिया जाय। अभी हमारे पुत्रों में इस बात की तमीज़ नहीं कि पराई स्त्री को माता के समान जानना चाहिये, उन्हें देखकर सिर झुकाना चाहिये। इधर वह बेचारी स्त्रियें जो आज तक कोठरी में बन्द रही हैं, वह भी नहीं जानतीं कि हम को पुरुषों के साथ कैसा वर्त्ताव करना चाहिये और यह भी सही है कि जब तक स्त्री पुरुषों को परस्पर मिलने का मौक़ा न मिलेगा तब तक वह स्त्री पुरुषों के ठीक ठीक वर्त्तावों को अपने आचार में लाना कैसे सीख सकेंगे। जैसे कि तैरना सीखने की इच्छा रखने वाला आदमी जब तक पानी में न डाला जाय तैरना नहीं सीख सकता। जब यह ठहरा कि परदा छोड़ने में ख़तरे भी हैं और परदा छोड़ने की ज़रूरत भी है तो क्या किया जाय। यह एक ज़रा नाज़ुक मुआमला है और बड़ी निगरानी के साथ होना चाहिये मनु जी का वचन है कि—

माता स्वसा दुहित्रा वा न विविक्ता सनो भवेत्।
बलवान इन्द्रिय ग्रामो विद्वां समपि कर्षति॥

जिसका अर्थ यह है कि मा बहिन और बेटियों के साथ भी ज़रूरत से ज़्यादा एकान्त वास न करे, औरों का तो कहना ही क्या है। इस लिये मौक़ा देख कर सुरक्षित हो के ज़रूरत के लिहाज़ से परदा छोड़ना चाहिये, और सच तो यह है कि जहां विद्या रूपी सूर्य का प्रकाश हुआ पर्दे का अन्धकार अपने आप रफ़ू चक्कर हो जावेगा। सारे खटके अविद्या ही के तो हैं॥

(विधवा आश्रम)

यह तो सब कोई जानता है कि हमारे देश में इस प्रकार के आश्रमों की बड़ी आवश्यकता है जिस में विधवा स्त्रियां धर्म पूर्वक अपनी ज़िन्दगी व्यतीत करें। आप सुयोग्य बनें, अपने पवित्र जीवन से औरों को सहायता दें और दीन और अनाथ बच्चों का पालन पोषण तथा दुखी जनों की सेवा करें। पाठशालाओं में घरों में और तीर्थादि स्थानों में पठन पाठन और कथा वार्ता के द्वारा धर्म प्रचार और उपदेश करें। ग़रज़ यह कि अपने जीवन को जो आज कल के समय में अपने लिये अपने घर वालों

तथा जाति और बन्धुवर्ग के लिये सिवाय अशुभ सूचना के कोई लाभ नहीं पहुंचाता विधिवत् ब्रह्मचर्यादि करके अत्यन्त पवित्र जीवन यात्रा को देश और जाति तथा अपनी आत्मा के लिये परम कल्याण का भंडार साबित कर सकें ॥

वकील की कारसतानी।

[बङ्गाली से अनुवादित]

(श्रीयुत रामचन्द्र दुबे)

सुबोधचन्द्र हलदर चार वर्ष से वकालत कर रहे हैं। पर आपका काम चलता नज़र नहीं आता, जब आपने वकालत पास की थी आपकी मित्र मंडली इस बारे में सहमत थी कि आपसा चतुर पुरुष अपने पेशे में अवश्य उन्नति प्राप्त करेगा। पर दुर्भाग्य वश यह सब भविष्य वक्ता मिथ्या भाषी निकले। तथापि यह नहीं कहा जा सक्ता कि सुबोध बाबू की अवनति का कारण उनकी विद्या का खोट या उनके चातुर्य की कमी है। आप विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट थे। वर्ण माला के अक्षरों से सम्पन्न आपका नाम आपके पाण्डित्य का प्रमाण था। अवस्था से बढ़ कर आप में चातुरी भी थी। परीक्षोत्तीर्ण होते ही आपने दीनाजशाही की ज़िला कचहरी में वकालत करने की ठान ली थी। आपने सुन रखा था कि वहां जितना वकालत का काम अधिक है उतना ही सुयोग्य वकील की भी कमी है। इसी से वहां जाने का आपने निश्चय किया था। कलकत्ते से प्रस्थान करने से प्रथम आप भवानीपुर निवासी एक वकील से मिलने गये। इनसे आप पूर्ण परिचित थे और साथ ही इनके कृपापात्र भी थे। आपके पास एक सफ़री कपड़े का बेग था। साधारण शिष्टाचार के बाद आपने वकील महाशय से कहा "मान्यवर क्या आप मुझ पर एक कृपा करेंगे" ॥

"वह क्या" ?

"इस बेग में आपके अर्थ कुछ भेंट लाया हूं। क्या आप कृपया उसको स्वीकृत कीजियेगा"।

इन शब्दों को सुन वकील साहब भेंट देखने के लिये कुछ कम आतुर नहीं हुये। सुबोध बाबू ने बेग खोला। एक जगमगाते अलपाके की चपकन और एक नया निकोर शमला निकाल कर वकील साहब के सामने रख कहने लगे "इनको स्वीकार करने की कृपा कीजिये"। वकील महाशय को यह भेंट देख कुछ कम आश्चर्य्य नहीं हुआ और कहा "खैर पर आपका मतलब क्या है। सुबोध ने मुसकराकर उत्तर दिया "इस में मेरा कुछ स्वार्थ भी है। उनकी एवज़ में भी आपसे एक वस्तु की आशा रखता हूं"॥

कृपया स्पष्ट कहिये। सुबोध मैं आपके आशय को नहीं समझा आपके हितार्थ मैं क्या कर सकता हूं"॥

"आप इनको स्वीकार कीजिये। और इनके बदले में अपनी पुरानी चपकन तथा शमला मुझे प्रदान कीजिये।" सुबोध ने उत्तर दिया।

अब उस अनुभवी वकील की समझ में सुबोध का गूढ़ार्थ आया, अज्ञान का परदा हटने लगा और वृद्धि बाबू खिलखिला कर हंसने लगे "शाबाश। सुबोध, शाबाश! वास्तव में खूब दूर की सूझी।"

सुबोध—"मैं आपको धन्यवाद देता हूं। बात भी यह ही है आपही विचारिये कि मैं ऐसे स्थान में अपनी भाग्य परीक्षा को जाता हूं जहां मैं बिलकुल अपरिचित हूं यही बड़ी दिक्कत है। इसके अतिरिक्त यदि मवक्किल मुझे नई चपकन व शमले में सुशोभित देखेंगे तो बिलकुल नया रंग रूट समझ शायद ही कोई मेरे पास फटके"॥

वकील साहब सुबोध की इस विवेचन शक्ति से बड़े सन्तुष्ट हुये और कहने लगे "सुबोध बाबू आपकी तर्कना सत्य है। बिलकुल सत्य है!! मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप अपने कार्य में शीघ्र ही उन्नति करोगे। वास्तव में वकालत में आपसे चतुर पुरुषों की बड़ी जरूरत है"। सुबोध बाबू वकील साहब से विदा हो पुरानी चपकन व शमला लिये फूले २ घर पहुंचे।

समय की भी कराल गति है। चार वर्ष आप को दीनाज-शाही के वकालत भवन की हाज़री साधते हो गये तथापि मवक्किल अभी तक आप की छाया भी स्पर्श नहीं करते।

सुबोध बाबू ने मकान भी नगर में रास्ते के किनारे मौके पर किराया लिया था कि जहां से अच्छी आमदरफ्त होती थी यह एक छोटा दुमञ्ज़िला मकान था। सामने की ओर एक छोटा सा नोहरा भी था जिसका दरवाज़ा सड़क पर खुलता था। खर्चे की तंगी से ३—४ मास से मकान का किराया भी नहीं पटा था। मोदी का हिसाब जिसकी दुकान से उचा यत उठती थी क़रीब १००) के चढ़ गया था। मारवाड़ी बज़ाज की दुकान से भी बाबू साहब की पैठ उठ चुकी थी और उसने कपड़ा देना बन्द कर दिया था। कुछ दिनों से मालिक मकान मोदी तथा मारवाड़ी, सब ही बाबू साहब की हलकी करने पर उतारू होरहे थे। पर यद्यपि लक्ष्मी देवी सुबोध बाबू से रूष्ट थी। सन्तान प्रदायिनी भगवती की आप पर पूरी महर थी। दीनाजशाही में आय पीछे आपके दो कन्या और एक पुत्र का जन्म हो चुका था। यहां के एक स्थानीय वकील जगत प्रसन्न बाबू से आप की गाढ़ी मित्रता होगई थी। जगत के पिता भी इस नगर में वकालत कर चुके थे। उन्हीं के पुराने मवक्किल जगत बाबू की मीरास में चले आते थे।

(२)

शरद ऋतु है- प्रातः काल का समय है सुबोध गुड़ मिश्रित चाय पी रहे हैं खांड में ज्यादा दाम लगते हैं। यह भी स्वदेशी प्रचार की बरकत है कि आज सुबोध बाबू को गुड़ खाने में किसी प्रकार की लज्जा या संकोच नहीं मालूम होता। कुछ समय हुआ बाबू साहब को अपनी मित्र मण्डली में सगर्व इस प्रकार कहते सुना था "महाशयो इन दुकान दारों का कदापि विश्वास न करो। जिस खांड को यह देशी कह कर बेचते हैं वास्तव में वह जावा की है। बहुत आदमियों का अनुमान है कि देशी खांड पीली होती है और विदेशी सफेद कणादार पर यह उनकी बड़ी भूल है। जावा द्वीप और अन्य देशों से सैकड़ों टन पीली खांड प्रति वर्ष भारत में आती है।

मित्रवर। इस धूर्त्तता से बेचने के लिये तो मैं गुड़ व्यवहार करना भला समझता हूं।"

चाय पीकर प्याला रकाबी लेजाने को सुबोध बाबूने नौंकरनी को आवाज़ दी पर जब न आई और न कुछ उत्तर मिला तो लाचार स्वयं ही उठाकर बरतन भीतर लेगये। यहां पत्नि द्वारा यह नूतन समाचार मिला कि कई मास की तनख्वाह न मिलने से नौंकरानी जी ने खूब थुका फज़ीहती की और अन्त में नालिश करने की धमकी देती हुई चम्पत हो गई।

बेचारे सुबोध ने एक ठन्ढी सांस भरी। चिलम तैयार कर फिर दफ्तर में लौट आये। जिस समय आप कालिज में शिक्षा पाते थे आपने कभी हुक्का नहीं पिया था। कारण कि यह फेशन में नहीं था। पर जब आप वकालत पेशा हुये तो सबही पुराने वकीलों को धूम्र पान तथा राति नाथ प्रिया पान करते देखा। नवीन वकील इन दोनो रत्नों से वञ्चित थे। पर बड़ों का अनुकरण सदेव ही हित कर समझा जाता है। सुबोध बाबू ने तुरन्त ही हुक्का मंगाया ॥) सेर की धुआं धार उडाने लगे। दूसरे रत्न को भी मुंह लगाना तो बहुत चाहां पर एक बोतल के २) से कम नहीं लगते थे। अस्तु आपने तम्माकू पर ही सन्तोप किया। साल भर गुड़ गुड़ देव की सेवा करने पर भी मुकद्दमों तथा मवाकिलों की पहिली ही सी कमी बनी रही। निराश हो कई बार आपने हुका छोड़ने का विचार किया पर वह आप को नहीं छोड़ता था। एक दिन नहीं भी पिया पर यह मुंह लगा कब पिण्ड छोड़ता है, फिर पीने लगे पर ॥) की जगह ।) सेर की तम्बाकू आने लगी।

घड़ी ने टन २ दस बजाया। एतवार होने के कारण कचहरी जाने की तो उतावल थी नहीं। बाबू साहब हुक्के के दम लगाते २ अकाश पाताल की बातें सोचने लगे। "पुर्खों की कमाई की पूंजी जो आप घर से लाये थे बहुत दिन हुये बीत चुकी थी। तब एक २ करके स्त्री के आभूषण बेचने लगे यह भी शीघ्रता से खत्म हो चले थे अब यूं कब तक काम चलेगा। इन दो चार बाकी बची चीज़ों के बाद क्या दशा होगी" कुछ दिनों से कई समाचार पत्रों की "आवश्यकता" की सूचनायें बड़ी सावधानी से देखा करते थे अरज़ियों के पुलन्देः के पुलन्देः भेज चुके थे पर

कहीं कर्महीन सुबोध की क़िस्मत न चेती। खर्च रोज़ २ बढ़ता जाता था आमदनी न होने बराबर थी कभी २ कमीशन द्वारा कुछ टके पल्ले पड़ जाते थे। पर इन से तो नून तेल का भी पूरा नहीं पड़ता था ऐसे ही विचारों और चिन्ता में सुबोध निमग्न थे कभी २ हुक्के का दम खेंच लेते थे। इधर सड़क पर कभी खोन्चे वाला गला फाड़ २ "मोहन भोग २" चिल्लाता फिरता था। कभी ग्वाल "लो मक्खन" २ पुकारता था। इन शब्दों को सुन २ कर बालकों के मुंह में पानी भर आता था पर बिना टके मन की मन में ही रह जाती थी। बेचारे सुबोधने दफ्तर में अकेले बैठे २ विचार सागर के तरङ्गों में ग़ोते खाते २ एक चिलम फूंक डाला। अकस्मात बाहर नोहरे में किसी के पग की आहट सुनाई दी सुबोध चौंक पड़े बड़ी उत्कंठा से मन में कहने लगे "यह कौन है। शायद कोई मवक्किल हो"। आप के पास एक पुराने मुक़द्दमे की फटी पुरानी मिस्ल थी जो आप पास ही मेज़ पर वक्त ज़रूरत के लिये रखते थे। झट से इसी को निकाल बड़े ध्यान से पढ़ने में निमग्न से बन बैठे।

कोई बरामदे की पगतियों पर चढ़ता मालूम हुआ। पल मारते २ जगत प्रसन्न बाबू सामने आ मौजूद हुए। सुबोधने मिस्ल एक ओर रख दी और बड़ी प्रसन्नता से मित्र की स्वागत किया और कहा "मित्र तुम को देख कर तो बड़ा ही आनन्द होता है। इतने तड़के तो इस आनन्द की संभावना भी न थी मैं तो एकले बैठे २ मक्खी मारता २ उकता गया।

"यह विचार कर ही तो मैं भी आप के दर्शन करने और कुछ बातों का आनन्द लेने उपस्थित हो गया"।

सुबोध ने उत्तर दिया। "मुझे भी ऐसा ही आनन्द मिला है। मैं अभिलाषी भी था कि कोई दो घड़ी साथ बैठने को मिले। यह कौनसा पत्र है? क्या आज का बंगाली है! लाइये ज़रा मैं भी देखूं।

सुबोध ने अख़बार ले झट से वह पृष्ट खोला जिस में ख़ाली जगहों की सूचनायें मुद्रित रहती हैं और बड़े ग़ौर से एक २ को पढ़ने लगे। पर जगत बाबू ने यह प्रश्न कर सुबोध के कार्य में विघ्न डाला "कहो यह ख़बर भी सुनी कि परसों सात बजे सबेरे श्रीमान् मि० फुलर साहब की सवारी पधारती है"।

" क्या ऐसा ही है मैं श्रीमान का अभिवादन करता हूं ! क्या मेरे दर्शनों को ही पधारते हैं।

" यदि ऐसा ही होतो क्या आप लाट साहब का प्रेम स्वागत नहीं करेंगे "।

" नहीं जगत " सुबोध ने कटाक्ष युक्त कहा " मेरे लिये यह कार्य शोभित नहीं होगा मेरा घरबार सब स्वदेशी है। इस से भी बढ़कर मेरी नौकरनी भी चम्पत हो गई मैं श्रीमान् का सश्रुता कर सकूंगा " ॥

जगत ने भी उसी भाव से उत्तर दिया " सुनों सुबोध क्या तुम यह नहीं जानते कि ऐसा करने में तुम्हारा हित है। यह बेचारे तो जहां जाते हैं कोई भी स्वागत नहीं करता। किसी म्युनिसप्लेटी से अभिनन्दन पत्र देने की सम्मति नहीं दी गई। यदि किसी स्थान में डिस्ट्रिक्टबोर्ड ने प्रस्ताव भी किया तो प्रजा के प्रतिनिधियों ने पार नहीं पड़ने दी "।

सुबोध ने मज़ाक से उत्तर दिया " यदि आप की विचार है कि इसके उपलक्ष में मुझे गवर्नमेन्ट से कोई अच्छा पद मिल जायगा तो मैं श्रीमान लाट फुलर बहादुर की स्वागत करने तथा अभिनन्दन पत्र देने को तैयार हूं "।

" क्या आपने यह नहीं सुना है कि पूर्वी बंगाल में एक वकील महाशय ने फुलर साहब की प्रशंसा में कुछ कविता लिखी थे उसके बाद ही वोह गवर्नमेन्ट प्लीडर (वकील सरकार) नियत हो गया ॥

बिचारे सुबोध बाबू के जीवन में यह बड़ा ही असमनजस का समय आपड़ा थी। जो बात मज़ाक से कही गई थी वह उस पर अब सद्भाव से विचार करने लगे। कुछ देर सोच विचार सुबोध ने कहा " जगत आप की कहना ठीक है। सरकारी वकालत मेरे लिये जीवन आधार हो सकती है पर तुमही बताओ क्या तरकीब करूं "। जगत बाबू ने यह दिल्लगी समझा और कहा " क्या अंग्रेज़ी में कुछ पद्य रचना कर सकते हो "।

सुबोध "मैंने तो अपने जीवन में दो शब्दों की भी तुक बन्दी नहीं की।"

जगत "यह करो एक कविता रचकर सुन्हरी अक्षरों में मुद्रित कराली जिस रोज़ फुलर बहादुर पधारें जगह २ इसकी प्रतियों वित्तरण कर डालो सरकारी कर्म चारियों को भी भेंट करो श्रीमान छोटे लाट की सेवा में भी भेजो।

सुबोध बाबू गंभीर विचार में निमग्न शान्त बैठे थे पर जगत बाबू तो अपना राग अलापते ही रहे। चाहे कोई सुने या न सुने लोज़रा लेखनी संभालों काग़ज़ उठाओ। मैं आपको सहायता दूंगा किसी समय में कुछ कविता रचना किया करता था लो शुरु करें"।

" स्वागत फुलर महोदय आधीश पूर्व वर्ग के "।

पर अब यह बोले आगे तुक कैसे मिलावें, सुबोध अब भी मौन धारण किये बैठे हैं। पर जगत अपनी धुन में मन मानी हांके चले जाते हैं " इस पद यूं कहना और उत्तम होगा"। " स्वागत महोदय बंम फिल फुलर हो ईशा पूर्व वर्ग के "।

यह अधिक ओजस्वयी है पर "बंग के" इसकी तुक क्या ? बैठावें "भंग के" "लंग के" "संग के" "नंग के" अच्छा लो यह भी मिल गई।

" स्वागत महोदय बम फिल्ड फुलर हो ईश पूर्व बंग के "

" दीनाजशाही पुर निवासी हैं सुखी जैसे नशे में भंग के "

अब आगे तो एक शब्द भी नहीं चलता। खूब ! मैं तो सर-पच्ची करूं और सारी कविता रचूं और आप बनें वकील सरकार इस से बढ़कर आप क्या मज़ा चाहते हो।

अन्त में सुबोध ने मान भंग किया और कहा " नहीं जगत यह मत कहो मैं कुछ औरही सोंच रहा था "।

मेरी भी समझ में आगया तीसरा और चौथा पद यह रहा।

" हे सुयोग्य राजेश्वर प्रतिनिध यह स्वागत तुम को दें।

हे बंग वर्ग के करता धरता अभिनन्दन यहां तेरा करें "।

लो सुबोध जल्दी से लिख डालो यह कविता संसार से कहीं अलोप न हो जायें।

सुबोध " मित्र क्या तुम मुझे ५० ऋण दे सकते हो ? "। जगत ने कुछ चिढ़ चिढ़े भाव से कहा " सुबोध ज़रा विचारो

ऐसे मनोरञ्जक विषय से संसारिक विषय का क्या सम्बन्ध बस जाने दो अब मैं आप की इस पद्य रचना में भी सहायता नहीं दूंगा। सुबोध के होंठों पर मुसकराहट की नाम भी नहीं था आपने भँवे तिरछी कर कहा " नहीं जगत दिल्लगी न समझो एक सच्चे मित्र के समान ५०) देदो मुझे भी एक तरकीब सूझी है "।

" क्या सचमुच ! वह क्या ?

" यह बड़ा सुअवसर है आप ही ने मुझे सुझाया है जिस के लिये आप का भी कृतज्ञ हूं मैं फुलर की आंखों में खाक झोकना चाहता हूं। मैं ने इसकी परीक्षा करना निश्चित कर लिया है "।

जगत बाबू ऐसी बात सुन ने को तैयार न थे 'आपका मतलब क्या है ? करोगे क्या ?

'मि० फुलर का स्वागत करूंगा '।

क्या बेतुकी हांकी हैं—आप हैं कौन ? राजा नहीं महाराजा नहीं ज़मींदार नहीं—राय बहादुर भी नहीं—आपको पूंछेगा कौन ? क्या आपको ऐसा अवसर भी मिलेगा, क्या यह आशा करते हो कि कलेक्टर साहब श्रीमन के पधारने के समय रेलवे प्लेटफ़ार्म पर उपस्थित रहने के लिये आप को निमन्त्रित करेंगे ? यह भी ख़याल नहीं करते होंगे कि दरबार में भी आप बुलाये जायंगे या निजी मुलाक़ात का कार्ड भी मिलेगा।

"जगत ! इसकी कुछ चिन्ता नहीं मैं ऐसा कार्य करूंगा कि निःसन्देह मुझे मि० फुलर का दृष्टि पात्र बनाया जायगा और यह ही मेरे उद्देश्य का साधन बनेगा "।

जगत बाबू के चेहरे पर अब गंभीरता की झलक आ गई कुछ विचार आप ने कहा " पागल मत बनो देश मात्र ने फुलर का स्वागत न करना निश्चय कर लिया है क्या तुम अकेले यह काम करोगे देश द्रोही की समान क्या देश के नेताओं और राज नितज्ञ अगुओं की इच्छा के विरुद्ध काम करने का साहस करोगे और यह भी स्वार्थ साधन की उत्कंठा से "।

इस के उत्तर में सुबोध ने कहा "जगत बाबू आप पाठशाला के बालकों कीसी बातें करते हैं। चार वर्ष से यहीं दीनाज-शाही में पड़ा सड़ रहा हूं। स्त्री के भूषण बेच २ कर

उमर पूर्ण कर रहा हूं क्या इन नेताओं ने कभी मेरी सुध भी ली ? कैसे गुज़रती है ? कलके भोजन को भी मेरे पास कुछ है ? क्या तुम नहीं जानते कि इन बचों के लिये दूध मोल लेने को मेरे पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं उस नव प्रसव शिशुको कठिनता से कुछ दूध मिलता है बाकी दो को सूजी के दलिये ही से बहकाना पड़ता है। नौकरनी तनख्वाह न पाने से चार दिन नहीं ठहरती घर में दासीपन का काम करते २ स्त्री के हाथ बिगड़ गये अब यदि मुझे अपनी दशा सुधारने को अवसर मिले तो क्यों इस नई सरकार का ज़रा मन बहलाने ठकुर सुहाती कहने से सरकारी वकालत मिलजाय तो हानि ही क्या है फटे कपड़े, फटे जूते, फटे हालों फिरते २ गली २ में क़र्जख्वाहों की ऊंच नीच सुनते २ आदमी उकता ही जाता है"।

जगत बाबू थोड़ी देर चुप रहे फिर पूछा "अच्छा करोगे क्या"। "मैं अपने घर को खूब सजाऊंगा"। "क्या इतने से कार्य सिद्धि हो जायगा"।

"नहीं २, यह तो भूमिका मात्र है केवल बीज बोना है आगे स्वयं सिद्धि है मामला ऐसा पलटा खायगा कि फुलर बहादुर को मेरी ओर दृष्टिपात—नहीं २ कृपा कटाक्ष करना पड़ेगा, फिर मनोर्थ फलीभूत होने में क्या सन्देह है"। "क्या आप को मन वाञ्छित सिद्धि की पूरी आशा है ? आप जानते हो कि बदनामी और गालियों की बौछार ही शायद इस को पुरस्कार आपके भाग्य में न हो"।

"यह मैं आप को समय २ पर बताता रहूंगा अब तो आप केवल इतना ही करें कि जगह २ मुझ को देश द्रोही बता फटकारें सुनावें"।

"जगत बाबू ने अब मुस्कुराकर कहा "यह तो बड़ी सरलता से कर सकता हूं"।

"पर मित्र बड़ी सावधानी से करना किसी को यह पता न मिल जाये कि हम तुम में यह समझौता हो गया है"।

"मैं इसका ध्यान रक्खूंगा"।

"बहुत ठीक, पर मुझे रुपयों की आज ही ज़रूरत है"।

" ठीक है। घर पहुंचते ही मुनशी जी के हाथ भेज दूंगा "। सुबोध मित्र के साथ २ दरवाज़े तक आया। विदा होने से पहिले जगत ने कहा " षड़ यन्त्र की मद चढ़ने लगा है खेल भी मज़ेदार है मैं तो बिलकुल इसके वशीभूत हो गया मालूम होता हूं पर सुबोध मुझे तुम्हारी सफलता की पूरी आशा नहीं "।

सुबोध ने बनावटी आदर से कहा " ईश्वर करे आसाम की नई गवर्नमेन्ट कुछ दिन और ऐसी ही मदान्ध बनी रहे तो मैं निश्चिन्त सफल कार्य हूंगा "।

दोनों मित्र हाथ मिला विदा हुये।

(शेष आगे)

——:*:——

समालोचना।

ज़माना—ज़माना उरदू भाषा के सब से उत्तम मासिक पत्रों में से एक है। आठ वर्ष से श्रीयुत दयानारायण निगम बी. ए. की सम्पादकयि में कानपूर से प्रकाशित हो रहा है। इस समय उसका ८८ वां अंक हमारे सामने है जिसके अवलोकन से मालूम होता है कि सम्पादकजी उसकी उन्नति के लिये बहुत परिश्रम करते हैं। लिखाई साफ़, कागज़ बढ़िया तसवीरें उत्तम होने के सिवा लेख साधारण मासिक पत्रों से ज़्यादा अच्छे हैं। सब से पहिला लेख राय साहब पंडित शिवनारायण साहब की लेखनी से है जिसमें उन्होंने इंगलैंड के प्रसिद्ध फ़िलासफ़र हर्बर्ट स्पेन्सर की पुस्तकों पर अपने विचार लिखे हैं। दूसरा लेख मिरज़ा सुलतान अहमद साहब का है जिसमें उन्होंने भारतवर्ष की जातियों में परस्पर कलेह व झगड़े होने पर शोक प्रगट करते हुए यह लिखा है कि भारत की व उसकी अन्य जातियों की उन्नति को रोकनेवाले यही झगड़े हैं। वह लिखते हैं कि भलाइयां व बुराइयां हर जाति में होती हैं कोई जाति ऐसी नहीं जो केवल बुराइयों ही का भंडार हो न किसी जाति की भलाइयों ही से भरपूर होना सम्भव है। आज कल लोग एक दूसरे की बुराइयां जताने पर ऐसे तैयार

हुए हैं कि समाचार व मासिक पत्रों में, पबलिक व्याख्यानों में, निज की बोल चाल में जहां तहां दूसरी जातियों की बुराइयों व अपनी जाति की भलाइयों ही का प्रचार करते रहते हैं। जिससे कि परस्पर व कलेह व ज़िद प्रति दिन बढ़ती ही जाती है। क्या अच्छा होता कि उनके इन उत्तम विचारों से केवल उनके सहधर्मी ही नहीं वरन तमाम भारतवासी लाभ उठाते। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करे कि सदा दूसरों की बुराई पर निगाह रखकर अपनी भलाइयां जताता रहे तो सब लोग उसे बुरा जानेंगे किन्तु जातियों के साथ ऐसा नहीं किया जाता अतिरिक्त इसके ऐसा करना बहुत अच्छा समझते हैं। परन्तु बुरी बात का परिणाम सदा बुरा ही है जो कुछ बुराइयां इस देश में इन बातों से फैल रही हैं वह सब जानते हैं और यदि इस रास्ते से मुंह न फेरा जावेगा तो इसका अन्तिम परिणाम जो कुछ होगा वह भी सब विचार सकते हैं।

तीसरा लेख श्रीयुत कृष्णप्रसाद कौल साहब का अफ्रीका प्रवासी भारतवासियों पर है। जिस में उन्हों ने ३० वर्ष पूर्व से लेकर आज तक का पूरा पूरा हाल उनका लिखा है। अफ्रिका प्रवासी भारत वासियों के दुःख की कथना तो अब सब भारत-वासियों के कान तक पहुंच गई है परन्तु उनका सारा हाल अभी तक बहुतों को मालूम नहीं है। इस प्रकार के लेखों की आज कल के मासिक पत्रों में बहुत आवश्यकता है कि जिन से सर्व साधारण का ज्ञान बढ़े। बहुधा मासिक पत्रों में ऐसे विषयों पर लेख लिखे जाते हैं कि जिन से लिखनेवालों को लिखने का अभ्यास तो अवश्य होता है परन्तु पढ़नेवालों को कोई लाभ नहीं पहुंचता। चौथा लेख श्रीयुत नवाब राय साहब का "सैर दरवेश" है। नवाब राय साहब ने एक कहानी लिखनी आरम्भ की है जिस की भाषा इतनी उत्तम और लिखने का ढंग ऐसा रमणीय है कि उस को पढ़ते हुए समय का व्यतीत होना मालूम ही नहीं होता और अचानक पाठक कहानी के अन्त में पहुंच जाता है। जिसका ऐसे समय पर समाप्त होना कि जहां और समाचार सुनने के लिये पाठक का शौक़ बढ़ रहा हो बहुत ही बुरा मालूम होता है। और शेष भाग पढ़ने के लिये मन व्याकुल होता है।

इस के पश्चात और दो लेख हैं और फिर सम्पादकजी का अपना लिखा हुआ एक लेख सीताजी पर है। अन्त में कई कविताएं हैं। जो सब उरदू भाषा की नए ढंग की कविताओं का नमूना है। सीताजी पर लेख सचित्र है। सारांश यह कि पत्र हर प्रकार बहुत अच्छा है और ग्राहकों का रुपया इस के लेने से व्यर्थ नहीं जाता हम सब उरदू जाननेवाले लोगों को इस के ग्राहक बनने की सलाह देंगी।

एक बात की शिकायत हम सम्पादकजी से करती हैं और वह यह है कि ज़माने का प्रबन्ध ठीक नहीं। बहुधा देर में पहुंचता है और कभी २ ऐसा भी होता है कि आता ही नहीं।

वार्षिक मूल्य ३॥) है। ज़माना प्रेस कानपूर से मिल सकता है।

इशोपनिषत्—प्रयागराज में हिन्दू बोर्डिंग हाउस तथा अन्य कालिज के विद्यार्थियों ने एक "पूर्वक धर्म्म मंडल" नाम की समिति स्थापित की है। इस समय जब कि विदेशी सभ्यता का रंग सब ही लोगों पर चढ़ने से लोग अपने प्राचीन धर्म से अनभिज्ञ हो रहे हैं ऐसी एक मंडली का स्थापन कर अपने धर्म के जानने की अति आवश्यकता थी निःसन्देह इस त्रुटि की थोड़ी बहुत पूर्ति इस मण्डली द्वारा अवश्य होगी।

इशोपनिषत् इस मण्डली के प्रयास का प्रथम प्रकाश है। मूल मंत्र देकर शब्दार्थ फिर भावार्थ दिया गया है। भावार्थ की हिन्दी कुछ सरल तथा स्पष्ट होती तो अच्छा था मूल्य -) पता मिलने का—ब्रजराज बी. एस. सी. मंत्री "पूर्वक धर्म्म मंडल" हिन्दू बोर्डिंग हाउस इलाहाबाद।

वधकारी वाटिका

वंध्या की औषधि

स्त्रियों के वास्ते कोई रोग ऐसा नहीं जैसे वंध्या । जब तक यह रोग रहता है उन के बच्चा नहीं होता । इस औषधि को खाने से शीघ्र वह इस कष्ट से छुटकारा पाती है और सुखी रहती है ॥

एक बक्स, जिस में ३० गोलियां होती हैं १॥) को मिलता है डाक महसूल =), वी० पी० द्वारा १॥=)

डाक्टर द्वारकानाथ चक्रवर्ती जहानाबाद दक्खिन से लिखते हैं:—

मैं ने आप की बनाई हुई औषधि से वंध्या को अच्छा किया है रोगी को पहिले २०, २२ वर्ष तक नाना प्रकार की औषधि खिलाई गई परन्तु कुछ लाभ न हुआ । फिर मैं ने एक मित्र के कहने से आप की बनाई हुई औषधि का एक बक्स मंगाया और उससे तुरन्त ही आराम हो गया ॥

महाशय कुछ दिन हुए मैं ने वधकारी वाटिका का एक बक्स और विशनु तेल अपनी एक नातेदार स्त्री के वास्ते मंगाया । इस से उस का वंध्या का रोग बिलकुल जाता रहा ॥

दः काला चंद दास मौजा नैतिपुराज टिपीरा

मिलने का पता:—

श्री देवेंद्रनाथ सेन कविराज

श्री उपेंद्रनाथ सेन कविराज

२९, कोलू टोला स्ट्रीट, कलकत्ता

अत्यन्त आवश्यकता के समय में ४२०
रुपये के मिलने का भेद।

सूबह सरहद की एक माननीय विधवा का वृतान्त।

मित्र सग्या नाहीं जानियें भाई। जो विपता में होई सहाई॥

मेरे पति लाला शंकरदास शर्राफ जुलाई १६०८ में हिन्दुस्तान एश्योरेन्स व म्युच्युएल बेनीफिट सोसाइटी लिमिटेड गुजरांवाला का मेम्बर बना यद्यपि उस समय सोसाइटी का आरम्भ ही हुआ था और इस के लिये तरह तरह के खियालात गुमराह करनेवाले मनुष्य मुशतहिर करते थे तथापि मेहरा एन्ड कम्पनी ने जो कि उस सोसाइटी के डवगरी दरवाज़े पेशावर में एजेंट हैं मेरे सर्वस्व परवार की चिन्ता को दूर की और उन की नेक हिदायत पर हम सब मनुष्य सोसाइटी में प्रवेश हुए आयु न रही और वह १८ अक्तूबर १६०६ को मर गया और मुझे दुखी और विधवा बना गया। इस शोकदायक मृत्यु की खबर २३ अकतूबर १६०६ को सोसाइटी के कार्यकर्त्ता को दी गई और नियमानुसार सहायता की विनती की। जिस शीघ्रता के साथ सोसाइटी हज़ा के दफतर से मुझे उत्तर दिया गया और पत्र इत्यादि को पूरा करने के लिये तहरीक की गई उसने मुझे और मेरे और सम्बन्धियों को पूर्ण यकीन दिलाया कि यह सोसाइटी असल में बड़ी मुफीद और नेक काम करनेवाली कम्पनी है। पत्र इत्यादि ३० नवम्बर १६०६ तक पूरे हुए, मुझे खबर मिल गई कि सहायता दिसम्बर के महीने की समाही के पूरे होने पर मुझ को खास पिशावर में आकर दी जावेगी। पस हसब वायदा दीवान मंगलसैन मैनेजिंग डरेक्टर सोसाइटी हज़ा ने आप पिशावर आकर मेरे मकान पर मुझ को बिरादरी के पुरुष तथा और मनुष्यों के सामने ४२० रुपया सोसाइटी की ओर से सहायता के लिये दिये। सवा वर्ष के मेम्बर की मृत्यु पर इस कदर बड़ी सहायता देना ऐसे समय में जब कि दो और मौतें भी इस समाही में काफी सहायता शामिल करने की मुस्तहक हो चुकी हों। हिन्दुस्तान एश्योरेन्स म्युच्युएल बेनीफिट सोसाइटी लिमिटेड गुजरांवाला की बड़ाई के बिलकुल ठीक है। मुझ विधवा की जो अत्यन्त आवश्यकता के समय में सहायता करी है उस के लिये मैं दिल से धन्यवाद करती हूं और परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि यह सोसाइटी एक निहायत कामयाब कम्पनी बनकर जिस शुभ कार्य को पुरा करने के लिये बनी हुई है उस में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करे सफेद पोश मज़लुम सदा इस के ज़ेर साया फैज़ पावें। १२ जनवरी १६१०

श्रीमती गोमा धर्म्मपत्नी लाला शंकरदास

हिन्दुस्तान एश्योरेंस व म्युच्युएल बेनीफिट

सोसाइटी लिमिटेड—गुजरांवाला

Printed by Pt. Janki Nath Sharga and published by Pandit Kedar Nath, at the Leader Press, Allahabad.